जून (द्वितीय) 1993 रुपए 10.00

सरिता



उपचुनाव
कांग्रेस हारी, जीता कौन?

आर्थिक भविष्य
शेयर बाजार पर निर्भर

घर में घातक हथियार
मुसीबतों को बुलावा

बेकार निठल्ला पति
कैसे निबाहें, कैसे सुधारें?



Rediffusion/CP/92/501 b HN

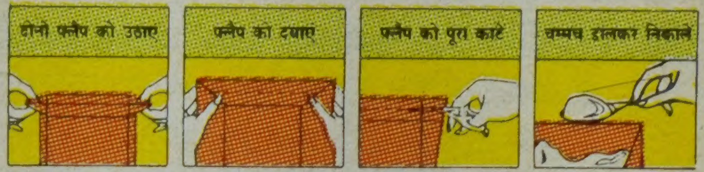
पेश है धारा वनस्पति. शुद्धता का नया रूप, नया नाम.



OPERATION GOLDEN FLOW
एन डी डी बी की ओर से

लाखों के दिल जीत कर लोकप्रिय धारा तेल समूह अब पेश करते हैं एक और शुद्ध धारा. **धारा वनस्पति. सा**धारण वनस्पतियों की तुलना में अधिक सफ़ेद और दानेदार धारा वनस्पति ज्यादा स्वास्थ्यप्रद, सुरक्षित, मज़बूत और 100% टैम्परप्रूफ पैक में उपलब्ध. **अं**तर्राष्ट्रीय स्तर से जांचा-परखा धारा अधिक समय तक ताजा रहता है. आप फ्राई करें या डीप फ्राई, यह स्वाद का नया जादू जगाता है. **तो** ले आइये नया धारा वनस्पति. मज़बूत 1 लिटर टैम्परप्रूफ पैक में और स्वादिष्ट भोजन का वह आनंद उठाइये जो पहले कभी नहीं मिला.

प्रारम्भिक दाम रु. 31.50



धारा वनस्पति

शुद्धता का नया रूप, नया नाम

कम तेल खाइये. स्वस्थ रहिये.

Mudra:NDDB:6786 Hin

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ   अंक : 916   जून (द्वितीय) 1993

लेख





उपन्यास

कथा साहित्य



स्तंभ

कविताएं



संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय

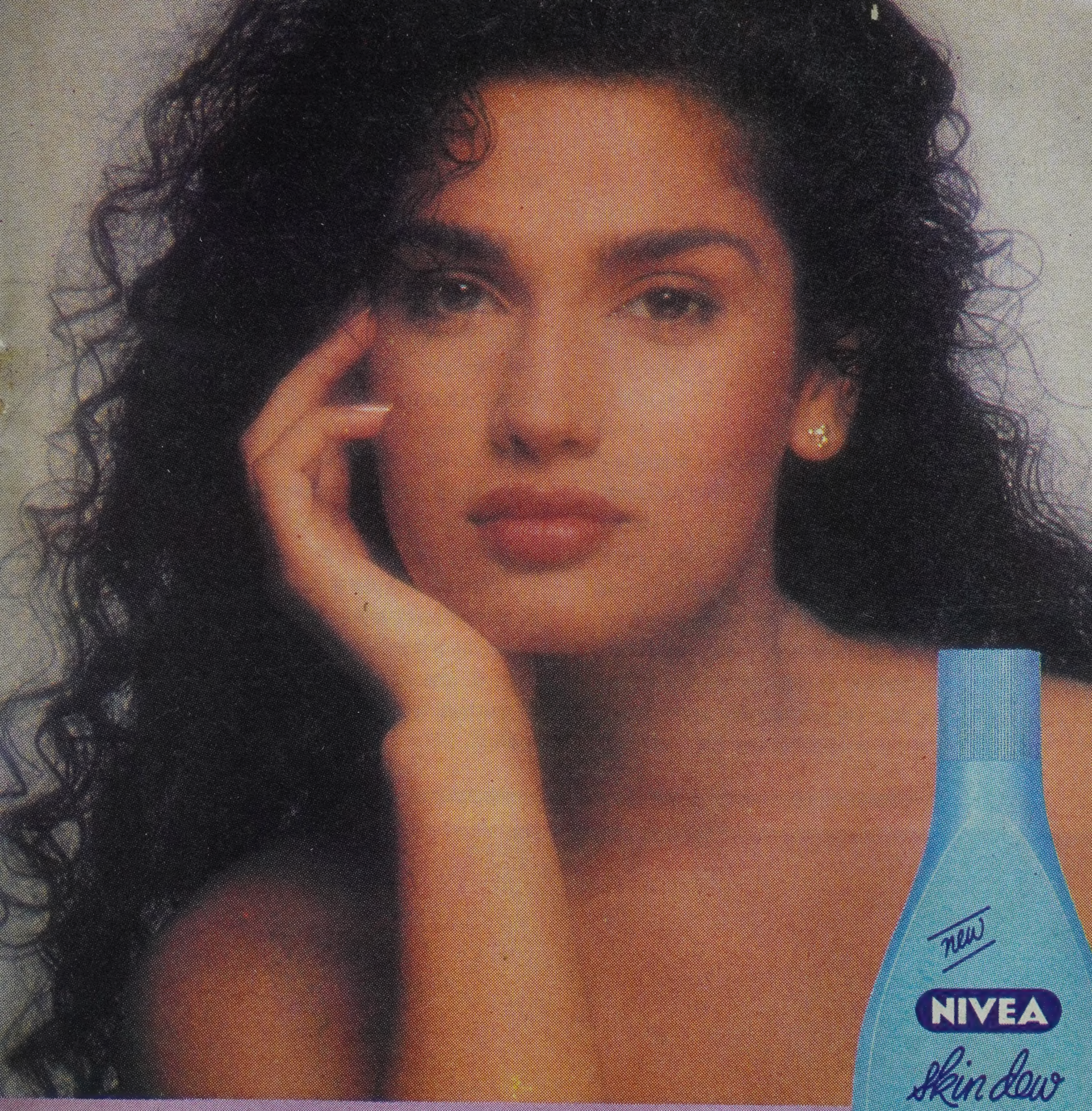
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित

अन्य कार्यालय : अहमदाबाद-503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी, 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003. लखनऊ : फ्लैट नं. बी-जी/3, 4 सप्रू मार्ग, लखनऊ-226001. पटना : दिल्ली प्रेस, III, आशियाना टावर्स, एक्जीबिशन रोड, पटना-800001. कोचीन : दिल्ली प्रेस, जी-7, पायोनियर टावर्स, I, मेरीन ड्राइव, कोचीन-682031.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
विदेशों में मूल्य एक प्रति : $0.40 (डाक व्यय अतिरिक्त) एक वर्ष : $ 17.00 (समुद्री डाक व्यय सहित) एक वर्ष : $ 43.00 (हवाई डाक व्यय सहित)

कला . क्रांति . कर्मण्यता

मूल्य : एक प्रति 10.00 रुपए. वार्षिक 240 रुपए.
वायुसेवा अधिभार 75 पैसे प्रति.
सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतल्ला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में


new
NIVEA
Skin dew
MOISTURISER WITH NMF

आप के पत्र

सरित प्रवाह/मई/प्रथम

चंदन की लकड़ी के तस्कर वीरप्पन से संबंधित आप के विचार पढ़े. इस का आतंक सभी सीमाएं पार कर चुका है. किंतु दुख की बात यह है कि राज्य व केंद्र सरकारें पंगु बनी इधरउधर ताक रही हैं. ऐसे खूंखार और कुख्यात तस्कर के संपूर्ण गिरोह का सफाया करना आवश्यक है. भारतीय सेना के कुछ चुनिंदा जवानों को इस काम के लिए भेजा जाना चाहिए. जब तक सरकार कड़े कदम नहीं उठाएगी और दृढ़ इच्छाशक्ति से काम नहीं करेगी तब तक ऐसे कई वीरप्पन आतंक मचाते रहेंगे.

—हरिशंकर 'एन.' उपाध्याय

ऐसा लगता है कि राज्य सरकारें (कर्नाटक व तमिलनाडु) चंदन चोर वीरप्पन को पकड़ने में सुस्ती दिखा रही हैं. जब एक अपराधी को दोदो राज्यों की सरकारें मिल कर नहीं पकड़ पा रही हैं तो फिर इन का क्या औचित्य रह जाता है.

वीरप्पन को पकड़ने के लिए सेना की मदद लेने से भी इन्होंने इनकार कर दिया है. और बिना सेना की मदद के उसे पकड़ना संभव नहीं लगता.

—विनोद भोलानी

*

सरकारी छुट्टियों के संबंध में आप के विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं. निठल्लों और कामचोरों की जमात के कारण पहले ही देश की अपेक्षित प्रगति बाधित है, ऐसे में अंबेडकर व पैगंबर मुहम्मद के नाम पर और 2 दिनों की छुट्टी करने से उत्पादन दिवसों में तो कमी होगी ही, विभिन्न कारणों से नित नई छुट्टियों की मांग भी होने लगेगी.

निश्शुल्क शिक्षा के विषय में यह कहना कि मुफ्त की चीज की कोई कद्र नहीं होती एकदम ठीक है. इसी लिए पब्लिक स्कूलों के बच्चों के मातापिता बच्चों की पढ़ाई के प्रति अधिक जागरूक रहते हैं क्योंकि वहां अभिभावकों से फीस के नाम पर मोटी रकम वसूली जाती है.

—अमलकुमार तिवारी

अंबेडकर और पैगंबर मुहम्मद के जन्मदिवस पर छुट्टी जैसे विषय उठाने के लिए बधाई. कोई भी राजनीतिक पार्टी ऐसी बातों का विरोध नहीं कर सकती क्योंकि इस से उस के वोट बैंक को खतरा पैदा हो जाता है. केवल प्रेस ही इन स्वार्थ भरे कामों का विरोध कर सकता है.

हरियाणा उपभोक्ता अदालत के जज के फैसले से न केवल भ्रष्ट कर्मचारियों को सबक मिलेगा बल्कि दूसरे जजों के लिए भी यह एक उदाहरण बनेगा. ऐसी हिम्मत व भावना आज ऐसे सभी लोगों में होनी चाहिए जो भ्रष्ट राजनीति व भ्रष्ट नौकरशाही के सामने कुछ बोल नहीं पाते हैं. —संजय पंघल 'स्नेही'

*

आजीवन सहारा

लेख 'अभाव जीवन मूल्यों का' (मई/प्रथम) अच्छा लगा. यह कहना सही है कि दुनिया चाहे कितनी भी आगे बढ़ जाए और हमारा देश चाहे कितना ही पिछड़ा क्यों न हो, यहां के नागरिक चाहे कितने ही अभावग्रस्त क्यों न हों पर आज भी आम भारतीय अपने मातापिता का आजीवन सहारा बना रहता है. वह उन की देखभाल करना अपना कर्तव्य समझता है, एहसान नहीं.

यही कारण है कि अन्य देशों की तुलना में हमारे देश में वृद्धाश्रमों की संख्या बहुत कम है.

—संगीता देशपांडे

*

आस्था का प्रश्न

लेख 'धारावाहिक बाइबिल की कहानियां' (मई/प्रथम) बिलकुल बेबुनियाद है. किसी भी धार्मिक विश्वास या मान्यता को बगैर किसी ठोस आधार के दकियानूसी करार देना अपनेआप में ही गलत बात है. किसी धार्मिक ग्रंथ व आम कहानी या उपन्यास में अंतर होता है. प्रामाणिक घटनाओं व ऐतिहासिक सचाइयों से परिपूर्ण बाइबिल में न तो कोई मनगढ़ंत दंतकथा है और न ही कोई काल्पनिक घटना. धर्मग्रंथों में जो कुछ लिखा रहता है उस से करोड़ों लोगों की आस्था व भावनाएं जुड़ी होती हैं. इन भावनाओं से खिलवाड़ करने का अधिकार किसी भी पत्रिका या फिल्म निर्माता को नहीं है. —सेमसन विलियम

*

केवल धनाढ्य वर्गों के लिए

सरिता का 'पर्यटन विशेषांक' (मई/प्रथम) पढ़ा. इस में पर्यटन स्थलों पर ठहरने के स्थानों की जो सूची दी जाती है वे केवल धनाढ्य वर्गों की ही पहुंच में होते हैं. मध्यम एवं अल्प आय वर्ग के लिए धर्मशालाएं आदि ही ठीक रहती हैं और लगभग हर स्थान पर ऐसी

धर्मशालाएं होती हैं. यदि उन की सूची भी प्रकाशित करें तो सामान्य वर्ग के लोगों को भी लाभ होगा.

अजमेर विश्व भर में विख्यात है. ख्वाजा गरीब नवाज एवं पुष्कर के कारण यह क्षेत्र सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है. इस का धार्मिक ही नहीं, ऐतिहासिक महत्त्व भी कुछ कम नहीं है, परंतु इस की उपेक्षा कर दी जाती है. इस से पाठक इस स्थान के विषय में जानकारी प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं.

—देवदत्त शर्मा

*

मातापिता भी जिम्मेदार

कहानी 'कहां आ गए हम' (अप्रैल/द्वितीय) बहुत अच्छी लगी. इसे पढ़ कर पता चलता है कि नववधुओं के आत्महत्या करने के पीछे केवल ससुराल वालों का ही हाथ नहीं होता बल्कि काफी हद तक लड़की के मातापिता भी जिम्मेदार होते हैं. कहानी में शुभा का अहंकार और मातापिता का गलत दिशानिर्देश ही उस की मृत्यु का कारण बन गया. —निशा

*

अनावश्यक अमरीका विरोध

लेख 'बिल क्लिंटन : भारत के साथ संबंध सद्भावपूर्ण होंगे' (अप्रैल/ प्रथम) पढ़ा. भारत को अपनी आर्थिक प्रगति के लिए क्लिंटन प्रशासन के भारत प्रेम का लाभ उठाना चाहिए. अभी तक कांग्रेस सरकारों ने अनावश्यक अमरीका विरोधी नीति अपना कर पाकिस्तान को ही फायदा पहुंचाया है. अमरीका अभी भी भारत की आंतरिक सुरक्षा, बाह्य खतरों और आर्थिक विकास में काफी मददगार हो सकता है.

—बिमलकुमार वर्मा

पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

हमें शिकायत मिली है कि कुछ लोग हमारी पत्रिकाओं के वार्षिक शुल्क के लिए अपने आप को अधिकृत एजेंट घोषित कर वार्षिक शुल्क जमा कर रहे हैं. हमारा अनुरोध है कि वार्षिक शुल्क केवल हमारे कार्यालयों या पत्रिकाओं के वितरकों को दें. अन्य लोगों को शुल्क तभी दें जब आप उन के बारे में आश्वस्त हों.

व्यवस्थापक
ग्राहक विभाग




अहा!
वाह!

मुझे शिकायत है

इन प्रकाशित शिकायतों को काट कर संबंधित व्यक्तियों को भेजिए या उपयुक्त स्थान पर चिपकाइए ताकि इन्हें पढ़ने वाले अपनी त्रुटियों को पहचान कर उन्हें दूर कर सकें.

अपनी शिकायतें निम्न पते पर भेजें :
सरिता, संपादकीय विभाग, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.



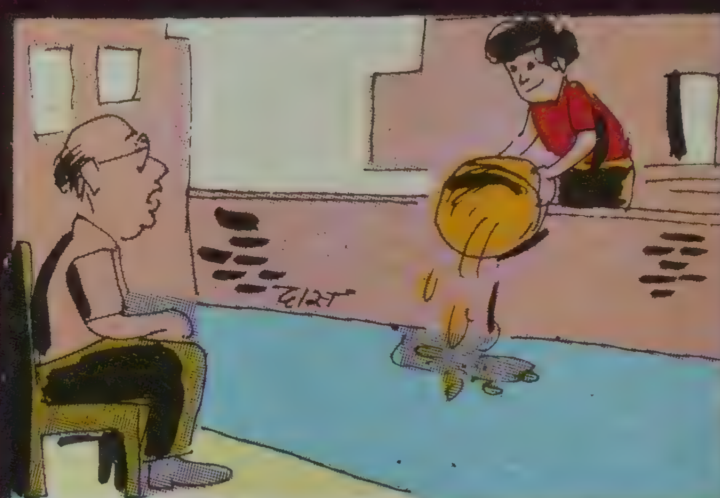
मुझे शिकायत है उन वाहन चालकों से जो बरसात में तेज रफतार में गाड़ी चलाते हैं. इस से सड़क का कीचड़ और पानी राहगीरों पर पड़ता है

—सोनिया मारवाह



मुझे शिकायत है ऐसे व्यक्तियों से जो दूसरों से किसी भी खुशी के मौके पर मिठाई की मांग बेशर्मी से करते हैं, पर स्वयं वैसे मौके पर महंगाई का रोना रोने लगते हैं.

—विनोदकुमार गर्ग



मुझे शिकायत है उन पड़ोसियों से जो कूड़ाकरकट अपनी जमीन पर न फेंक कर पड़ोसियों की जमीन पर फेंकते हैं.

—वंदनाकुमारी



मुझे शिकायत है पोस्टर लगाने वाले उन लोगों से जो सार्वजनिक स्थलों और भीड़भरे बाजारों में अश्लील पोस्टर चिपका देते हैं जिस से वाहन चालकों का ध्यान बंट जाता है और दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है.

—संजीव घरडे



मुझे शिकायत है उन यात्रियों से जो बरसात में बस में बैठते समय बगल की सीट पर भीगा हुआ छाता व अन्य सामान रख देते हैं. इस से अन्य यात्रियों को बैठने में तकलीफ होती है.

—उषा (प्रिया) मराठे


आकर्षक दिखना हर मन की चाह होती है और चकाचौंध सौंदर्य वाली ग्लैमरस छवि तो हर क्षेत्र में आगे ही ले जाती है.
मोहक व जादुई ग्लैमर घर में भी घर के बाहर भी सफलता की सीढ़ी ही नहीं है, आत्मविश्वास भी बढ़ाता है.
प्रस्तुत है गृहशोभा
ग्लैमर विशेषांक
जुलाई, 1993
व्यक्तित्व में परिवर्तन के अनूठे उदाहरणों व सुझावों के लिए
प्रमुख आकर्षण :
जबान से ही नहीं, शरीर से भी कहिए
मार्डलिंग : एक आकर्षण
ग्लैमरस पत्नी शैया पर कितनी सफल ?
बालों का ग्लैमरपूर्ण शृंगार
खूबसूरती बिखराती चोलियां
ग्लैमर नहीं मोहताज आयु का
बातों और अदाओं में छिपा ग्लैमर
आत्मविश्वास भी जगाता है ग्लैमर
ग्लैमर प्राकृतिक अथवा कृत्रिम
इन के अलावा मनोरंजक कहानियां, शिक्षाप्रद लेख, व्यंग्य, देशीविदेशी सचित्र समाचार और सभी स्थायी स्तंभ.
गृहशोभा
हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका जिस का कोई मुकाबला नहीं
अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लें

सरित प्रवाह

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का एक अधिवेशन उत्तर प्रदेश में अमेठी कसबे में 29 व 30 मई को होना था. इस के लिए गरीब किसानों से 500 एकड़ जमीन जबरदस्ती छीनी गई, 50,000 सदस्यों, पत्रकारों, मेहमानों, संवाददाताओं इत्यादि के लिए विशाल पैमाने पर पंडाल, निवास कुटिया, तंबू, भोजनालय, स्नानगृह इत्यादि बनाए जा रहे थे. सारे इंतजाम पर 50 करोड़ रुपए खर्च का बजट बनाया गया था.

अनुभवी ठेकेदारों व कारीगरों द्वारा सारा निर्माण तीव्र गति से, पत्रकारों के बहुप्रयुक्त शब्दों में, युद्ध स्तर पर हो रहा था. सारे निवासस्थान और सभामंडप वातानुकूलित होने थे, जिस के लिए 50 मील लंबी बिजली के तारों की लाइन डाली गई थी. पानी का इंतजाम भी दूरदराज से किया गया था. खाना, सोना, भाषण देना—इन सब के लिए भव्य प्रबंध था.

पर कुदरत तो अपनी मौजमस्ती का खेल खेलती ही रहती है. 27 मई को एक भीषण तूफान आया, जोर की बारिश हुई और तंबू, मंडप, कुटिया—सब तहसनहस हो गए. करोड़ों रुपयों और आयोजन करने वाले लोगों के प्रयत्नों, और कांग्रेस के दिग्गज नेताओं के आपस में दोदो हाथ होने के सपनों पर पानी फिर गया.

अब सब से पहला प्रश्न तो यह है कि कांग्रेस अधिवेशन का प्रबंध करने वालों के पास 50 करोड़ रुपए आए कहां से? कांग्रेस में सदस्यता शुल्क तो है ही नहीं—कांग्रेस का अपना कोई उद्योगव्यापार भी नहीं है जिस से यह आमदनी हो सकती हो. उद्योगपतियों, व्यापारियों के अलावा यह रुपया कहां से आया और इस धन के बदले उन उद्योगपतियों, व्यापारियों को क्या दिया गया क्योंकि दुनिया में कोई चीज मुफ्त तो मिलती ही नहीं. और क्या इस रुपए को चैक द्वारा स्वीकार किया गया या सारा ब्लैक में था?

कांग्रेसी नेता रोज कालेधन को समूल नष्ट करने की कसमें खाते हैं. टैक्स की अवहेलना करने वालों को सीधे नरक में पहुंचाने का वायदा करते हैं. पर स्वयं कालाधन वसूलते हैं, उन से मौजमस्ती, ऐयाशी करते हैं.

इस सब के पीछे विडंबना यह है कि यह अधिवेशन देश में पंचायती राज कायम करने के लिए उपाय ढूंढ़ने, और उसे जल्दी से जल्दी लागू करने के लिए बुलाया गया था ताकि भारत के गांव की गरीबी दूर की जा सके. शायद कांग्रेसियों के लिए देश की गरीबी दूर करने का सब से अच्छा साधन गरीब लोगों को यह दिखाना है कि किस तरह वे अमेठी की राह पर चल कर अमीर, समृद्ध हो सकते हैं, सत्ता का उपभोग कर सकते हैं.

*

पाकिस्तान के सर्वोच्च न्यायालय ने पिछले महीने वह कर दिखाया जिस की किसी को उम्मीद नहीं थी. और जो अर्ध जनतांत्रिक देशों के लिए एक सबक है. न्यायालय ने राष्ट्रपति इसहाक द्वारा बरखास्त किए प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को पुनः गद्दी पर बैठाने का आदेश दिया,

उन की सरकार को बहाल कर दिया और साथ ही संसद को भी, जिसे राष्ट्रपति इसहाक ने भंग कर दिया था और नए चुनाव कराने का प्रबंध किया जा रहा था.

पाकिस्तान में, आजादी के अधिकांश काल में, राष्ट्रपति या तो फौजी कमांडर होता रहा है, या फौज का कठपुतला. इसहाक से पहले जिया उल हक ने फौजी कमांडर व राष्ट्रपति का दोहरा पद संभाल कर 11 वर्ष तानाशाही की. इस से पहले राष्ट्रपति अयूब खां भी फौजी कमांडर थे. इस प्रकार सारा शासन फौज और गुप्तचर एजेंसी के हाथ में था.

पर पिछले दिनों से, खासकर जब से अफगानिस्तान से सोवियत सेना हरा कर खदेड़ दी गई थी, फौजी प्रभुत्व में कुछ ढील आ गई थी. शायद इसलिए कि अमरीका को अफगान युद्ध के लिए पाकिस्तान की जरूरत नहीं रही थी, और अमरीका ने पाकिस्तानी फौजियों को प्रोत्साहन, समर्थन देना बंद कर दिया था.

नवाज शरीफ से पहले बेनजीर भुट्टो प्रधानमंत्री थी जिन्हें राष्ट्रपति इसहाक ही ने बरखास्त कर के नए चुनाव कराए थे. और इन में नवाज शरीफ बहुमत से चुने गए थे. पर नवाज शरीफ की इसहाक से पटी नहीं और इसहाक ने अपना अधिकार जमाते हुए नवाज शरीफ को उठा कर गलियों, बाजारों में फेंक दिया. पर उच्चतम न्यायालय ने बड़ी हिम्मत से, लगभग सर्वसम्मति से (11 में से 10 मतों से) राष्ट्रपति इसहाक का यह कदम संविधान के विरुद्ध करार दे दिया.

इस निर्णय ने अन्य देशों के, विशेषतः भारत के, उच्चतम न्यायालयों के लिए एक मार्गदर्शक का काम किया है—राष्ट्रपति या सरकार का गैरसंवैधानिक कार्य, चाहे वह सरकार को बरखास्त करने का हो, निरस्त किया जा सकता है.

*

भारतीय उच्चतम न्यायालय के सामने इसी प्रकार का एक मामला अटका पड़ा है. पिछले दिसंबर में नरसिंह राव की कांग्रेस सरकार ने राष्ट्रपति से (जो स्वयं कांग्रेसी हैं, और जिन को जनतांत्रिक रवैए की बजाय कांग्रेस की प्रतिष्ठा रखने में शायद ज्यादा दिलचस्पी थी) आदेश निकलवा कर भारतीय जनता पार्टी की 4 राज्यों की सरकारों को बरखास्त करा दिया था. भाजपा की ओर से चुनौती दी गई थी कि यह कदम गैरकानूनी है, और मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने भाजपा की मध्य प्रदेश सरकार की बरखास्तगी को गैरकानूनी करार दे भी दिया है—पर उस ने न मालूम क्यों भाजपा की सरकार को बहाल करने का आदेश नहीं दिया जबकि यह भी उस के निर्णय का अंग होना चाहिए था.

इस निर्णय के विरुद्ध केंद्रीय कांग्रेस सरकार ने उच्चतम न्यायालय में अपील दायर की है जिस का फैसला होना है. देखें हमारा न्यायालय पाकिस्तान के न्यायालय से पीछे रहता है या कुछ आगे बढ़ कर देश के जनतंत्र के साथ खिलवाड़ करने पर पक्की रोक लगाएगा.

*

प्रधानमंत्री नरसिंह राव व अनेक अन्य राजनीतिबाजों के गुरू चंद्रा स्वामी अयोध्या में अपनी धाक जमाने के लिए एक सोम यज्ञ करने का आयोजन किया पर वहां के पंडेपुजारी और धर्मगुरु यह कैसे सहन कर लें कि एक बाहर वाला आ कर उन का हलवापूरी डकार जाए? इसलिए उन्होंने चंद्रा स्वामी द्वारा यज्ञ करने पर घोर आपत्ति की और मारपीट, झगड़े की चेतावनी दी.

स्थानीय पंडेपुजारी, धार्मिक धंधेबाज विश्व हिंदू परिषद के समर्थक हैं और चंद्रा स्वामी कांग्रेस के. इस प्रकार आपसी सिर फुटव्वल तो होनी ही थी. इसे रोकने के लिए फैजाबाद के जिला मजिस्ट्रेट ने चंद्रास्वामी को यज्ञ के लिए अनुमति नहीं दी. जब तत्काल ऊपर से हुक्म आया कि अनुमति देना जरूरी है तो जिला मजिस्ट्रेट ने

कहा—यह आदेश आप मुझे लिख कर दें, तामील हो जाएगी. पर ऊपर वाले ऐसा करने के लिए कब तैयार होते हैं? बेचारे जिला अधिकारी का ही तबादला कर दिया गया.

जब केंद्रीय और राज्य सरकारें (राज्य प्रधानमंत्री के शासन के अंतर्गत है) यज्ञ के लिए सब कुछ करने को तैयार हो तो यज्ञ तो हो ही जाएगा.

पर प्रश्न यह है कि इस प्रकार विशाल पैमाने पर आग में घी और अनाज झोंकने से क्या बनता है? यदि इस प्रकार के खाद्य पदार्थों के विनाश से कुछ होता तो हिंदू लोग 2000 वर्ष तक गुलाम नहीं रहते—बस घी, अनाज फूंकते रहते और आक्रमणकारी इस धुएं से बेहोश, बेहाल हो कर भाग खड़े होते. पर हुआ यह कि हिंदुओं के देवीदेवताओं के विशाल मंदिर लगातार टूटते रहे, उन पर मसजिदें बनती रहीं, विदेशी विधर्मी हिंदुओं को अपने पांवों के नीचे कुचलते रहे, लूटतेखसोटते रहे और कोई देवीदेवता या ईश्वर इन की सहायता को नहीं आया.

तथ्य यह है कि इस प्रकार के यज्ञहवन उस समय के प्रतीक हैं जब मानव यह समझता था कि आग एक देवता है जो यज्ञ करने वालों की पूजा सामग्री (यानी रिश्वत) ऊपर आकाश में स्थित भगवान को पहुंचा देता है, और ऊपर वाला घी, दूध, अनाज को प्राप्त कर के यज्ञ करने वाले की मनोकामना पूरी कर देता है.

पर आज यह स्पष्ट है कि अग्नि कोई देवता नहीं है, न वायु, न जल, न आकाश की बिजली. न पूजापाठ, न नाम जपने से, न आग में घी, अनाज फूंकने से कुछ होता है. किसी भी देश, समुदाय, व्यक्ति की समृद्धि उस के परिश्रम, सूझबूझ और कार्यकुशलता से आती है. हिंदुओं के शास्त्रों में जिन ऐशोआराम की वस्तुओं का वर्णन है, वे सब आज पश्चिमी जनसाधारण को आसानी से प्राप्त हैं और पूजापाठ, यज्ञहवन करने वाले अधिकांश हिंदू भूखे मर रहे हैं.

वास्तविकता यह है कि ये सब आडंबर पुरोहितवर्ग ने बिना कोई काम किए हलवापूरी प्राप्त करने के लिए बनाए थे अन्यथा ये लोग मोटी दक्षिणा प्राप्त करने के लिए यज्ञ करने वाले यजमान ढूंढ़ते नहीं फिरते, अपने घरों में बैठ कर स्वयं यज्ञ कर के धनधान्य प्राप्त कर लेते. इसी प्रकार यदि पूजापाठ से कुछ मिलता होता तो मंदिरों के (व अन्य सभी प्रकार के पूजास्थलों के) पुजारी, जो भगवान व उस के प्रतीकों के इतने निकट रहते हैं, इतने गरीब और धनलोलुप नहीं होते.

*

सरकारी व गैरसरकारी दोनों क्षेत्रों के कर्मचारी सरकार पर यह जोर डाल रहे हैं कि उन की तनख्वाह, सुविधाओं में वृद्धि होनी चाहिए और इस के लिए वेतन बोर्ड बैठाए जाएं.

पिछले दिनों इंडियन एअरलाइंस और एअर इंडिया के पाइलटों व इंजीनियरों ने हड़ताल कर के सरकार को झुका लिया था, और मनमानी शर्तें मनवा ली थीं. इस के बाद तो लगभग हर वर्ग के सरकारी कर्मचारी सरकार को हड़ताल करने और काम रोकने की धमकियां दे रहे हैं. और लगता है कि सरकार आज नहीं तो कल इन के आगे घुटने टेक देगी.

आज लगभग सब सरकारी व गैरसरकारी उद्योग, दफ्तर, दुकानों में काम करने वालों के वेतन कानूनी तौर पर निर्धारित किए जा चुके हैं और हर छठे महीने या वर्ष में महंगाई के अनुसार महंगाई भत्ते द्वारा इन के वेतन बढ़ जाते हैं. इस के बाद नए वेतन बोर्ड बनाने का क्या औचित्य है?

यह तो अब पुराने खयाल के अर्थशास्त्री व अन्य चिंतक भी मानने लगे हैं कि महंगाई बढ़ने का एकमात्र कारण सरकारी खर्च है. सरकार बढ़ते हुए खर्च की पूर्ति के लिए नए टैक्स लगाती है, नएनए फरजी नोट छापती है और इन से बाजार से सेवाएं और सामान बटोर लेती है.उधर जब

बाजार में नोट ज्यादा आते हैं तो खरीदार ज्यादा बढ़ जाते हैं, सामान कम हो जाता है, कीमतें बढ़ जाती हैं. दूसरी तरफ सरकार नए टैक्स लगाती है जिन से भी चीजों के दाम बढ़ते हैं

सरकारी खर्च का प्रमुख अंश सरकारी अफसरों व कर्मचारियों पर लगता है, और जैसेजैसे इन के वेतन और सुविधाएं बढ़ती जाती हैं, सरकारी टैक्स या नए नोट बढ़ने लाजमी होते हैं. और कीमतों का दुश्चक्र चालू रहता है.

लगभग ऐसी ही प्रक्रिया गैरसरकारी क्षेत्र में होती है. वहां भी कर्मचारियों के वेतन व सुविधाएं सामान और सेवाओं की कीमतों पर असर डालती हैं.

इस प्रकार जहां पहले ही से महंगाई भत्ते की रकम कीमतें बढ़ने के साथ बढ़ जाती है, नए वेतन बोर्ड बनाने की कोई तुक नहीं है. वैसे भी नागरिक क्षेत्र में तो सरकार द्वारा वेतन व सुविधा निर्धारित करने का कोई औचित्य नहीं है. जब हर तरफ आवश्यकता कंट्रोल हटाने की है, तब वेतन पर सरकारी मूल्य नियंत्रण कहां तक उचित है? यदि कोई उद्योग बहुत मुनाफा कमा रहा है (कर्मचारियों के आरोप के अनुसार) तो उस के कर्मचारियों और प्रबंधकों में आपस में फैसला होने देना चाहिए. जब सारा उद्योगव्यापार मांग और पूर्ति (डिमांड व सप्लाई) यानी बाजार भाव पर निर्भर करता है तो कर्मचारियों के वेतन भी उसी आधार पर रहने चाहिए.

सरकार ने यदि किसी एक उद्योग के लिए वेतन बोर्ड गठित किया तो हर तरफ से, हर क्षेत्र और वर्ग से वेतन बोर्डों की मांग उठेगी और सरकार के लिए स्थिति संभालना मुश्किल हो जाएगा. स्वयं सरकार को अपने कर्मचारियों, अफसरों को आज से कहीं अधिक वेतन देने पड़ेंगे और बजट घाटा तो बस में रह ही नहीं सकेगा. सरकार की 2 वर्ष की आर्थिक स्थिति संतुलित करने के प्रयास पर पानी फिर जाएगा.

एक समय था जब पृथ्वी की सब से ऊंची पर्वत चोटी एवरेस्ट मनुष्य की पहुंच से बाहर थी. हर वर्ष उस पर पहुंचने के अभियान आयोजित होते, पर सब विफल हो जाते थे. पर अंत में एक दिन न्यूजीलैंड के एडमंड हिलेरी और नेपाल/भारत के शेरपा तेनसिंह इस पर चढ़ने में सफल हो गए. फिर तो लोगों का तांता लग गया. हर वर्ष 20/25 विभिन्न देशों के दल इस पर चढ़ने लगे. और यहां तक कि स्त्रियां भी कमर कस के इस पर जा पहुंची हैं–पिछले महीने भारतीय महिलाओं का भी एक दल सफलतापूर्वक इस चोटी पर चढ़ गया, जिस के लिए उन के साहस और जीवट की प्रशंसा की जानी चाहिए.

एवरेस्ट पर इस भीड़भाड़ का एक गलत नतीजा यह हुआ कि यह चोटी और इस तक पहुंचने का रास्ता अब कूड़ेकरकट और पर्वतारोहियों की लाशों से भर गया है. जो लोग जाते हैं वे अपना फालतू सामान, कूड़ा, या मरे हुए साथियों तक को वहीं छोड़ आते हैं. चढ़ाई यदि कठिन होती है तो उतराई भी कम जोखिमभरी नहीं होती.

अब नेपाल सरकार यह शर्त लगा रही है कि जो दल जितना सामान ऊपर ले जाएगा, उतना उसे वापस भी लाना होगा ताकि नीचे मैदानों में इस कूड़ेमलबे को ठिकाने लगाया जा सके.

इस सिलसिले में एक बड़ी मजेदार खबर और है, अब शेरपा लोग मेहनताना ले कर आप को बिना बहुत कष्ट किए एवरेस्ट पर चढ़ा कर वापस लाने का टूरिस्ट आपरेटर की तरह का काम भी करने लगे हैं. वे आप को चढ़ाई पर ऊपर से रस्सियों द्वारा खींच कर चढ़ा देंगे, उतराई पर ऊपर से ढील दे कर उतार देंगे, खाइयां पार करा देंगे और सारे रास्ते आप की सुरक्षा का प्रबंध भी कर देंगे.

कोई अचरज नहीं यदि अब स्त्रियां ही नहीं, 16 वर्ष के बच्चे और विकलांग तक एवरेस्ट विजयी होने लगें. ●

उपचुनावों का रुख : कांग्रेस

लेख • ब्रजगोपाल राय 'चंचल'

19 मई को संपन्न हुए लोकसभा के 2 और 8 राज्यों की विधानसभाओं के 16 उपचुनावों के परिणामों से देश फिर किसी ठोस फैसले पर पहुंचा नजर नहीं आता. यद्यपि ऐसे उपचुनावों से देश के राजनीतिक माहौल में कोई खास फर्क नहीं पड़ता, किंतु राजनीतिक हवा की दिशा का संकेत जरूर मिल जाता है. 19 मई के चुनावों में देश का मतदाता कुछ अन्यमनस्क सा था.

वास्तव में, इस से पहले 4 लोकसभा तथा 20 विधानसभाओं के चुनाव होने थे. लेकिन चुनाव आयोग ने केरल के कोट्टापलम, तमिलनाडु के पलानी लोकसभा क्षेत्रों तथा हरियाणा के कालका, महाराष्ट्र के चिंचपोकली तथा परेल एवं तमिलनाडु के रानीपेट विधानसभा क्षेत्रों में सरकारी पक्ष द्वारा आचार संहिता के उल्लंघन के कारण चुनाव स्थगित कर दिए तो कहीं किसी अन्य कारण से. लोकसभाई तथा विधानसभाई क्षेत्रों में, जहां चुनाव हुए, लगभग 40 लाख मतदाता थे, किंतु औसत मतदान सिर्फ 50% हुआ. जाहिर है, लोगों ने मतदान में ज्यादा दिलचस्पी नहीं ली.

हिंसा : चुनावों का अनिवार्य सत्य

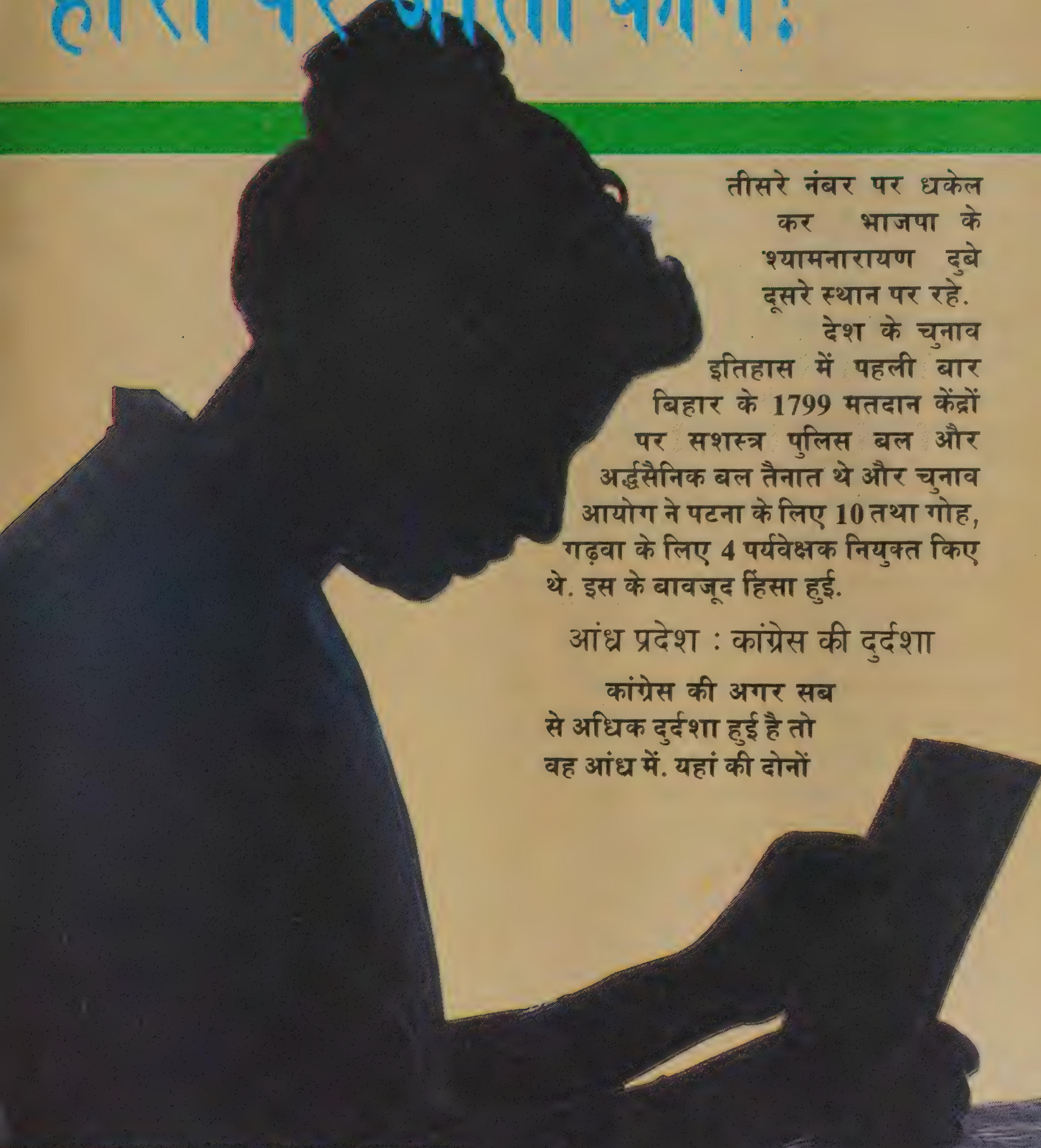
जैसी कि आशंका थी, चुनाव के दौरान बिहार में पटना में भारी हिंसा हुई और न केवल 3 व्यक्ति आधिकारिक तौर पर मारे गए, बल्कि 75 मतदान केंद्रों पर चुनाव आयोग को फिर से मतदान कराना पड़ा. लालूप्रसाद यादव ने साबित कर दिया कि बिहार की जनता के वास्तव में वही असली चरवाहे हैं. जगन्नाथ मिश्र के तमाम अरण्य रोदन के बावजूद कांग्रेस (इंका) जनता दल (जद) को झटका देना तो दूर, टक्कर पर भी न आ सकी.

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार शैलेंद्रनाथ श्रीवास्तव के प्रसारप्रचार में लालकृष्ण आडवाणी तो गए ही, साध्वी उमा भारती भी पटना की गलियों में घूमी, फिर भी भाजपा काफी दूर दूसरे स्थान पर रही और हमेशा भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी (भाकपा) के कब्जे वाली पटना सीट जद को मिली और भाकपा प्रत्याशी की जमानत जब्त हो गई.

हां, गोह की विधानसभा सीट निकलवाने में लालू नाकाम रहे, वहां भाकपा के रामशरण यादव विजयी रहे. कांग्रेस यहां भी तीसरे नंबर पर ही रही. गढ़वा सीट पर लालू ने जद के गिरिनाथ सिंह को जितवा दिया. यहां भी कांग्रेस को



हारी पर जीता कौन?



तीसरे नंबर पर धकेल कर भाजपा के श्यामनारायण दुबे दूसरे स्थान पर रहे.

देश के चुनाव इतिहास में पहली बार बिहार के 1799 मतदान केंद्रों पर सशस्त्र पुलिस बल और अर्द्धसैनिक बल तैनात थे और चुनाव आयोग ने पटना के लिए 10 तथा गोह, गढ़वा के लिए 4 पर्यवेक्षक नियुक्त किए थे. इस के बावजूद हिंसा हुई.

आंध्र प्रदेश : कांग्रेस की दुर्दशा

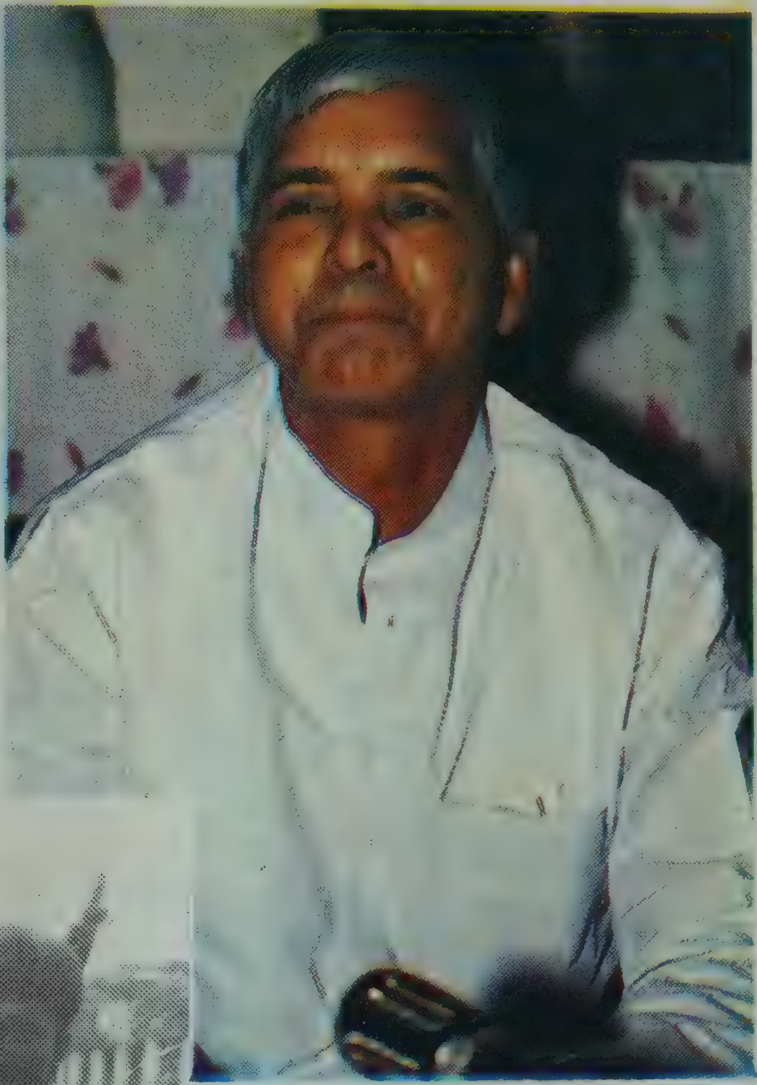
कांग्रेस की अगर सब से अधिक दुर्दशा हुई है तो वह आंध्र में. यहां की दोनों



हाल ही में हुए उपचुनाओं के परिणामों ने राजनीतिक पंडितों को एक बार फिर उलझा कर रख दिया है. हालांकि इन से किसी ठोस नतीजे पर पहुंचना जल्दबाजी ही होगी परंतु विभिन्न पार्टियों के दावों प्रतिदावों के बीच इतना तो स्पष्ट हो ही गया है कि जनता अब विकल्प चाहती है जो उसे कांग्रेस के भ्रष्ट शासन से निजात दिला कर स्वच्छ व स्थिर सरकार दे सके. क्या वर्तमान राजनीतिक माहौल में यह संभव है?

सीटें—कैकलुर तथा कोवुर तेलगूदेशम की झोली में चली गई हैं. कैकलुर सीट पहले- इंका के पास ही थी. कोवुर सीट को तेलगू देशम ने कांग्रेस को 20,000 मतों से हरा कर हासिल कर लिया. आंध्र प्रदेश प्रधान-मंत्री पी.वी. नरसिंह राव का गृहप्रदेश है. इस हार ने नरसिंह राव व उन के नेतृत्व के प्रति जनता की नाराजगी को प्रकट कर दिया है.

आंध्र के बाद कांग्रेस को सबक गुजरात की जनता ने दिया है. यहां पर 6 विधानसभा सीटों पर इंका का सीधा मुकाबला भाजपा से था. 6 में से इंका को सिर्फ 2 सीटें मिलीं. उस ने अपनी 2 सीटें खो दीं. भाजपा ने जहां जंबुसर तथा गोड़दा सीटों पर अपना कब्जा बनाए रखा, वहीं रापड़ तथा एलिसब्रिज सीटें इंका से छीन लीं. इंकाई इस के लिए चिमनभाई पटेल को चाहें जितना दोष दें, किंतु अब संकेत यही है कि वहां आगे भी इंका तथा भाजपा में ही टक्कर होगी. समयसमय पर गुजरात में होने वाले दंगों को ले कर भाजपा ने लोगों को खासा भ्रमित किया है.





हिंसा के तांडव, मतदान केंद्रों पर कब्जा तथा विपक्षी दलों की तमाम कोशिशों के बावजूद बिहार के मुख्यमंत्री लालू यादव अपने गढ़ को बचाने में कामयाब रहे.

कर्नाटक में 513 वोटों से कांग्रेस ने अपनी सीट जरूर निकाल ली है, लेकिन



प्रधानमंत्री नरसिंह राव : जनता का मोह भंग हो चुका है.

रहे हैं कि गुहगर तो पहले ही भाजपा के ही पास थी, शोलापुर हमारे (कांग्रेस) पास थी. हम ने तो किनवत खोई है. राजनीतिक प्रेक्षक इस हार का कोई भी अर्थ निकाल सकते हैं, लेकिन तथ्य यह है कि बंबई बम विस्फोटों के बाद महाराष्ट्र में कांग्रेस और पवार, दोनों की स्थिति में गिरावट आई है.

उड़ीसा की सुरक्षित सीट हिंडोल पर जनता दल ने परंपरागत रूप से अपना कब्जा बनाए रखा है. श्रीमती पाता नायक ने अपने कांग्रेसी प्रतिद्वंद्वी महेश्वर नायक को 29, 158 वोटों से हराया. इस लड़ाई में भाजपा नहीं ठहर सकी. लगता है, जनता दल का प्रभाव बिहार और उड़ीसा तक ही सिमट कर रह गया है और जद के लिए बीजू पटनायक और लालू यादव सरीखे हेकड़ और अदाबाज नेताओं की ही जरूरत है.

भाजपा ने यहां भी उसे नाकों चने चबवा दिए हैं.

कड़ी सुरक्षाव्यवस्था में हुए इस चुनाव के बाद भाजपा ने कर्नाटक में अपनी 'मौजूदगी' का एहसास करा दिया है. बावजूद इस के भाजपा को यहां कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी. कर्नाटक में रामकृष्ण हेगड़े से 'पंगा' लिए बगैर भाजपा वहां नहीं जम सकती. वैसे 'वीरप्पन' के कारण हो रही कर्नाटक सरकार की बदनामी का भी फायदा भाजपा को मिला है.

महाराष्ट्र में 3 सीटों पर चुनाव था. शरद पवार इन में से सिर्फ उत्तरी शोलापुर की 1 सीट दिलवा सके. बाकी 2 में से 1 किनवत सीट प्रकाश अंबेडकर के नेतृत्व वाली भारतीय रिपब्लिकन पार्टी को मिली तो दूसरी गुहगर की भाजपा को. वैसे, शरद पवार अब यह कह कर संतोष कर

8 विधानसभाओं के इस मिनी चुनावी दंगल में सब से अधिक रोचक, रोमांचक और रहस्यपूर्ण चुनाव अगर कोई था, तो वह था नरवाना (हरियाणा) का चुनाव. इस में एक तरफ गुजरे जमाने के हरियाणा के मुख्यमंत्री और मेहम कांड के खलनायक ओमप्रकाश चौटाला अपनी 'पाकेट पार्टी' समाजवादी जनता पार्टी (सजपा) के टिकट पर चुनाव लड़ रहे थे, तो दूसरी तरफ कांग्रेस के रणदीप सिंह सुरजेवाला, जो राज्यसभा सदस्य शमशेर

सिंह सुरजेवाला के सुपुत्र हैं, सामने थे. दिलचस्प बात यह थी कि शमशेर सिंह सुरजेवाला के इस्तीफे के कारण ही यह सीट खाली हुई थी. चौटाला ने रणदीप सिंह को लगभग 26,000 वोटों से हरा दिया. मजे की बात यह रही कि यहां जनता दल और बंसीलाल की हरियाणा विकास परिषद की जमानत जब्त हो गई. हरियाणा की राजनीति के चतुर खिलाड़ी और वर्तमान मुख्यमंत्री भजनलाल ने इस हार को मुसकराते हुए इस प्रकार पहना, "हरियाणा के जाटों में सुरजेवाला और चौटाला दो दिग्गज हैं. इन दोनों की लड़ाई से गैरजाटों का झुकाव इंका की ओर बढ़ेगा." उल्लेखनीय है कि हरियाणा में गैरजाटों के नेता के तौर पर भजनलाल ने शुरू से ही अपनी पहचान बना रखी है. हरियाणा के इस उपचुनाव में भाजपा की कोई पूछ नहीं थी.

जालंधर : आतंकवाद से मुक्ति

लेदे कर जालंधर लोकसभा की एक सीट इंका को हासिल हुई है, जिस में इंका प्रत्याशी उमराव सिंह 1 लाख 16 हजार वोटों से जीते हैं. लेकिन इस जीत का सारा श्रेय बजाय इंका या इंका नेतृत्व के, स्पष्टतौर पर पंजाब के मुख्यमंत्री बेअंत सिंह को मिला है. अपने मुख्यमंत्रित्व काल में उन्होंने जिस तरह से पंजाब के आतंकवाद को काबू में किया, जनता ने उन के प्रति अपना आभार प्रकट किया है. जालंधर में 18 प्रत्याशी मैदान में थे. यहां पहली बार जबरदस्त मतदान (59%) हुआ.

जालंधर के मतदाताओं ने प्रकाश सिंह बादल गुट के अकाली दल प्रत्याशी कुलदीप सिंह बडाला पर इसलिए भरोसा नहीं किया क्योंकि सन 1988 में जेल से आने के बाद से ही बादल दोगली भाषा बोलते रहे हैं, आतंकवादियों के पक्ष में भी और चुनाव के पक्ष में भी. लोग आतंकवाद से परेशान हो गए थे.

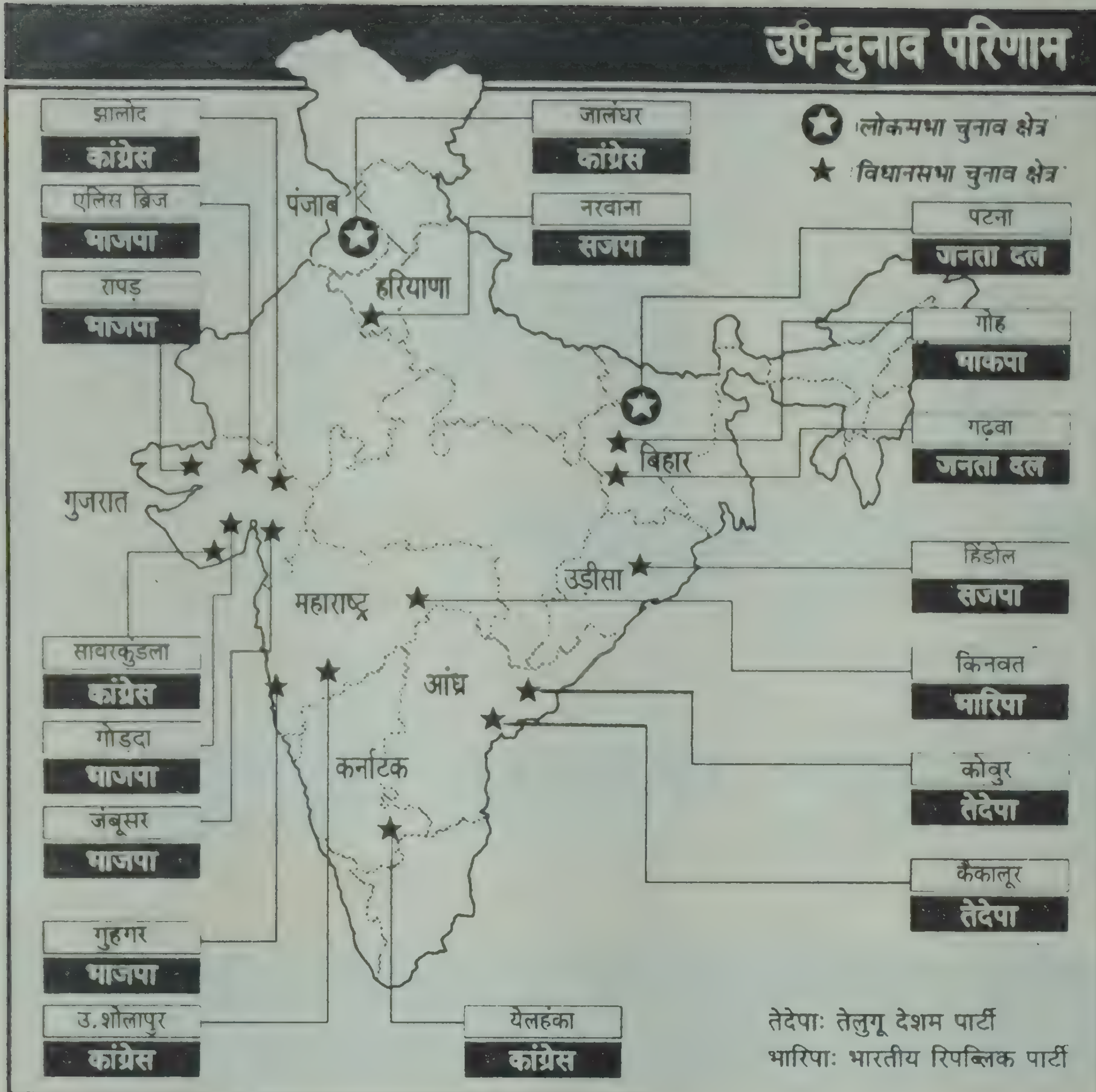
पंजाब की इस सीट ने सब से दिलचस्प संकेत अकाली दल (मान) को दिया है. इस गुट को सिर्फ 18,319 वोट

तेलगूदेशम नेता नंदमुरि तारक रामाराव : आंध्र प्रदेश में कांग्रेस को झटका देने में सफल रहे.



गुजरात के मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल : राज्य में कांग्रेस की हार मुख्यमंत्री की गलत नीतियों का परिणाम या राम लहर का असर?





मिले हैं. 'मान' प्रत्याशी 'पुलिस ज्यादती' का मुद्दा ले कर जनता के बीच गए, लेकिन उन की किसी ने नहीं मानी. इस चुनाव के बाद मान गुट पृष्ठभूमि में चला गया है.

भाजपा विजय : एक अर्धसत्य

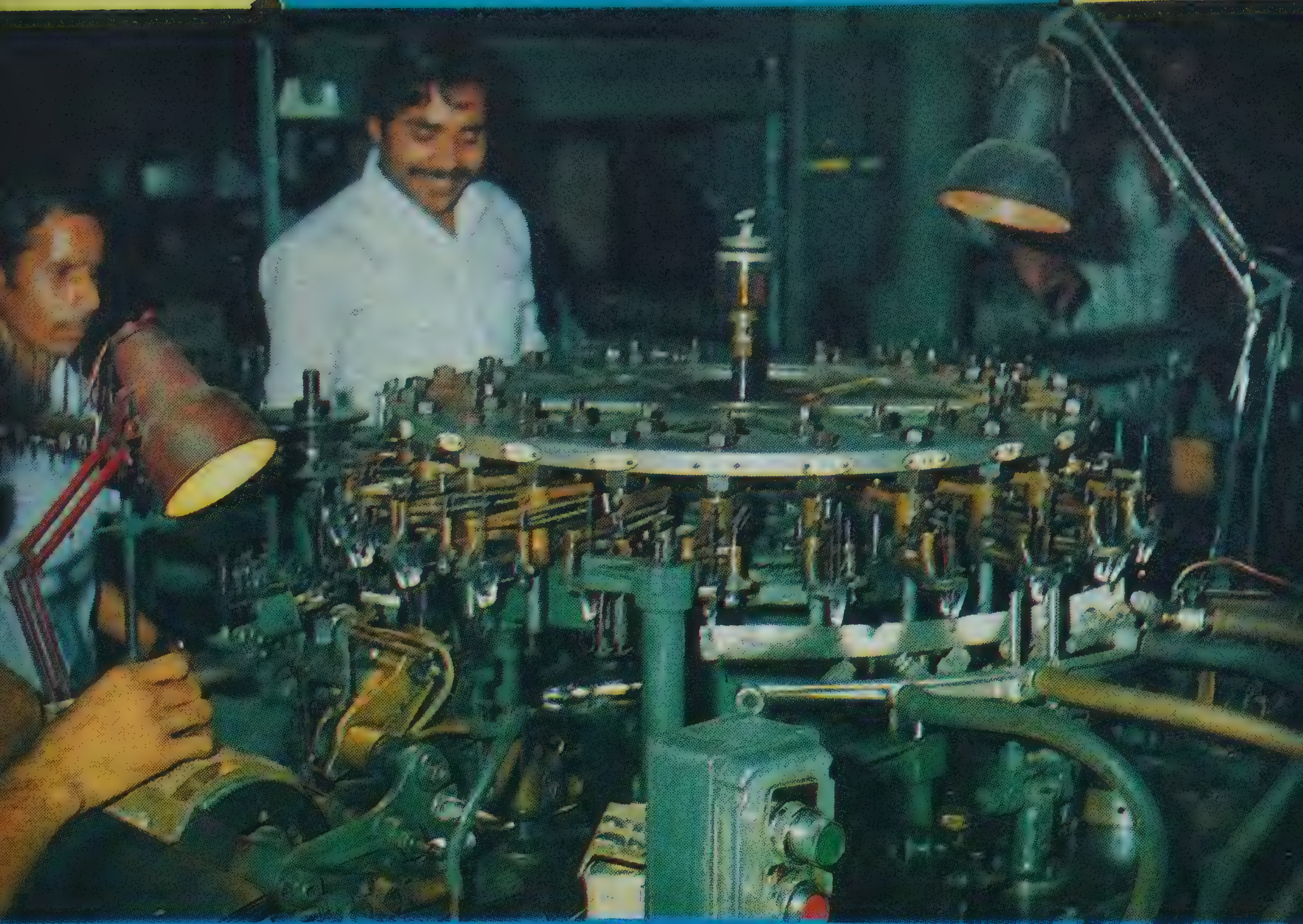
चुनाव परिणाम से भाजपा उत्साहित है तो कांग्रेसी शिविर में मायूसी है. 'भाजपा विजय' को रेखांकित करते हुए संघ परिवार के अखबार पाञ्चजन्य ने टिप्पणी की है : 'लोग अब हर बुराई का प्रतीक बन चुकी कांग्रेस से किसी तरह पिंड छुड़ाना चाहते हैं, और उस के स्थान पर एक ऐसे दल की तलाश में हैं जो उन्हें उस दलदल से निकाल सके, जिसे कांग्रेस ने बनाया है. भाजपा के प्रति झुकाव में वृद्धि जहां उस की रामरथ की विजय यात्रा की निरंतरता का प्रतीक है, वहीं उस पर और बड़ी जिम्मेदारियां भी डालती है.'

यह टिप्पणी एक अर्धसत्य है. निस्संदेह लोग कांग्रेस के कुशासन के कारण बदलाव चाहते हैं. देश की जनता ने पिछले 15 वर्षों में जनता पार्टी, जनता दल को ला कर देख लिया, किंतु उसे निराशा ही मिली. विश्वनाथ प्रताप सिंह और चंद्रशेखर को भी देश की जनता ने झेला, और पी.वी. नरसिंह राव ने भी जनता की आशाओं पर पानी फेर दिया. नरसिंह राव के रूप में प्रधानमंत्री पा कर देश की जनता ने सोचा था कि वह आम नेहरू छाप कांग्रेसी संस्कृति से अलग किस्म के प्रधानमंत्री होंगे, किंतु वह भी उसी पुरानी कांग्रेसी संस्कृति के ही निकले.

अपने पुत्र प्रभाकर राव को बैंक घोटाले से बचाने की कोशिश, उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश रामास्वामी के भ्रष्ट आचरण के प्रति उदासीनता आदि नरसिंह राव के उसी पुरानी कांग्रेसी संस्कृति के ही होने के उदाहरण हैं.

किंतु यदि भाजपा यह सोचती है कि लोगों ने उस के 'रामरथ' से प्रभावित हो कर इस बार उसे गद्दी सौंपने का विचार किया है तो वह भ्रम में है. दक्षिण में उस के जमते पांव उस की लोकप्रियता का नहीं, उस शून्य को भरने के प्रयास का परिणाम है, जो अभी 'अमूर्त' है. 'राम' के नाम से उसे लोकप्रियता तो मिल सकती है, सीटें नहीं. बिहार, हरियाणा, पंजाब और महाराष्ट्र में भाजपा को जमने में अभी काफी लंबा वक्त लगेगा.

भाजपा को भी इस चुनाव से यह सबक सीखना चाहिए. बहरहाल कांग्रेस के लिए खतरे की घंटी बज चुकी है. ●



भारतीय उद्यमी : मौलिक चिंतन का अभाव

लेख • विनय शर्मा

आप ने कितनी ही बार बैलों को वजनी सामान लदी गाड़ी खींचते देखा होगा. कभीकभी ऐसा होता है कि वे बेजबान जानवर अपना पूरा जोर लगा देने के बावजूद गाड़ी को हिला भी नहीं पाते. ऐसे में गाड़ीवान ऊपर से चाबुक फटकार कर उन की हालत को और दयनीय बना देता है. निरीह पशुओं पर यह अत्याचार देख कर जहां हृदय में स्वाभाविक रूप से दया उपजती है, वहीं मस्तिष्क में एक प्रश्न भी उभरता है. वह प्रश्न इसी घटना के दूसरे पहलू से संबंध रखता है.

वह पहलू यह है कि हमारे देश में हजारों साल से बैलगाड़ी का प्रयोग हो रहा है, लेकिन इस का रूप आज भी वही है जो इस के आरंभिक दौर में था. कृषि क्षेत्र के लिए अनिवार्य इस वाहन में ऐसा कोई तकनीकी सुधार नहीं किया गया ताकि जानवरों की क्षमता का बेहतर उपयोग हो सके या उन के द्वारा ढोए जाने वाले अनावश्यक बोझ को कम कर के उन्हें राहत दी जा सके.

दुनिया 21वीं सदी में प्रवेश की तैयारी कर रही है और हम आदिम युग से आम आदमी के उपयोग में आ रही एक मामूली गाड़ी को भी नया रूप नहीं दे सके हैं. लकड़ी के पहियों के स्थान पर टायर लगाने से कुछ सुधार हुआ है. लेकिन हजारों साल से इस्तेमाल में आने वाले इस वाहन में जिस प्रकार का परिवर्तन व सुधार वांछित था वह नहीं हुआ. हमारे किसान आज भी आवागमन के साधन के रूप में तथा अपने कृषि उत्पादनों को मंडी तक ले जाने और वहां से आवश्यक सामान ले आने के लिए बैलगाड़ी पर ही निर्भर करते हैं. अगर इस क्षेत्र में अनुसंधान द्वारा कुछ सुधार लाया जा सके तो यह संपूर्ण कृषि जगत एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा. गाड़ी की बनावट में बदलाव तथा लकड़ी के स्थान पर किसी अन्य हलकी लेकिन मजबूत धातु या प्लास्टिक, फाइबर अथवा पी.वी.सी. की गाड़ी बना कर शायद यह संभव हो, जिस के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए था.

यह तो केवल एक उदाहरण है, जो हमारे देश के उद्यमियों, व्यवसायियों, वैज्ञानिकों एवं अनुसंधानकर्ताओं में मौलिक चिंतन के अभाव की स्थिति को स्पष्ट करता है. प्रचुर मात्रा में क्षमता, सामर्थ्य एवं अवसर उपलब्ध होने के बावजूद अगर हम चुनौती स्वीकार नहीं करते एवं उपभोक्ता की जरूरत के अनुसार उत्पादन में सुधार नहीं करते तो इस से यही स्पष्ट होता है कि हमारे उद्यमियों में नया कुछ कर दिखाने की भावना का अभाव है तथा उन की मानसिकता केवल परंपरावादी सरलतम तरीके से पैसा कमाने की है.

कई क्षेत्रों में घरेलू मांग की तुलना में हमारा उत्पादन अधिक होता है. एक दृष्टि से कहा जा सकता है कि उस क्षेत्र में हम आत्मनिर्भर हैं. स्वावलंबन की इस स्थिति से संतुष्टि स्वयं ही विकास की राह में अवरोधक बन जाती है. होना तो यह चाहिए कि घरेलू बाजार में सिक्का जमाने के पश्चात ऐसे भारतीय उद्योगपति अपने साम्राज्य का विस्तार करते तथा अपने अनुभव एवं साख के दम पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिद्वंद्विता में उतरते. वे क्यों नहीं 'भारत में निर्मित' की छाप को प्रतिष्ठा प्रदान करते तथा बाहर के देशों को तकनीक एवं माल के निर्यात से देश की आर्थिक स्थिति सुधारने में मदद करते.

लेकिन यथार्थ की तसवीर इस से बिलकुल विपरीत है. हमारे नामीगिरामी औद्योगिक घराने भी स्वयं अनुसंधान पर मामूली प्रावधान करते हैं तथा विदेशों से

उपभोक्ता संस्कृति के इस युग में जबकि दूसरे देशों के उत्पादक नएनए प्रयोगों द्वारा उपभोक्ताओं को लुभाने के प्रयास में लगे हैं, भारतीय उद्यमी एकदूसरे की टांग खींच कर बाजार पर कब्जा जमाने का ख्वाब देख रहे हैं. मेहनत, मौलिक चिंतन व कल्पनाशक्ति के अभाव में उन के उत्पाद जब देशी उपभोक्ता को ही संतुष्ट नहीं कर पा रहे हैं तो क्या विश्व बाजार में ठहर पाएंगे?



तकनीक आयात कर के उत्पादन की आसान प्रक्रिया को अपनाने में अपनी 'शान समझते हैं. कोरिया, ताईवान, थाईलैंड और इसराइल जैसे देशों की छोटीमोटी कंपनियों के साथ तकनीकी अनुबंध को भी समाचारपत्रों में प्रमुखता से विज्ञापित किया जाता है. स्वयं तकनीक विकसित न करना तथा दूसरे पर निर्भर करना आजकल 'शर्म का नहीं, प्रतिष्ठा का सूचक बनता जा रहा है.

बजाज आटो कंपनी पिछले 30 वर्षों से भारत की स्कूटर मार्किट में छाई हुई है. लेकिन दोपहिया वाहनों के क्षेत्र का 'शहंशाह समझी जाने वाली इस सफलतम भारतीय वाहन कंपनी ने पिछले 3 दशकों में सिर्फ 6 माडल निकाले हैं. दुनिया की दूसरे नंबर की इस स्कूटर उत्पादक कंपनी के लिए बड़ी लज्जाजनक बात है कि यह अभी भी तकनीक के लिए विदेशों का मुंह देखती है. क्या यह इस कंपनी का दायित्व नहीं था कि अपने लाभ की राशि में से स्वतंत्र तकनीक अनुसंधान के लिए भी प्रावधान करती?

पिछले 30 वर्षों में बजाज के मुकाबले कोई स्कूटर उत्पादक कंपनी मार्किट में अपना स्थान नहीं बना पाई तथा इस क्षेत्र में उस का निर्विघ्न एवं निर्विवाद राज्य रहा. क्या विशेष किया इस कंपनी ने उपभोक्ता के लिए? भारतीय परिस्थितियों के

बजाज स्कूटर : यह कंपनी पिछले 30 वर्षों से भारतीय बाजार पर एकछत्र राज करने के बावजूद उपभोक्ता को नया कुछ नहीं दे पाई. ▲

अनुसार स्कूटर के निर्माण में किन गुणों एवं विशेषताओं का समावेश किया?

इस से बेहतर तो दूसरी प्रतिद्वंद्वी कंपनी 'काइनेटिक होंडा' है, जिस ने अपने स्कूटर में गियर आदि की समस्या को समाप्त कर दिया तथा ब्रेक भी पैरों के स्थान पर हाथ से लगाने का प्रावधान किया है. इन सुविधाओं के कारण यह गाड़ी महिलाओं के लिए अधिक सुविधाजनक तथा महिला वर्ग में अधिक लोकप्रिय है. यद्यपि इस के लिए भी तकनीक आयात की गई है, लेकिन इस कदम से उपभोक्ता को अवश्य लाभ पहुंचा है.

हमारे देश के उद्यमियों में मौलिक चिंतन का अभाव अन्य छोटेमोटे कामधंधों एवं लघु उद्योगों के उत्पादनों एवं कार्यकलापों में भी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है. एक व्यक्ति द्वारा निर्मित किसी वस्तु की बाजार में मांग होती है तो दूसरा उद्यमी उस के उत्पादन की हूबहू नकल तैयार कर के बाजार को पाट देता है. नकल में भी अकल प्रयोग करने की बात 'शायद उन की बुद्धि में ही नहीं आती है.



टाइटन घड़ियां : अपने वैविध्य के बल पर ही भारतीय उपभोक्ता बाजार पर छाई हुई हैं. ▲

इस प्रकार के उदाहरण तो हजारों हैं. 'लियो टायस' ने खिलौना मशीनगन निकाली तो बच्चों ने उसे खूब पसंद किया तथा मूल्य अधिक न होने के कारण यह अभिभावकों पर भी बोझ नहीं थी. बाजार में मांग बढ़ी तो अनेक खिलौना निर्माताओं ने उसी रंगरूप और वैसी ही आवाज करने वाली सस्ते प्लास्टिक से बनी मशीनगनें पेश कर दीं. किसी उद्यमी ने थोड़ा प्रयोग कर के इसी प्रकार का कोई अन्य खिलौना बनाने का प्रयास नहीं किया.

'बार्बी डाल' बनाने वाली खिलौना कंपनी ने विज्ञापनों पर मोटी रकम खर्च कर के अपने उत्पादन की लोकप्रियता बढ़ाई, लेकिन अब यही गुड़िया कई छोटेमोटे लोग बना रहे हैं जो मूल खिलौने की फूहड़ नकल मात्र है. अफसोस यही है कि कोई व्यक्ति परिश्रम नहीं करना चाहता. अपनी कल्पना के आधार पर किसी उपयोगी वस्तु का निर्माण करने की इच्छा ही शायद उद्यमियों में समाप्त हो रही है. ताईवान जैसा छोटा सा देश आज सस्ते खिलौनों के निर्यात में अग्रणी है क्योंकि वहां के उद्यमियों ने मौलिक उत्पादन का ध्येय रखा तथा इन खिलौनों की लागत को भी एक सीमा से बाहर नहीं जाने दिया. वाजिब दामों पर बच्चों की पसंद के विविध खिलौनों से उन्होंने उपभोक्ता बाजार को प्रभावित किया और यही उपाय उन की सफलता का मूलमंत्र रहा.

बड़े शहरों के दुकानदारों ने तो भेड़चाल के मामले में भेड़ों को भी पीछे छोड़ दिया है. आप देखेंगे कि बाजार में किसी एक दुकान के चल निकलने पर साथ वाली सभी दुकानों पर भी धड़ाधड़ वही व्यवसाय शुरू करने का प्रयास किया जाता है.

इस व्यवसाय में नए प्रवेशकों को यह कार्य आरंभ करने के लिए कोई योजनाबद्ध कदम उठाने की जरूरत भी महसूस नहीं होती. वे जानते हैं कि ग्राहक तो साथ वाली दुकान पर आ ही रहे हैं, उन्हीं में से कुछ व्यक्ति भटक कर इस दुकान पर आ ही जाएंगे. ग्राहक को जो माल पड़ोसी बेच रहा है, एकदम वही चीज यहां पर भी उपलब्ध कराई जा सकती है. रंग, डिजाइन, आकार एवं ब्रांड सब कुछ वही है. यह भी जरूरी नहीं है कि उपभोक्ता को बढ़िया सामान व बेहतर सेवा ही प्रदान कर दी जाए.

दिल्ली में कश्मीरी गेट में वाहनों के कलपुरजों के बाजार का चक्कर लगा कर देखिए. एक छोर से दूसरे छोर तक पूरा बाजार लगभग एक ही प्रकार के ब्रांड तथा समान स्तर के पुरजों से भरा पड़ा है. किसी भी दुकान से कुछ भी माल खरीद लीजिए, दूसरी दुकान से अधिक अंतर नहीं होगा. किसी दुकान की ऐसी ख्याति नहीं है कि वहां से माल खरीदने पर कोई श्रेष्ठ वस्तु मिलेगी.

पूरी बंबई की सड़कों पर बनीबनाई

कमीजें, जो कि सस्ते दामों पर मिलती हैं, एक ही फैक्ट्री तथा एकाध निर्माताओं के यहां से बन कर निकलती हैं. विविधता के लिए लेबल बदले जाते हैं. कभी 'निसार शर्ट्स तो कभी 'अजीज शर्ट्स' इत्यादि.

दिल्ली के करोलबाग में, आर्यसमाज रोड पर पुराने वाहनों की खरीदबेच से संबंधित कुछ दुकानें अच्छी चलने लगीं तो थोड़े ही समय में सारी मार्किट में ही यह धंधा अपना लिया गया. पहाड़गंज में चित्रगुप्ता रोड पर फलों के रस की दुकानें खुलनी शुरू हुईं तो पंक्ति से बीसियों दुकानों पर रस बिकने लगा. किसी उद्यमी ने कोशिश नहीं की कि वह कुछ अन्य खाद्य पदार्थ रख कर दूसरी दुकानों का पूरक बने, प्रतिद्वंद्वी नहीं.

बाजार में ग्राहकों की संख्या तो सीमित है, अतः वही ग्राहक नई दुकानों पर बंटते चले जाते हैं. कुछ दिनों बाद कमाई की रकम घटने से एक स्थिति ऐसी भी आ जाती है कि वह व्यवसाय आकर्षक नहीं रह जाता. ऐसी हालत में फिर व्यवसाय परिवर्तन की नौबत आ जाती है. पहाड़गंज में भी यही स्थिति आई और दुकानदारों को फलों के जूस का काम छोड़ना पड़ा. कुछ दुकानदारों ने स्कूटरों की मरम्मत का काम शुरू किया तो अन्य लोगों ने भी वही धंधा शुरू कर दिया. अब पुनः वही समस्या है कि सभी दुकानों पर स्कूटर मरम्मत का काम चल रहा है और सब को पर्याप्त काम नहीं मिल पाता.

हालांकि, यह सत्य है कि इस प्रकार की दुकानदारी में सभी व्यवसायी कुछ न कुछ कमा ही रहे होते हैं, लेकिन यदि यही उद्यमी एक ही वस्तु को विविध रूपों में प्रदान कर सकें तथा ग्राहक को बढ़िया से बढ़िया चीज, अनेक डिजाइनों तथा सही दामों में उपलब्ध करा सकें तो उन की आमदनी में आशातीत वृद्धि हो. हर दुकानदार अपनी अलग विशेषता बनाए. आवश्यक नहीं कि उस की दुकान पर हर वस्तु बिक्री के लिए रखी हो. एक ही वस्तु में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर के तथा सामान्य रूप से उपलब्ध माल से भिन्नता द्वारा पहचान बना कर वह बाजार में अपनी साख में निरंतर वृद्धि कर सकता है.

टाइटन घड़ियों का उदाहरण लीजिए. हाथ घड़ियों के क्षेत्र में अनेक माडल प्रस्तुत कर के इस कंपनी ने ग्राहकों को अपनी पसंद के अनुसार चुनाव करने का अवसर प्रदान किया है. अपने इसी वैविध्य के दम पर कुछ ही समय में टाटा की यह कंपनी अपने प्रतिद्वंद्वियों को पीछे छोड़ कर भारतीय उपभोक्ता बाजार में छा गई है. दूसरी ओर इन्होंने ग्राहक को उस के पैसे का उचित मूल्य भी दिया है, जिस से इन का भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होता है.

भारतीय मानसिकता

अतः हमारे व्यापारियों एवं स्व-नियोजित उद्यमियों को हर काम में टांग फंसाने की भारतीय मानसिकता छोड़नी होगी. सभी दुकानें केवल 'डिपार्टमेंटल स्टोर' बन कर नहीं रह जाएं, इस के लिए व्यवसाय के अनुसार हर व्यापारी को एक वस्तु विशेष में ही विशेषता हासिल करनी चाहिए. दरीबा कलां, दिल्ली का जौहरी बाजार अपने आभूषणों के लिए प्रसिद्ध है. यहां सभी दुकानों पर हर प्रकार के जेवरात मिल जाएंगे, लेकिन हर दुकान पर एक से ही डिजाइन और बनावट देखने को मिलेगी.

अब जबकि इस बाजार की साख, दिल्ली के अन्य जौहरी बाजारों (विशेषकर करोलबाग) के कारण प्रभावित होनी शुरू हो गई है. क्या यहां के व्यापारियों के लिए उचित नहीं होगा कि हर प्रतिष्ठान अपनी एक भिन्न छवि पेश करे? कुछ दुकानें केवल बरतनों का व्यापार करें तो कुछ विभिन्न आभूषणों, जैसे मंगलसूत्र, पाजेब, हार, चूड़ियां, हीरों के सैट व जवाहरात आदि में महारत हासिल करें. एक दुकान एक ही प्रकार के जेवर रखे, लेकिन उस के पास इतनी विविधता हो कि ग्राहक चुनाव की संतुष्टि प्राप्त कर सकें.

निश्चित रूप से भारतीय उद्यमियों व व्यापारियों को ऐसे प्रयोग की आवश्यकता है क्योंकि भविष्य में बाजार उपभोक्ता ही तय करेगा तथा वह उन्हीं दुकानों को प्राथमिकता देगा जहां उसे पसंद के अनुसार चुनाव के लिए अवसर प्राप्त हों.

शीघ्र ही वह समय आने वाला है जब उद्यमियों को यह बताने के स्थान पर कि वह क्या बेच रहा है, उपभोक्ता से पूछना पड़ेगा कि वह क्या चाहता है. उद्यमियों को चिंतन करना पड़ेगा कि वह ग्राहक को ऐसा क्या प्रस्तुत करे जो बाजार के अन्य व्यापारी नहीं दे सकते. अपनी ओर से वह अपने उत्पादन में ऐसी कुछ मौलिकता जोड़े जो आम आदमी की दैनिक जरूरत में काम आ सके. इस प्रकार का एक सुझाव उन लोगों का भला कर सकता है जिन्हें भूल जाने की आदत है. जिस प्रकार चश्मा गले में लटकाने की चेन बाजार में आ रही है, कलम निर्माता उसी प्रकार की कलमें तैयार कर सकते हैं जिन के ढक्कन गले में ही चेन से लटके रहें. काम समाप्त होने पर स्वभावगत कलम को वापस चेन में लटकाना पड़ेगा.

इसी प्रकार ब्रेसरी निर्माता ब्रा के भीतर छोटी सी जेब बना सकता है, जिस से भारतीय महिलाओं को रुपएपैसे रखने की अपनी परेशानी से छुटकारा मिल सकेगा. यह तो जाहिर है कि साड़ी में जेब लगाने का प्रावधान संभव नहीं है तथा हाथ में पर्स न होने पर महिलाओं को मुश्किल का सामना करना पड़ता है.

अंत में हम पुनः उपभोक्ता क्रांति हेतु उद्यमियों को मौलिक चिंतन एवं विचार के लिए प्रेरित करना चाहेंगे. अपने जीवन में मनुष्य के प्रयोग की हर वस्तु पर एक दृष्टि डालिए और सोचिए कि इस में क्या सुधार संभव है. इस में क्या परिवर्तन किया जाए जिस से आम आदमी को लाभ पहुंचे.

याद रखिए, सेफ्टी पिन, फाउंटेनपेन, बाल प्वांइट पेन, रेजर, लाइटर और ऐसी कितनी ही सर्वसुलभ वस्तुओं का आविष्कार ऐसे ही चिंतन का परिणाम है. इसी मौलिक चिंतन की सफलता, भारत को आर्थिक सफलता और औद्योगिक स्वर्ण युग की ओर अग्रसर करेगी.

कौए के बारे में अनेक अंधविश्वास प्रचलित हैं, जिन का लाभ उठा कर कुछ तांत्रिकों ने अपनी तंत्र साधना में कौओं का जम कर उपयोग किया है. और आज भी वे कौओं को तंत्र का आधार बता कर वशीकरण आदि तंत्रों में खूब धंधेबाजी कर रहे हैं. एक तांत्रिक ने तो इस विषय पर पूरा ग्रंथ ही लिख डाला 'काक तंत्र.'

तांत्रिकों आदि ने उल्लू की तरह कौओं को अपने लिए उपयोगी बता कर उन के बारे में अनेक भ्रामक धारणाएं भी प्रचलित कीं, जिन के परिणामस्वरूप समाज द्वारा कौओं की प्रायः उपेक्षा की जाने लगी. पक्षियों में इसे 'चांडाल,' 'धूर्त,' 'महाधूर्त,' 'सर्वभक्षी' आदि संज्ञाएं दे कर तिरस्कृत किया जाता है.

तांत्रिकों आदि के द्वारा रचे गए इस षड्यंत्र के बावजूद कौओं की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ा. वे समाज द्वारा तिरस्कृत हो कर भी मस्त हैं और मौका पड़ने पर मनुष्यों की सहायता भी करते हैं.

कोयल, पपीहा, हारिल आदि पक्षियों की हम चाहे जितनी प्रशंसा करें, पर ये कौए ही हैं जो अनादि काल से हमारे साथ रहे हैं. आज भी जहां आबादी अधिक है, वहां कौए अधिक मिलते हैं. कलकत्ता इस का प्रत्यक्ष उदाहरण है, जहां सर्वाधिक कौए हैं.

सामान्यतः कौओं की दो जातियां पाई

लेख • अनिलकुमार मिश्र



काला, कर्कश कौआ, जिसे अपशगुन मान कर तिरस्कृत तक किया जाता है, से कोई दोस्ती भी कर सकता है, विश्वास नहीं होता. लेकिन दिल्ली निवासी नवीनकुमार पिछले 24-25 वर्षों से इस पक्षी के साथ दोस्ती निभा रहे हैं. आखिर उन्हें तोता, मैना छोड़ कर इस धूर्त समझे जाने वाले पक्षी में दोस्ती लायक क्या दिखाई दिया?

जाती हैं, छोटी अर्थात करीब 17 इंच (43 सेंटीमीटर) और बड़ी अर्थात लगभग 24 इंच (61 सेंटीमीटर) तक. बड़ी जाति के कौए बहुत काले होते हैं और छोटी जाति के कौए कुछ स्लेटी से.

रंग की समानता होने के कारण नर और मादा कौओं में भेद कर पाना कुछ कठिन है.

कौआ बेहद चालाक पक्षी है. यह बढ़चढ़ कर छेड़खानी करता है. दूसरों के अंडे चुराता है, उन्हें निर्दयता से फोड़ता है. मेढकों, छिपकलियों आदि को चोंच मार कर तंग करता है.

कौओं में पारस्परिक एकता अधिक दिखाई देती है. किसी एक कौए को मारने का मतलब है हजारों कौए इकट्ठे करना. ये विपदाग्रस्त साथी के लिए कुछ उठा नहीं रखते. किसी कौए के घोंसले के पास आदमी के जाने पर कौए भड़क उठते हैं. ऐसी ही दशा में बुरे फंसे एक अंगरेज ने लिखा है :

"मैं एक बार एक पेड़ की डाल पर बने कौए के घोंसले के पास गया. मैं ने कौए के एक बच्चे को उठा लिया. उस के मांबाप मुझे तब तक गालियां देते रहे जब तक मैं ने उन के बच्चे को वापस यथास्थान नहीं रख दिया. लेकिन जब मैं पेड़ से नीचे उतरा और अपने घर की ओर मुड़ा तो उन्होंने अपमानजनक ढंग से मुझ पर हमला बोल दिया. मेरे नंगे सिर पर चोंचें मारीं. जब मैं भयभीत हो कर घर के बरामदे में चढ़ रहा था तो एक कौए ने मेरे बाएं पैर की एड़ी में अपनी चोंच से जोरदार प्रहार किया."

सर्दी खत्म होते ही कौए अपने नीड़ के निर्माण में लग जाते हैं. इन की यह निर्माण कला भी विचित्र है. घोंसला बनाने में ये केवल घासफूस का ही इस्तेमाल करते हों ऐसी बात नहीं. घरों से चुराई गई धातु की चीजें, टीन के टुकड़े आदि के साथ ये और भी कीमती चीजों से उसे सजाने का प्रयास करते हैं. बंबई में एक बार कौए के घोंसले में चश्मे के कई सुनहरे फ्रेम मिले थे, जिन की तत्कालीन कीमत 400 रुपए थी.

मादा कौआ 3 से 7 अंडे देती है. कौआ

कौओं की दावत

कुमाऊं के पहाड़ी अंचलों में एक ऐसा त्योहार भी मनाया जाता है जिस में एक विशेष प्रकार का पकवान कौए को खिलाने की प्रथा है. 'घुघुतिया' नामक इस त्योहार में आटे व गुड़ से 'घुघुत' बनाए जाते हैं जिन्हें घी में तल कर चाव से खाया जाता है और कौओं को भी खिलाया जाता है.

कौए के इस विशेष स्वागतसत्कार के पीछे इन्हीं 'घुघुतों' से संबंधित एक रोचक कथा प्रचलित है. कहते हैं कि एक बार किसी दरिद्र व्यक्ति ने इन की माला बना कर धूप में सुखाने रखी तो कौआ उसे उठा ले गया और अगले दिन मोतियों की माला उस के स्थान पर डाल गया. इसी अंधविश्वास के आधार पर आज भी इस दिन बच्चों के गले में ऐसी मालाएं पहना दी जाती हैं और फिर वे कौए को पुकारते हैं, 'काले कौए आजा, घुघुती माला लेजा, मोती की माला देजा.'

कारण आदमी का लालच या अंधविश्वास कुछ भी हो लेकिन इसी बहाने कौओं की तो मजेदार दावत हो ही जाती है.



कौओं को पनीर खिलाते नवीनकुमार : अंधविश्वास की उपेक्षा कर दोस्ती को प्रगाढ़ता प्रदान करने की कोशिश. ▲

पूरी लगन से उन की रखवाली करता है. फिर भी 'चतुरों में चतुर' कहा जाने वाला कौआ यहां कोयल से मात खा जाता है. नर कोयल उसे अपनी ओर आकर्षित कर के दूर भगा ले जाता है, इतनी देर में मादा कोयल अपना काम कर देती है.

कौए जिस तत्परता एवं एकता से दूसरों को दंड देते हैं, उसी तरह से अपने साथियों को भी दंडित करते हैं. यदि कोई कौआ ऐसा काम कर बैठता है जो इन की जाति पर कलंक लगाए तो आसपास के सैकड़ों कौए मिल कर एक पंचायत करते हैं. उन के निर्णय का सख्ती से पालन किया जाता है. गंभीर अपराधों में ये कभीकभी मृत्युदंड तक दे देते हैं.

कौए दूसरों से सहायता की अपेक्षा नहीं करते. वे स्वावलंबन के धनी होते हैं और अपनी रक्षा स्वयं करते हैं. पक्षी संरक्षण कानून के अंतर्गत कई पक्षियों ने संरक्षण पा लिया है, पर कौए इस कानून के लाभ से कोसों दूर हैं. जब जो चाहता है, उन पर निशाना साध लेता है.

हां, श्राद्ध आदि के मौकों पर प्रायः कौओं को पूछ लिया जाता है. इन्हें बुला कर खिलायापिलाया जाता है, पर जैसे ही मनुष्य का मतलब पूरा हुआ इन्हें भगा दिया जाता है. तभी तो किसी ने कहा है :

'जब लगि काग सराध पख,
तब लगि को सम्मान.'

इतने पर भी कौओं में मनुष्य के प्रति बदले की भावना नहीं आती. ये मनुष्यों से द्वेष नहीं रखते, बुलाने पर दौड़े चले आते हैं. किंतु रोज इन्हें कौन बुलाता है? शायद कोई नहीं.

लेकिन ऐसी बात नहीं है. कोई तो है जो इन का शुभचिंतक है. जानते हैं यह कोई कौन है? यह हैं दिल्ली के विकासपुरी निवासी नवीनकुमार खन्ना, जिन्होंने समाज में प्रचलित तमाम अंधविश्वासों, भ्रामक धारणाओं से हट कर कौओं से दोस्ती बना रखी है.

नवीनकुमार खन्ना नित्य प्रातः लगभग 7 बजे अपनी छत पर कौओं के आगे दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं, मित्रता को प्रगाढ़ करते हैं और कौए हैं कि उन की एक आवाज पर उन्हें आ कर घेर लेते हैं. वे उन के हाथ से आटा, दही और पनीर खाते हैं और मस्त रहते हैं. इतना ही नहीं उन के द्वारा फेंक कर दिए गए खाद्य को वे क्रिकेट की गेंद की तरह चोंच में 'कैच' कर लेते हैं.

यहां प्रस्तुत हैं नवीनकुमार खन्ना से हुई बातचीत के कुछ प्रमुख अंश :

कौओं से आप की दोस्ती कब और कैसे हुई?

लगभग 25 वर्ष पूर्व मैं एक प्राइवेट फर्म में नौकरी करता था. कार्यालय घर के करीब ही था. कई बार मैं दोपहर का खाना खाने के लिए घर आ जाता. उन्हीं दिनों मेरे एक सहयोगी खाने की पहली रोटी के टुकड़े कर के चिड़ियों को खिलाते थे. उन के खाने के इंतजार में चिड़ियां पहले से ही पंक्तिबद्ध हो कर तार पर बैठ जाती थीं. उन की देखादेखी मैं ने भी चिड़ियों को रोटी खिलानी शुरू कर दी. घर में खाना खाते समय मैं आहार के पहले कुछ ग्रास चिड़ियों के लिए छत पर फेंक देता. मैं ने कभी इस बात पर गौर नहीं किया कि कोई कौआ भी इस में हाथ बंटाता है.

एक दिन मैं ने अन्य चिड़ियों की तरह उस कौए को भी खाने की प्रतीक्षा में कपड़े सुखाने वाले तार पर बैठे देखा. मैं ने थोड़ा बड़ा टुकड़ा उस की ओर अलग से फेंका. वह उसे खा गया और दूसरे टुकड़े का इंतजार करने लगा. इस प्रकार मेरा पहली बार उस कौए से परिचय हुआ, जबकि कौआ पिछले कई महीनों से मुझ में दिलचस्पी ले रहा था.

आप ने कई कौओं से दोस्ती की है. किंतु सब से लंबी दोस्ती किस से निभी है?

उक्त पहले कौए से मेरी दोस्ती करीब 19 वर्ष तक चली. शायद और भी चलती पर तब तक हमें कालकाजी का इलाका छोड़ कर विकासपुरी आना पड़ा. अतः आप कह सकते हैं कि कालकाजी वाले कौए से मेरी दोस्ती सब से ज्यादा समय तक चली.

किस दोस्त कौए ने आप को सर्वाधिक प्रभावित किया?

कालकाजी वाले कौए ने.

आप की देखादेखी आप के किसी मित्र या अन्य सज्जन ने कौओं की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया है?

हां, मेरे कार्यालय के कुछ साथियों ने काफी समय पहले कोशिश की थी, जिस में उन्हें कुछ सफलता भी मिली, पर उन की दोस्ती अधिक समय तक नहीं चली. शायद वे कौओं को नियमित रूप से समय नहीं दे पाते थे. कुछ और लोगों ने भी यह प्रयास किया था परंतु उन का भी यही हाल रहा.

आमतौर पर लोग तोता, कबूतर, तीतर आदि पक्षियों को पालते हैं और उन्हीं से दोस्ती रखते हैं, किंतु आप ने दोस्ती के लिए कौओं को क्यों चुना?

जैसा कि मैं ने शुरू में ही बताया, कौओं से दोस्ती का कोई खास कारण नहीं था. यह तो बस यों ही हो गई. फिर मुझे अपनेआप ही कौए अच्छे लगने लगे. हो सकता है, मेरे अवचेतन में कहीं कौओं की सामाजिक उपेक्षा की प्रतिक्रिया हुई हो और बाद में यह एक शगल बन गया.

प्राचीन काल से ही कौआ अपनी बोली, अपने रंग और स्वभाव के कारण एक उपेक्षित पक्षी रहा है. आप का क्या विचार है?



कौओं से दोस्ती मात्र मनोरंजन ही नहीं, उन्हें समझने का प्रयास भी है.



कौआ केवल छेड़छाड़ करने वाला धूर्त पक्षी ही नहीं है. समझदारी व दोस्ती निभाने में भी यह किसी से कम नहीं है.

और अंधविश्वास प्रचलित हैं. क्या आप भी उन्हें मानते हैं?

नहीं, हम अगर ऐसा कुछ मानते तो कौओं से दोस्ती कैसे रख पाते. हम तो कौओं को अपना पक्षी दोस्त मानते हैं.

कौओं से निरंतर बढ़ती हुई दोस्ती के पीछे आप का उद्देश्य केवल मनोरंजन यानी मजे लेना है अथवा आप ने उन के बारे में कुछ विशेष अध्ययन भी किया है?

संभव है आरंभ में मैं ने कौओं की ओर दोस्ती का हाथ कुतूहलवश ही बढ़ाया हो, पर जैसेजैसे कौओं से मेरी निकटता बढ़ती गई, वैसेवैसे वे मेरे अध्ययन का केंद्र बनते गए. मैं ने कौओं की विभिन्न बोलियों को समझने का प्रयास किया है. साथ ही यह भी परीक्षण किया है कि कौए किन रंगों को पसंद करते हैं और किन रंगों को नापसंद. यद्यपि यह कह पाना सर्वथा कठिन है कि कौए अमुक रंग को अधिक पसंद करते हैं और अमुक को कम, किंतु इतना निश्चित है कि वे रंग चयन की क्षमता रखते हैं.

कौओं से अपनी दोस्ती के 24-25 वर्षों में आप सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्षण कौन सा मानते हैं, जब कौओं ने आप को प्रभावित किया हो?

एक बार कौआ मेरे हाथ से अंडा झपट ले गया. उस समय मैं दूसरी ओर देख रहा था. अगले दिन से मैं दूसरी तरफ देखते हुए अपना आहार वाला हाथ उस की ओर बढ़ाता. जिस दिन कौए ने मेरे हाथ से पहली बार खाना लिया था, उस दिन मुझे अत्यंत आह्लाद हुआ था. मैं भागा हुआ पत्नी के पास गया, "देखो, आज कौआ मेरे हाथ से खाना ले गया है," वह मुसकरा भर दी. •

मैं इस बात से सहमत नहीं कि कौए को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाए. कौआ बहुत ही चालाक पक्षी है. वह प्राचीन काल से ही मनुष्यों के साथ रहा है. जीवजंतुओं में कुत्ते और हाथी को अत्यंत बुद्धिमान माना जाता है. डौल्फिन मछली भी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध है. लेकिन मेरे विचार से जीवजंतुओं में सर्वाधिक बुद्धिमान कौआ है. लोक साहित्य में जो किस्से मिलते हैं वे सचाई पर ही आधारित प्रतीत होते हैं.

आप के कौआ प्रेम का आप के परिवार के सदस्यों अथवा पड़ोसियों ने कभी विरोध किया है या उसे नापसंद किया है?

सामान्यतः ऐसी कोई बात नहीं है. हमारे सभी पड़ोसी बड़े अच्छे स्वभाव के हैं. शुरूशुरू में कुछ लोगों ने हलकी सी आपत्ति उठाई थी, जब कौओं ने उन के सूखते हुए कपड़े खराब कर दिए थे. पर बाद में वे सब मेरे इस शौक से भलीभांति परिचित हो गए. वे भी मेरी इस दोस्ती का समयसमय पर आनंद लेते रहते हैं. हां, कालकाजी वाले मकान में मेरे भाईसाहब ने कुछ विरोध अवश्य किया था. फिर वह भी शांत हो गए थे.

कौओं के बारे में अनेक भ्रामक धारणाएं

'शेयर बाजार पर निर्भर



लेख • वेद अग्रवाल

पिछले वर्ष हजारों करोड़ रुपए का प्रतिभूति घोटाला प्रकट होने पर 'शेयरों के भावों में भारी गिरावट आई थी. लाखों छोटे विनियोक्ता, जिन्होंने अपनी खूनपसीने की कमाई और पारिवारिक बचत नई तथा पुरानी कंपनियों के 'शेयरों तथा डिबेंचरों में लगा रखी थी और घोटाला प्रकट होने तक 'शेयर भावों में आए उछाले पर फूले नहीं समा रहे थे, 'शेयरों के भाव टूटने पर अपने कर्मों को कोस कर रह गए.

उस के बाद भारतीय कंपनियों के 'शेयरों में कुछ चमक आई थी, लेकिन फरवरी के अंत में भारत सरकार का वर्ष 1993-94 का बजट आते ही वह चमक ही नहीं चली गई, भावों में भी भारी गिरावट आई. 'शेयर बाजार के अधिकारियों को गिरावट रोकने के लिए बिकवाली पर नियंत्रण लगाने पड़े. लेकिन गिरावट की प्रवृत्ति आज भी खत्म नहीं हुई है और यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि छोटेबड़े पूंजी निवेशकर्ताओं का पूंजी बाजार पर से और कंपनियों की मुनाफे कमाने की क्षमता पर से विश्वास उठ गया है.

पूंजी बाजार विशेषज्ञों तथा अर्थ-'शास्त्रियों की इस संबंध में अलगअलग राय है. उन से सहमत होना कठिन है. यद्यपि केंद्रीय बजट के बाद 'शेयर बाजार में आ रही मंदी की बढ़ोतरी से चिंतित केंद्रीय वित्तमंत्री डा. मनमोहन सिंह तथा बाद में आर्थिक मामलों के सचिव मंटोक सिंह अहलुवालिया ने कारपोरेट सेक्टर (कंपनियों)

है देश का आर्थिक भविष्य



की शिकायत अगले बजट में दूर करने का आश्वासन दिया था परंतु डूबते हुए शेयर बाजार को इन तिनकों से कोई सहारा नहीं मिला. एक दलाल का कहना था कि जिस प्रकार द्रोपदी की लाज आश्वासन से नहीं, त्वरित काररवाई से बची थी उसी तरह आज शेयर बाजार को आश्वासन नहीं तुरंत राहत की जरूरत है.

केंद्रीय बजट से पहले दिन दिल्ली व बंबई में शेयर बाजार का सूचकांक क्रमशः 619.19 अंक और 2813.2 अंक था. इस के बाद 9 मार्च तक 10 दिनों में 7 दिन कारोबार हुआ और इस अवधि में दिल्ली में यह लुढ़क कर चालू वित्तीय वर्ष के सब से निम्न स्तर 535.28 अंक पर आ गया. इसी अवधि में बंबई में सूचकांक 2813.2 अंक से फिसल कर 2336.96 अंक रह गया. उल्लेखनीय है कि चालू वित्तीय वर्ष गत अप्रैल से शुरू हुआ और 2 अप्रैल के दिन सूचकांक बंबई में लगभग 4500 के शिखर पर जा पहुंचा था.

बजट के बाद शेयर भावों के स्तर में जो गिरावट आई, वह सामान्य नहीं थी. 30 प्रमुख शेयरों का सूचकांक 11.89% गिर कर 2337.9 पर और 100 प्रमुख का सूचकांक और भी अधिक 12.24% गिर कर 1061.3 पर आ गया. कहा यह जा रहा था कि बजट में कंपनी कर की दरों में कमी न किए जाने से शेयरों के भाव टूटे हैं. जिस तरह से शेयर औंधे मुंह लुढ़के, उस से नहीं लगता कि कंपनी कर की दरों में कमी न किया जाना उस का कारण था. यह मानने का कारण यह है कि जिन बड़ी कंपनियों ने 1991-92 में 1330 करोड़ रुपए का करपूर्व लाभ दिखाया था, उन्होंने करों के लिए कुल 333 करोड़ रुपए की व्यवस्था की थी. यदि

यह कंपनी कर 10% भी घटाया जाता तो उन्हें कुल मिला कर 40-50 करोड़ रुपया और बच जाता.

लेकिन वित्तमंत्री ने नए बजट में उत्पाद तथा आयात शुल्कों में ही 5000 करोड़ रुपए की रिआयतें दीं और व्यापारियों के लिए रुपए को डालरों में पूर्ण परिवर्तनीय बना दिया. इस का शेयर बाजार पर अनुकूल असर क्यों नहीं पड़ा? इस का उत्तर कोई भी अर्थशास्त्री नहीं दे पा रहा था. गिरावट की शुरुआत अगर बजट से हुई तो लुढ़कने की गति धन की तंगी से बढ़ गई.

यूनिट ट्रस्ट के आर्थिक संकट में होने की खबर से भी धक्का पहुंचा और बजट में यूनिटधारी कंपनियों को डिविडेंड आय पर आयकर में रिआयत कम करते हुए 2 साल बाद समाप्त करने के प्रावधान से यूनिट ट्रस्ट का आर्थिक संकट और बढ़ जाएगा, क्योंकि कारपोरेट सेक्टर के पास 4-5 हजार करोड़ रुपए के यूनिट हैं जो वह बेचना चाहता है.

चांदी के आयात की अनुमति व 15 मार्च से 3 माह के लिए शुरू की गई स्वर्ण बांड स्कीम के कारण अनिवासी भारतीयों का शेयर बाजार में पूंजी निवेश घट रहा था. खरीफ के बाद रबी के मौसम की नई कृषि जिंसों की आवक को देखते हुए जिंस बाजारों में धन की जरूरत बढ़ गई थी.

वर्तमान वित्तीय वर्ष में देश के निवेशकों की 20-25 हजार करोड़ रुपए की पूंजी शेयरों में फंस जाने से आम निवेशकों की जेब भी खाली हो रही थी. इस के अलावा पिटे हुए शेयर बाजार में और पूंजी निवेश के बजाय अब कारोबारी अपनी फंसी हुई रकम निकालने के चक्कर में थे. इसी लिए शेयर बाजार में बिकवाली का जोर ज्यादा था.

शेयर बाजार के नीचे जाने की तब कोई सीमा तय नहीं की जा सकती थी. बाजार जिस आधार पर टिका हुआ था, वह आधार ही हिलता हुआ नजर आ रहा था. यह आधार क्या था? शेयर बाजार का मुख्य आधार रोकड़ा सप्लाई यानी धन की उपलब्धता होती है. यह नकद धनराशि बाजार से इस समय बिलकुल गायब थी. रोकड़ा तंगी बाजार को किसी भी सूरत में ऊपर नहीं उठने दे रही थी. बदला दरें सामान्य 1½% तक हो रही थीं और बाजार इस के बावजूद प्रत्येक समायोजन अवधि में नीचे जा रहा था, जिस का लाभ मंदड़िए उठा रहे थे.

बाजार की इस सतत गिरती हालत से तब तेजड़ियों के खेमों में घबराहट नहीं बल्कि दहशत फैलने लगी थी. इस खेमे की हालत लगातार बद से बदतर होती जा रही थी और प्रत्येक समायोजन अवधि पर इसे रोकड़ा एकत्र कर मंदड़ियों की जेब में भरना पड़ रहा था. यह स्थिति एकतरफा जैसी थी. बाजार के एकतरफा होने पर सब से बड़ी समस्या रोकड़ा की ही आती है. जब यह समस्या भयंकर रूप धारण कर लेती है

शेयर के मूल्यों में मंदी का जो सिलसिला प्रतिभूति घोटाले के प्रकट होने से शुरू हुआ था उस में वर्ष 1993-94 के बजट प्रावधानों से और तेजी आ गई है. इस से शेयर बाजारों में अनिश्चितता छाई हुई है. ढुलमुल आर्थिक नीति और सार्वजनिक क्षेत्र की विफलता से उत्पन्न इस अभूतपूर्व आर्थिक संकट का मुकाबला क्या हमारी राजनीतिक रूप से अस्थिर सरकार कर पाएगी?



शेयर बाजारों में व्याप्त मंदी के संकट से चिंतित वित्तमंत्री डा. मनमोहन सिंह.

तो 'भुगतान' की समस्या बाजार में पैदा हो जाती है.

तब बाजार इसी दिशा में बढ़ रहा था. ठीक वही स्थिति पैदा हो रही थी जो हर्षद मेहता कांड के बाद पिछले वर्ष पैदा हुई थी. उस दौरान मंदड़ियों पर संकट आया था और उन के टिकट बिके थे. इस बार तेजड़ियों पर संकट आया और उन के टिकट बिकने की नौबत आने लगी. दोनों परिस्थितियों में एक गुणात्मक अंतर था. हर्षद मेहता कांड में आर्थिक अवयवों के बहाने बाजार ऊपर जा रहा था और इस बार राजनीतिक अवयवों के बहाने बाजार नीचे जा रहा था.

दोनों ही परिस्थितियां शेयर बाजार पर गुणात्मक प्रभाव डालती हैं. अंतर सिर्फ यह है कि पहली परिस्थिति की पोलपट्टी खोलने के लिए कोई तंत्र नहीं है. और वास्तव में इस में खोलने के लिए कुछ है भी नहीं, स्वयं राजनीति ही इस का जवाब है. अतः दूसरी परिस्थिति का गुरुत्व पहली परिस्थिति के गुरुत्व से बहुत भारी और विशाल दीखता है. इस का सीधा अर्थ यही निकलता है कि सब कुछ राजनीति में ही समाहित है. इसी पर शेयर बाजार का भविष्य निर्भर है.

शेयर भावों में इतने भारी उतार से छोटे पूंजी विनियोक्ता डर गए. जिन लघु विनियोक्ताओं के शेयरों व यूनिटों का भाव गिरा, उन से सहानुभूति दिखाने से कोई लाभ नहीं. जब वे प्रतिभूति घोटाला प्रकट होने से पूर्व खुलेआम शेयरों के जुए में बढ़चढ़ कर दांव लगा रहे थे और उन्हें अपनी पूंजी दिनदूनी होती लग रही थी, तब वह संयम की सलाह देने वालों को मूर्ख बताने से नहीं अघाते थे. जब जुए में उन का धन डूब गया या आधा या तिहाई ही बचा, तो कोई क्या करे.

सरकार भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती या उस में सुधार के जो भी दावे करे, भारतीय उद्यमों की पुरानी तथा नई पूंजी पर भरपूर मुनाफे कमाने की क्षमता बहुत कम है. उपभोक्ता पिछले 3-4 वर्षों में ही हजारों करोड़ रुपए नए शेयरों व यूनिटों में लगा चुके हैं, लेकिन उन्हें कंपनियों ने बैंक ब्याज के बराबर लाभांश भी नहीं दिया है. वे सब शेयरों के भाव चढ़ने की उम्मीद में बैठे हैं. भारतीय कंपनियां अपना कार्यकलाप सुधारेंगी और पर्याप्त लाभ कमा कर शेयरधारकों को बांटेंगी, ऐसी भी कम आशा है.

वैसे बजट के बाद जिस प्रकार शेयर बाजार गिरा है, उस का कारण आर्थिक कतई नहीं था. अर्थशास्त्री या शेयर पंडितों की दोटूक राय यही थी कि बजट से खुली अर्थव्यवस्था का द्वार और विशाल हुआ है. वस्तुतः पिछले वर्ष के बजट ने जो दूरगामी आर्थिक परिणाम अपेक्षित किए थे उन्हीं का प्रतिफल इस वर्ष के बजट में है, फिर शेयर बाजार नीचे क्यों जाए? इस का उत्तर राजनीति में ही मिलेगा.

केंद्र की नरसिंह राव सरकार जिन झंझावातों का सामना कर रही है, वह उस

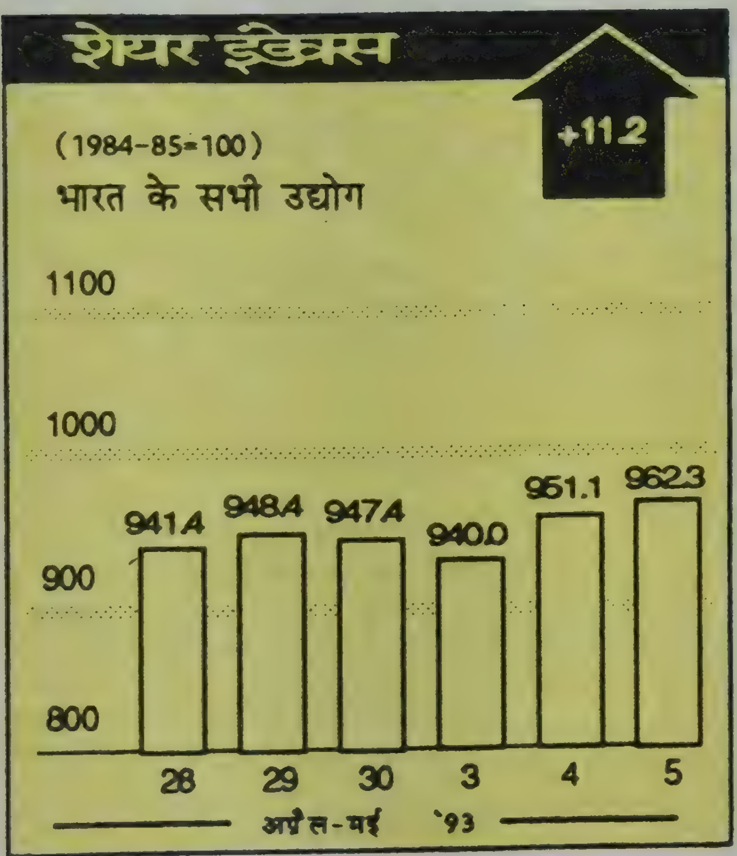
की अपनी आंतरिक क्लिष्ट समस्याएं हैं. इन से उबरने के लिए कोई राजनीतिक तजवीज ही कारगर हो सकती है, जो फिलहाल बन नहीं पा रही है. शेयर बाजार का एक भाग प्राइमरी मार्केट भी थोड़ा ठंडा पड़ने लगा. बहुत सी कंपनियां अपने नए इशू स्थगित कर रही थीं. इन के लिए अंडरराइटर नहीं मिल रहे थे. जो इशू आ रहे थे उन में अभिदान सीमित हो रहा था. अतः शेयर बाजार धराशायी होने की मुद्रा में था.

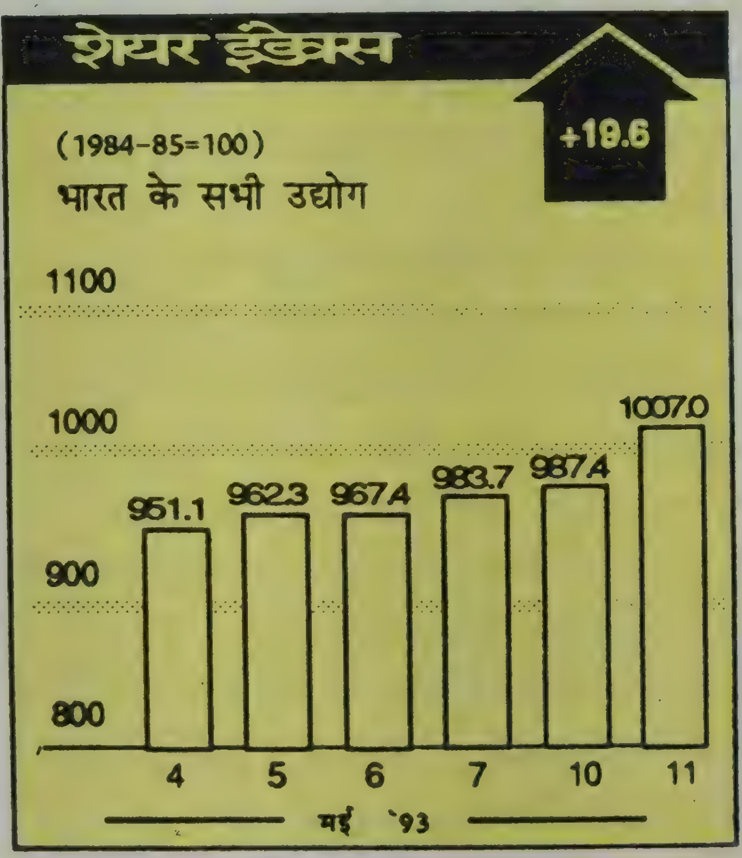
उधर दूसरी ओर सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों के 49% तक निजीकरण के जरिए पहले चरण में 1800 करोड़ रुपया इकट्ठा करने के स्वयं सरकार के इरादों पर पानी फिर गया. वैसे तो कई महीनों से सरकारी प्रतिष्ठानों के शेयरों के दाम गिर रहे थे लेकिन बजट के बाद शेयर बाजार जिस तेजी से लुढ़का, उस से कहीं अधिक तेजी से सरकारी प्रतिष्ठानों के शेयरों के दाम गिरे. इन शेयरों के मूल्य आरक्षित दर से भी कहीं नीचे जा गिरे. कई प्रतिष्ठानों के शेयरों में तो खरीदार ही नहीं रहे.

वैसे जब सरकार ने पहले चरण में शेयर बेच कर 1800 करोड़ और 1993-94 के दूसरे चरण में 3500 करोड़ रुपया जुटाने का ऐलान किया था तब ही आशंकाएं व्यक्त की गई थीं कि सरकारी प्रतिष्ठानों की हालत को देखते हुए शायद ही लोग इन में शेयरों को खरीदने में दिलचस्पी दिखाएं. लेकिन हर्षद मेहता और अन्य शेयर दलालों ने बाजार में जो हड़कंप मचाया उस के बाद से सरकारी प्रतिष्ठानों के शेयरों के दाम लगातार गिरते चले गए.

जब सभी शेयरों के दाम आसमान छू रहे थे तब भी सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों के शेयर बहुत सस्ते में बेचे गए. स्टील अथारिटी आफ इंडिया (सेल) का ही शेयर, जो एक वक्त 100 रुपए तक जा चढ़ा था, उस का दाम 20 रुपए से भी कम हो गया. वैसे अभी सरकार ने सभी सरकारी प्रतिष्ठानों के 20% शेयर ही बाजार में डाले हैं. बेहतर होता कि पहले चंद स्वस्थ प्रतिष्ठानों से निजीकरण की प्रक्रिया शुरू की जाती.

यह इसलिए भी जरूरी था कि काफी समय से सार्वजनिक क्षेत्र सफेद हाथी साबित हो रहा था और इस के अधिकांश प्रतिष्ठान भ्रष्टाचार, बदइंतजामी और राजनीतिक एवं नौकरशाही हस्तक्षेप के कारण घाटे पर चल रहे थे. ये प्रतिष्ठान तमाम ऐसे नियमों से बंधे थे कि इन के व्यवस्थापक व्यावसायिक स्तर पर स्वतंत्र रूप से फैसले नहीं कर पाते थे. इस कारण कभी भी संसाधन और श्रम प्रबंध को कारगर नहीं बनाया जा सका जो इन की सेहत के लिए बहुत जरूरी था.







स्टाक एक्सचेंज क्या निवेशकों को पुनः आकर्षित कर पाएंगे?

अब सरकार अपनी इस योजना में जिस मुकाम पर पहुंच गई है, वहां से कोई अच्छा रास्ता तो निकलता नजर आता नहीं. यही हो सकता है कि सरकार इन पर अपना एकाधिकार छोड़े और निजीकरण की सीमा 49% से ऊपर कर दे, चाहे शेयरों को सस्ते दामों पर ही क्यों न बेचना पड़े. यह इसलिए जरूरी हो गया है कि वर्तमान स्थिति में बनाए रखने से विशाल सार्वजनिक क्षेत्र एक राष्ट्रीय बोझ बन कर रह जाएगा. अगर आधे से अधिक शेयर निजी हाथों में रहते हैं तो कम से कम इन प्रतिष्ठानों के प्रबंधकों को व्यावसायिक स्वतंत्रता हासिल होगी और एक अधिक उत्पादक कार्य संस्कृति के विकसित होने का मार्ग प्रशस्त होगा.

शेयर बाजार में मजबूती

वर्ष 1993-94 का बजट पेश होने के बाद से देश के शेयर बाजारों में जो मंदी का रुख शुरू हुआ वह अप्रैल में बराबर जारी रहा. किंतु अप्रैल के आखिरी सप्ताह में इस रुख में परिवर्तन आया.

इकनामिक टाइम्स के सामान्य शेयरों के मूल्य सूचकांक के अनुसार 27-28 अप्रैल को शेयर कारोबार में सब से अधिक मंदी (सूचकांक 920) रहने के बाद अप्रैल के आखिरी दिनों में शेयरों के भाव बढ़ने शुरू हो गए और उस के बाद यह प्रवृत्ति कमोबेश जारी रही. फलस्वरूप मई के पहले हफ्ते में ही शेयरों का मूल्य सूचकांक (इकनामिक टाइम्स) 960 के स्तर को पार कर गया.

मई के दूसरे सप्ताह में भी शेयर बाजार का रुख तेजी की ओर ही रहा और शेयरों का मूल्य सूचकांक 1020 के स्तर को छूने लगा. फलस्वरूप देश के शेयर बाजारों में खरीदारों की भीड़ जुटने लगी. तथापि समझदार निवेशकों और दलालों का विचार यही था कि अभी जल्दबाजी न की जाए और पैसा सोचसमझ कर ही लगाया जाए.

मई के तीसरे सप्ताह में भी तेजी का रुख बना रहा. मुख्यमुख्य शेयरों के भावों में पर्याप्त वृद्धि हुई परंतु मई के अंतिम सप्ताह में सूचकांक फिर नीचे आ गया और शेयरों के भाव धड़धड़ा गिरने लगे.

सच तो यह है कि शेयरों के भाव भारतीय अर्थव्यवस्था की दशा को देखते हुए अपना वास्तविक स्तर ढूंढ़ रहे हैं. जब देश के औद्योगिक उत्पादन में 2-3% की उम्मीद है तो कंपनी मुनाफे कैसे बढ़ेंगे. शेयर भाव सट्टे की प्रवृत्ति से ही चढ़ सकते हैं. और देश में सटोरियों की कमी नहीं. सट्टे में छोटे विनियोक्ताओं को घाटा होना निश्चित है. भारत के विनियोक्ताओं ने तो नईपुरानी कंपनियों पर, यहां तक कि केवल कागजी वादे करने वाली कंपनियों पर भी उन के शेयर खरीद कर विश्वास किया है, लेकिन उस विश्वास को तो इन कंपनियों को, भले ही वे सरकारी क्यों न हों, निभाना ही है. ●

नए शेयर

पूंजी उगाहने की प्रवृत्ति जारी

लेख • कपिल अग्रवाल

शेयर बाजार की स्थिति पहले से कुछ संभली है. मई तक के एक वर्ष में 21, 112 करोड़ रुपए की रेकार्ड राशि विभिन्न कंपनियों द्वारा पूंजी बाजार से उगाही गई. गत वर्ष की इसी अवधि में यह राशि 5,574 करोड़ रुपए थी.

हालांकि ऊपरी तौर पर यह निष्कर्ष गलत निकलता है क्योंकि चंबल फर्टिलाइजर व बल्लारपुर इंड. जैसे विशाल निर्गम इस दौरान बिलकुल फ्लाप रहे. भारीभरकम प्रीमियम पर आए नए निर्गम भी शेयर बाजार में बहुत कम भावों पर खुले. पर हीरो होंडा, रिलायंस, टाटा ग्रुप की कंपनियां, एल.एम.एल., डी.सी.एम. जैसी अनगिनत कंपनियों के शेयर एक निश्चित स्तर पर टिके हैं और यही तथ्य इस बात को सिद्ध करता है कि शेयर बाजार में स्थिति कुछकुछ संभल रही है.

फ्लाप होने के बाद भी उद्यमियों का उत्साह व जनता के पैसे से मौज मारने की प्रवृत्ति रुकी नहीं है. 3-4 साल पहले एक निजी कंपनी (प्राइवेट लिमिटेड) बनाई. बिना कुछ किएधरे उसे 2-3 साल बाद पब्लिक कंपनी के रूप में परिवर्तित किया व पूंजी बाजार से करोड़ों डकार कर चुप बैठ गए. आजकल यही हो रहा है. इस बार की समीक्षा में ऐसी ही कंपनियां ली गई हैं.

निवेशकों को ऐसी कंपनियों से बचना



चाहिए. निजी यानी प्राइवेट लिमिटेड कंपनियां पब्लिक लिमिटेड कंपनियों में परिवर्तित केवल पूंजी बाजार से पैसा उगाहने को ही नहीं होतीं, बल्कि ऐसा तब होता है जब कंपनी 10-12 साल भलीभांति जम कर काम करे और फिर विस्तार, आधुनिकीकरण या नई परियोजना के लिए मालिकों को करोड़ों रुपयों की जरूरत हो. टाटा, बिड़ला, थापर, मोदी आदि तमाम बड़ेबड़े औद्योगिक घरानों की कंपनियां शुरू में निजी ही थीं. पर अब तो इसे भी पूंजी उगाहने का एक तरीका मात्र माना जाता है.

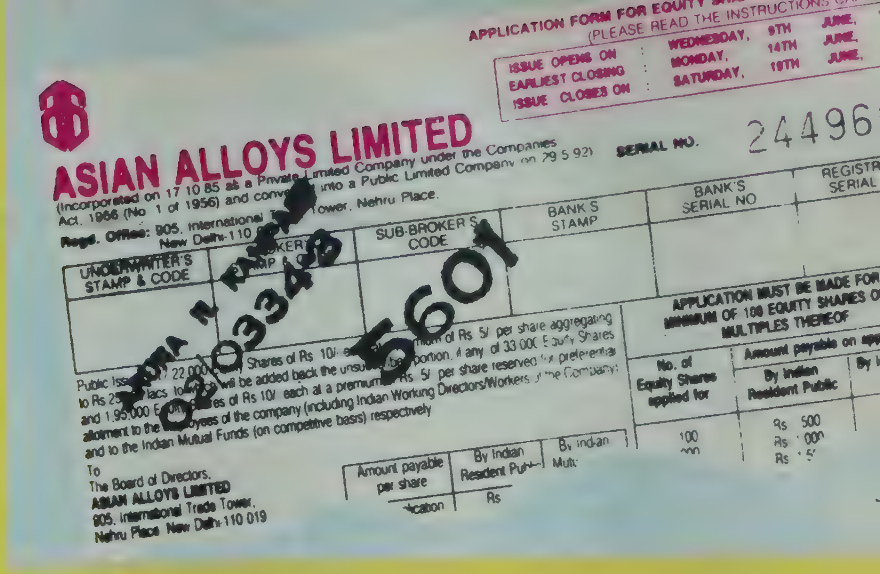
श्री पेसट्रोनिक्स लि. व राम लैदर ऐसी ही कंपनियां हैं जो पहले प्राइवेट लि. कंपनियों के रूप में स्थापित हुईं और बाद में (लगभग तुरंत ही) पब्लिक लिमिटेड के रूप में परिवर्तित हो गईं.

राम लैदर एक्सपोर्ट्स : केवल 60 लाख रुपए की कुल चुकता पूंजी वाली यह कंपनी 10-10 रुपए वाले 34 लाख शेयरों के साथ गत 9 जून को पूंजी बाजार में आई.

18 जनवरी 1988 को एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के रूप में स्थापित इस चमत्कारिक कंपनी को 30 मार्च 1992 में पब्लिक लिमिटेड के रूप में परिवर्तित कर दिया गया. चमत्कारिक इसलिए कि इस $3\frac{1}{2}$ साल की अवधि में कंपनी ने इतना अच्छा प्रदर्शन किया, इतना काम किया कि उसे एक और इकाई लगाने की आवश्यकता पड़ गई.

अब जरा एक नजर इस कंपनी के चमत्कारिक कारोबार पर.

बकौल प्रोस्पेक्टस कंपनी ने 18 जनवरी 1991 से व्यावसायिक उत्पादन आरंभ किया (18 जनवरी 1988 को स्थापित होने के बाद) और फिर वर्ष 1991-92 में 152 लाख रुपए का कारोबार कर लिया. अप्रैल 1992 से 31 दिसंबर 1992 तक के 9 महीनों में कंपनी ने 163 लाख रुपए का कारोबार किया, पर इन अवधियों में सकल लाभ, रिजर्व व सरप्लस,



ह्रास आदि कितने रहे यह बताना कंपनी ने आवश्यक नहीं समझा.

इस चतुर कंपनी ने सितंबर 1992 के साथ समाप्त छमाही में 6 फीसदी (अंतरिम) लाभांश भी वितरित कर दिया.

इस कंपनी के प्रवर्तकों की चतुरता दो और तथ्यों से भी परिलक्षित होती है—निर्गम का उद्देश्य व वित्तीय स्रोत.

व्यावसायिक उत्पादन के डेढ़ वर्ष के भीतर लाभांश घोषित करने वाली इस कंपनी को इस निर्गम की जरूरत एक नई इकाई स्थापित करने व कार्यशील पूंजी की कमी को पूरा करने के लिए हुई.

आश्चर्य है कि लाभांश घोषित करने वाली इस कंपनी के पास कार्यशील पूंजी तक का अभाव है.

कंपनी की कुल जरूरत 621 लाख रुपए है. पर अंशपूंजी के रूप में प्रवर्तक स्वयं कुल जरूरत का केवल 19 फीसदी लगा रहे हैं. जनता से 55 फीसदी राशि हासिल करने की कोशिश है.

एशियन एलायज लि. : 10-10 रुपए वाले 19 लाख 50 हजार शेयरों के साथ यह कंपनी गत 9 जून को पूंजी बाजार में आई. इस कंपनी की कुल चुकता पूंजी 80 लाख रुपए है, जिस में 1:1 के अनुपात में इसी साल जारी किए गए बोनस शेयर भी शामिल हैं. कंपनी ने प्रति शेयर 5 रुपए प्रीमियम मांगा है.

प्रवर्तकों का कंपनी में वास्तविक निवेश बहुत कम है और आधी अंशपूंजी बोनस शेयर के रूप में है.

अक्तूबर 1985 में प्राइवेट लि. कंपनी

के रूप में स्थापित हुई यह कंपनी 29 मई 1992 को पब्लिक लिमिटेड कंपनी बनी.

कंपनी के प्रोस्पेक्टस में 2-3 मुद्दे खटकने वाले हैं. कंपनी को अपने प्लांट के आधुनिकीकरण व अन्य जरूरतों की बाबत 813.33 लाख रुपए चाहिए. प्रवर्तकों ने स्वयं केवल 17 फीसदी व जनता से केवल 23 फीसदी राशि अंशपूंजी के रूप में मांगी है. यानी शेष 60 फीसदी रकम कर्जे व अन्य तरीकों से जुटाई गई है.

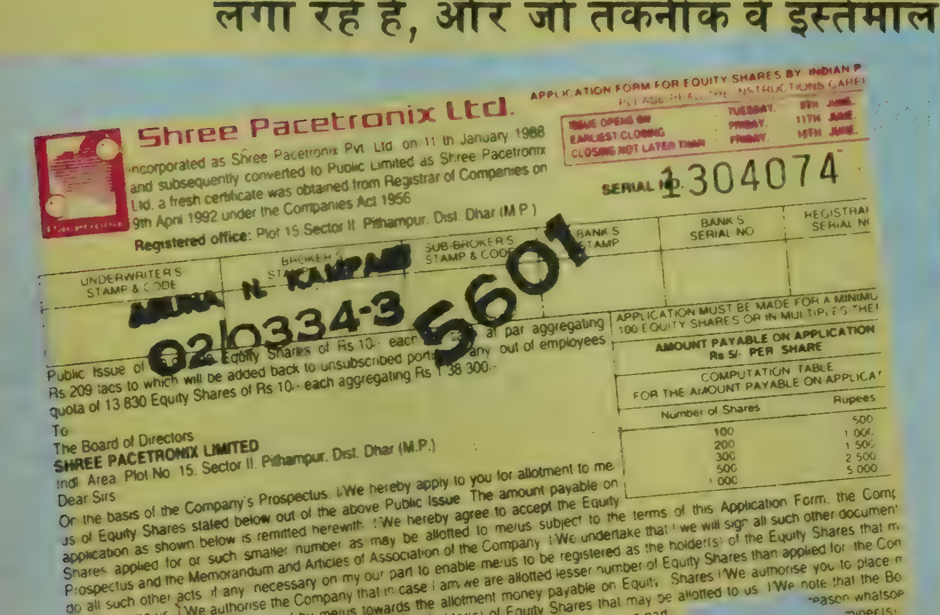
स्पष्ट है कि प्रवर्तकों की प्रवृत्ति कंपनी की अंशपूंजी कम से कम रखने की है. शेयर बाजार की दृष्टि से यह संतोषजनक अनुपात नहीं है. भविष्य में ऐसे प्रवर्तक लाभांश वगैरह कोई भी लाभ शेयरधारियों को देंगे, इस में संदेह है.

दूसरा खटकने वाला मुद्दा है कंपनी के कारोबारी आंकड़े. कंपनी की बिक्री में जबरदस्त उतारचढ़ाव है.

वर्ष 1989-90 में बिक्री व अन्य आय 974.33 लाख रुपए, 1990-91 में 881.37 लाख रुपए, 1991-92 में 1860.90 लाख रुपए व वर्ष1992-93 (9 माह) में यह 1752.24 लाख रुपए थी. इस उतारचढ़ाव का कोई कारण कंपनी ने नहीं बताया है.

श्री पेसट्रोनिक्स लि. : **10-10 रुपए वाले 20 लाख 90 हजार शेयरों के साथ यह कंपनी गत 8 जून को पूंजी बाजार में आई.** कंपनी 11 जनवरी 1988 को प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के रूप में अस्तित्व में आई थी व 9 अप्रैल 1992 को पब्लिक लिमिटेड बनी.

जैसा कि प्रवर्तकों ने स्वयं ही स्वीकार किया है, वे पहली बार औद्योगिक इकाई लगा रहे हैं, और जो तकनीक वे इस्तेमाल कर रहे हैं वह बिलकुल नई है व भारत में पहली बार लाई जा रही है.



ये सब इस निर्गम के संदेहास्पद पहलू हैं. ऐसी ही कुछ और बातें भी हैं, जैसे इस कंपनी के उत्पादन में प्रयुक्त होने वाला कच्चा माल विश्व में केवल 2 कंपनियों के पास ही उपलब्ध है. परियोजना की लागत 378 लाख रुपए है, जिस में प्रवर्तकों की भागीदारी केवल 21 फीसदी है. जनता के पल्ले 55 फीसदी हिस्सेदारी बांधी गई है.

निष्कर्ष यह है कि इस बेहद जोखिमभरी परियोजना को जनता के सहारे लगाया जा रहा है. प्रोजेक्ट हृदय का पेसमेकर व अन्य उपकरण बनाने का है. यह एशिया का दूसरा व भारत का पहला प्रोजेक्ट है. हालांकि प्रोजेक्ट तो ठीक है पर चूंकि प्रवर्तकों की स्वयं की भागीदारी बहुत कम (21 फीसदी) है इसलिए भी निवेश की दृष्टि से यह संदिग्ध निर्गम ही कहा जाएगा.

इस के अलावा, सन 1988 से 1993 तक कंपनी में क्या किया गया इस का स्पष्ट विवरण कंपनी ने नहीं दिया है. यह बात भी खटकने वाली है.

वत्स फाइनेंस लि. : **10-10 रुपए वाले 45 लाख शेयरों के साथ उद्योगों को वित्तीय सहायता देने के उद्देश्य से बनी यह कंपनी गत 2 जून को पूंजी बाजार में आई.** वैसे तो कंपनी अगस्त 1987 में अस्तित्व में आई थी पर कामकाज मार्च 1992 में ही शुरू किया गया. क्यों? यह प्रवर्तकों ने नहीं बताया.

कंपनी ने प्रोस्पेक्टस में कारोबारी आंकड़े भी दिए हैं, जो 31 मार्च 1992 को समाप्त वित्तीय वर्ष व 30 सितंबर 1992 को समाप्त छमाही के हैं. यानी कंपनी के कथनानुसार उस ने कारोबार शुरू किया मार्च 1992 में व आंकड़े दिए 31 मार्च 1992 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के.

खैर, इस कंपनी के प्रवर्तक हैं बी.वी. भट्ट, राजेंद्र मिगलानी व प्रदीप वकील. बी.वी. भट्ट वकील, सोलिसिटर व नोटरी



की फर्म चलाते हैं. प्रदीप वकील पहले दूध बेचते थे और फिर डेयरी, रेडीमेड गारमेंट, बटन व हीरों का धंधा कर कारोबार का अनुभव लेते रहे. राजेंद्र भिगलानी स्टील व धातु के व्यवसाय से संलग्न हैं.

निष्कर्ष यह कि इस कंपनी में एक भी प्रवर्तक ऐसा नहीं है जो इस वित्तीय कार्यक्षेत्र का विशेषज्ञ हो और इस तरह की कंपनियां चलाने का अनुभव रखता हो.

एक और रोचक तथ्य देखें : प्रवर्तक अंशपूंजी के रूप में अपने पास से एक भी पैसा लगाए बगैर, सारा का सारा पैसा जनता से बटोरना चाहते हैं. और इश्यू का उद्देश्य है कंपनी के लिए स्थान, फर्नीचर व फिक्सचर खरीदना.

इस के लिए कंपनी को 3½ करोड़ रुपए चाहिए. इस के बाद 4.07 करोड़ कंपनी चलाने को (कार्यशील पूंजी). यानी जनता कुरसीमेज तक खरीदने को पैसा दे व कंपनी चलाने के लिए भी. इस तरह के इश्यू भरोसा करने लायक नहीं होते. ऐसे निर्गमों में पैसा तभी लगाना चाहिए जब पूरी तरह से स्वयं आश्वस्त हो लें.

पुराने शेयर : हालांकि अधिकांश शेयर बाजारों में खरीद के बजाय बेचने का माहौल ज्यादा है पर ओसवाल एग्रो, मोदी रबड़ व अपोलो टायर्स जैसे शेयर खरीदे जा सकते हैं, खासतौर से अपोलो टायर्स. चर्चा है कि यह कंपनी साल छः महीने में बोनस दे सकती है. इस कंपनी ने अभी बोनस नहीं दिया है.

पिछले साल इन्हीं दिनों इस कंपनी के शेयर 225-255 रुपए के आसपास घूम रहे थे. इस समय भाव 150-160 रुपए के आसपास है. बोनस शेयर जारी होने पर निवेशक घाटे में तो रहेंगे ही नहीं. इस के अलावा इस कंपनी का लाभांश आदि देने में भी अच्छा रेकार्ड है. ●

अपोलो टायर्स

कारोबार विवरण

मार्च 1992 को समाप्त वर्ष

इक्विटी : 27.85 करोड़ रु.
बिक्री : 374.34 करोड़ रु.
सकल लाभ : 33.02 करोड़ रु.
ई.पी.एस. : 11.86 रु.
पी. ई.अनुपात : 10.96
लाभांश : 35 फीसदी

सितंबर 1992 के साथ समाप्त छमाही

बिक्री : 207.67 करोड़ रु.
सकल लाभ : 12.25 करोड़ रु.
ई.पी.एस. : 8.79 रु.
पी.ई. अनुपात : 21.3
अभी तक कोई बोनस नहीं.

5 साल में शेयरों का औसत मूल्य

वर्ष	औसत मूल्य (रु.)
1989	130
1990	110
1991	130
1992	250
1993	170

मुख्य विशेषताएं :

- अच्छे लाभांश का रेकार्ड.
- तुरंत खरीदने में फायदा.
- बोनस की संभावनाएं
- अधिक लाभांश की उम्मीद.

पेशेवर हो गए

लेख ● प्रकाश वेद

वह दिन हवा हो गए जब राजनीति जनसेवा का माध्यम थी और राजनीतिबाज जनसेवक हुआ करते थे. आज राजनीति एक लाभदायक पेशा बन गई है और राजनीतिबाज पेशेवर हो गए हैं, एक बेईमान पेशेवर. सन 1947 के पूर्व राजनीति का उद्देश्य देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराना था तो आजादी प्राप्त





हैं राजनीतिबाज

होने के बाद उस का उद्देश्य देश का नवनिर्माण तथा जनकल्याण था. परंतु स्वतंत्रता के कुछ ही वर्षों बाद जनसेवा एवं जनकल्याण की भावना का क्षरण प्रारंभ हो गया और उस की जगह राजनीतिबाजों के स्वार्थों ने ग्रहण कर ली.

स्वातंत्रयोत्तर भारत की राजनीति पर गौर किया जाए तो हम पाते हैं कि सभी राजनीतिक दलों की बागडोर उन्हीं लोगों के हाथ में है जो वर्षों से राजनीति के अतिरिक्त और कुछ नहीं करते रहे हैं. इस बात के अपवाद हो सकते हैं जैसे राममनोहर लोहिया व जयप्रकाश नारायण, जिन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ के बजाय जनकल्याण को प्राथमिकता दी. परंतु अधिकांशतः यही देखने में आता है कि राजनीतिबाजों ने अपनी आजीविका का माध्यम राजनीति को ही बना रखा है.

राजनीतिबाजों का पेशेवर हो जाना केवल भारत में ही नहीं हुआ है, यह प्रवृत्ति संपूर्ण विश्व में नजर आती है. परंतु भारत की अपेक्षा अन्य देशों में राजनीतिबाजों में व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठ कर जनकल्याण की भावना से कार्य करने तथा न्यायव्यवस्था एवं जनमत के अनुकूल आचरण की प्रवृत्ति अधिक रही है. अन्य देशों में स्थायी रूप से राजनीति करने तथा वंश दर वंश राजनीति को पेशा बनाने की प्रवृत्ति आमतौर पर नजर नहीं आती. अमरीका के राष्ट्रपतियों तथा इंगलैंड के प्रधानमंत्रियों का इतिहास इस बात का उदाहरण है. साम्यवादी देशों की चर्चा यहां असंगत होगी क्योंकि एक तो आज विश्व में साम्यवाद का लगभग अंत हो चुका है, दूसरे साम्यवादी देशों के सत्ता प्रमुख आमतौर पर मृत्युपर्यंत कुरसी पर बने रहे हैं. परंतु यहां सवाल भारत का है, जो एक लोकतांत्रिक देश है.



भारत में हम देखते हैं कि ऐसे हजारों नेता हैं जिन्होंने दोतीन दशकों से केवल राजनीति को ही अपनी आजीविका का माध्यम बना रखा है. इन

हमारे राजनीतिबाजों के स्वार्थ और लालच ने राजनीति को एक ऐसे पेशे में तबदील कर दिया जिस में नैतिकता, जनसेवा और देशभक्ति की बात करना महज जबानी जमाखर्च से अधिक कुछ नहीं रह गया है. अपना व अपनी संतानों का 'भविष्य' सुरक्षित करने में जुटे ये लोग आखिर कब तक देश की जनता को बेवकूफ बना कर अपना उल्लू सीधा करते रहेंगे?

नेताओं ने दशकों से राजनीतिक माध्यमों के अलावा व्यक्तिगत उद्यम से कोई अर्थोपार्जन नहीं किया. और यदि कुछ कमाई की भी तो वह इतनी कम कि उस से उन के परिवार का गुजारा संभव नहीं है.

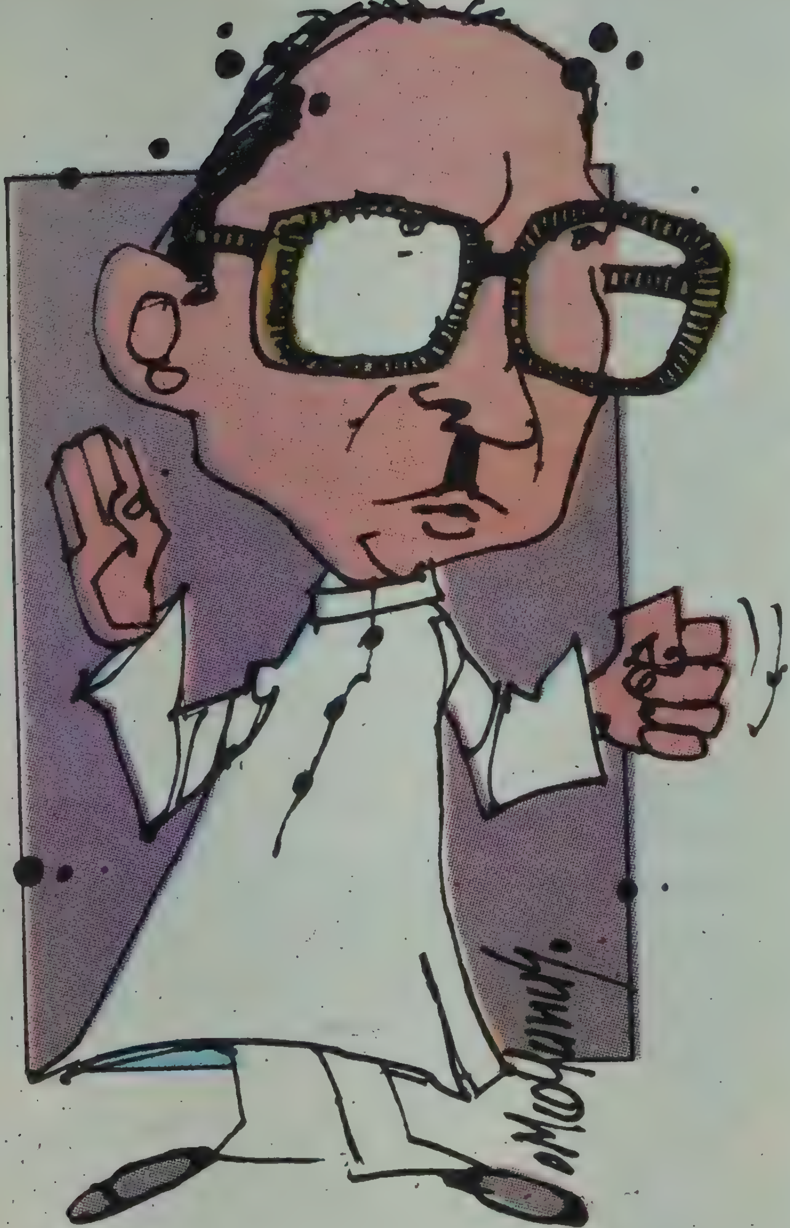
यहां तर्क दिया जा सकता है कि राजनीतिबाजों को उन के संसद सदस्य, विधायक अथवा स्थानीय निकाय का सदस्य रहते समय वेतन एवं भत्ते मिलते हैं. इस के अलावा बाद में उन्हें पेंशन भी मिलती है. लेकिन इस से तो यही सिद्ध होता है कि अब निस्स्वार्थ भाव से जनसेवा करना राजनीति का उद्देश्य नहीं रह गया है और वह भी अन्य पेशों की तरह ही है जिन में वेतन, भत्तों अथवा पारिश्रमिक तथा पेंशन की उपलब्धता होती है. यहीं पर एक सवाल यह भी उठता है कि जो वेतन, भत्ते अथवा पेंशन जनप्रतिनिधियों को मिलती है उस में क्या उस शानशौकत से रहा जा सकता है जिस प्रकार का जीवन हमारे जनप्रतिनिधि

लालकृष्ण आडवाणी : राजसत्ता हासिल करने के लिए आखिर कब तक लोगों को धर्म के नाम पर लड़वाते रहेंगे?

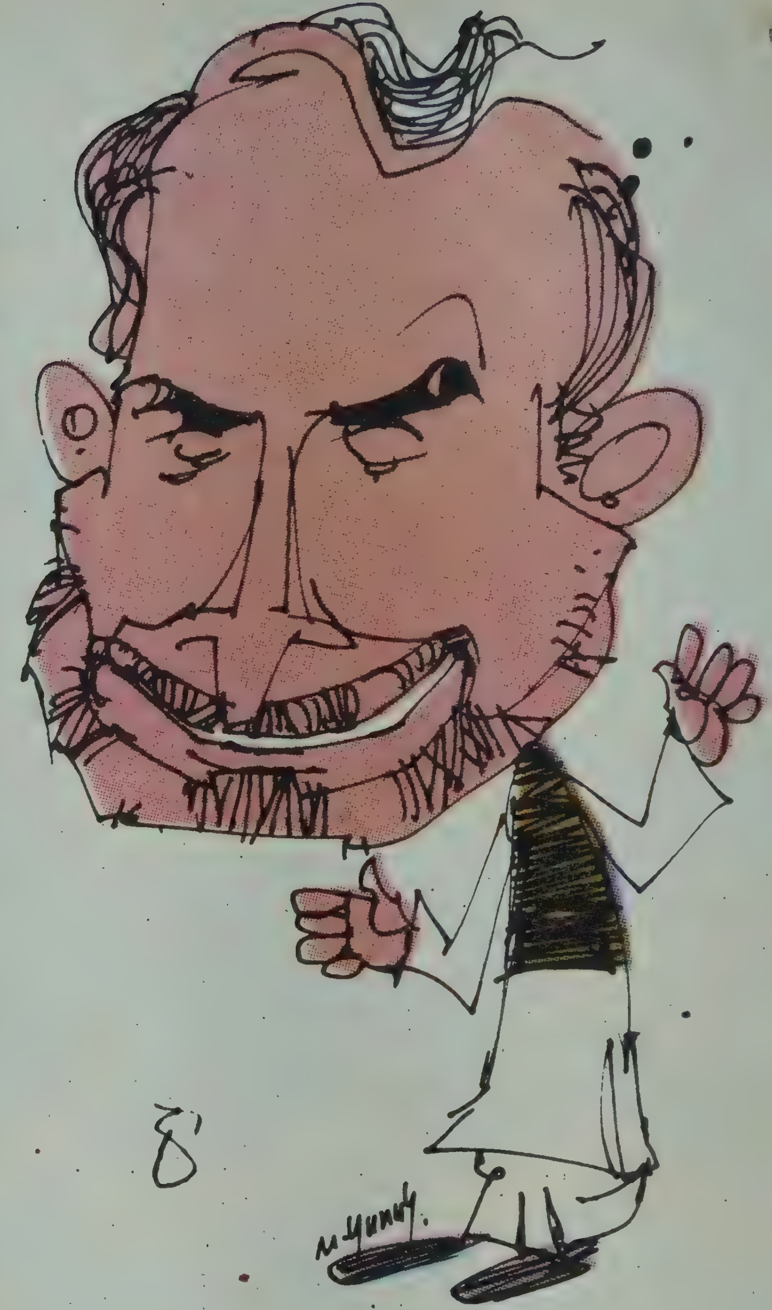


सिकंदर बख्त : बरसों से भाजपा की सांप्रदायिक राजनीति का धर्मनिरपेक्ष मुखौटा बने हुए हैं.





वी.पी. सिंह : ईमानदारी और नैतिकता का ढोंग ज्यादा दिन काम न आ सका.



पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर : सांसदों की खरीदफरोख्त द्वारा सत्ता हथियाने का आरोप.

बिताते हैं? और एक बार चुनाव जीतने के बाद राजनीतिबाजों तथा उन के परिवार के व्यक्तियों की आर्थिक क्षमताओं में जो अभूतपूर्व वृद्धि होती है, वह किस बात की तरफ इशारा करती है?

यहीं से वह सत्य स्थापित होने लगता है. जो कहता है कि राजनीतिबाज अब पेशेवर हो गए हैं. जैसा कि ऊपर कहा गया है. अधिकांश राजनीतिबाज वर्षों से राजनीति करते आ रहे हैं. इस बीच उन्होंने व्यक्तिगत रूप से कार्य कर के अर्थ अर्जित करने का कोई प्रयास नहीं किया.

यदि कुछ प्रमुख राजनीतिबाजों के जीवन का अध्ययन करें तो स्थिति कुछ अधिक स्पष्ट हो जाती है. सर्वप्रथम प्रधानमंत्री नरसिंह राव को ही देखें तो उन के राजनीतिक जीवन की शुरुआत तत्कालीन हैदराबाद राज्य के स्वतंत्रता संग्राम में कांग्रेस के कार्यकर्ता के रूप में हुई. तब से वह लगातार राजनीति में सक्रिय हैं. वह आंध्र प्रदेश विधानसभा के 20 वर्ष तक सदस्य रहे. इस दौरान सन 1971 से 1973 तक राज्य का मुख्यमंत्री रहने के अलावा वह अनेक बार राज्य में मंत्री रहे. सन 1977 से वह लगातार लोकसभा के सदस्य रहे हैं. सन 1990 के आम चुनावों में उन्होंने चुनाव नहीं लड़ा था, परंतु प्रधानमंत्री बनने के बाद वह आंध्र प्रदेश के नांदयाल लोकसभा क्षेत्र से चुने गए.

वैसे नरसिंह राव एक राजनीतिबाज होने के साथ ही कवि, पत्रकार, वकील व लेखक भी हैं. परंतु वकालत वह करते नहीं हैं, पूर्णकालिक पत्रकार भी नहीं हैं. अलबत्ता

(शेष पृष्ठ 200 पर)



घर में घातक हथियार

लेख ● जगदीश चावला

जिन दिनों विनोबा भावे का भूदान आंदोलन अपने चरम उत्कर्ष पर था, उन्हीं दिनों चंबल के बीहड़ों में छिपे डाकुओं का आतंक व दबदबा भी इतना था कि मध्य प्रदेश की पुलिस भी उन पर हाथ डालते हुए घबराती थी. तब बड़े और नामी डाकुओं की आड़ में कुछ गिरोह ऐसे भी पैदा हो गए थे जो गांवों से लोगों का अपहरण कर के उन के परिवार वालों से भारी फिरौतियां वसूलते थे और जिस गांव से उन्हें कोई ऐसा संपन्न व्यक्ति न मिलता तो वे वहां की औरतों को अपनी हवस का शिकार तक बना लेते थे.

उन्हीं दिनों एक गांव के निवासियों को भनक पड़ी कि रात के समय कुछ डाकू उन के गांव में आ रहे हैं. वे बड़े चिंतित हो उठे. उन के चेहरों पर छाई मुर्दनी को देख कर एक स्थानीय युवक जो पेशे से अध्यापक था, बोला, "यदि आप हिम्मत और बुद्धि से काम लें तो डाकू हमारा कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे." यह कह कर उस ने अपनी योजना गांव के कुछ बड़े बुजुर्गों को बताई.

रात होते ही वह युवक गांव के सब से ऊंचे मकान की छत पर अपनी एक बंदूक और 7 कारतूस ले कर जा पहुंचा. उसे ज्यों ही डाकुओं का गिरोह गांव की तरफ आता दिखाई दिया, उस ने अपने सातों कारतूस



कितनी सुरक्षा, कितना जोखिम

डाकुओं के दाएंबाएं व बीच में इस तरह से दाग दिए कि डाकुओं ने समझा कि यहां तो मुकाबले के लिए कई बंदूकधारी मुस्तैद हैं. लिहाजा वे अपनी जान बचाने के लिए वहां से भाग निकले.

अब एक नया किस्सा सुनिए. गत 10 दिसंबर की रात को दिल्ली के भोलानाथ नगर में रहने वाला मंजीत सिंह रेखी जब घर में बैठा अपनी 315 बोर की राइफल साफ कर रहा था तो वहां आए उस के एक दोस्त योगेश ने उस से राइफल का निशाना देखने की इच्छा जाहिर की. इस पर मंजीत ने ज्यों ही निशाना साध कर राइफल के घोड़े को दबाया योगेश ने अचानक उस की नली को दूसरी ओर मोड़ दिया. लिहाजा राइफल से निकली गोली अकस्मात ही मंजीत की पत्नी कुलदीप को जा लगी और वह वहीं ढेर हो गई. बाद में पुलिस ने दोनों को लापरवाही के आरोप में गिरफ्तार कर लिया.

जिन घातक हथियारों को हम चोरडाकुओं, आतंकवादियों आदि से मुकाबला करने व अपनी सुरक्षा के लिए अपने घरों में संजो कर रखते हैं, वे कभीकभी जी के जंजाल भी बन जाते हैं.

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि मनुष्य की शारीरिक शक्ति अन्य हिंसक जीवधारियों की तुलना में सीमित होती है इसलिए जानीदुश्मनों व हिंसक जानवरों से बचने के लिए वह जो भी हथियार रखता है, उस का प्रयोग आमतौर पर तो वह

सीमित शारीरिक शक्ति के कारण मनुष्य में आत्मरक्षा के लिए घातक हथियार रखने की प्रवृत्ति रही है. लेकिन कभीकभी ये हथियार स्वयं हथियार रखने वाले की जान भी सांसत में डाल देते हैं. थोड़ी सी असावधानी खुद की मौत या जेल के सींखचों का कारण बन जाती है, तो फिर इस जोखिम से कैसे बचा जाए?

आत्मसुरक्षा के लिए ही करता है. घर में रखे हथियार जहां आदमी का हौसला बुलंद किए रहते हैं, वहीं इन हथियारों का प्रयोग कई बार जमीन आदि के झगड़ों व अन्य अपराधिक कार्यों के लिए भी होता है.

अपराध करने की प्रवृत्ति एक सामान्य नागरिक से ले कर एक प्रतिष्ठित राजनेता तक किसी में भी पनप सकती है और कभीकभी तो एक पूरे वर्ग, समुदाय और कबीले तक को भी इस की चपेट में आया देखा जाता है. सांप्रदायिक दंगों, पेशेवर डकैतियों और प्रतिशोध आदि की हिंसक घटनाओं में घातक हथियारों का इस्तेमाल जहां संबंधित अपराधियों को जेल की कोठरी में पहुंचाता है, वहीं पर राजाज्ञा द्वारा या आत्मसुरक्षा में हथियारों के इस्तेमाल को कोई अपराध या गैरकानूनी काररवाई नहीं माना जाता.

तीर, तलवार, बरछी, भाले, चाकू और खुखरी जैसे हथियारों की तुलना में बंदूक, पिस्तौल, रिवाल्वर, राइफल व स्टेनगन आदि निश्चय ही सुरक्षा और जुर्म के आधुनिक हथियार हैं, जिन से लैस हुआ कोई भी व्यक्ति किसी भी घटना का 'नायक' या 'खलनायक' तक बन सकता है. कहींकहीं सामंत और जमींदार अपनी सुरक्षा के लिए ऐसे घातक हथियारों को अपने घरों में रखना जरूरी समझते हैं, वहीं एटा, मैनपुरी, चंबल और कैमूर घाटी के दस्यु भी अपनी दहशत व दबदबा बनाए रखने के लिए इन्हीं हथियारों को हमेशा अपनी छाया की तरह अपने साथ रखते हैं.

अखिल भारतीय शस्त्र विक्रेता संघ (आर्म्स डीलर्स एसोसिएशन) के महामंत्री चरणपाल सिंह घई ने इस प्रतिनिधि को बताया, "आज के असुरक्षित माहौल में हथियारों को घर में रखना मध्यम वर्गीय परिवार की एक मजबूरी बन गई है. अमीर व साधनसंपन्न लोग तो अपने बंगलों में उसी तरह सुरक्षित रहते हैं जैसे नेता और मंत्री लोग अपने सशस्त्र अंगरक्षकों के पहरे में, पर मध्यम वर्ग के लोग अपने को सुरक्षित तभी समझते हैं जब उन के पास भी बंदूक जैसे हथियार हों. ऐसे हथियारों के रहते उन की मानसिकता भी बेखौफ बनी रहती है. वैसे शहरों की अपेक्षा गांवों के संपन्न जमींदारों को ऐसे हथियारों की ज्यादा ललक रहती है क्योंकि डाकेजनी व दुश्मनी की जितनी घटनाएं गांवों में घटती हैं, उतनी शहरों में नहीं होतीं."

चरणपाल सिंह की इस बात की पुष्टि करते हुए एक बंदूकधारी जमींदार ने बताया, "मेरे गांव से पुलिस चौकी 20 किलोमीटर दूर है और यदि संजोग से या भूल से मेरे यहां कोई डाकू आ भी जाए तो मैं

वर्ष 1992 में शस्त्र अधिनियम के तहत

दर्ज कुल मामले	– 3383
गिरफ्तार व्यक्तियों की संख्या	– 3374
कुल जब्त पिस्तौल/रिवाल्वर	– 155
बंदूक	– 4
राइफल	– 5
हथगोले	– 50
गोलियां	– 1673
तेजधार के हथियार	– 2761



हथियार कितना घातक है, इस की जानकारी बच्चों को भले ही दें, लेकिन घर में ये हथियार उन की पहुंच से दूर ही रखें.

अपने इस हथियार से डाकुओं से लोहा लेने की ताब रखता हूं. मुझे पता है कि ये डाकू लोग भी भीतर से बंदूक की ताकत और तबाही को खूब पहचानते हैं. ये डाके वहीं डालते हैं, जहां इन्हें दूसरी तरफ से गोली चलने का खतरा दिखाई नहीं देता."

हमारे देश में आम नागरिकों को बंदूक, रिवाल्वर, पिस्तौल, राइफल आदि के वैध लाइसेंस दिए जाते हैं. फिर भी कई लोग अवैध हथियारों से ही अपनी जरूरत पूरी करते हैं. जो लोग उच्च हथियारों के बारे में कुछ नहीं जानते उन्हें यहां यह बताना जरूरी है कि 'बंदूकें' प्रायः एक नली व दो नली (बैरल) की होती हैं, जिन की मारक क्षमता भी प्रायः 100 गज तक होती है. ऐसी बंदूकों की बैरल 26" से 32" तक होती है परंतु वह 22" से कम नहीं होती.

'राइफल' में मैगजीन लगी होती है और यह बोल्ट एक्शन की प्रक्रिया से युक्त होती है. इस की मारक क्षमता एक मील तक होती है और आमतौर पर यह 5 शाट की होती है. इसी तरह 'रिवाल्वर' के अंदर एक फिरकी होती है, जिस का घोड़ा दबाने से फिरकी घूमती है. फिरकी में 6 से ले कर 7 तक कारतूस भरे जा सकते हैं. इस की मारक क्षमता ज्यादा दूर की न हो कर 20-25 गज तक की ही होती है. 'पिस्तौल' मैगजीन युक्त होती है और उस में 7 से ले कर 9 तक कारतूस भरे जा सकते हैं. यह सेमी-आटोमेटिक होती है. वैसे कई पिस्तौलें पूरी तरह आटोमेटिक भी होती हैं पर फिलहाल वे अपने यहां प्रतिबंधित हैं.

इन चारों हथियारों में प्रयुक्त होने वाली गोलियां व कारतूस भी अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार बनाए जाते हैं और वे किसी भी देश में बनी बंदूकों, राइफलों, पिस्तौलों व रिवाल्वरों आदि में सहजता से डाले व इस्तेमाल किए जा सकते हैं. इन सब हथियारों में भी चूंकि रिवाल्वर और पिस्तौल आसानी से जेब के भीतर छिपाए जा सकते हैं, इसलिए लोगों में इन्हें पाने की ललक ज्यादा रहती है.

ये हथियार भी कितने लुभावने होते हैं इस की एक मिसाल यह है कि गत 20 जनवरी को उत्तर प्रदेश के पूर्व विधायक लखीराम नागर जब अपनी कार में नई दिल्ली के चाणक्यपुरी इलाके से गुजर रहे थे तो महिला लिबास में खड़े यहां दो हिजड़ों ने उन से 'लिफ्ट' मांगी. लिफ्ट पा कर जब वे हिजड़े एक जगह उतर कर चले गए तो नागर ने देखा कि उन का बैग अपनी जगह से

"आवेदकों को हथियारों का प्रशिक्षण दिया जाता है"

–कंवलजीत देओल

(उपायुक्त, लाइसेंस विभाग दिल्ली पुलिस)

दिल्ली पुलिस के लाइसेंस विभाग की उपायुक्त (श्रीमती) कंवलजीत देओल भारतीय पुलिस सेवा में 1977 के बैच की हैं. इस से पहले वह पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ की छात्रा रही हैं जहां से उन्होंने भौतिक विज्ञान में एम. एससी. (आनर्स) किया था. अपनी कर्तव्यनिष्ठ छवि के लिए मशहूर कंवलजीत इस पद पर आने से पूर्व गोआ में पुलिस अधीक्षक तथा नारियों के विरुद्ध अपराध की रोकथाम करने वाले सैल की निर्मात्री प्रभारी रह चुकी हैं. प्रस्तुत हैं इस प्रतिनिधि की उन से हुई बातचीत के मुख्य अंश :

सब से पहले यह बताइए कि कानूनी तौर पर जिन हथियारों के लाइसेंस लेने जरूरी हैं वे हथियार कौन से हैं और आप के विभाग ने अभी तक कुल कितने लोगों को ऐसे लाइसेंस दिए हैं?

कानूनन सभी तरह के फायर आर्म्स यानी आग्नेय अस्त्रों के लिए लाइसेंस लेना जरूरी है, जिन में बंदूक, पिस्तौल, रिवाल्वर आदि हथियार शामिल हैं. इन के अलावा तलवार और बरछे आदि के लिए भी लाइसेंस लेना जरूरी है. जैसा कि आप जानते हैं कि हमारा विभाग जनता की सेवा के लिए है, इसलिए हमारी कोशिश होती है कि आवेदकों को कोई परेशानी न हो. फरवरी 1993 तक हम ने कुल मिला कर 40 हजार से ज्यादा लोगों को हथियारों के लाइसेंस दिए हैं.

हथियारों का लाइसेंस देने में आप आवेदन-कर्ता की किनकिन क्षमताओं को ध्यान में रखती हैं?

आमतौर पर हथियार रखने के लिए लाइसेंस उन्हीं नागरिकों को दिए जाते हैं, जो शांतिप्रिय व कानून का पालन करने वाले हों तथा उन का पिछला रिकार्ड आपराधिक न हो. फिर हमारा विभाग यह भी देखता है कि आवेदक को हथियार की आवश्यकता है भी या नहीं. हथियारों के लाइसेंस नागरिकों को उन के हक के तौर पर तो नहीं मिलते पर जो लोग पुलिस जांच में अमन पसंद पाए जाते हैं उन्हें लाइसेंस मिलने में कठिनाई नहीं उठानी पड़ती. अभी तक सरकार की नीति भी कम से कम लाइसेंस देने की रही है.

छोटे शहरों में लाइसेंस पाने का आवेदन कहां किया जा सकता है और सामान्यतः कितने समय में यह बन कर आवेदन कर्ता को मिल जाता है?

पुलिस जांच के बाद जब इच्छुक व्यक्ति को अपने क्षेत्र की पुलिस से अनापत्ति प्रमाणपत्र मिल जाता है तो उसे लाइसेंस पाने में तकरीबन 40 दिन लग सकते हैं. 40 दिन के

गायब था. बैग में उन की रिवाल्वर भी रखी थी. पास के थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने पर पुलिस ने बड़ी मशक्कत से उन दोनों हिजड़ों को ढूंढ़ निकाला. पूछताछ के दौरान हिजड़ों ने स्वीकार किया कि उन्होंने रिवाल्वर को निकाल कर नागर का बैग किसी जगह फेंक दिया था. इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि हथियार के मामले में थोड़ी सी लापरवाही से कितनी अधिक परेशानी हो सकती है.

पर देखा गया है कि कभीकभी संबंधित अधिकारी भी गंभीर किस्म की गलतियां कर बैठते हैं. जैसे, पिछले दिनों सिंगापुर की उड़ान से इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे दो यात्री भगवत सिंह और हरजीत सिंह जब सीधे ग्रीन चैनल से गुजर रहे थे तो उन्हें कस्टम अधिकारियों ने रोक लिया क्योंकि एक्सरे मशीन पर उन्हें उन दोनों यात्रियों के सामान के साथ कुछ कारतूस दिखाई दिए थे. बाद में

बाद आवेदक सीधे हम से यहां मिल कर इस का पता कर सकते हैं. छोटे शहरों में जिले के पुलिस मुख्यालय से लाइसेंस मिलते हैं और वहां उन्हें 3 महीने का वक्त लग जाता है.

प्राप्त किया गया लाइसेंस किन स्थितियों में निरस्त हो सकता है?

वैध लाइसेंसी, चाहे अपने हथियारों का प्रयोग करे या न करे, यदि वह किन्हीं आपराधिक मामलों में लिप्त पाया जाए तो उस का लाइसेंस जब्त हो सकता है. इसी तरह यदि यह साबित हो जाए कि चोरी में गए उस के हथियार के पीछे उस की असावधानी प्रमुख कारण थी तो ऐसी दशा में भी लाइसेंस रद्द हो सकता है.

ऐसे लाइसेंस की सामान्य फीस कितनी है और वह कितनी अवधि के लिए वैध माना जाता है?

सामान्यतः ऐसे लाइसेंस की फीस तो 10 रुपए है. किंतु यदि उस का समय से नवीनीकरण न हो पाया तो उस पर 30 रुपए लेट फीस देनी पड़ती है. यह लाइसेंस 3 साल की अवधि तक वैध रहता है. वैसे अब नियमों को काफी उदार बना दिया गया है. दिल्ली में लाइसेंस देने के काम में कंप्यूटर की सहायता ली जाती है. सभी लाइसेंस धारकों के विवरण कंप्यूटर में दर्ज रहते हैं. फिर हम ने लाइसेंस के नवीनीकरण को लाइसेंस धारक के जन्मदिन से जोड़ दिया है ताकि वह उस दिन अपने लाइसेंस का नवीनीकरण कराना न भूले. हमारे यहां से नवीनीकरण के लिए एक महीना पहले सूचना भी दी जाती है. वैसे दिल्ली में अब लाइसेंस धारक को नवीनीकरण के समय अपने हथियार साथ लाने की आवश्यकता नहीं है.



क्या कोई वैध लाइसेंस धारक अपने हथियारों को देश में कहीं भी ले जाने का अधिकारी है?

नहीं. हथियारों को बाहर ले जाने के लिए उसे संबंधित राज्य सरकार से इस की पूर्व अनुमति लेनी पड़ती है. जैसे दिल्ली में उपराज्यपाल की आज्ञा के बिना कोई भी लाइसेंसी अपने हथियार देश के किसी दूसरे राज्य में नहीं ले जा सकता.

क्या आप का विभाग लाइसेंस धारक को हथियार रखने व चलाने का कोई प्रशिक्षण भी देता है?

पहले तो ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी, पर अब पूर्व सैनिकों, कैडिटों और व्यावसायिक खिलाड़ियों को छोड़ कर अन्य सभी आवेदकों को हथियार का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिस में उन्हें हथियारों की सफाई, गोली भरने व सुरक्षा संबंधी बातें बताई जाती हैं. और यह प्रशिक्षण उन्हें रवींद्र रंगशाला परिसर स्थित चांदमारी स्थल पर दिया जाता है.

कस्टम अधिकारियों ने उन 4,570 कारतूसों को जब्त कर लिया और इन यात्रियों को छोड़ दिया.

पर अगली सुबह जब इस की जानकारी सुरक्षा कर्मियों को मिली तो उन्होंने संबंधित कस्टम अधिकारियों से इस की पूछताछ की. तब मामले की गंभीरता को समझते हुए कस्टम अधिकारियों को भी लगा कि बाहर से लाए जा रहे कारतूस बरामद होने पर दोनों यात्रियों को शस्त्र अधिनियम के तहत गिरफ्तार न करना उन की भारी भूल थी. लिहाजा उसी क्षण उन्होंने इस घटना का एक लिखित ब्योरा पुलिस आयुक्त को भेजा, जिस के आधार पर पुलिस ने तत्काल काररवाई कर के उन दोनों यात्रियों को पंजाब से गिरफ्तार कर पूछताछ के लिए दिल्ली में तलब कर लिया.

कहना गलत न होगा कि कहीं से भी ख़रीदे गए अवैध हथियार और कारतूस भी संबंधित व्यक्ति को कानून की हथकड़ियां

हथियारों से संबंधित कुछ सावधानियां

● घर में सुरक्षात्मक हथियारों को हमेशा ऐसी जगह पर रखें जो बच्चों की पहुंच से बाहर हो तथा जहां से उन्हें किसी भी संभावित खतरे के दरपेश होते ही आसानी से अपने हाथों में लिया जा सके.

● बंदूक, पिस्तौल, रिवाल्वर आदि का सेफ्टी कैच हमेशा सेफ्टी पोजीशन में रहना चाहिए, न कि फायरिंग पोजीशन में.

● हथियारों को तिजौरी इत्यादि में न रख कर अपने शयनकक्ष की किसी ऐसी जगह या अलमारी में रखें, जहां किसी गैर व्यक्ति को हथियार रखे होने की भनक या संदेह तक न हो.

● बंदूक, पिस्तौल आदि में कारतूस हमेशा भर कर न रखें, बल्कि उपयोग किए जाने वाले कारतूसों को अपने इन्हीं शस्त्रों के निकट ही रखें, ताकि वक्त जरूरत उन का सही इस्तेमाल किया जा सके.



● बारिश से पहले और बारिश के बाद अपने इन हथियारों को साफ करना तथा तेल देना न भूलें, पर इस बात का ध्यान रखें कि सफाई के बाद जब आप हथियार को चलाएं तो बैरल में तेल या चिकनाहट नहीं होनी चाहिए. यदि हो तो उसे पहले क्लींजिंग राड या 'पुल थ्रू' से साफ कर लें.

● हथियारों की तरह उन के लाइसेंस भी संभाल कर रखें.

पहनवा सकते हैं. इसलिए समझदार किस्म के लोग हमेशा वैध हथियारों को पाने का ही प्रयास करते हैं, हालांकि उन्हें पाना भी कोई सरल काम नहीं है.

घर में वैध और लाइसेंसी हथियारों के रहते उन्हें इस्तेमाल करने की आवश्यकता न भी पड़े तो भी ऐसे हथियारों को संभाल कर रखना चाहिए, अन्यथा किन्हीं गैर हाथों में पड़ कर आप के वैध हथियार भी आप की जान को सांसत में डाल सकते हैं, मान लीजिए, कोई व्यक्ति आप के घर से आप की वैध पिस्तौल चुरा कर उस से किसी दूसरे व्यक्ति की हत्या कर दे और मौके पर मिली पिस्तौल पर भी किन्हीं दो व्यक्तियों की उंगलियों के निशान हों तो ऐसी स्थिति में पुलिस के शक की सूई क्या आप की तरफ नहीं घूमेगी? अपराध अन्वेषण ब्यूरो के विशेषज्ञों के लिए यह अत्यधिक जटिल समस्या रही है. किसी दूसरे हत्यारे के हाथों लगी आप की वैध पिस्तौल भी आप को जेल का रास्ता बता सकती है.

यह ठीक है कि हथियारों पर अंकित अपराधियों की उंगलियों के निशानों से भी उन तक पहुंचने में हमारी पुलिस ने काफी सफलताएं हासिल की हैं लेकिन नई दिल्ली के उंगली छाप विशेषज्ञ ब्रजभूषण दूबे का कहना है, "देश के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में उंगलियों की छाप का विधिवत रिकार्ड रखने की कोई समान प्रणाली नहीं है." इसलिए कभीकभी सही अपराधी की पहचान करने में उलझन बनी रहती है.

अतः घर में घातक हथियार रखने वालों को हमेशा इस बात के लिए चौकस रहना चाहिए कि जिन हथियारों को वे अपनी सुरक्षा का पर्याय मान कर बेफिक्र रहते हैं, वही हथियार किन्हीं गलत हाथों में जा कर उन की जान का जोखिम न बनें. ●



सागर पार भारत



कनाडा का लोकप्रिय खेल आइस हाकी

कनाडा में आइस हाकी, जो यहां केवल हाकी के नाम से विख्यात है, सर्दियों का बहुत ही लोकप्रिय खेल है. इसे 5 साल के बच्चों से ले कर बूढ़े तक सभी खेलते हैं. विभिन्न आयु के अलगअलग समूह होते हैं.

अभी तक ज्ञात, सब से पहली इंडोर रिंक (बर्फ का मैदान) में खेली जाने वाली हाकी का फोटो 1893 का मिला है. लेकिन ऐसी मान्यता है कि यह खेल बहुत पहले से खेला जा रहा है. उस समय लोग तालाब, पोखर, नदी, झील, जहां भी पानी जम कर ठोस बर्फ हो जाता, हाकी खेलते थे.



फिर 'अरीना' (जिस बिल्डिंग में यह खेला जाता है उस बिल्डिंग को 'अरीना' कहते हैं) बनने शुरू हुए. सीमेंट के फर्श पर बर्फ जमाने की मशीनों से 3-4 इंच मोटी बर्फ की परत जमाई जाती है. इस स्थान को 'आइस रिंक' कहते हैं, जिस के ऊपर यह खेल खेला जाता है.

यह रिंक अंडाकार (ओवल शेप) होता है. इस के चारों तरफ करीब 4 फुट के लकड़ी के बोर्ड लगे रहते हैं और उस के ऊपर 3-4 फुट ऊंचा प्रिक्सी ग्लास, ताकि 'पक' उछल कर दर्शकों को न लगे. गोली के नेट के दोनों ओर 8-10 फुट की लोहे की जाली लगी रहती है क्योंकि उस तरफ से पक के उछल कर किसी को लगने की ज्यादा संभावना होती है.

रिंक के बीचोबीच एक लाल रेखा होती है जहां से खेल शुरू होता है. लाल रेखा के दोनों ओर अर्धभाग में नीली रेखा होती है व अंत में दोनों ओर गोलियों के लिए नेट.

यहां की हाकी स्टिक भारत की हाकी स्टिक से थोड़ी अलग किस्म की होती है. स्टिक की लंबाई खिलाड़ी की लंबाई पर निर्भर करती है. स्टिक करीबकरीब खिलाड़ी की नाक तक आनी चाहिए. नीचे भी गोलाई की जगह चपटी होती है और कुछ बड़ी होती है. गेंद की जगह काले रंग

की कड़े प्लास्टिक की करीब 3 इंच व्यास की $1\frac{1}{2}$ इंच ऊंची चपटी होती है, जिसे 'पक' कहते हैं. भारत के हाकी के खेल को यहां 'फ्लोर हाकी गेम' कहते हैं.

इस खेल को एक खास किस्म की पोशाक पहन कर खेला जाता है, जो खिलाड़ियों को चोट लगने से ज्यादा से ज्यादा बचाती है.

स्केट्स (पहिएदार जूते) के ऊपर नली को बचाने के लिए शिनपैड व मोजे होते हैं. इन की हाफपैंट भी बहुत गद्दीदार होती है. जाक, शोल्डर पैड, एलबो पैड, ग्लब्स (दस्ताने), वाइजर के साथ हैलमेट तथा हाकी शर्ट पहनते हैं.

हर टीम की ड्रेस सफेद के साथ किसी गाढ़े रंग के मिश्रण से बनती है. जब अपने

गोल कीपर को पैरों व छाती के बचाव के लिए अपेक्षाकृत अधिक पैड पहनने पड़ते हैं. ▼



ही नगर में खेलते हैं तो सफेद रंग प्रधान होता है और जब दूसरी टीम के शहर में खेलते हैं तो गाढ़े रंग की प्रधानता होती है.

गोली के स्केट्स थोड़े भिन्न होते हैं क्योंकि वह पूरे रिंक में नहीं घूमता, गोल के आसपास ही रहता है. अतः जब दूसरे खिलाड़ी सारे समय भागते रहते हैं, वह अधिकांशतः एक ही जगह स्थिर रहता है. गोली अपने बचाव के लिए पैरों तथा छाती पर अपेक्षाकृत अधिक पैड पहनता है तथा 'पक' को पकड़ने के लिए एक हाथ में कैचर ग्लब व दूसरे हाथ में ब्लाकर का भी प्रयोग करता है. उस की स्टिक भी अलग किस्म की होती है.

प्रत्येक टीम में 6 खिलाड़ी होते हैं, 3 फारवर्ड, 2 डिफेंस और 1 गोली. रिंक में कभी भी इस से ज्यादा खिलाड़ी नहीं हो सकते. बाकी खिलाड़ी बेंच पर बैठे रहते हैं और थोड़ीथोड़ी देर में अपनी टीम के रिंक में खेलने वाले खिलाड़ियों का स्थान लेते रहते हैं.

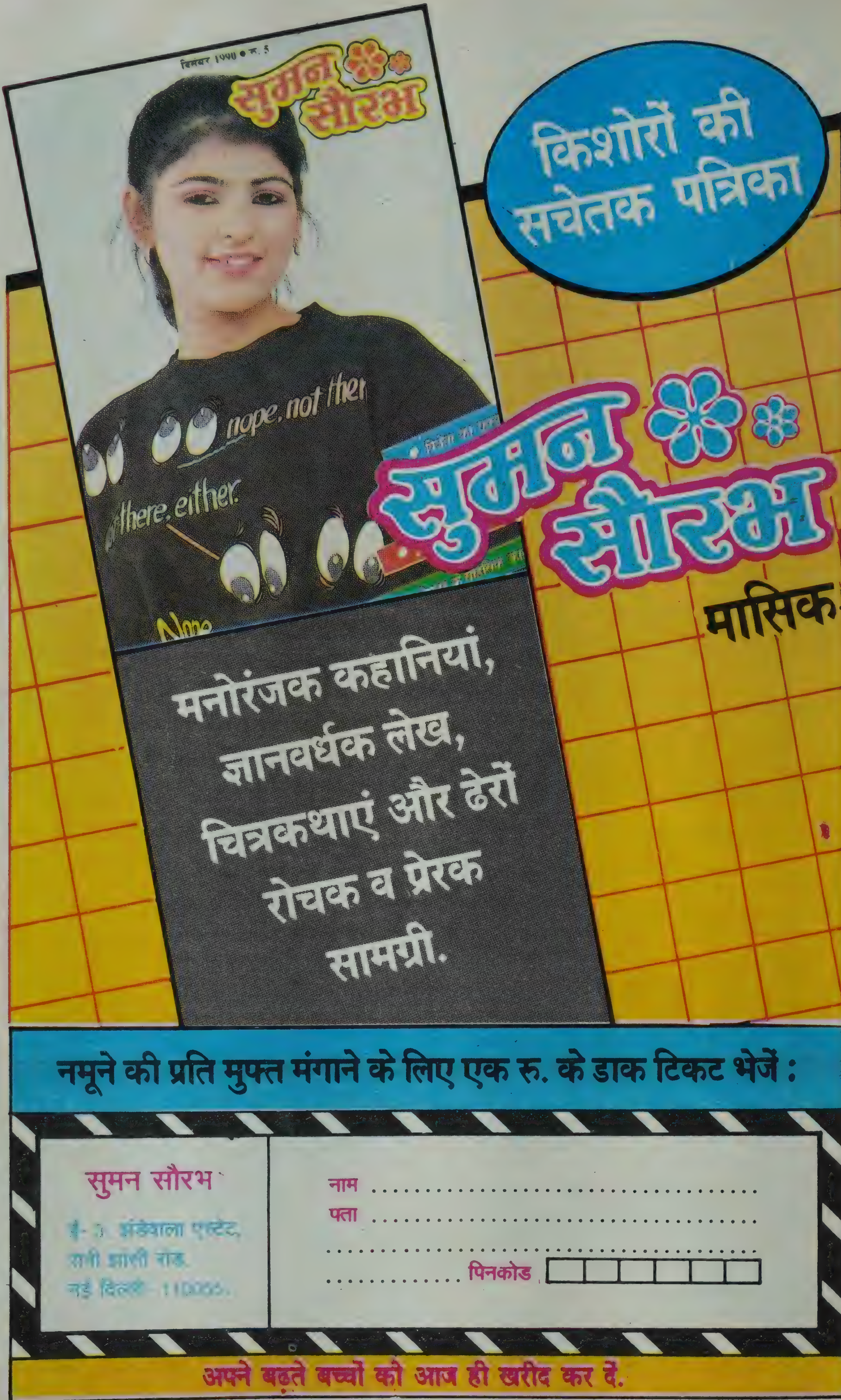
निर्णायक के रूप में आइस पर एक रेफरी और दो लाइंसमैन होते हैं जो पक के साथसाथ अपनेअपने निर्धारित क्षेत्र में स्केट करते रहते हैं.

इस खेल को 20-20 मिनट की 3 अवधियों में खेला जाता है. इस 20 मिनट के दौरान जितनी भी बार खेल रुकता है, वह समय गिना नहीं जाता. जब तक पक चल रही है, 'डेड' नहीं होती, तब तक का ही समय गिना जाता है. रेफरी के सीटी बजाते ही पक डेड (निश्चेष्ट) मान ली जाती है. हर अवधि के बाद 15 मिनट का मध्यांतर होता है.

कनाडा की ठिठुरती सर्दियों में इस मनोरंजक खेल के लिए आप कनाडावासियों को सदा उत्साहित पाएंगे. मौसम की सर्दी जिस तरह कनाडा के गर्व न्याग्रा जलप्रपात को नहीं जमा सकती, उसी तरह उस की ठंडक कनाडावासियों के दिलों में इस खेल के प्रति उत्साह को ठंडा नहीं कर सकती. —स्नेह ठाकुर (कनाडा से)●


मूल्य
यह लो श्रीमतीजी तुम्हारी लिस्ट, सामान और इसका बिल.
हाय! इस में तो आधी चीजों के दाम बढ़े हुए हैं.
मैं अच्छी तरह देखभाल कर लाया हूं. जो डिब्बे पर छपा है, वही बिल में लिखा है.
बरसों बीत गए. न जाने आपको खरीदारी करनी कब आएगी.
मैं अभी आई.


हम आप के इतने पुराने ग्राहक हैं. कुछ तो ख्याल रखना चाहिए. दाम तो अब बढ़े हैं.
देखो, पुराने मूल्य का कुछ माल पड़ा होगा.
देखा! दो तीन महीने पुरानी पैकिंग है तो क्या. पूरे सैंतीस रुपए पंद्रह पैसे बचा लिए.
अगली बार
अब मत कहना कि मुझे खरीदारी नहीं आती. यह लो तुम्हारी क्रीम, शैंपू और पाउडर. दुकानदार के लाख मना करने पर भी पुराने रेट की चीजें ले कर आया हूं.
क्या? इनके दाम तो कुछ ही दिन पहले घटे हैं.
हाय!



सुमन सौरभ
किशोरों की सचेतक पत्रिका
nope, not there
there, either.
सुमन सौरभ
मासिक
मनोरंजक कहानियां,
ज्ञानवर्धक लेख,
चित्रकथाएं और ढेरों
रोचक व प्रेरक
सामग्री.
नमूने की प्रति मुफ्त मंगाने के लिए एक रु. के डाक टिकट भेजें :
सुमन सौरभ
नाम
पता
पिनकोड
अपने बढ़ते बच्चों को आज ही खरीद कर दें.

बच्चों के मुख से



मेरी मां को 'प्रसाद' के लिए फल काटने थे. उन्हें चाकू नहीं मिला तो मेरे 5 वर्षीय भाई से बोली, ''बेटा, चाकू न जाने कहां खो गया है. फल कैसे काटूं?''

उस ने सोचा कि मां फल काट कर उसे देने वाली हैं. उस ने बहुत मासूमियत से कहा, ''कोई बात नहीं मां, मेरे दांत बहुत मजबूत हैं. बिना चाकू से काटे ही मैं खा लूंगा.'' —दुर्गा देवी

*

मेरा 5 वर्षीय पुत्र बहुत आज्ञाकारी व हाजिरजवाब है. एक बार घर की सफाई करते हुए मैं ने उसे फूलझाड़ू लाने के लिए कहा.

थोड़ी देर में वापस आ कर उस ने कहा, ''मां, वहां पर कोई 'फुल' झाड़ू नहीं है. हां, एक 'हाफ' झाड़ू है, कहो तो ले आऊं?'' दरअसल हमारा झाड़ू इस्तेमाल होतेहोते आधा रह गया था. —माया मिश्रा

*

एक बार बाजार से लौट कर मैं ने देखा, मेरा छोटा भाई विजय आंखें बंद कर कुछ लिखने की कोशिश कर रहा था. मैं ने आश्चर्य से पूछा, ''तुम इस तरह आंखें बंद किए क्यों लिख रहे हो?''

उस ने बड़ी मासूमियत से उत्तर दिया, ''मां ने कहा है कि यह कविता बिना देखे लिखनी है.'' —चंद्रप्रकाश यादव

*

मेरा 5 वर्षीय भतीजा सुबह ब्रश करने से इनकार कर रहा था, तब मैं ने उस से कहा, ''तुम से तो जानवर ही अच्छे हैं.''

यह सुन कर उस ने बड़े भोलेपन से पूछा, ''क्या वे रोज सुबह ब्रश करते हैं?'' —विकाश जैन

*

मेरे भैया बैंक से रुपए निकाल कर लाए और भाभी को देते हुए बोले, ''ये 5-5 की दो गड्डियां (100-100 नोटों की) रख दो.''

पास खड़े मेरे 4 वर्षीय भतीजे ने पूछा, ''पिताजी, क्या बैंक वाले 100 से अधिक की गिनती नहीं जानते जो गड्डियां 100-100 की ही बनाते हैं?'' —माता प्रसाद वर्मा

*

भैया दूज के दिन मैं विशेष भोजन की तैयारी कर रही थी. मेरा 3 वर्षीय नाती अर्जुन अपनी बड़ी बहन से जूते पहनाने की जिद कर रहा था. मैं ने उस से कहा, ''अभी तो दीदी से टीका करवाना है, जूते पहन कर क्या करोगे?''

यह सुन कर उस समय तो वह चुप हो गया लेकिन थोड़ी देर बाद अपनी दीदी से बोला, ''टीका तो माथे पर लगता है न? पैरों में थोड़े ही लगता है. जूते पहना दो न दीदी.'' —सत्या सारस्वत



हमारी बिल्डिंग में एक 3 वर्षीय लड़का रचित रहता है. उस की शैतानियों से तंग आ कर उस की मां ने उस से कहा, ''रुको, अभी मैं तुम्हारे हाथ काट देती हूं.''

रचित ने बड़े ही भोलेपन से कहा, ''मां, इस हाथ को न काटना, इस में चोट है.'' —श्वेता गुप्ता

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



सालगिरह का

कहानी • नीलम सीकरी

विवेक और निशा की शादी की दसवीं सालगिरह थी. कुछ गिनेचुने लोगों को होटल में दावत पर आमंत्रित किया गया था. विवेक ने निशा को एक खूबसूरत पशमीने की शाल भेंट की.

विवेक की छोटी बहन सुनीता भी अपने पति के साथ आई हुई थी. उस ने पूछा, "भाभी, बहुत खूबसूरत शाल भेंट की है भैया ने, आप इन को क्या उपहार दे रही हैं?"

"मैं...मैं...घर में दूंगी," कहतेकहते निशा शरमा गई.

"घर में आज कुछ खास ही दोगी," विवेक शरारत से बोला.

"चुप करो," निशा ने विवेक को चिकोटी काटी, "वरना सब को बता दूंगी कि यह शाल हम गरमियों की छुट्टियों में कश्मीर से लाए थे."

"भई, यह मियांबीवी में क्या खुसुरफुसुर हो रही है," विवेक का दोस्त अनिरुद्ध बोला.



तोहफा

"मैं निशा को कह रहा था कि शादी की पहली सालगिरह को जो तोहफा तुम ने मुझे दिया था, वह इतना प्यारा और अनमोल है कि अन्य सब तोहफे उस के सामने कुछ भी नहीं हैं."

निशा ने आंखें उठा कर देखा, विवेक उसे अनुराग से निहार रहा था.

तभी विवेक ने पास बैठे दोनों बच्चों को अपने साथ सटा लिया.

"अरे, आज के दिन तो भाभी को अपने साथ बिठाओ, विवेक भैया," सुनीता का पति सुरेश कहां पीछे रहने वाला था.

"निशा तो हरदम मेरे साथ है. भई, अपने जीवन की किताब में तो सिर्फ चार ही पन्ने हैं. हम दो और हमारे दो... बाकी सब तो दुनियादारी निभाने के लिए..." विवेक संजीदा हो गया.

"अच्छा, ज्यादा दार्शनिकता मत झाड़िए. आप की बहन भी तो है, वह क्या सोचेगी?" निशा ने धीरे से कहा.

"अरे, सुनीता अब सुरेश की किताब का पन्ना है. इस में धीरे बोलने की क्या बात है. क्यों सुरेश?"

उस की बात सुन कर सुरेश भी मुसकरा दिया.

पुनीत और भावना भी पिताजी की बातें सुन रहे थे, कुछकुछ समझ रहे थे. तभी भावना ने बालसुलभ अंदाज में कहा, "पिताजी, आप की किताब क्या बिना जिल्द की है."

"बुद्धू, जहां हम रहते हैं, हमारा घर हमारी जिल्द है, है न पिताजी," पुनीत ने अपनी तरफ से जोड़ा.

सुनते ही सब ठहाका मार कर हंस पड़े.

"वाह, क्या बात कही है. मान गए यार, तुम्हारा बेटा बहुत समझदार है," अनिरुद्ध बोला.

विवेक निशा की ओर देखते हुए बोला, "आखिर बेटा किस का है और फिर उपहार..."

निशा ने बीच में ही टोक दिया, "सब को केवल अपनी लफ्फाजी से ही खुश करोगे या कुछ खिलाओगे भी."

"ठीक है...चलो, खाना खाने चलते हैं." और सब उठ खड़े हुए.

खाना खत्म होतेहोते रात के 11 बज गए. धीरेधीरे सब ने विदा ली. विवेक और निशा भी बच्चों को ले कर होटल से बाहर आ गए. पार्किंग से कार निकाली और सब उस में बैठ कर घर की ओर चल दिए.

भावना तो कार में बैठते ही सो गई.

उसे पिछली सीट पर सुला कर पुनीत आगे मातापिता के बीच में आ कर बैठ गया.

"एक बात बताओ मां, आप की शादी को जब एक साल हुआ था, तब आप ने पिताजी को क्या तोहफा दिया था? पिताजी कहते हैं कि वह बहुत अनमोल है," पुनीत जिज्ञासा से पूछ रहा था.

निशा बेटे को देख कर मुसकराने लगी और खो गई दस साल पहले की यादों में, जब वह दुलहन बन कर विवेक के घर आई थी.

विवेक एक अच्छी फर्म में इंजीनियर था. लंबा, ऊंचा, खूबसूरत और हंसमुख विवेक प्यार से लबालब भरे हुए दिल का स्वामी था. उस के पास दो कमरों का फ्लैट था जिस में वह अपनी मां व छोटी बहन के साथ रहता था. शादी के बाद निशा भी घर में चारों बड़े थे, इसलिए छोटे बच्चे के आगमन की दस्तक सब को अत्यधिक प्रिय लगी.

अब सब निशा का काफी ध्यान रखते. घर का ज्यादा काम मां और सुनीता ने अपने ऊपर ले लिया.निशा के खानेपीने का विशेष ध्यान रखा जाता. विवेक निशा को स्कूटर पर कहीं ले कर जाता तो मां ताकीद कर देतीं, "स्कूटर आहिस्ता चलाना."

नर्सिंग होम में जांच वगैरह करवाने पर डाक्टर ने निशा से प्रोटीनयुक्त पदार्थ अधिक खाने को कहा. बस विवेक तो अब कभी पनीर, कभी भुनी मछली और कभी मशरूम लाने लगा. बाजार जाते तो निशा गोलगप्पे खाने को कहती, पर विवेक खिलाता तंदूरी चिकन या पनीर के पकौड़े,

विवेक और निशा के विवाह को 10 साल बीत चुके थे. इस बीच दोनों ने एकदूसरे को न जाने कितने तोहफों से नवाजा होगा. लेकिन विवेक अब भी निशा के उस अनमोल तोहफे को नहीं भूला था जो उस ने विवेक को शादी की पहली सालगिरह पर दिया था. आखिर क्या था वह तोहफा?

इस परिवार का महत्त्वपूर्ण अंग बन गई.

शाम के 6 बजते ही विवेक के स्कूटर की आवाज निशा अपने कमरे में बैठेबैठे ही पहचान लेती और झट बालकनी में आ कर खड़ी हो जाती. उस के आने से जैसे वह खिलखिल उठती थी. यों तो उस की सास व ननद दोनों का ही स्वभाव अच्छा था, लेकिन छोटा मकान होने से नवविवाहित युगल उन के सामने प्यार की मीठी चुहलबाजी न कर पाते.

लेकिन रात उन की अपनी होती थी. पलंग पर विवेक निशा को ज्योंही बांहों में भरता तो उस कैद से सुबह तक निशा अपनेआप को मुक्त न कर पाती.

शादी के तीन महीने बीतते ही निशा का पांव भारी हो गया. विवेक यह जान कर जैसे फूला न समाया, मां भी बहुत खुश थीं. ताकि निशा को प्रोटीन अधिक मिल सके.

कभीकभी निशा सोचती कि ऐसा पति और इतना प्यार तो केवल फिल्मों में ही देखनेसुनने को मिलता है. निशा आशंका से कांप उठती और विवेक से कहती, "इतना प्यार न किया करो विवेक. कल किसी कारणवश मैं इस से वंचित हो गई तो शायद सांस भी न ले पाऊंगी."

"निशा," विवेक ने उस का चेहरा अपने हाथों में ले लिया और बोला, "तुम क्या कह रही हो...जानती हो. ऐसी बातें तो तुम्हें सोचनी भी नहीं चाहिए. मैं जो भी कर रहा हूं, वह कोई बहुत खास तो नहीं...यह तो फर्ज है, एक पति का. हां, अगर तुम कहती हो कि इतना प्यार मत किया करो तो चलो, आज से प्यार कम कर देते हैं," कहते हुए विवेक ने करवट लेनी चाही.



पलंग पर विवेक निशा को ज्यों ही बांहों में भरता तो उस कैद से निशा सुबह तक अपनेआप को मुक्त न कर पाती.

हुआ था कि विवेक और निशा की शादी की पहली वर्षगांठ का दिन आ गया. दिसंबर के महीने में जोरों की ठंड पड़ रही थी. विवेक दफ्तर से जल्दी घर आ गया था और आते ही निशा को तैयार होने को कह दिया.

मांजी के पूछने पर विवेक ने बताया कि थोड़ी देर के लिए बाजार घूमने जाएंगे.

मां बोली, "विवेक, निशा अभी 40 दिन तक घूमने नहीं जा सकती और फिर सर्दी भी बहुत है. जरा सी हवा लग गई तो बहू और पुनीत दोनों पर इस का असर पड़ेगा."

"मां, निशा शाल लपेट लेगी और हम ज्यादा दूर नहीं जाएंगे...जल्दी लौट आएंगे," विवेक कहां मानने वाला था.

मां ने निशा की ओर देखा, वह तैयार हो कर आ गई थी. तब मांजी ने निशा को शाल, स्कार्फ, जुराबें पहना कर और न जाने कितनी हिदायतें दे कर थोड़ी देर के लिए जाने दिया.

उन के जाने के बाद भी मांजी बड़बड़ाती रहीं, "आजकल यह सालगिरह का फैशन न जाने कहां से आ गया है. घूमने जरूर जाना है, भले ही बच्चे को ठंड लग जाए. कल को कुछ हो गया तो सभी कहेंगे कि घर में बड़ी थी."

तब सुनीता ने उन्हें समझाया, "मां, ऐसा होता है आजकल, सभी शादी की वर्षगांठ मनाते हैं और फिर एकाध घंटे में कुछ नहीं होगा."

बाजार जा कर रेस्तरां में थोड़ा

लेकिन निशा ने 'नहींनहीं' कहते हुए उस की बांह पकड़ ली और उस की छाती पर अपना सिर रख लिया. विवेक ने मुसकरा कर दोनों बांहें निशा की कमर में डाल दीं.

फिर वह दिन भी आ पहुंचा, जब निशा को प्रसव पीड़ा आरंभ हुई. विवेक घर पर नहीं था. फोन करने पर वह टैक्सी ले कर आया और तुरंत निशा को नर्सिंग होम ले गया.

निशा पूरा दिन पीड़ा से जूझती रही. रात को उस ने पुत्र को जन्म दिया. विवेक अपनी मां के साथ बाहर खड़ाखड़ा बेचैन हो रहा था. नर्स ने बाहर आ कर उन्हें सूचना दी तो दोनों बेसब्री से अंदर जाने लगे कि नर्स ने रोक दिया, "थोड़ी देर बाद ही आप उन से मिल सकेंगे."

सुन कर विवेक झेंप सा गया था.

चार दिन तक नर्सिंग होम में रहने के पश्चात निशा नवजात शिशु को ले कर घर आ गई. शिशु तो स्वस्थ था, लेकिन निशा काफी कमजोर हो गई थी. परंतु मांजी की सेवा से वह 10-12 दिनों में ही पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गई.

पुनीत अभी एक माह का भी नहीं

हलकाफुलका खा कर दोनों वापस आने लगे तो विवेक ने स्कूटर साड़ियों की दुकान के आगे खड़ा कर दिया, "चलो तुम्हारे लिए एक साड़ी लेते हैं."

"नहीं विवेक, देर हो जाएगी...और साड़ी फिर किसी दिन ले लेंगे."

लेकिन विवेक निशा का हाथ थामे उसे अंदर ले गया, "जल्दी से साड़ी पसंद करो, फिर चलेंगे."

" वह शोकेस वाली सुंदर है, ठीक है न?" निशा बोली.

दुकानदार ने साड़ी दिखाई और बोला, "सिल्क पटोला है बहनजी. केवल 675 रुपए की है."

साड़ी का दाम सुनते ही विवेक का उत्साह ठंडा पड़ गया. निशा समझ गई थी. फौरन बोली, "इतनी भारी साड़ी ले कर क्या करूंगी. पहले से ही इतनी पड़ी हैं और फिर बच्चे को साथ ले कर इतनी भारी साड़ी कहां पहनी जाती है." फिर दुकानदार की तरफ मुखातिब हो कर बोली, "कोई कम दाम की प्रिंटिड साड़ी दिखाइए."

तीनचार साड़ियां देखने के बाद निशा ने गुलाबी रंग की एक साड़ी पसंद कर ली.दाम भी ठीक था. निशा जानती थी कि विवेक की जेब में ज्यादा पैसे नहीं हैं.

घर आ कर निशा ने साड़ी सुनीता और मांजी को दिखाई. सुनीता को भी साड़ी पसंद आई. फिर निशा ने गुलाबजामुनों का डब्बा मेज पर रख दिया और सब से खाने को कहा.

खातेखाते सुनीता बोली, "भाभी, आप ने भैया को क्या उपहार दिया है."

"मैं ने," अचकचा गई निशा, "मैं ने तो कुछ नहीं दिया, बाद में दूंगी."

"बाद में क्या दोगी?" विवेक के अधरों पर मुसकान खेल रही थी.

निशा शरमा कर शयनकक्ष में कपड़े बदलने चली गई. अंदर पलंग पर दस दिन का पुनीत सर्दी के कारण सिर से पांव तक सफेद रंग के ऊनी कपड़ों में लिपटा रुई के गोले के समान लग रहा था.

थोड़ी ही देर में निशा अखबार में लिपटा एक बंडल दोनों हाथों में उठाए शयनकक्ष से बाहर आई और उसे टीवी देख रहे विवेक को दे दिया, "मेरी तरफ से सालगिरह का तोहफा."

विवेक, सुनीता और मांजी तीनों ही अनायास बंडल को देखने लगे.

विवेक अखबार का कागज उतारने लगा, पर निशा ने हाथ पकड़ लिया, "पहले बताओ, क्या है?"

"भाभी तुम कब लाई? पहले बताया ही नहीं," आश्चर्यमिश्रित स्वर में सुनीता बोली.

"अभी कुछ दिन पहले ही लाई थी."

विवेक अनुमान लगा रहा था, "काफी भारी है, सूट का कपड़ा होगा...या फिर जैकेट या पुलोवर?"

अचानक अखबार नीचे से गीला हो गया और विवेक की पैंट भी भीग गई. हड़बड़ा कर उस ने अखबार खोल डाला तो देखा मखमली कंबल में उस का अंश कुनमुना रहा है.

"पुनू, मेरा बेटा," विवेक हंस पड़ा. फिर बेटे को कंबल से निकाल कर 'चित्रहार' के गाने के साथसाथ नाचने लगा.

"वाकई निशा, मैं यह तोहफा पा कर बहुत खुश हूं. यह तो अनमोल है...इस के आगे सब बेकार है."

कार का हार्न सुन कर निशा जैसे नींद से जागी. देखा, पुनीत उस की गोद में सिर रख कर सो रहा है. घर आ गया था. विवेक ने पुनीत को बांहों में उठा लिया और पीछे से भावना को भी उठाने लगा.

निशा भावना को पकड़ने के लिए आगे आई, तब तक विवेक दोनों बच्चों को बांहों में संभाल चुका था. वह घर की ओर बढ़ गया. निशा पीछेपीछे आते हुए सोच रही थी कि विवेक को अपनी जिंदगी की किताब के पन्नों से कितना प्यार है. ●



वाह भई नूरबख़्श

कहानी ● प्रभाशंकर उपाध्याय 'प्रभा'

"उदयपुर के दो टिकट दे दीजिए," एक पुरुष की नम्र पुकार सुनाई दी.

राजकीय पथ परिवहन निगम के टिकटघर में किसी से बतिया रहे बाबू ने झल्ला कर जवाब दिया, "अभी बुकिंग बंद है."

"कब शुरू होगी, बाबू साहब?"

"घंटेभर बाद," संक्षिप्त सा जवाब दे

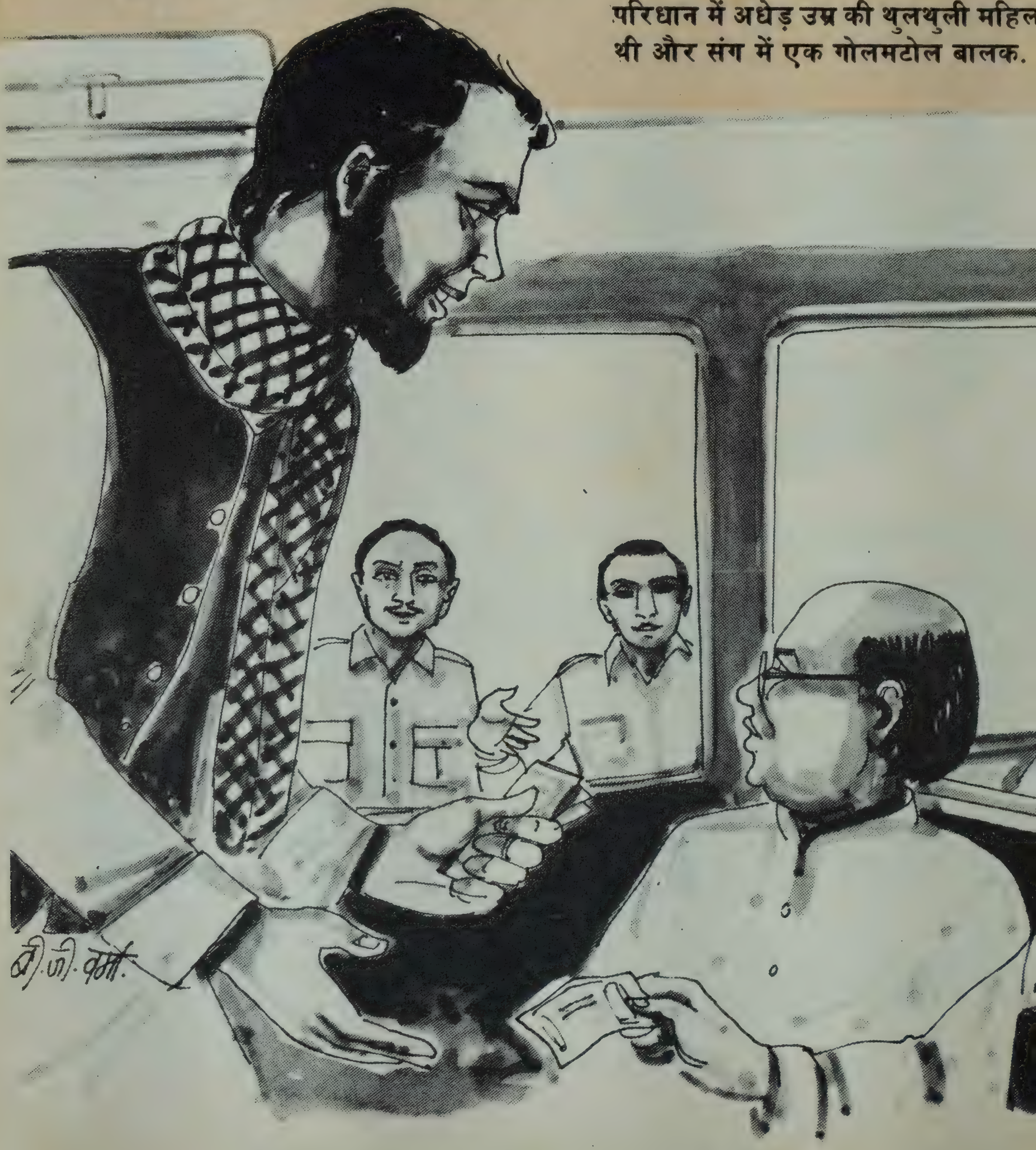
नूरबख्श ने अपने वाग्जाल में उलझा कर एक दंपती को बिना टिकट दिए पूरा किराया पेशगी वसूल तो किया ही, साथ ही वो तरकीब अपनाई कि साहब के मुंह से 'वाह' निकल ही पड़ा.

कर वह फिर अंदर खड़े व्यक्ति से बातें करने लगा.

"सुनिए भाई साहब, हमें बहुत जल्दी उदयपुर पहुंचना है, क्या कोई डीलक्स बस नहीं जा रही?" इस दफा एक नारी कंठ ने अनुनय की.

बुकिंग बाबू ने घूम कर उस महिला को घूरा, फिर बोला, "बहनजी, डीलक्स बस अभीअभी छोड़ी है और अब एक घंटे तक कोई डीलक्स बस नहीं है."

"उफ..." महिला ने निराशा से हाथ मले. बुकिंग क्लर्क के पास खड़े आदमी ने खिड़की की सीध में सिर ला कर बाहर खड़े दंपती को निहारा. पुरुष की उम्र तकरीबन 40 की थी. अच्छा सूटबूट. आंखों पर मोटे फ्रेम का चश्मा. साथ में कीमती परिधान में अधेड़ उम्र की थुलथुली महिला थी और संग में एक गोलमटोल बालक.



"साहब, आप जरा अंदर पधारिए," उस ने बाहर खड़े पुरुष को पुकारा और टिकटघर का छोटा सा द्वार खोल दिया.

संकेत समझ कर वह सज्जन फौरन अंदर हो लिए.

"लगता है, आप को जल्दी जाना है," सुपारी फांकते हुए उस व्यक्ति ने कहा.

"जी हां... जी हां..."सज्जन ने सिर हिलाया.

"देखिए मेहरबान, मैं आप को ले चलने को तैयार हूं."

"जी... धन्यवाद. आप मुझे ढाई टिकट दे दीजिएगा," हड़बड़ी से रुपए निकालते हुए वह बोले.

ढाई टिकट की राशि हाथ में थामते हुए कंडक्टर बोला, "अरे हुजूर, टिकट की चिंता छोड़िए. यहां तो मेरे नाम का टिकट चलता है. देखिए, वह रही मेरी गाड़ी, आप वहां पहुंचिए."



"लेकिन..."

असामी को असमंजस में देख कंडक्टर मुसकराया, "मेरा नाम नूरबख्श है. 12 साल से इस रूट पर चल रहा हूं, 'फ्लाइंग स्कवाड' वाले मुझे छू नहीं सकते."

मुसाफिर का जमीर इजाजत नहीं दे रहा था कि वह बेटिकट सफर करे. चतुर नूरबख्श ने वह झिझक भांपी और बोला, "साहब, परिवहन विभाग का यह नौकर अब आप का ताबेदार है. आप जिस सीट पर बैठना चाहेंगे, वहां बिठाऊंगा. जहां कहेंगे, वहां गाड़ी रुकवाऊंगा. आप को सुरक्षित ले जाने का जिम्मा मेरा."

तत्पश्चात बुकिंग बाबू की ओर उन्मुख हो कर उस ने कहा, "ला भोला, मेरे कागज दे.... हुजूरेवाला को सही वक्त पर उदयपुर भी पहुंचाना है."

टिकटघर से बाहर आ कर नूरबख्श ने एक कुली को पुकारा, "अबे, इधर आ. चल, साहब का सामान उठा और मेरी गाड़ी तक पहुंचा."

कुली से बचा एक सूटकेस खुद नूरबख्श उठाता हुआ बोला, "आइए, मेहरबान."

दंपती उस के पीछे सरकते चले गए. बस में चढ़ कर कंडक्टर ने चारों ओर देखा. गाड़ी लगभग भरी थी. पीछे वाली तीन सवारियों की एक सीट खाली थी.

"बोलिए, कहां बैठना चाहेंगे?" नूरबख्श ने पूछा. फिर जवाब की प्रतीक्षा किए बगैर उस ने ड्राइवर के ठीक पीछे वाली सीट पर बैठे यात्रियों को संबोधित किया, "आप लोग पीछे चले जाएं, यहां साहब बैठेंगे."

"लेकिन... हमें इसी सीट का नंबर दिया गया है," एक यात्री ने प्रतिरोध किया.

नूरबख्श ने तुरंत दहाड़ कर कहा, "मुझे नौकरी से बरखास्त करवाओगे क्या?

बड़े साहब यहीं बैठेंगे, समझे. चलिए पीछे. वरना गाड़ी नहीं चलेगी."

नूरबख्श के बमकते शब्दों ने असर किया और तीनों मुसाफिर एकदूसरे को देखते हुए पीछे चले गए.

अपने विशिष्ट यात्री परिवार को आगे की सीट पर बिठा कर कंडक्टर ने निवेदन किया, "साहब, आप का हुक्म हो तो गाड़ी चलाई जाए."

अचंभित से तथाकथित साहब ने मुसकरा कर हामी भर दी. नूरबख्श ने सीटी दी और डीलक्स बस अपने गंतव्य को रेंग पड़ी. कुछ ही देर में जयपुर शहर पीछे छूट गया और चौड़ी सड़क पर गाड़ी फर्राटे से दौड़ने लगी.

रात्रि के 11 बज गए थे. यात्री अपनीअपनी सीटों पर ऊंघने लगे. अचानक

> ### उपलब्धि
>
> *महान उपलब्धियों के लिए हमें कर्म ही नहीं करना चाहिए, अपितु स्वप्न भी देखने चाहिए. योजना ही नहीं बनानी चाहिए, अपितु विश्वास भी करना चाहिए.*
>
> — अनातोले फ्रांस

किशनगढ़ से पहले गाड़ी रुक गई.

"क्या हुआ, रामसिंह?" नूरबख्श ने झोंके से जाग कर पूछा.

"फ्लाइंग स्कवाड ने रुकवाया है," ड्राइवर ने जवाब दिया.

यह सुनते ही बगैर टिकट सफर कर रहे दंपती की नींद उड़ गई. द्वार के पास कंडक्टर सीट पर बैठा नूरबख्श फौरन उस घबराहट को ताड़ गया. तब तक उड़नदस्ते वाले बस के दरवाजे तक आ पहुंचे.

नूरबख्श ने तत्परता से खड़े हो कर अपने मेजबान मुसाफिर का कंधा दबाया, "अरे साहब, आप निश्चिंत हो कर सोइए, चैकिंग को मैं देखता हूं."

फिर उस ने बस में चढ़ते निरीक्षक का हाथ पकड़ा और फुसफुसा कर कहा, "मेरी गाड़ी में कोई गड़बड़ नहीं है," फिर ड्राइवर के पीछे वाली सीट की ओर इशारा कर के बोला, "यहां अपने एक साहब हैं. बच्चों समेत उदयपुर जा रहे हैं. आप कहें तो जगाऊं उन्हें."

चूंकि निरीक्षक दरवाजे की सीढ़ियां चढ़ते वक्त कंडक्टर द्वारा उस यात्री को दिया जा रहा सम्मान देख चुका था, अतः वह बोला, "कोई बात नहीं, रहने दो. बाकी गाड़ी तो पूरी है न?"

"हां हुजूर..." कहते हुए नूरबख्श गाड़ी से नीचे उतर गया. उसी झोंक में निरीक्षक साहब भी नीचे उतर आए. जीप के पास जा कर जांच दल ने अपनी बकाया काररवाई पूरी की और बस को रवानगी की इजाजत दे दी. गाड़ी आगे चल पड़ी.

अजमेर का बस अड्डा आ गया था. यात्रियों की ऊंघ में विघ्न पड़ा. बगैर टिकट यात्रा कर रहे साहब की पत्नी पति के कान में कुछ फुसफुसाई. पुरुष ने नूरबख्श से पूछा, "गाड़ी यहां कितनी देर रुकेगी? इन्हें जरा 'बाथरूम' जाना है."

"मेरे मालिक, आप बेफिक्र हो इन्हें बाथरूम ले जाइए और यह चाहेंगे तो वहां जी भर कर नहाएं. मैं ने पहले ही अर्ज कर दिया था कि आप जब चाहेंगे गाड़ी तभी चलेगी."

अजमेर से गाड़ी चली और रातभर चलती रही. भोर होते ही एक बस स्टैंड पर गाड़ी रुकवा कर नूरबख्श अपने मेहमान मुसाफिरों के लिए गरमागरम कचौड़ियां ले आया. उस परिवार ने कुछ झिझक कर वह आतिथ्य स्वीकार किया. फिर शेष यात्रा निरापद पूरी हो गई. गाड़ी ने सही वक्त पर मुसाफिरों को उदयपुर में छोड़ दिया.

तीन दिन बाद शाम के समय उदयपुर के बस अड्डे पर वही साहब टिकटघर के सामने खड़े थे. वह जयपुर जाने वाली बस के बारे में जानकारी चाह रहे थे कि पीछे से एक आवाज आई, "सलाम साहब, कहां जा रहे हैं, मेहरबान?"

साहब ने पीछे मुड़ कर देखा, "ओह

ओ... नूरबख्श. भाई, हमें जयपुर लौटना है."

"अरे वाह, फिर यहां क्यों खड़े हैं? जयपुर के लिए तो मेरी गाड़ी भी जाने वाली है, एक घंटे बाद."

"लेकिन यहां उस से पहले वाली बस के टिकट मिल रहे हैं और कुछ देर में यह चल भी देगी," साहब ने पल्ला झाड़ लेना चाहा.

"साहब, आप नाहक ही घबराते हैं. मेरी बस से चलिए और बेफिक्र यात्रा का सच्चा लुत्फ उठाइए. आप को अगर इस बस से पहले जयपुर न पहुंचा दूं तो नाम बदल दीजिएगा मेरा." यह कहते हुए नूरबख्श ने उन का सामान उठवा लिया और उन्हें कैंटिन की तरफ ले गया.

घंटेभर तक नूरबख्श अपने मेहरबानों को बांधे रहा, जरा भी ढील नहीं छोड़ी. उन की खातिरतवज्जो करते हुए भांतिभांति के संस्मरण सुनाता रहा. ढाई टिकटों की राशि उस ने वसूल कर जेब के हवाले की.

गाड़ी चली और रातभर फर्राटे से निर्बाध दौड़ती रही. जयपुर आ गया था. अजमेर पुलिया पर उस ने अपने साहब को संबोधित किया, "हुजूर, आगे चल रही बस को पहचान रहे हैं आप? यह वही गाड़ी है जो हम से एक घंटा पहले रवाना हुई थी. अगर आप आज्ञा दें तो हमारी बस उस से पहले बस अड्डे के अंदर घुस सकती है हुजूर."

यह सुन कर नूरबख्श के हुजूर बेसाख्ता बोल उठे, "वाह भई नूरबख्श." ●



व्यंग्य ● शशि गौतम

नारियों द्वारा शोषित बेचारे

आप मानें या न मानें, किंतु यह सत्य है कि अनादि काल से ही नारियां पुरुषों का शोषण करती आ रही हैं. आज भी यह क्रम जारी है. चौंकिए नहीं, मैं आप को बताता हूं.

शिवशंकर को ध्यान से देखिए. कमर

में मृगछाला, गले में सांपों की माला, कानों में जहरीले बिच्छू, घासफूस सी जटा, पाउडर के नाम पर भस्म, नंगधड़ंग शरीर और सवारी के नाम पर बूढ़ा बैल.

अब जरा पार्वती को देखिए. रेशमी साड़ी, स्वर्णाभूषण, फूलों के गहने, मेकअप ऐसा मानो अभी ब्यूटी पार्लर से चली आ रही हैं. वाहन भी ऐसा कि अच्छेअच्छों के छक्के छूट जाएं. जी हां, मैं सिंह की ही बात कर रहा हूं. अब बताइए, शिवजी का शोषण है या नहीं?

यही नहीं, विष्णु को ही लीजिए. बेचारे शेषनाग की शय्या पर सोने को मजबूर हैं. और मैडम लक्ष्मी कमल पर विराजमान हैं. कृष्ण को गोपियों ने मट्ठे के लिए भी नाच नचाया.

अब मुझे ही लीजिए. पैदा हुआ तो मां की कैद में रहा. ककहरा सिखाने में बहनों ने कान खींचे. स्कूल में अध्यापिकाओं ने बेंच पर खड़ा किया. 4 बजे भोर में भाभियों ने पढ़ने को मजबूर किया.

जब बड़ा हुआ तो इन सब ने मिल कर मुझे एक पराई नारी के हवाले कर दिया. मेरी चीखें उन की खिलखिलाहटों में घुट कर रह गईं. अब तो जनाब, बेपैसे का गुलाम हो कर रह गया हूं, बल्कि बंधुआ मजदूर कहिए. बंधुआ मजदूर तो कर्ज अदा कर के आजाद भी हो सकता है. लेकिन यहां तो मुझे पता ही नहीं कि किस बात का कर्ज चुका रहा हूं और अभी कितना देना है. तभी तो मुझ जैसे मूर्खों को 'सात जन्म' तक पाने की मन्नतें मानी जाती हैं.

महीनेभर की गाढ़ी कमाई बीवी के हाथ चली जाती है. ऊपर से ताना सुनिए, 'किस दरिद्र के पल्ले पड़ गई... एक भी शौक पूरा नहीं हुआ.'

अब इस बात को झुठलाने के लिए आप कीजिए छक्केपंजे, लीजिए रिश्वत, करिए धोखाधड़ी, जाइए जेल. उन्हें क्या, उन्हें आप जैसे कौड़ी के तीन मिलेंगे.

एक दिन गलती से कह दिया, 'मेरी नीली वाली कमीज साफ कर देना.'

दूसरे दिन देखा, कमीज वैसे ही पड़ी है. मैं ने जब पूछा तो जवाब मिला, 'पानी नहीं आ रहा है. जेब साफ कर दी है... पानी आएगा तो कमीज भी साफ हो जाएगी.'



बाजार जाते समय बच्चा साथ लग जाता है और आइसक्रीम वाले को देखते ही एकदम से अड़ जाता है. अब आइसक्रीम दिलाइए तो मुसीबत, न दिलाइए तो मुसीबत.

पुरुष प्रधान समाज होते हुए भी अनादि काल से पुरुष नारियों के शोषण का शिकार होता रहा है. पतियों के अत्याचार के खिलाफ ढेरों कानून हैं, सैकड़ों संस्थाएं हैं परंतु पतियों की सुनने वाला कोई नहीं. इसलिए अब लताड़ित पतियों ने भी यूनियन बनाने की ठान ली है. क्या आप भी इस में शामिल होना चाहेंगे?

कहने को तो हमारा समाज पुरुष प्रधान है, मगर वास्तविक सत्ता हमेशा नारियों के हाथ में रही है. हर घर में वित्त मंत्रालय, गृह मंत्रालय हमेशा नारी के हाथ में रहता है. विदेश नीति भी वही तय करती हैं. किस रिश्तेदार के यहां जाना है, किस के यहां नहीं, किस से रिश्ता रखना है, किस से नहीं, किस पड़ोसी से बात करनी है, किस से नहीं. आप ने इस का उल्लंघन किया कि गृहयुद्ध शुरू हुआ. फिर आप के बीच समझौता कराने में बाहरी ताकतें हस्तक्षेप करेंगी और इसी बहाने अपनी रोटियां सेंकेंगी.

आप के घर में आप की अनुपस्थिति में रमेश, सुरेश, राम या श्याम चाय पी सकते हैं. इस में कोई दोष नहीं. मगर आप यदि दफ्तर की कैंटीन में किसी सुंदरी के साथ पानी पीते भी देख लिए गए तो श्रीमतीजी आप का पानी अवश्य उतार देंगी. अब आप ही बताइए, यह शोषण नहीं तो क्या पोषण है?

बच्चे घर में शरारतें करेंगे, पढ़ाई नहीं करेंगे, पड़ोसी की खिड़की का शीशा तोड़ेंगे तो बस एक ही धमकी, 'आने दो शाम को पिताजी को, फिर तुम्हारी पिटाई कराती हूं.' गोया बाप कोई जल्लाद है और श्रीमतीजी मां न हो कर कोई जज हैं. जज साहब ने सजा मुकर्रर कर दी है. अब सजा देना जल्लाद का काम है.

अब अगर आप बच्चों को पीटते हैं तो उन की नजर में 'पापा' नहीं 'पापी' हैं, बल्कि कसाई हैं. नहीं पीटते तो सुनिए ताना, 'आप ही बिगाड़ रहे हैं बच्चों को. चढ़ा लीजिए सिर पर, बाद में पता चलेगा. मेरी बात का तो आप पर कोई असर ही नहीं होता. एक दिन ये जेल न गए तो कहिएगा.'

जरा चालाकी तो देखिए, वह खुद नहीं पीटेंगी, पर क्यों? इसलिए कि बच्चों की नजर में उन की छवि एक ममतामयी मां की ही बनी रहे. आप बिगाड़िए अपनी छवि. बुढ़ापे में बच्चे बात भी नहीं सुनेंगे. उधर श्रीमतीजी? उन की तो 'भविष्य निधि' बच्चों के रूप में सुरक्षित है.

जरा सोचिए, आप बाजार जा रहे हैं. बीवी ने 10 रुपए का नोट पकड़ा कर 20 रुपए का सामान बता दिया. बच्चा साथ लग गया. सड़क पर आइसक्रीम वाला खड़ा है. अब बच्चा आप की सूरत देखने तो साथ गया नहीं है, उसे तो आइसक्रीम चाहिए. अब आप आइसक्रीम दिलाते हैं तो सामान नहीं ले सकते. नतीजा वही होगा, बीवी की जलीकटी बातें सुनने को मिलेंगी, 'आप को जरा भी ध्यान नहीं है, पूरा महीना पड़ा है. मैं किस तरह घर को चलाती हूं, यह मैं ही जानती हूं. आप का क्या, दो हजार रुपल्ली फेंक के किनारे हो गए. अब हम सब मरें इसी में. न जाने किस बुद्धू के पल्ले पड़ गई. मेरी तो जिंदगी बरबाद हो गई...'

अगर आइसक्रीम न दिलाइए तो? बच्चा ऐसा मुंह फुलाएगा कि पूछिए मत. मां से तीन में तेरह जोड़ेगा, खाना नहीं खाएगा. छोटा बच्चा हुआ तो खैर नहीं, रोरो कर पूरा मजमा इकट्ठा कर लेगा और आइसक्रीम वाला आप की तरफ देख कर मुसकराएगा, 'देखो, साहब बना फिरता है. जेब में रुपए भी नहीं हैं. बच्चा रोरो कर जान दे रहा है.'



देर से घर पहुंचते ही बीवी की फटकार सुनाई देती है, "कहां थे अब तक? यह वक्त है घर आने का? मिल गई होगी कोई छैलछबीली, बैठ गए होंगे किसी पार्क में."

हद तो तब हो जाती है, जब आइसक्रीम वाला खुद ही आइसक्रीम बच्चे के हाथ में पकड़ा देता है. आप मना करते हैं, 'नहींनहीं, इसे खांसी आती है. डाक्टर ने मना किया है.' वैसे इस से अच्छा बहाना आप कर भी क्या सकते हैं?

मगर वह बेईमान आदमी आइसक्रीम दे ही देता है और कहता है, 'रहने दीजिए साहब... जैसे आप का बच्चा वैसा ही मेरा बच्चा.'

किंतु यकीन मानिए वह मन में यही कहता होगा 'दरिद्र कहीं का... पता नहीं पैसे भी देता है या नहीं?'

अब देखिए गुस्ताखी आइसक्रीम वाले की. कैसे मुसकराते हुए कह देता है, 'जैसा आप का बेटा, वैसा ही मेरा बेटा.' गोया हर ऐरागैरा हमारे बच्चे का बाप या हमारी बीवी का पति हो सकता है. मगर क्या करें साहब, पत्नी के कारण बहुत कुछ सुनना पड़ता है.

मेरा अनुभव यह है कि हर नौकरीपेशा व्यक्ति के दो अफसर होते हैं, एक दफ्तर में, एक घर में. दफ्तर में देर से पहुंचिए तो अफसर की डांट. घर देर से पहुंचिए तो बीवी की फटकार, 'कहां थे, अभी तक? यह वक्त है घर आने का? मिल गई होगी कोई छैलछबीली. बैठ गए होंगे किसी पार्क में.'

अब उन्हें क्या पता कि गृहस्थी की गाड़ी में तेल डलवाने के लिए 'ओवरटाइम' कितना जरूरी हो गया है.

वह आगे गुर्राएंगी, 'यह नहीं कि समय से घर आ जाएं.' जैसे वह आप ही के इंतजार में पलकें बिछाए बैठी थीं. 'रमेशजी कब के आ गए, सुरेशजी कभी के चले आए,' वह आंखें तरेरेंगी. अब आप में यह पूछने का साहस कहां है कि उन से कहें कि रमेश और सुरेश आ गए, यह आप को कैसे पता चला? क्या आप दिनभर उन्हीं को निहारती रहती हैं? मगर क्या करेंगे?

आप अपराधी की तरह सिर झुकाए, जूते उतार कर उस में अपनी फटी जुराबें घुसेड़ रहे हैं. चाय का एक प्याला भी मिला

लेकिन वह भी जल कर उन की जबान की तरह कड़वी और काली हो गई है.

आप ने कालेज के दिनों में क्या सपने देखे थे? यही न कि दफ्तर से आएंगे तो बीवी दरवाजे पर खड़ी हो कर मुसकरा कर स्वागत करेगी, तुरंत आप का ब्रीफकेस ले कर रख देगी. कपड़े उतारते ही हाथ में कुरतापाजामा थमा देगी. आप हाथमुंह धो ही रहे होंगे कि वह तौलिया एवं स्लीपर लिए खड़ी होगी.

किंतु यथार्थ में यह क्रम थोड़ा गड़बड़ हो गया. वह यों कि आप दफ्तर से आ ही रहे हैं लेकिन बीवी दरवाजे पर 'स्लीपर' ले कर खड़ी है.

आप थोड़ा सांस ले कर बैठे कि हुक्म हुआ, 'सुनिए, मैं ने सोनू का गृहकार्य करा दिया है, आप मोनू का करा दीजिए.'

जैसे सोनू का गृहकार्य करा कर कोई एहसान कर दिया हो. उस का क्या, वह तो तीसरी में पढ़ता है. उसे बस बैठा दीजिए, खुद ही सब कर लेता है. मगर मोनू तो अभी 'लोअर के.जी.' में पढ़ रहा है. अभी उसे अक्षर ज्ञान भी नहीं है. अब आप कीजिए माथापच्ची, 'ऐसे नहीं बेटा... ऐसे. यों पेंसिल पकड़ो.'

आप उसे समझा रहे हैं और वह खेलते हुए सोनू को देख रहा है. आप ने हलकी सी चपत लगा दी और उस ने जोर से रोना शुरू कर दिया. अब पोंछिए उस की नाक और आंसू. ऊपर से बीवी के 'मधुर वचन' भी सुनने को मिल गए तो उसे 'बोनस' समझिए.

काफी दिनों से मैं प्रताड़ित और लताड़ित पतियों का एक संघ बनाने की सोच रहा हूं. पति को पत्नी से मुक्त कराने की एक यूनियन होनी ही चाहिए. वैसे 'पत्नी' का अर्थ ही है, जो पति से हमेशा 'तनी' रहे! 'धर्मपत्नी' भी वह होती है जो 'धर्म' के नजदीक और पति से दूर रहे.

हां, तो मैं यूनियन की बात कर रहा था. इस में हर शोषित एवं पीड़ित पति शामिल हो सकता है. हर महीने कार्यकारिणी की बैठक होगी. साल में एक बार सामान्य निकाय की मीटिंग होगी.

जो भी पति अपनी पत्नी के खिलाफ शिकायत करेगा, उसे अपने पड़ोस की कम से कम दो सुंदरियों की गवाही भी देनी पड़ेगी. एक की गवाही से काम नहीं चलेगा, क्योंकि क्या पता आप पर हो रहे जुल्म का कारण वही हो. फिर कार्यकारिणी एक जुलूस ले कर आप की पत्नी के घर का घेराव करेगी (जी हां, पत्नी का घर, क्योंकि यदि वह घर आप का होता तो आप शिकायत करने थोड़े ही आते). उन के खिलाफ नारे लगाए जाएंगे. जब तक पत्नी सार्वजनिक रूप से माफी नहीं मांग लेगी, घेराव जारी रहेगा.

सदस्यता के लिए आप मुझ से मेरे दफ्तर में संपर्क कर सकते हैं. घर में कदापि नहीं, क्योंकि यूनियन बनने से पहले ही यदि परदाफाश हो गया तो मैं शिकायत करने कहां जाऊंगा? ●

लेख ● नीलम सिकंद

बुद्धिमान बनने के लिए धुन का धनी होना आवश्यक है

आम धारणा है कि बुद्धिमान मांबाप के बच्चे ही बुद्धिमान होते हैं. बुद्धिमानी को पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही कुदरत की देन माना जाता है. इसी धारणा के शिकार अभिभावक पढ़ाई में औसत बच्चों के साथ ज्यादा मेहनत करना उचित नहीं समझते. इसी वजह से बच्चे आगे पढ़ने के उचित अवसर न मिलने के कारण पीछे रह जाते हैं.

समय के बदलाव के साथ वैज्ञानिकों का दृष्टिकोण भी बदला है और वे इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि प्रतिभासंपन्न या बुद्धिमान होने के लिए वंशानुगत योग्यता या रुझान के बजाय दृढ़ निश्चय व लगन का होना अत्यावश्यक है. इस के साथ ही बच्चों का



अधिकतर मातापिता यह समझते हैं कि बुद्धि या प्रतिभा वंशानुगत या प्रकृति-प्रदत्त होती है, इसी लिए वे अपने बच्चे को अधिक प्रतिभासंपन्न बनाने की चेष्टा नहीं करते, लेकिन वैज्ञानिकों ने यह धारणा गलत साबित कर दी है. उन के अनुसार साधारण बुद्धि वाले बच्चे को भी असाधारण प्रतिभा का स्वामी बनाया जा सकता है, मगर कैसे?

मनोबल बनाए रखने के लिए उन्हें प्रोत्साहन व प्रेरणा देने की भी आवश्यकता है. दृढ़ निश्चय, लगन और प्रोत्साहन बच्चे को बुद्धिमान बनाने में विशेष भूमिका निभाते हैं.

एक फ्रांसीसी सूक्ति के अनुसार, 'प्रतिभा, धीरज व अध्यवसाय की पटरियों पर अग्रसर होने वाली महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति है.' इस का मतलब यह हुआ कि प्रतिभासंपन्न बनने के लिए धीरज व अध्यवसाय का होना आवश्यक है. तात्पर्य यह है कि एक बार किसी काम में असफल हो जाने पर निराश नहीं हो जाना चाहिए बल्कि तब तक उस कार्य में जुटे रहना चाहिए, जब तक कि सफल न हो जाएं. हमारे यहां भारत में भी कहावत है कि 'करतकरत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' अर्थात कड़ी मेहनत से मूर्ख भी विद्वान बन सकता है.

कुछ दशक पूर्व अमरीका में उच्च बौद्धिक स्तर वाले 1,500 बच्चों पर सर्वेक्षण किया गया था. लंबे समय तक चले इस सर्वेक्षण कार्य के परिणामों के अनुसार इन में से कुछ बच्चे ही अपनी शिक्षा पूरी कर लेने के बाद की जिंदगी में अपने को बुद्धिमान साबित कर पाने में सफल हुए, जबकि बाकी अन्य बच्चों से जो उम्मीद बांधी गई थीं, गलत साबित हुईं.

इसी तरह एक अन्य सर्वेक्षण में यह निष्कर्ष निकाला गया कि स्कूली जीवन में छात्रों की उपलब्धियां उन के व्यावसायिक कार्य में कोई खास योगदान नहीं देतीं. वैज्ञानिकों का कहना है कि स्कूल में योग्य होना और पेशे या व्यवसाय में योग्य होना दो अलगअलग बातें हैं और इन दोनों क्षेत्रों को आपस में मिलाना नहीं चाहिए.

वैज्ञानिकों का कहना है कि कामयाबी के लिए प्रेरणा, धैर्य और संकल्प का होना अति आवश्यक है. यह बात 64 वैज्ञानिकों के जीवन का विश्लेषण करने पर सही पाई गई. ये सभी वैज्ञानिक औसत से कहीं अधिक बुद्धिमान थे. लेकिन इन सभी में एक बात खासतौर पर एक जैसी पाई गई जिस की वजह से वे सफल, प्रसिद्ध वैज्ञानिक बने और वह समानता यह थी कि इन सभी को शुरू में ही सफलता मिल गई थी. इसी वजह से उन्होंने अपना जीवन उत्साह और दृढ़ता के साथ अनुसंधान कार्यों के लिए समर्पित कर दिया. इस से यह साफ जाहिर होता है कि अति बुद्धिमान बनने के लिए केवल प्रेरणा ही मुख्य भूमिका नहीं निभाती बल्कि इस के साथसाथ काम करने का उत्साह व जोश होना चाहिए. तभी आप विशिष्ट ज्ञान अर्जित कर सकते हैं.

बौद्धिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए विशेष ज्ञान का भंडार प्रेरक शक्ति के रूप में मुख्य भूमिका निभाता है. शतरंज के ग्रैंडमास्टरों पर इस के प्रभावों का अध्ययन किया गया जो कि किसी भी नए खिलाड़ी की तुलना में शतरंज संबंधी समस्या को चार गुना अधिक तेजी से हल कर लेते थे. उन की विशेष योग्यता यह थी कि उन के दिमाग में एकदम स्पष्ट तसवीर उभर आती थी कि अब उन्हें कौन सी चाल चलनी है.

शतरंज के विशेषज्ञ अपने दिमाग में



धैर्य, दृढ़ता व प्रेरणा, ये तीनों प्रवृत्तियां किसी भी साधारण बच्चे को उस के कार्यक्षेत्र में अग्रणी बना सकती हैं.

ताजा निष्कर्षों से पता चलता है कि शतरंज, संगीत या वैज्ञानिक अनुसंधान में दक्षता या प्रवीणता हासिल करने के लिए असाधारण ज्ञान का होना आवश्यक होता है. एक शतरंज खिलाड़ी को विशेषज्ञ बनने के लिए कम से कम इस खेल का 50,000 घंटों के लिए गहराई से अध्ययन करना होगा. इस से स्पष्ट है कि विशेषज्ञ बनने के लिए लगभग 50,000 चालों के ज्ञान का भंडार जमा कर लेते हैं और जरूरत पड़ने पर इन का उपयोग कर लेते हैं. जबकि क्लबों के अच्छे शतरंज खिलाड़ी मात्र 1,000 चालें याद कर सकते हैं. इन में सब से बड़ी खूबी यह होती है कि वे शतरंज की पद्धति के अनुसार अपने दिमाग में संगृहीत चालों में से एक चाल का आसानी से चयन कर लेते हैं.

वैज्ञानिकों का कहना है कि अर्जित विशेष ज्ञान किसी सीमा तक विशेष योग्यता की कमी को पूरा कर सकता है. इन वैज्ञानिकों ने तीसरी से सातवीं कक्षा तक के बच्चों की फुटबाल के बारे में जानकारी की जांच करने के लिए एक अनुसंधान परियोजना पर काम किया. वैज्ञानिकों का कहना है कि उन्होंने इस परियोजना में दोनों प्रकार के बच्चों को शामिल किया. इन में कुछ को फुटबाल खेल में रुचि थी और कुछ की नहीं थी. इन में से आधे बच्चों का फुटबाल में बौद्धिक स्तर अच्छा था तो आधों को फुटबाल के बारे में अच्छी जानकारी नहीं थी. इन सभी बच्चों में से सब से अच्छी स्मरणशक्ति उन्हीं की थी जो फुटबाल विशेषज्ञ थे.

प्रोत्साहन या प्रेरणा के साथसाथ धैर्य, आत्मनियंत्रण, संयम और दृढ़ता का होना आवश्यक है. बुद्धिमान बनने के लिए 99% दृढ़ निश्चय व लगन और 1% प्रेरणा का होना अनिवार्य है.

विशिष्ट ज्ञान बहुत महत्त्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन इस का फल तभी मिलता है जब व्यक्ति की योग्यता औसत से अधिक हो.

यह सूत्र संभवतः यथार्थ स्थिति के ज्यादा निकट है जिस में कहा गया है कि प्रतिभा में व्यक्तिगत अंतर का महत्त्व नहीं होता. अगर महत्त्व है तो बोधता या ज्ञानगत योग्यता के अंतर का. प्रतिभासंपन्न बच्चों को इस बात के लिए प्रेरित किया जाए कि ज्यादा लगन और प्रतिबद्धता से काम करें. यदि प्रतिभासंपन्न बच्चों को स्कूल या घरों में आगे बढ़ने के उचित अवसर न मिलें तो प्रोत्साहन के अभाव में उन की काम करने की इच्छाशक्ति कम हो जाती है. इसलिए प्रतिभासंपन्न बच्चों को समयसमय पर चुनौतीभरे कार्य सौंप कर पूरी मेहनत और लगन से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए. ●



पाषाण पिघला

गतांक से आगे

उपन्यास • डा. राजलक्ष्मी शिवहरे

हम दोनों चुप ही बैठे थे. कहते भी क्या, बात पतिपत्नी के बीच की थी.

"भारती, अभी तो तुम यहां पर हो..." सुनीता ने मेरी ओर देखा तो इन्होंने कहा, "बच्चों को हम माताजी के पास छोड़ कर आए हैं. जल्दी बात तय हो जाती तो अच्छा रहता." इन की आवाज की तटस्थता ने मुझे चौंका दिया. न उस आवाज में सुनीता के प्रति कोई स्नेह था, न उपेक्षा.

तभी स्वप्निल बोला, "हम आप को



रहा है

पूर्व कथा

भारती की सहेली सुनीता को अपने दुखद अतीत के कारण पुरुषों से नफरत थी, परंतु तभी उस की जिंदगी में स्वप्निल आता है, वह सुनीता से विवाह करने पर अड़ा हुआ था. भारती और उस के पति निशिकांत के समझानेबुझाने पर वह शादी के लिए इस शर्त पर तैयार हो जाती है कि अपनी जिंदगी वह अपने तरीके से जीएगी. शादी के बाद सुनीता के व्यवहार में कुछ सुखद परिवर्तन होने लगता है. कुछ समय बाद भारती और निशिकांत को स्वप्निल के पत्र से पता चलता है कि सुनीता उस की बच्चे की इच्छा को पूरा करने वाली है. वह एक बेटी सपना को जन्म देती है. सपना दो वर्ष की हो जाती है. एक दिन सुनीता भारती और निशिकांत को किसी विशेष काम से जयपुर बुलाती है. वहां जाने पर उन्हें पता चलता है कि वह तलाक लेना चाहती है. अब आगे...

अधिक दिन नहीं रोकेंगे. मैं तो आप लोगों को बुलाने के पक्ष में भी नहीं था. भारतीजी, जानता हूं,आप के मन को कष्ट हो रहा है, परंतु जिंदगी केवल जीने का नाम तो नहीं और फिर ऐसी जिंदगी को क्या जीना, जिसे तिलतिल कर काटा जाए. मैं सुनीता को खुश रखना चाहता था, पर रख नहीं पाया. शायद मुझ में ही कोई कमी थी. यह यदि कहीं और सुखी हो सकती है तो मुझे इस का यह अधिकार छीनने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए."

"लेकिन आप ने यह कैसे सोच लिया कि यह कहीं और सुखी हो सकती है?" मैं ने उस की ओर देखा.

"सुनीता की आंखें तों बिना बोले भी बहुत कुछ बोल जाती हैं और फिर किसी को बांधे रखना बुद्धिमानी भी तो नहीं. क्या होता है सरिता पर बांध बना कर... जब वह सब बंधन तोड़ कर बह निकलती है तो गांव के गांव बहा ले जाती है. मेरा घर तो बहुत छोटा सा है. मेरी और मां की खुशी तो तभी सुरक्षित है, जब सपना और सुनीता खुश रहें..."

"सुनीता, तुम भी तो कुछ बोलो," इन्होंने स्वप्निल को बीच में ही रोकते हुए कहा.

"क्या बोलूं? शायद मैं जो कुछ भी बोलूंगी, वह आप को अस्वाभाविक लगे. लगना भी चाहिए क्योंकि सामाजिक नियमों

का उल्लंघन अस्वाभाविक ही तो कहा जाएगा. पर मन तो मन होता है. सब नियमों से परे उस का भी तो अस्तित्व होता है. उस को नकार कर कोई जी भले ही ले, पर उस का सुखी होना असंभव ही है. स्वप्निल ने दया कर के मुझ से शादी की. वह चाहता था नौकरी छोड़ कर मैं एक पंगु जीवन बिताऊं. उस के पास अपनी फैक्ट्री के लिए तो समय था, पर मेरे लिए नहीं. इन की माताजी की इच्छा को देख कर ममता का बोझ भी उठाना पड़ा. हुआ क्या इन सब का परिणाम? मैं इस तरह नहीं जी सकती. देवेंद्र से मुझे वह सब मिला, जो स्वप्निल से कभी नहीं मिल सकता था."

मुझे चिढ़ होने लगी थी सुनीता की शिकायतों पर क्योंकि उन में इतना वजन नहीं था कि वह स्वप्निल से अलग हो जाए. इस के सौंदर्य की प्रशंसा करता रहे. यदि सुनीता अपने पति की फैक्ट्री के ही कामों में हाथ बंटाती तो क्या स्वप्निल के पास सुनीता के लिए समय न होता? लेकिन यह सब उसी को समझाया जा सकता है जो मस्तिष्क को खुला रखे. जिस ने सब दरवाजे बंद कर लिए हों उसे शुद्ध हवा कैसे मिल सकती है? अच्छे से अच्छा संगीत यदि बहरे व्यक्ति के सामने बजाया जाए तो उस का आनंद वह कैसे उठाएगा?

"मैं एक बार देवेंद्र से मिलना चाहती हूं," मैं ने तलाक के कागज समेटते हुए कहा, "जिस के कारण यह सब हो रहा है, एक बार उस से भी तो मिल लिया जाए."

"भारती, मैं उसे 4 बजे ले कर आऊंगी. मुझे कालेज जाना है. अब मैं जाना चाहूंगी," सुनीता ने उठते हुए कहा.

सुनीता के साथ स्वप्निल के सपनों की दुनिया तो नहीं बस पाई थी परंतु फिर भी वह उस के जिद्दी स्वभाव के साथ सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश कर रहा था. लेकिन तभी उस की जिंदगी में ऐसा बवंडर आया कि उस की गृहस्थी बिखराव के कगार पर पहुंच गई. क्या इस के पीछे भी सुनीता की जिद ही थी या कुछ और?

'स्वप्निल ने दया कर के ब्याहा' कितना गलत तर्क था. मन की चाहत को सभी तो शब्दों में स्पष्ट व्यक्त नहीं कर पाते. देवेंद्र नाम के उस अनजान व्यक्ति के लिए मेरा मन खौल रहा था जिस ने अपने वाग्जाल में सुनीता को फंसा लिया था.

हर विवाहित लड़का चाहता है कि उस की पत्नी घर में रह कर घर की देखभाल करे. इस में पंगु जीवन बिताने की बात कहां से आई. कौन लड़की ममता को बोझ समझती है, जबकि नारी की संपूर्णता ही मां बनने में है. यह जाहिल, गंवार... न जाने कितनी गालियां मन ही मन मैं ने उसे दे डाली थीं.

इसे क्या पति के नाम पर एक खुशामदी चमचा चाहिए था, जो हर समय

"चलो, तुम्हें कालेज छोड़ते हुए सपना को घर छोड़ दूंगा." स्वप्निल ने कहा और हमारी ओर देखते हुए बोला, "आप कब घर आ रहे हैं?"

"आज तो नहीं, अभी यात्रा की थकान इतनी है कि खाना खा कर कुछ देर सोना चाहते हैं." इन्होंने कहा.

स्वप्निल और सुनीता के जाने के बाद मन बहुत बोझिल हो उठा. पर खाना खाने के बाद जब सो कर उठे तो सब कुछ हलकाहलका लग रहा था.

"देवेंद्र में ऐसी कौन सी बात होगी जो सुनीता उस के लिए अपने भरेपूरे परिवार को छोड़ने के लिए तैयार हो गई?" शाम की चाय पीते समय इन से पूछा.

"नारी को समझना बहुत कठिन है,



"आप इतनी सरलता से अपने अधिकार क्यों छोड़ रही हैं?" भारती ने देवयानी से पूछा. ▲

भारती. उस का मन कब विद्रोही हो जाएगा कुछ कहा नहीं जा सकता. बचपन में मां का स्नेह जिन्हें नहीं मिल पाता, शायद उन में धैर्य और समझ कम ही होती होगी, पर कभी क्या...?"

चाय छलकतेछलकते बची, "क्या कहना चाह रहे हैं आप?"

"सोच रहा हूं, क्या कभी तुम्हारा मन भी इस तरह विद्रोह कर सकता है?"

"सच थोड़ा कड़वा होता है, सुन सकेंगे?" कभी हलके से भी इन का मन नहीं दुखाया था मैं ने, पर जब बात मुझ पर ही आ गई थी तो चुप कैसे रहा जा सकता था. मैं धीरे से बोली, "सब में सुनीता जैसा साहस तो नहीं होता न... और यदि साहस हो भी जाए तो समाज का भय उसे ऐसा करने से रोकता है. अपवाद को यदि छोड़ दिया जाए तो अपने परिवार का बंधन और बच्चों का स्नेह आड़े आ जाता है. प्रेम की परिभाषा बहुत कठिन है. प्रेम की कोई उम्र नहीं होती. क्षणिक आवेश में आ कर किया गया प्रेम



घायल

जहर को जहर मारता है
सुना था कानों से,
मगर यह क्या हुआ
देखा जो आंखों से,
घावों पर नमक छिड़कता
एक घायल दूसरे घायल के,
अपने हाथों से.

—उषा गोपाल

स्थायी नहीं होता. समय पर आंखें खुलती हैं तो उस का वही रूप उजागर हो जाता है... और प्रेम कभी भटकता नहीं, यदि उसे तृप्ति की अंतिम बूंद तक अपने प्रिय का प्रेम मिला हो..." पता नहीं, अंतिम शब्दों को उच्चारित करते समय मेरा गला क्यों भर आया था.

"मुझे माफ कर दो भारती. पता नहीं, आज मैं कैसे इतना कठोर हो गया था."

"इस में दोष आप का नहीं, पुरुष का मन ही संदेहशील होता है..."

"हां भारती, अब मैं समझ गया हूं कि मन पर नियंत्रण की भिन्नता ही हमें एकदूसरे से अलग करती है." अभी हम ने बात समाप्त की ही थी कि सुनीता देवेंद्र को ले कर आ गई.

अभी कुछ क्षण पूर्व कितनी गंभीर बात पर चर्चा चल रही थी, यह सब मैं उस सुदर्शन व्यक्तित्व को देखते ही भूल गई थी. अभी तक कवियों ने अधिकतर नारी सौंदर्य पर ही अपनी कलम चलाई है, पर शायद ऐसे पुरुष को देखने के बाद उन की लेखनी भी अबाध चल सकती थी. छरहरी देह का मालिक वह बंगाली युवक देखने में बहुत गौरवर्णीय नहीं था पर उस के तीखे नाकनक्श, घुंघराले केश और बड़ीबड़ी कहीं खोई सी आंखें ही किसी भी लड़की को आकर्षित करने के लिए काफी थीं.

"यह है मेरी सहेली भारती और इन के पति निशिकांत."

सुनीता की आवाज ने मुझे चौंका दिया था. मेरी दृष्टि सहसा झुक गई थी.

"आप देवेंद्र हैं न?" इन्होंने कहा.

"हां, जी मैं देवेंद्र ही हूं."

सब के बैठते ही बेयरा बरतन उठाने आया तो इन्होंने उसे और चाय लाने के लिए कह दिया.

"आप क्या काम करते हैं?" इन्होंने ही बात आरंभ करने के लिए पूछा

"जी, हम दोनों एक ही कालेज में पढ़ाते हैं."

मुझे लगा इस व्यक्ति की आवाज में भी आकर्षण है और शायद दबंग भी है.

"आप का अपना घरपरिवार?"

"जी, सब हैं, पत्नी, दो बच्चे—तपन और तारिक."

"क्या आप भी अपनी पत्नी से तलाक ले रहे हैं?"

"लेना चाहता था, पर मेरी पत्नी इस के लिए तैयार नहीं है. उस ने कह दिया है कि वह बीच में उलझन नहीं डालेगी."

"यानी सुनीता ही अपना परिवार छोड़ रही है. खैर, यह उस का मामला है. हमें बीच में नहीं पड़ना, पर एक बात बताइए, क्या आप के इस निर्णय से आप की पत्नी को दुख नहीं हुआ?" इस बार मैं ने देवेंद्र की आंखों में आंखें डाल कर पूछा.

"हुआ क्यों नहीं, दिल जब टूटते हैं तो आवाज भले ही न हो, पर दर्द तो होता ही है, भले ही उस दर्द को आंखों के सहारे बहा दिया जाए."

"यह तो आप की पत्नी की महानता है. पर क्या किसी को दुखी कर के आप सुखी हो सकेंगे?"

"मैं अपने सुख के लिए नहीं, सुनीता

की इच्छा के लिए ब्याह कर रहा हूं."

"यानी आप के मन में ऐसी कोई इच्छा नहीं?" जाने क्यों मैं ने सुनीता की ओर देखा, जो मन ही मन शायद इन बातों से चिढ़ रही थी.

मेरी बात का शायद उस के पास कोई उत्तर नहीं था. मैं ने ही कहा, "जाने दीजिए, आप दोनों समझदार हैं. जो कर रहे होंगे उस पर पहले भी खूब सोच लिया होगा. पर एक बार आप की पत्नी के दर्शनों की बड़ी इच्छा है."

"आप जब कहें, मैं उन से आप को मिलवा दूंगा."

"क्या मैं भी चलूं?" सुनीता ने कहा.

"मैं उन से अकेले ही मिलना चाहती हूं. शायद तुम्हारे सामने ठीक से बात नहीं कर सके. वैसे यदि तुम नहीं चाहती कि मैं अकेले मिलूं तो जाने दो...."

"नहीं, ऐसी बात नहीं है..."

"क्या मैं इन के साथ जा सकती हूं?" इस बार मैं ने इन से पूछा.

"यानी तुम नहीं चाहती कि हम भी उन के दर्शन करें?" यह हंस पड़े थे.

"कब चलना चाहेंगी?" देवेंद्र ने पूछा.

"कल सुबह 8 बजे ले जा सकोगे?"

"आप तैयार रहिएगा."

"तो हम चलें," सुनीता उठते हुए बोली.

उन के जाने के बाद इन्होंने कहा, "कमरे में उमस भर गई है. आओ, थोड़ा बाहर घूम आएं." और हम लोग कमरे से बाहर आ गए.

दूसरे दिन समय पर देवेंद्र आ गया था. रास्ता बड़ी खामोशी से कटा था. शहर से बाहर एक नई बसी कालोनी में देवेंद्र का घर था.

आटो से मैं उतरी तो देखा कि दरवाजे पर ही चौड़े पाड़ की साड़ी में देवेंद्र की पत्नी खड़ी है.

देवेंद्र ने उस से कहा, "इन्हें अंदर ले जाओ, मैं पैसे दे कर अभी आता हूं." घर के सामने बने बगीचे ने मुझे प्रभावित किया था.

"आइए. मैं देवयानी..."

"मैं भारती..." इस से आगे अपना क्या परिचय दूं, बैठक में प्रवेश करते समय मैं सोच रही थी.

"आप सुनीताजी की सहेली हैं न?" देवयानी की आवाज बड़ी कोमल थी.



"बेटा अच्छी तरह देख ले... फिर न कहना कि गरमियों की छुट्टियों में पहाड़ नहीं दिखाया."

"हां, आप ठीक समझीं... हम कल ही यहां पहुंचे और आज आप से मिलने की इच्छा हो आई."

"बहुत अच्छा लगा मुझे आप से मिल कर..." देवयानी ने मुझे एक कुरसी पर बैठने का संकेत करते हुए कहा.

मैं ने देवयानी को देखा, अभी कुछ देर पूर्व ही नहाई थी शायद. पीठ पर गीले केश फैले हुए थे. पूरी मांग में सिंदूर भरा हुआ था. हाथ में हाथीदांत की चूड़ी पहने थी और माथे पर गोल टीका लगा था.

"आप बच्चों से मिलना चाहेंगी?" वह मुसकराते हुए बोली.

"जरूर."

वह भीतर से दोनों बच्चों को बुला लाई थी, "यह चार वर्ष का तपन और यह दो वर्ष का तारिक."

बच्चे बिलकुल देवेंद्र की शक्ल पर गए थे.

"नमस्ते करो मौसी को." देवयानी ने कहा तो दोनों ने हाथ जोड़ दिए.

"पढ़ते हो?" मैं ने पूछा.

"तपन तो स्कूल जाता है, लेकिन यह पूरे समय शैतानी करता है." उस ने तारिक को गोद में उठाते हुए कहा. तारिक था तो मां की गोद में, पर उस की तिरछी दृष्टि मुझ पर टिकी थी.

बच्चों को देखते ही मुझे अपना घर याद आ गया. सोचने लगी, राहुल और रोहित क्या कर रहे होंगे इस समय? अवश्य माताजी को तंग कर रहे होंगे. पहली बार मैं बच्चों से अलग हुई थी. मेरी आंखें डबडबा आई थीं, पर किसी तरह अपने को संयत रखते हुए मैं ने देवयानी के बच्चों से कहा, "आओ मेरे पास."

तभी देवेंद्र आ गए थे, "देवयानी, कुछ चाय वगैरह..."

"अभी लाती हूं." कह कर वह बच्चों के साथ भीतर चली गई. और मैं बैठक में लगी देवेंद्र की फोटो को निहारती रह गई थी.

"आप एलबम देखेंगी," इतनी देर में वह एलबम उठा लाया था.

कुछ विवाह के फोटो थे. कश्मीर में खिंचवाए गए कुछ फोटो भी थे. विवाह के बाद वहां घूमने गए होंगे. अच्छे लगे दोनों पहाड़ी वेशभूषा में. इस के बाद तपन और तारिक के फोटो थे, कभी नहाते हुए, कभी मां की गोद में तो कभी पिता की गोद में.

"इतने प्यारभरे अतीत से पीछा छुड़ा पाएंगे आप?" मैं ने कहा तो देवेंद्र ने अचकचा कर मुझे देखा.

"कुछ पाने के लिए कुछ तो खोना ही पड़ता है."

"चाहे हीरे को गंवा कर कंकड़ ही हाथ क्यों न लगे?"

सुनते ही देवेंद्र की दृष्टि झुक गई थी. फिर वह धीरे से बोला, "सुनीता आप की सहेली है, फिर भी आप ऐसा कह रही हैं," उस ने अजीब नजरों से घूरते हुए कहा.

"वह मेरी सहेली है, इसी लिए मैं ऐसा कह रही हूं. वह स्वयं यह नहीं जानती कि वह चाहती क्या है? और यदि अप्राप्य उसे मिल जाए तो दो दिन में उसे यों ठुकरा देती है जैसे उस की कामना ही कभी उस ने न की हो. बहुत जिद्दी है और कम अक्ल है वह लड़की."

तभी देवयानी चाय ले कर आ गई थी. बच्चों को वह अंदर ही छोड़ आई थी.

चाय पीते समय मुझे एक बात का अनुभव हुआ कि देवयानी एक अच्छी पत्नी ही नहीं, वरन एक सुघड़ गृहिणी भी है. इतनी सी ही देर में वह चाय के साथ बहुत सी चीजें बना लाई थी.

हम दोनों ही खाते रहे थे, लेकिन देवेंद्र ने सिर्फ चाय पी थी. चाय पीने के बाद मैं ने कहा, "तो अब चलें."

"मैं आटो ले आता हूं, अगले नुक्कड़ पर मिल जाएगा. तब तक आप यहीं बैठिए." कह कर देवेंद्र उठ कर चला गया था.

"आप इतनी सरलता से अपने

अधिकार क्यों छोड़ रही हैं?"

"तो क्या करूं, चिल्लाऊं? रिश्तेदारों को इकट्ठा कर लूं, कोर्ट में जाऊं? लेकिन क्या मिलेगा मुझे? कुछ भी तो नहीं. तब भी यही सब होना है. यदि एक बार पुरुष ने निर्णय ले ही लिया हो कि उसे अपने परिवार से अलग होना ही है तो उसे रोकना बहुत कठिन होता है. मैं दुनिया में पहली नारी तो नहीं जिसे यह अपमान सहना पड़ रहा हो." देवयानी की आंखें भरने लगी थीं.

"इस के बाद अपना समय कैसे बिताओगी, सोचा है?"

अपने आंसुओं को पोंछते हुए वह बोली, "मैं ने तपन के स्कूल में नौकरी कर ली है."

"देवेंद्र ने मना नहीं किया?"

"मना करने का अधिकार तो उन्होंने खुद ही समाप्त कर दिया है."

"मैं चाहती थी कि तुम्हारा घर टूटने से बच जाता."

"मेरा या सुनीता का?... खैर, बात एक ही है." देवयानी की आंखें रोतेरोते भी हंस सकती हैं, मुझे यह जान कर सुखद आश्चर्य हुआ.

वह आगे बोली, "आप बहुत घनिष्ठ मित्र हैं सुनीता की?"

"तुम्हारी नहीं?"

"जो किसी का दर्द अनुभव करे, वह अजनबी होने पर भी मित्र ही होता है."

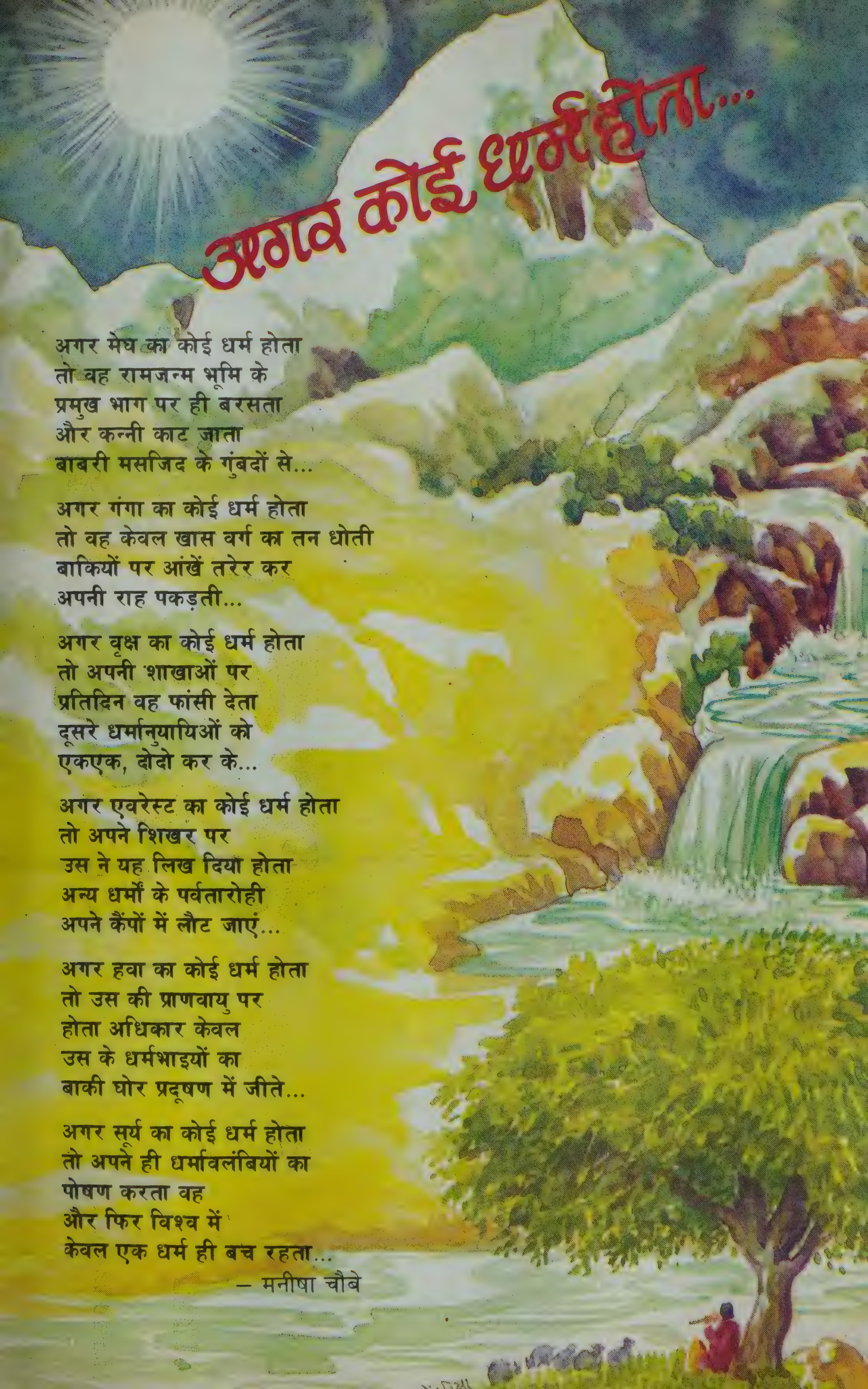
जी तो हो रहा था कि इस औरत को गले से लगा लूं, पर आटो की आवाज सुन कर कहा, "जाती हूं."

"आप से मिल कर बहुत हलका महसूस हो रहा है." देवयानी ने बाहर तक साथ आते हुए कहा.

मेरा मन कितना भारी था, मैं ही जानती थी पर उस से कहती क्या. आटो की आवाज सुन कर बच्चे भी बाहर आ गए थे.

"पिताजी, आप फिर बाहर जा रहे हैं?" तपन ने पूछा.

"बेटे, अभी आते हैं," देवेंद्र ने कहा और हम दोनों आटो में बैठ गए. —क्रमशः



अगर कोई धर्म होता...

अगर मेघ का कोई धर्म होता
तो वह रामजन्म भूमि के
प्रमुख भाग पर ही बरसता
और कन्नी काट जाता
बाबरी मसजिद के गुंबदों से...

अगर गंगा का कोई धर्म होता
तो वह केवल खास वर्ग का तन धोती
बाकियों पर आंखें तरेर कर
अपनी राह पकड़ती...

अगर वृक्ष का कोई धर्म होता
तो अपनी शाखाओं पर
प्रतिदिन वह फांसी देता
दूसरे धर्मानुयायिओं को
एकएक, दोदो कर के...

अगर एवरेस्ट का कोई धर्म होता
तो अपने शिखर पर
उस ने यह लिख दिया होता
अन्य धर्मों के पर्वतारोही
अपने कैंपों में लौट जाएं...

अगर हवा का कोई धर्म होता
तो उस की प्राणवायु पर
होता अधिकार केवल
उस के धर्मभाइयों का
बाकी घोर प्रदूषण में जीते...

अगर सूर्य का कोई धर्म होता
तो अपने ही धर्मावलंबियों का
पोषण करता वह
और फिर विश्व में
केवल एक धर्म ही बच रहता...

– मनीषा चौबे

टेढ़ी उंगली

कहानी • सुरैया जबीं

विजय और उस के साथियों ने एक जोरदार कहकहा लगाया. रमिया ने सहम कर इधरउधर देखा और अपनेआप में ही कुछ सिकुड़ गई. उस के मुंह से बोल ही न फूटे. वह सोचने लगी कि नानी जल्द से जल्द पानी पी कर लौट आए ताकि उसे विजय और उस के आवारा साथियों से मुक्ति मिले.

''क्यों री रमिया, आज तेरा क्या भाव है?'' विजय उस के बिलकुल करीब आ कर खड़ा हो गया.

रमिया कुछ न बोली. उस के बदन में हलकी सी कंपकंपी होने लगी. सोचा, 'नानी भी जल्दी नहीं आ रही है और गली का यह मोड़ भी बिलकुल सूना है. जाने आज क्या होने वाला है?'

विजय उस के भय को भांप कर हंस दिया, ''डरती क्यों हो रानी, मैं तो सब्जी का भाव पूछ रहा था.''

धीरेधीरे उस के सारे साथी भी रमिया के बिलकुल करीब आ गए.

रमिया को लगा कि वह अब रो देगी. लेकिन तभी तेज़ चाल से चलती हुई नानी आ गई. उस ने उन लोगों को देखा तो आग-बबूला हो गई, ''भागो यहां से... आवारा कहीं के... यहां कोई नाच हो रहा है. मुंहझौंसों को कीड़े पड़ें, फोड़े हो जाएं.''



नानी के मुंह से गालियों की बौछार हो रही थी. विजय ने भलाई इसी में समझी कि अब चुपचाप खिसक जाए. उस के साथसाथ उस के साथी भी खीसें निपोरते हुए चले गए. यह रोज का किस्सा था. वे लोग जब भी रमिया को अकेली देखते, छेड़खानी की कोशिश करते और फिर नानी की गालियां सुनते ही नौ दो ग्यारह हो जाते.

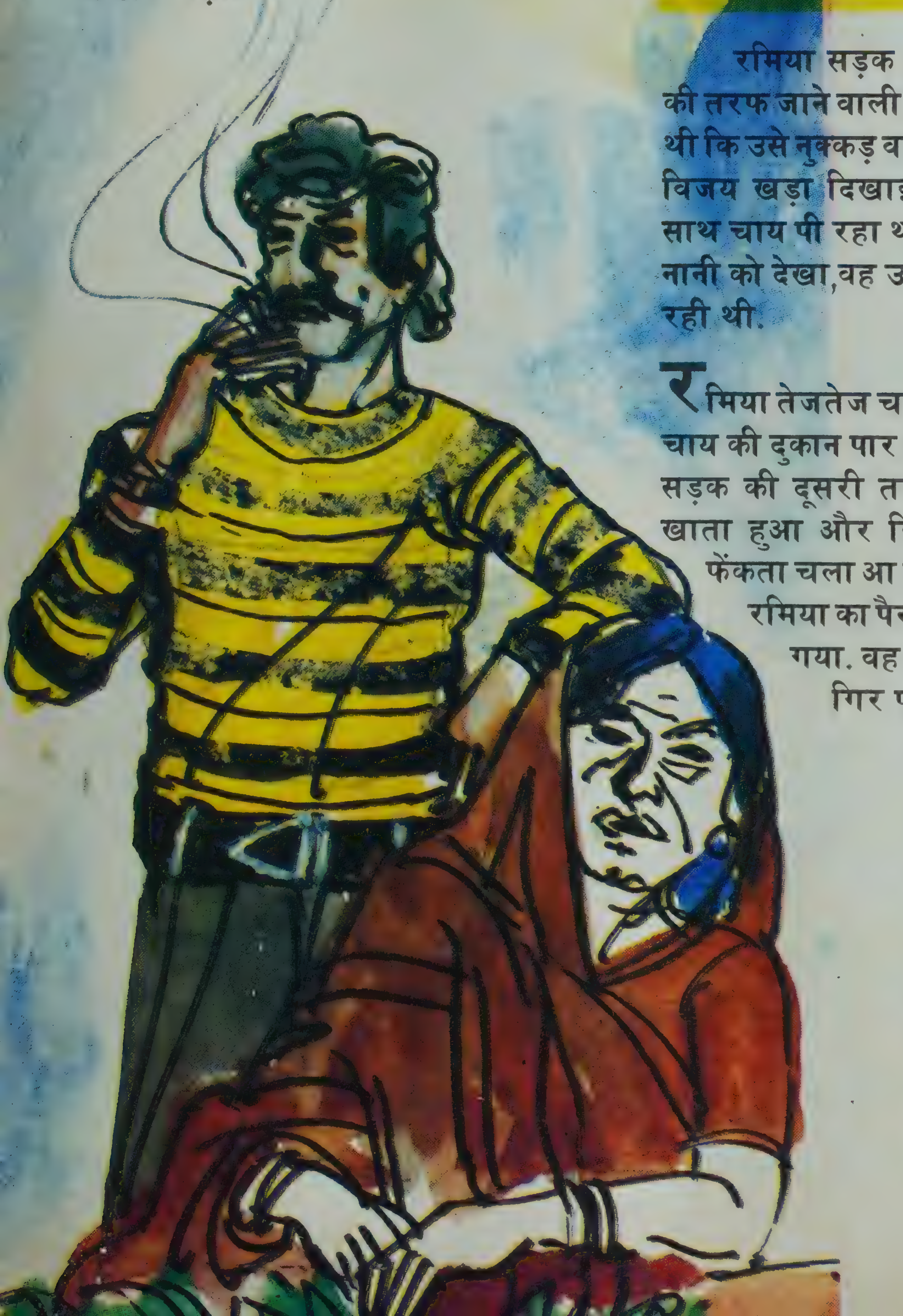
साफ रंग और तीखे नयननक्श वाली

17 वर्षीया रमिया के लिए उस की कर्कशा नानी न केवल अभिभावक थी, बल्कि सुरक्षा प्रहरी भी थीं. नानी की गालियां सुन कर बड़ोंबड़ों के पसीने छूट जाते. कोई उस की तरफ देखने की भी हिम्मत न करता.

उस दिन मौसम भी ठीक नहीं था और सुबहसुबह हुई गालीगलौज के कारण नानी का मन भी उखड़ गया था. इसलिए वह पूरी सब्जी खत्म किए बगैर ही घर की ओर चल दी. रमिया ने भी अपनी टोकरी उठा ली, हालांकि उस की टोकरी में काफी आलू अभी शेष थे. वह सोच रही थी कि ये सब बिक जाते तो उसे घर जाते हुए इतना भार न ढोना पड़ता.

विजय रमिया को हासिल करना चाहता था, लेकिन रमिया की तेजतर्रार, कर्कश नानी उस के आगे रोड़ा बनी खड़ी थी. अंत में जब सीधी तरह से काम नहीं बना तब मजबूरन उसे उंगली टेढ़ी करनी पड़ी.

रमिया सड़क पार कर के अपने घर की तरफ जाने वाली गली की तरफ मुड़ी ही थी कि उसे नुक्कड़ वाली चाय की दुकान पर विजय खड़ा दिखाई दिया. वह मंगल के साथ चाय पी रहा था. रमिया ने पलट कर नानी को देखा,वह उस के पीछे ही चली आ रही थी.



रमिया तेजतेज चलने लगी. वह जल्दी से चाय की दुकान पार कर जाना चाहती थी. सड़क की दूसरी तरफ से सखाराम केले खाता हुआ और छिलकों को सड़क पर फेंकता चला आ रहा था. हड़बड़ाहट में रमिया का पैर केले के छिलके पर पड़ गया. वह टोकरी लिए औंधे मुंह गिर पड़ी. चारों तरफ आलू बिखर गए.

विजय और मंगल जोरजोर से हंसने लगे. रमिया अपनी चोटों की परवाह न करते हुए जल्दीजल्दी आलू उठाने लगी. उधर नानी आलू भी उठाती जा रही थी और हाथ नचानचा कर सखाराम को

कोसती भी जा रही थी, "तेरी आंख में रतौंधी हो जाए, तुझे कीड़े पड़ें, प्यासा मरे तू, निरबंसिया हो जाए."

'निर्वंश' होने की बात पर सखाराम थोड़ा ठिठका. उस ने धमकाते हुए कहा, "देख नानी, जरा मुंह संभाल कर बात कर. तेरी जबान बड़ी चलती है."

टोके जाने पर नानी जख्मी शेरनी की तरह गरज उठी, "हांहां, निरबंसिया ही मरेगा तू..."

तब तक दोतीन लोग जमा हो गए थे. सभी की हमदर्दी रमिया और उस की नानी की तरफ थी. बात बिगड़ती देख सखाराम जल्दी से आगे बढ़ गया. नानी भी रमिया के संग घर की तरफ चल दी.

विजय मंगल के साथ चाय की दुकान पर खड़ा तमाशा देख रहा था. वह सीने पर हाथ रख कर बोला, "हाय, क्या चीज है... रमिया को देख लेने से ही कलेजे को ठंडक मिलती है... सीने से लगा लेने से जाने क्या होगा?"

"उसे कलेजे से लगाने की बात सोचना भी नहीं वरना उस की नानी तेरा कलेजा निकाल लेगी," मंगल ने मुसकराते हुए कहा.

"मंगल, तब तू विजय को नहीं जानता. जब बात सीधे नहीं बने तो कोई उलटी चाल सोचनी पड़ती है... घी सदा टेढ़ी उंगली से ही निकलता है," विजय ने हेकड़ी भरे स्वर में कहा.

दूसरे दिन सुबह विजय की आंख खुली तो उस के कानों में स्त्री रुदन का स्वर टकराया. वह उठ बैठा. उस की गली की तरफ से बहुत से लोग बातचीत करते हुए जा रहे थे.

"पेचिश का रोग पूरे शहर में फैला हुआ है... बच्चों के लिए तो यह जानलेवा बीमारी है."

"आखिर वह चार साल का बच्चा ही तो था..."

विजय ने अनुमान लगाया कि कोई चार साल का बच्चा पेचिश के कारण मर गया है. तभी उस की मां आ गई. उस ने बताया कि सखाराम का बेटा दो दिन से बीमार था, रात को चल बसा.

सखाराम का नाम सुनते ही विजय मन ही मन मुसकरा उठा. अपने तीनचार साथियों को ले कर वह सखाराम के घर की ओर चल पड़ा.

सखाराम बरामदे में सिर झुकाए बैठा था. उस के इर्दगिर्द शोक मुद्रा में कई पुरुष बैठे थे. विजय अपने दलबल के साथ आंगन में उस ओर चला गया, जहां सखाराम की पत्नी अपने इकलौते बच्चे की मृत्यु पर विलाप कर रही थी. महल्लेभर की औरतें उसे गले लगालगा कर सांत्वना दे रही थीं.

सखाराम की पत्नी बच्चे की मृत्यु का सारा दोष स्वयं पर डाल रही थी, "हाय, मैं क्यों नहीं कल ही इसे डाक्टर के पास ले गई."

विजय ने मौका उचित समझा. वह सखाराम की पत्नी को सुनाते हुए अपने साथियों से बोला, "भला इस बेचारी का क्यां दोष... सारा कियाधरा तो उस कमीनी औरत का है. कल ही सखाराम से कह रही थी कि तू निरबंसिया मरेगा. आखिर मार ही दिया न बच्चे को..."

सखाराम की पत्नी के कान खड़े हो गए, "कौन औरत मेरे बच्चे की मौत चाहती थी?"

विजय ने बढ़ाचढ़ा कर सारा किस्सा बता दिया. साथ ही यह भी कह दिया कि अगर उस पर विश्वास न हो तो वह सखाराम से पूछ सकती है. बच्चा तो मर ही चुका था, मगर विजय महल्ले की औरतों के बीच एक चिनगारी छोड़ आया.

रमिया की नानी लोगों से अलगथलग रहने वाली और अपनी मेहनत के बलबूते पर गुजर करने वाली भली औरत थी. लेकिन जब कोई रमिया के साथ छेड़छाड़ करता था, उस की सब्जी का पैसा दिए हुए



रमिया और उस की नानी दिनभर सब्जी लिए बैठी रहतीं. कभीकभार कोई अनजान आदमी ही उन लोगों से कुछ खरीदता.

उस के बाद महल्ले में कोई बीमार होता या कोई मर जाता, कोई दुर्घटना होती या किसी स्त्री का गर्भ खराब होता, सारा दोष रमिया की नानी पर आता.

नानी जीवट वाली औरत थी. शादी के दो साल बाद ही पति एक पुत्री को छोड़ कर चल बसा. उस ने सारे दुखों को अपने अंदर समेटा और सब्जी की टोकरी सिर पर उठा ली. रातदिन की मेहनत से उस का और उस की बेटी का गुजारा चलने लगा. वह भूखी रह लेती, मगर कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया.

नानी ने पैसापैसा जोड़ कर बेटी की शादी की थी. मगर रमिया को जन्म देते समय उस की बेटी मर गई. तब से नानी रमिया को ही बेटी की तरह पाल रही थी. रमिया के पिता ने कभी उस की खोजखबर नहीं ली.

नानी ने जीवन के बड़े उतारचढ़ाव देखे थे. वह कभी रोई नहीं थी, कभी हार नहीं मानी थी. मगर पहली बार जब लोगों की दबीदबी जबान में कही गई बात उस के कानों से टकराई तो वह सहम गई. हर वक्त उस के कानों में एक ही शब्द गूंजता रहता, 'वह डायन है, वह डायन है.'

धीरेधीरे पूरी बस्ती के लोग उस को देख कर कतराने लगे. स्त्रियां सड़क पर खेलते बच्चों को जबरदस्ती घर ले जातीं.

समय पर न चुकाता तो उस के मुंह से गालियों की बौछार होने लगती. महल्ले के लोग उस की गालियों से घबराते थे.

एक दिन सुबहसुबह सोमू की मां नानी से उलझ पड़ी. उस ने सोमवार के रोज पैसे देने के वादे पर सब्जी उधार ली थी. सोमवार को पैसे मांगने पर सोमू की मां ने एकदो दिन और रुकने की बात कही. बस रमिया की नानी को गुस्सा आ गया. वह तेज आवाज में गालियां देने लगी. सोमू की मां ने तब भी पैसे नहीं दिए. रमिया की नानी चिल्ला कर दूसरे दिन फिर आने की बात कह कर चली गई.

उसी शाम सोमू स्कूल से घर लौट रहा था कि उस की साइकिल एक कार से टकरा गई. उसे मामूली सी चोट आई. विजय को एक और मौका हाथ लगा. उस ने जगहजगह यह प्रचार करना शुरू कर दिया कि सोमू दुर्घटनाग्रस्त इसलिए हुआ कि उस की मां का रमिया की नानी से झगड़ा हुआ था.



थानेदार से बात करते हुए ठाकुर साहब को विजय और उस के साथियों का ध्यान था, मगर फिर पोती काजल का मासूम चेहरा उन की नजरों में घूम गया और उन्होंने भी किसी पर शक होने की बात से इनकार कर दिया.

कोई उस से सब्जी न खरीदता. चौक वाले मोड़ पर भी बस्ती के लोग उस से कुछ न लेते. धीरेधीरे आसपास के गांवों में भी यह बात फैल गई. रमिया और उस की नानी दिनभर सब्जी लिए खाली बैठी रहतीं. कभीकभार कोई अनजान आदमी ही उन से कुछ खरीदता.

ऐसे कब तक चलता. रमिया को ले कर नानी दूरदराज के गांवों में जाने लगी. कभीकभी उन्हें बहुत देर हो जाती तो दोनों रात को वहीं कहीं रुक जातीं. जिस दिन उन की कोठरी में ताला लगा रहता, बस्ती के लोग चैन की सांस लेते.

मगर भला विजय को कैसे चैन मिलता. उस ने जगहजगह कहना शुरू कर दिया कि रमिया की नानी का रात को न आना बस्ती वालों के लिए ज्यादा खतरे की बात है. पुराने इमली वाले पेड़ पर रात को सारी डायनें इकट्ठी हो कर नाचती हैं और एकदूसरी को नएनए मंत्र सिखाती हैं. हो न हो, नानी रमिया को भी मंत्र सिखाती है.

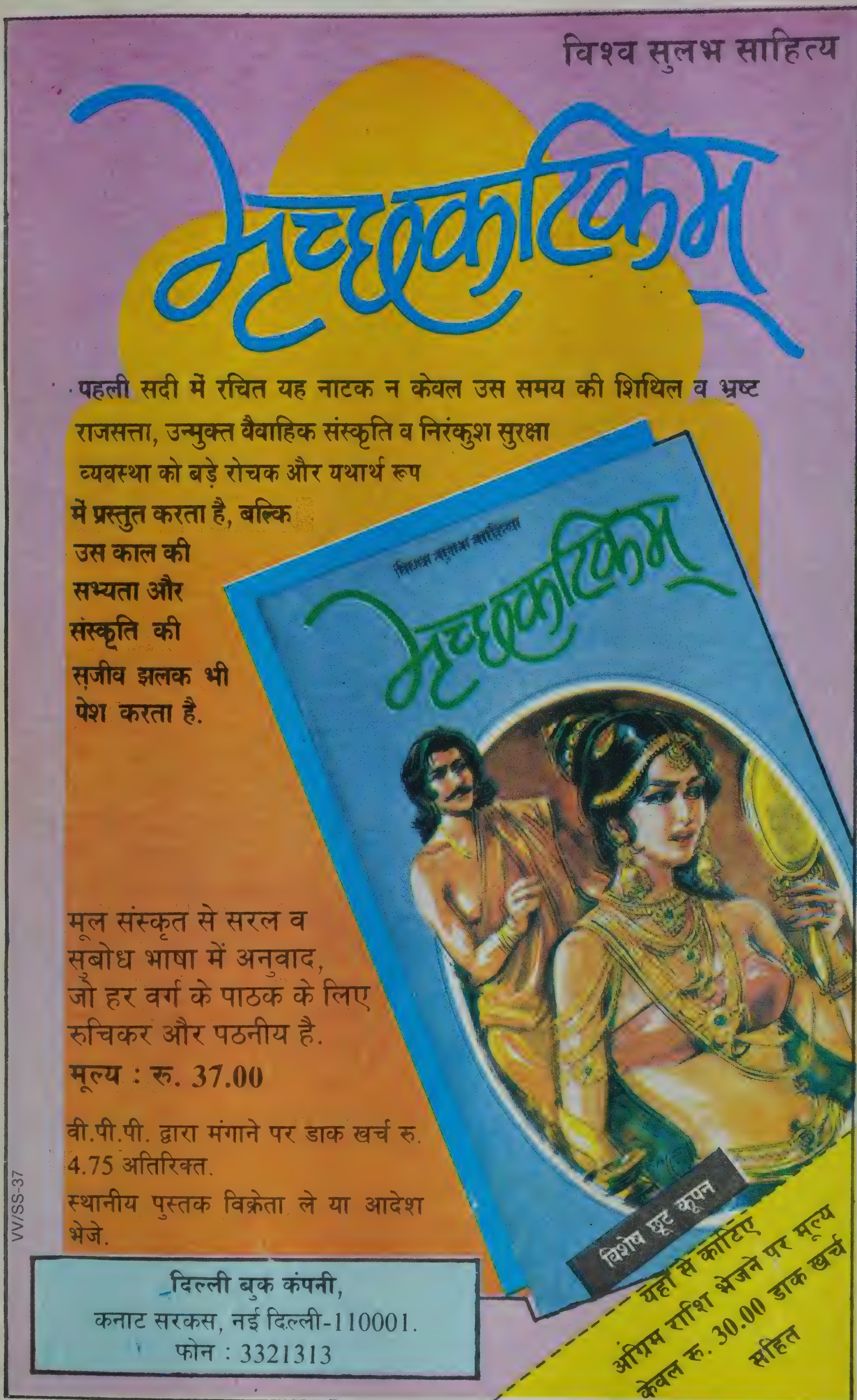
उस के बाद तो बस्ती वालों की नजर और भी पैनी हो गई. जिस रात वे दोनों न आतीं, लोगों में कानाफूसी शुरू हो जाती. सुबह बस्ती में घुसते ही रमिया कांपकांप जाती. लोग खा जाने वाली नजरों से उसे घूरने लगते. अब नानी में भी पहले वाला गुस्सा नहीं रहा था. वह खुद ही सिमटीसिमटी सी रहती.

यह सब चल ही रहा था कि एक रोज शाम को ठाकुर साहब की 8 वर्षीया पोती काजल को सांप ने काट लिया. डाक्टर के पास ले जाते हुए रास्ते में ही बच्ची ने दम तोड़ दिया. कुछ दिनों तक रोधो कर सभी चुप हो गए.

मगर विजय ठाकुर साहब के कानों में फूंक आया कि यह सब रमिया की नानी का खेल है. भला साफसुथरे आंगन में सांप कहां से आया? और फिर बच्ची रोज ही तो वहां खेलती थी. ठाकुर साहब शोक में डूबे थे, कुछ नहीं बोले. इसलिए उन की खामोशी को विजय ने उन की सहमति मान लिया.

फिर तो बस्ती में नानी और नातिन का खुला विरोध शुरू हो गया. बच्चे उन दोनों को देख कर कंकड़, पत्थर मारते, नौजवान रमिया पर आवाजें कसते. जो कुछ नहीं कहते थे, वे मन ही मन खुश होते, राहत महसूस करते.

वह एक तूफानी रात थी. रातभर खूब वर्षा होने के कारण मौसम धुलाधुला



विश्व सुलभ साहित्य
मृच्छकटिकम्
पहली सदी में रचित यह नाटक न केवल उस समय की शिथिल व भ्रष्ट राजसत्ता, उन्मुक्त वैवाहिक संस्कृति व निरंकुश सुरक्षा व्यवस्था को बड़े रोचक और यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है, बल्कि उस काल की सभ्यता और संस्कृति की सजीव झलक भी पेश करता है.
मूल संस्कृत से सरल व सुबोध भाषा में अनुवाद, जो हर वर्ग के पाठक के लिए रुचिकर और पठनीय है.
मूल्य : रु. 37.00
वी.पी.पी. द्वारा मंगाने पर डाक खर्च रु. 4.75 अतिरिक्त.
स्थानीय पुस्तक विक्रेता ले या आदेश भेजे.
दिल्ली बुक कंपनी,
कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
फोन : 3321313
विशेष छूट कूपन
यहाँ से काटिए
अग्रिम राशि भेजने पर मूल्य केवल रु. 30.00 डाक खर्च सहित
VV/SS-37

सा था. रमिया की कोठरी महल्ले से थोड़ा हट कर थी. उस तरफ कुछ दुकानें थी, इसलिए लोगों का आनाजाना लगा रहता.

मगर उस सुबह उस कोठरी का किवाड़ टूटा हुआ था. कुछ बच्चे उत्सुकता से कोठरी के अंदर चले गए और चीखते हुए बाहर आ गए. फिर बड़े लोगों ने देखा तो पुलिस बुला ली गई.

अंदर बड़ा भयंकर दृश्य था. रमिया और उस की नानी की लाशें आसपास पड़ी थीं. नानी की आंखें बाहर को निकली हुई थीं. उस के गले में उस की ही धोती का फंदा डाल कर कस दिया गया था.

रमिया की लाश निर्वस्त्र थी. साथ ही उस के पूरे शरीर पर दांतों के काटने के निशान उभरे हुए थे. स्पष्ट था, कई लोगों ने उस के शरीर को बुरी तरह रौंदा था. पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज किया, मगर महल्ले के लोगों ने किसी के भी खिलाफ गवाही देने से इनकार कर दिया.

"किस का नाम लें साहब, पूरा महल्ला ही उन लोगों से नाराज था," एक बुजुर्ग ने कहा.

पुलिस ने चालाकी से स्त्रियों से कुछ जानना चाहा, मगर ऐसे मामलों में स्त्रियां भी कम चालाक नहीं होतीं. उन की मौत से उन के मन का संताप भी दूर हो गया था.

"सब कुदरत का खेल है, बड़े साहब," एक अधेड़ औरत ने थानेदार से कहा.

पुलिस के जाने के बाद स्त्रियां आपस में बातें करने लगीं.

"रमिया की इतनी निर्ममता से हत्या नहीं करनी चाहिए थी," एक औरत बोली.

"चुप कर," एक बूढ़ी ने डांट दिया, "सांप का बच्चा सांप ही होता है."

ठाकुर साहब बस्ती के सम्मानित लोगों में से थे, इसलिए उन की गवाही अहमियत रखती थी. थानेदार से बातें करते हुए ठाकुर साहब को विजय और उस के साथियों का ध्यान था. मगर फिर पोती काजल का मासूम चेहरा उन की नजरों में घूम गया. सोचा, 'हो सकता है, नानी ने ही कोई मंत्र फूंक दिया हो.' उन्होंने भी किसी पर शक होने की बात से इनकार कर दिया.

दूसरे दिन बस्ती की नुक्कड़ वाली चाय की दुकान पर विजय अपने साथियों को चाय पिला रहा था.

गोपाल बोला, "मान गए उस्ताद तुम को भी...रात वाला भोज तो हमेशा याद रहेगा."

"इसे कहते हैं, टेढ़ी उंगली से घी निकालना," मंगल ने विजय को एक धौल जमाई तो सभी ने एक जोरदार कहकहा लगाया. ●

बच्चों से वादा :
नुकसान या फायदा





लेख ● सुभाष लखेड़ा

उस दिन मैं अपने एक मित्र के घर गया तो उस के दोनों बच्चे सुबक रहे थे. आज उन्होंने सदैव की भांति 'पिताजी चाचा आए हैं, अम्मां चाचा आए हैं,' कह कर खुशी जाहिर करने के बजाय मुझे उदास नजरों से घूरा व अपने आंसू पोंछते हुए चुपचाप बैठक से खिसक गए.

"रवि, क्या बात है?" मैं ने अपने मित्र से पूछा.

"कुछ नहीं यार, फिल्म दिखाने की

जिद कर रहे हैं," रवि ने जवाब दिया.

मैं चुपचाप बाहर गया और दूसरे कमरे से बच्चों को ले आया.

"क्यों बेटे,क्या हुआ?" मैं ने उन्हें प्यार से पुचकारते हुए पूछा.

मेरी बात सुनते ही 10 वर्षीया योगिता तपाक से बोली, "चाचाजी, पिताजी ने वीडियो फिल्म दिखाने का वादा किया था और अब मना कर रहे हैं."

"बस इतनी सी बात है. जाओ, हम तुम्हारे लिए फिल्म लाएंगे," मैं ने मुसकराते हुए कहा.

तत्काल ही मैं ने फोन से अपने परिचित एक वीडियो लाइब्रेरी वाले से संपर्क किया और बच्चों से उन के पिता द्वारा किया वादा पूरा कर दिया.

तो उन के साथ हंसबोल लिए अन्यथा मन उखड़ते ही उन्हें एक किनारे कर दिया.

उक्त मनोवृत्ति वाले अभिभावक यह भूल जाते हैं कि बच्चे कोई चाबी से चलने वाले खिलौने नहीं हैं. बच्चों का दिल हम वयस्कों की अपेक्षा कहीं अधिक कोमल और मस्तिष्क कहीं अधिक संवेदनशील होता है. यही कारण है कि हमारे द्वारा किया जाने वाला प्रत्येक कार्य और हमारे द्वारा कही गई प्रत्येक बात उन के दिल और मस्तिष्क को हमारी कल्पनाओं के विपरीत कहीं अधिक गहराई से प्रभावित करते हैं.

बच्चों और वयस्कों में वही अंतर होता है जो पौधों और पेड़ों में होता है. पौधे को मामूली सा हवा का झोंका हिला देता है जबकि पेड़ आंधियों तक को बरदाश्त करने

आज अभिभावक बच्चों से वादा कर के उन में प्रतिस्पर्द्धा की भावना तो बढ़ा देते हैं, परंतु वादा पूरा न कर के उन के मन में अपने प्रति अविश्वास का बीज बो देते हैं. इस स्थिति में उन के संवेदनशील मस्तिष्क पर उलटा असर पड़ता है जो काफी घातक सिद्ध होता है. कहीं आप भी अनजाने में यह गलती तो नहीं कर रहे?

बहरहाल, मित्र के घर से वापस आने के बाद मेरे मन में अनेक सवाल उभरते रहे. आखिर हम बच्चों से वादे क्यों करते हैं? झूठे वादे कर के हम बच्चों के मन में व्यर्थ में ही अपने प्रति अविश्वसनीयता का बीज क्यों बोते हैं? ऐसी कौन सी मजबूरियां हैं जिन के कारण मातापिता को अपने बच्चों से ऐसे वादे करने पड़ते हैं जिन्हें वे बाद में पूरा नहीं करना चाहते हैं?

दरअसल, अधिकांश मातापिता अपने बच्चों को नासमझ एवं नादान समझते हैं. वे सोचते हैं कि बच्चों को या तो आसानी से मूर्ख बनाया जा सकता है अथवा उन्हें जरूरत पड़ने पर डांटफटकार कर चुप कराया जा सकता है. ऐसे मातापिता बच्चों के साथ ठीक वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा बच्चे अपने खिलौनों के साथ करते हैं. मन चाहा

की शक्ति रखते हैं. अतः बच्चों से किए जाने वाले वादों को भी इसी दृष्टि से आंका जाना जरूरी है.

कुछ मातापिता या अभिभावक अपने बच्चों से ठीक उसी अंदाज में वादे करते हैं जैसे चुनाव जीतने के चक्कर में हमारे कुछ नेता मतदाताओं से करते हैं. वे यह भूल जाते हैं कि ऐसे नेता चुनाव होने के बाद मतदाताओं से आसानी से कन्नी काट सकते हैं, जबकि उन्हें अपने बच्चों के साथ जीवनपर्यंत एक ही छत के नीचे रहना है.

कई बार बच्चों की तरफ से कुछ न कहे जाने के बावजूद अभिभावक स्वयं ही उन से वादे करते हैं. परीक्षाओं के दौरान कई लोग अपने बच्चों को कहते हैं कि यदि उन के इस परीक्षा में इतने प्रतिशत से अधिक अंक आ गए तो उन्हें वे घड़ी, साइकिल अथवा कोई



अन्य वस्तु दे कर पुरस्कृत करेंगे.

इन में से अधिकांश लोग बाद में अपनी कही बात से मुकर जाते हैं और नाहक ही बच्चों के मन को आहत करते हैं. मातापिता के इस अनोखे व्यवहार के कारण कई बच्चे अगली परीक्षा के दौरान मेहनत करने से जी चुराने लगते हैं और कम अंक ला कर परोक्ष रूप से अपने मातापिता से बदला लेते हैं.

सच पूछा जाए तो बच्चों से बिना वजह वादे करना एक बहुत बड़ी बेवकूफी है. ऐसा कर के हम उन में रिश्वत लेने की प्रवृत्ति विकसित करते हैं. कई लोग जब बच्चों से कोई कार्य करवाना चाहते हैं तो उन्हें अलग से बतौर रिश्वत अठन्नीरुपया देना नहीं भूलते. बाद में ऐसे बच्चे अपनी बढ़ती हुई जरूरतों के अनुसार अधिक पैसों की अपेक्षा करने लगते हैं. इतना ही नहीं, यदि ऐसे बच्चों को बाद में अलग से पैसे न दिए जाएं तो वे घर के छोटेमोटे कामों के

बच्चों को ऐसे प्रेरित करें जो उन में आत्मविश्वास जगाए तथा स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा की भावना पनपाए.

लिए इनकार करने लगते हैं.

बच्चों से प्यार करने का अर्थ यह कतई नहीं है कि हम उन से ऐसा बरताव करें जो उन के व्यक्तित्व के विकास को नुकसान पहुंचाए. आखिर उन्हें अठन्नीरुपया यों ही बेमतलब दे कर हम बच्चों का क्या भला करना चाहते हैं? यदि आप बच्चों को जेब-खर्च देना चाहते हैं तो वह उन्हें समझाबुझा कर अलग से दिया जाना चाहिए. उस राशि का उन से करवाए जाने वाले कार्यों से कोई संबंध नहीं होना चाहिए.

यही बात अन्य चीजों पर भी लागू होती है. परीक्षा में अच्छे अंक लाने, खेलों में ऊंचा स्थान पाने अथवा किसी सांस्कृतिक गतिविधि में सफलता प्राप्त करने के लिए

बच्चों को प्रेरित करने का ढंग ऐसा होना चाहिए जो उन में आत्मविश्वास जगाए तथा स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा की भावना पनपाए. ऐसा करने से बच्चे अधिक स्वावलंबी बनते हैं तथा अपने द्वारा प्राप्त सफलताओं का आनंद उठाते हैं.

फिर भी कभीकभी ऐसी स्थिति पैदा हो जाती है, जिस में मातापिता को बच्चों से वादा करना पड़ता है. उदाहरणार्थ, बच्चे यदि बाजार में किसी वस्तु को खरीदने की जिद करने लगें और उस समय अभिभावक की जेब में पैसे न हों तो बच्चों से उस वस्तु को निकट भविष्य में खरीदने का वादा करना पड़ सकता है.

ऐसी अवस्था में या तो उस चीज को वादे के अनुसार खरीद लें अथवा यदि वह वस्तु महंगी या अनुपयोगी है तो बच्चों को घर पहुंच कर प्यार से सारी बातें समझा दें. बच्चे के रोने अथवा बहुत अधिक जिद करने पर किसी भी वस्तु को खरीदना कदापि उचित नहीं है. ऐसा करने से बच्चा आप की कमजोरी का लाभ उठा जिद्दी बन जाता है.

इस संबंध में यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि बड़ों की भांति बच्चों की भी कुछ निजी आवश्यकताएं होती हैं. सजग मातापिता बच्चों के कहने से पूर्व ही उन की आवश्यकताओं को पूरा करते रहते हैं. बच्चों को यह कदापि महसूस नहीं होना चाहिए कि उन के मातापिता अपनी जरूरतों पर तो मनमाने ढंग से पैसा खर्च करते हैं किंतु जब उन के लिए कुछ लाना हो तो तंगी की बात करने लगते हैं.

संक्षेप में अभिभावकों को बच्चों से कभी भी वादे नहीं करने चाहिए. यदि परिस्थितिवश कभी वादा करना भी पड़े तो उसे पूरा करने का प्रयास करना चाहिए अथवा बच्चों के सामने वे सभी बातें स्पष्ट कर देनी चाहिए जिन के कारण आप को वह वादा मजबूरी से करना पड़ा. बच्चों की नजरों में मातापिता की ऐसी छवि होनी चाहिए जिस में उन्हें कोई मैलापन नजर न आए. बच्चे परिवार और देश का भविष्य होते हैं और इस 'भविष्य' के मन में हमारे वर्तमान की साफ छवि रहनी चाहिए. ●



चंपक

चित्रकथा विशेषांक

जून (द्वितीय) 1993



चित्रकथाएं बच्चों को बहुत प्रिय हैं, बच्चों का सही मार्गदर्शन करने तथा उन्हें भरपूर मनोरंजन प्रदान करने के लिए चंपक प्रकाशित कर रहा है–चित्रकथा विशेषांक.

ढेर सारी चित्रकथाओं का पुलंदा लिए हुए यह विशेषांक बच्चों को हंसाएगा और हंसातेहंसाते लोटपोट कर देगा.

खरीदना न भूलिएगा.

एक प्रति का मूल्य रुपए 5.00

16 अतिरिक्त पृष्ठ

ताजगी भरे पेय और डिजर्ट

लेमनी जिंजर

सामग्री : 1 बड़ा चम्मच पिसा अदरक, 1½ नीबू का रस, 1 छोटा चम्मच पिसी चीनी, 1 चुटकी काली मिर्च, 1 छोटा चम्मच नमक, 2-4 बूंद चुकंदर का रस.

विधि : नीबू व अदरक को ½ गिलास पानी डाल कर कांच के गिलास में रातभर रखें. सुबह उसे छान लें. नमक, चीनी, काली मिर्च डाल कर ½ गिलास पानी डालें. ठंडा कर के चुकंदर डाल दें. ऊपर से पुदीने की पत्तियां बारीक काट कर डाल दें.

तरबूजी तरावट

सामग्री : 1 गिलास तरबूज का रस, संतरे का रस, ¼ नीबू का रस, ½ छोट चम्मच या स्वादानुसार नमक, चुटकीभ काली मिर्च.

विधि : सब सामग्री मिला कर छान लें और रस को फ्रिज में ठंडा कर लें.

—कुमुद मोहन

ओरेंज ट्वर्ल

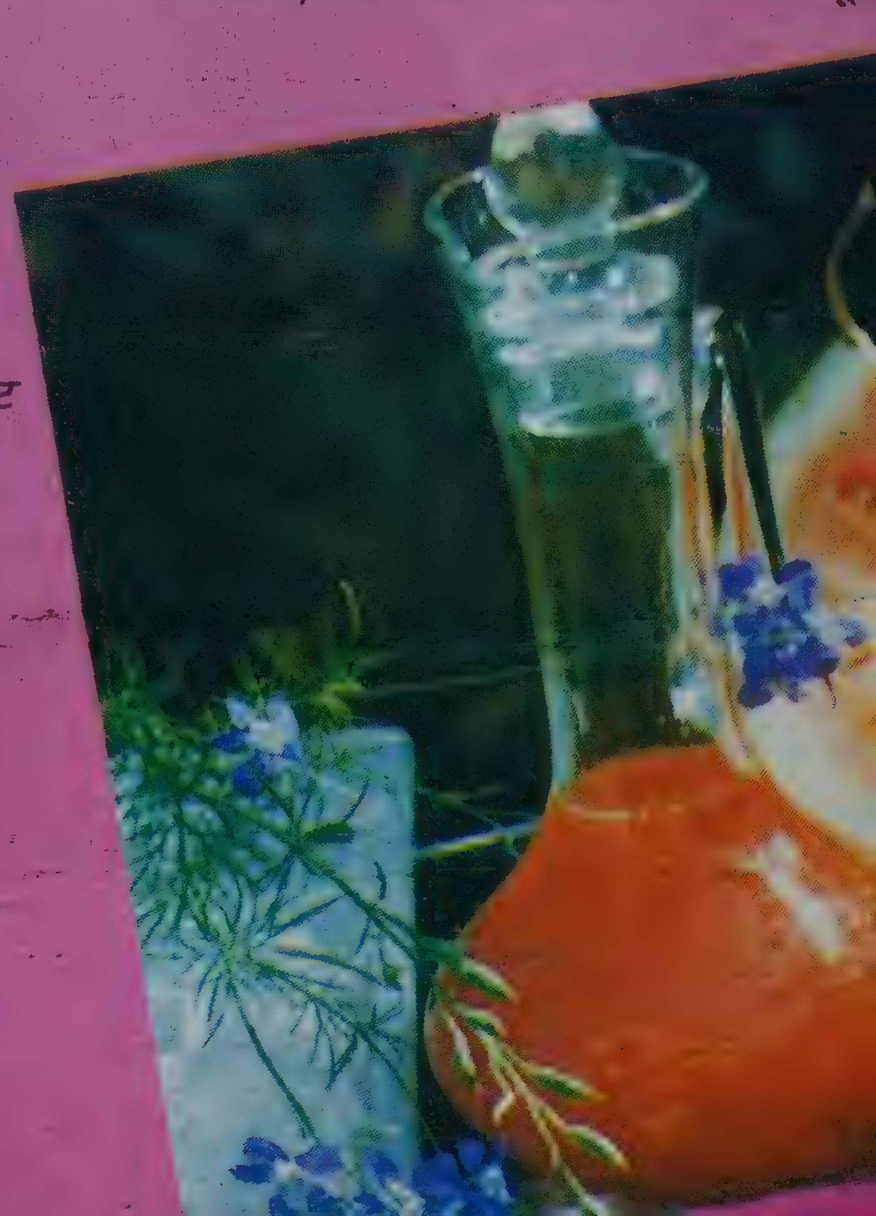
सामग्री : 2 लिमका (बोतल), गिलास संतरे का रस, 2 बड़े चम्मच संतरे का शरबत, कुटी हुई बर्फ, 4 स्कूप वनील आइसक्रीम, 6 चेरी, ½ प्याला संतरे क गूदा.

विधि : ओरेंज ट्वर्ल बनाने के लिए लिमका, संतरे का रस व संतरे का गूद



तरबूजी तरावट

लेमनी जिंजर



सभी चीजों को फ्रिज में ठंडा तैयार रखें.

अब साफ गिलासों में पहले एक चम्मच संतरे का गूदा डालें. फिर संतरे का ठंडा रस डालें. अब 1 बड़ा चम्मच संतरे का शरबत एक गिलास में डालें. फिर बर्फ डाल कर लिमका की बोतल खोल कर गिलास भरें. ऊपर से वनीला आइसक्रीम का एक स्कूप डालें व हर गिलास में एकएक चेरी रख कर स्ट्रा डाल कर पंच पेश करें. चाहें तो ऊपर से संतरे का गूदा भी डाल सकती हैं.

—डा. नीलम मलिक

अनारदाना ऐपीटाइजर

सामग्री : 50 ग्राम अनारदाना, ½ छोटा चम्मच सादा नमक, 1 छोटा चम्मच काला नमक, ¼ छोटा चम्मच लाल मिर्च, 1 छोटा चम्मच भुना, पिसा जीरा, 4 बड़े चम्मच चीनी.

विधि : अनारदाना 4-5 घंटे भिगो दें. मिक्सी में पीस कर 4 प्याले पानी मिला कर छान लें. अब सब मसाले व चीनी मिला कर ठंडा कर लें. खाने से पहले जलजीरे की तरह परोसें. चाहें तो बेसन की बूंदी भी डाल दें.

— विजय मेहरा



ओरेंज ट्वर्ल

जिंजरेल : अदरक, पुदीना, नीबू पंच

सामग्री : ¼ प्याला अदरक का रस, ½ प्याला पुदीना पेस्ट, ½ प्याला नीबू का रस, स्वादानुसार नमक, 4 बड़े चम्मच चीनी, 1 छोटा चम्मच जीरा पाउडर, 1 छोटा चम्मच काला नमक, बर्फ चंक्स.

यह सामग्री कम से कम चार गिलास के लिए है.

सजाने हेतु सामग्री 2 गिलास के लिए : 2 नीबू के गोल कटे टुकड़े, पुदीने की पत्तियां, पीने की नलकी (स्ट्रा).

विधि : ताजे पुदीने को धो कर पेस्ट बनाएं. अदरक को पीस कर उसे कपड़े से



छान कर रस निकाल लें. जीरा भून कर पीस लें. अब नीबू का रस, अदरक का रस, पुदीना पेस्ट व चीनी मिला कर नमक, जीरा, काला नमक मिला कर फ्रिज में रखें. परोसने से पहले गिलास में कुटी हुई बर्फ डाल कर पुदीना, अदरक का मिश्रण ½ गिलास डालें, बाकी पानी मिला कर नीबू व पुदीने से सजा कर ठंडा पंच पेश करें. यह पंच तरावट से भरपूर, ठंडा व पाचक है.

—डा. नीलम मलिक

बर्फीला सत्तू

सामग्री : 1 गिलास दूध, 6 छोटे चम्मच चने का सत्तू, 2 बड़े चम्मच चीनी, 2 छोटी इलायची, कुटी हुई बर्फ.

विधि : दूध गरम करें और उस में चीनी तथा छोटी इलायची कूट कर डाल दें. अब उस में सत्तू को घोल दें. इस दूधिया सत्तू को ठंडा कर के (बर्फ डाल कर) पेश करें.

— दुर्गा सिन्हा

पिस्ता कुलफी

सामग्री : 2 लिटर दूध, 20-25 दाने पिस्ता, ½ प्याला चीनी.

जिंजरेल : अदरक, पुदीना, नीबू पंच



विधि : 2 लिटर दूध में से ½ प्याल दूध अलग करें व शेष दूध को इतना उबाले कि वह एकचौथाई रह जाए. अब 1 पिस्तों को ½ प्याला दूध में थोड़ी देर वे लिए भिगो दें. फिर उसे मिक्सी में चलाएं बचे पिस्तों को बारीक काट लें और ठंडे दूध में डाल दें. पिसा दूध, पिस्ता व चीनी डाल कर मिलाएं. मिश्रण को अच्छी तरह ठंड हो जाने पर कुलफी के सांचों में भरें तथ ढक्कन लगा कर सांचों का मुंह आटे से बं कर दें.

घड़े में साबुत मोटा नमक व बर्फ वे टुकड़े भरें तथा सांचों को बर्फ में दबा क रखें.

थोड़ीथोड़ी देर बाद पूरा घड़ा हिल दें. जब कुलफी जम जाए तो फलूदे के साथ पेश करें.

पिस्ता कुलफी



राइस बाल पुडिंग

सामग्री : 2 कटोरी चावल, 4 कटोरी पानी, 1 कटोरी चीनी, 1 लिटर गाढ़ा दूध, ½ प्याला क्रीम, 3-4 बड़े चम्मच कस्टर्ड पाउडर (पीला), ¼ कटोरी बादाम व चिरौंजी, ½ कटोरी मसला हुआ ताजा खोया, 1 बड़ा चम्मच बूरा, चीनी, 1-1 बूंद लाल व हरा रंग.

विधि : 2 कटोरी चावल में 4 कटोरी पानी डाल कर उबाल लें. ठंडा कर के बूरा मिला कर पीस लें. पिसे चावल के दो भाग कर लें. एक भाग में लाल तथा दूसरे भाग में हरा रंग मिला कर रखें. खोए में मेवा मिलाएं. चावल के छोटेछोटे गोले (बाल) बनाएं तथा बीच में छेद कर खोया मिश्रण भरें तथा गोले को एकसार करें.

दूध को उबाल कर उस में आधी चीनी मिलाएं. शेष चीनी, कस्टर्ड पाउडर व थोड़े ठंडे दूध से घोल बना कर गाढ़ा कस्टर्ड तैयार करें. तैयार ठंडे कस्टर्ड में ¼ प्याला क्रीम मिला कर एकसार करें. शेष बची क्रीम में रंगीन गोले डुबाडुबा कर ठंडे कस्टर्ड में रखती जाएं. इस राइस बाल पुडिंग को फ्रिज में ठंडा कर के खाएं व मेहमानों को खिलाएं.

अनन्नास क्रीम

सामग्री : 2 छल्ले अनन्नास, ½ गिलास अनन्नास का रस, ½ कटोरी क्रीम, 1 बड़ा चम्मच चीनी, 1 बड़ा चम्मच रूहअफजा.

विधि : अनन्नास के छल्लों को बारीकबारीक टुकड़ों में काट लें. क्रीम में चीनी डालें और 2 मिनट के लिए मिक्सी में चलाएं. ज्यादा देर चलाएंगे तो मक्खन निकल आएगा. अब एक सुंदर से कांच के गिलास में नीचे अनन्नास का रस व ऊपर मीठी क्रीम डालें और सब से ऊपर बारीक

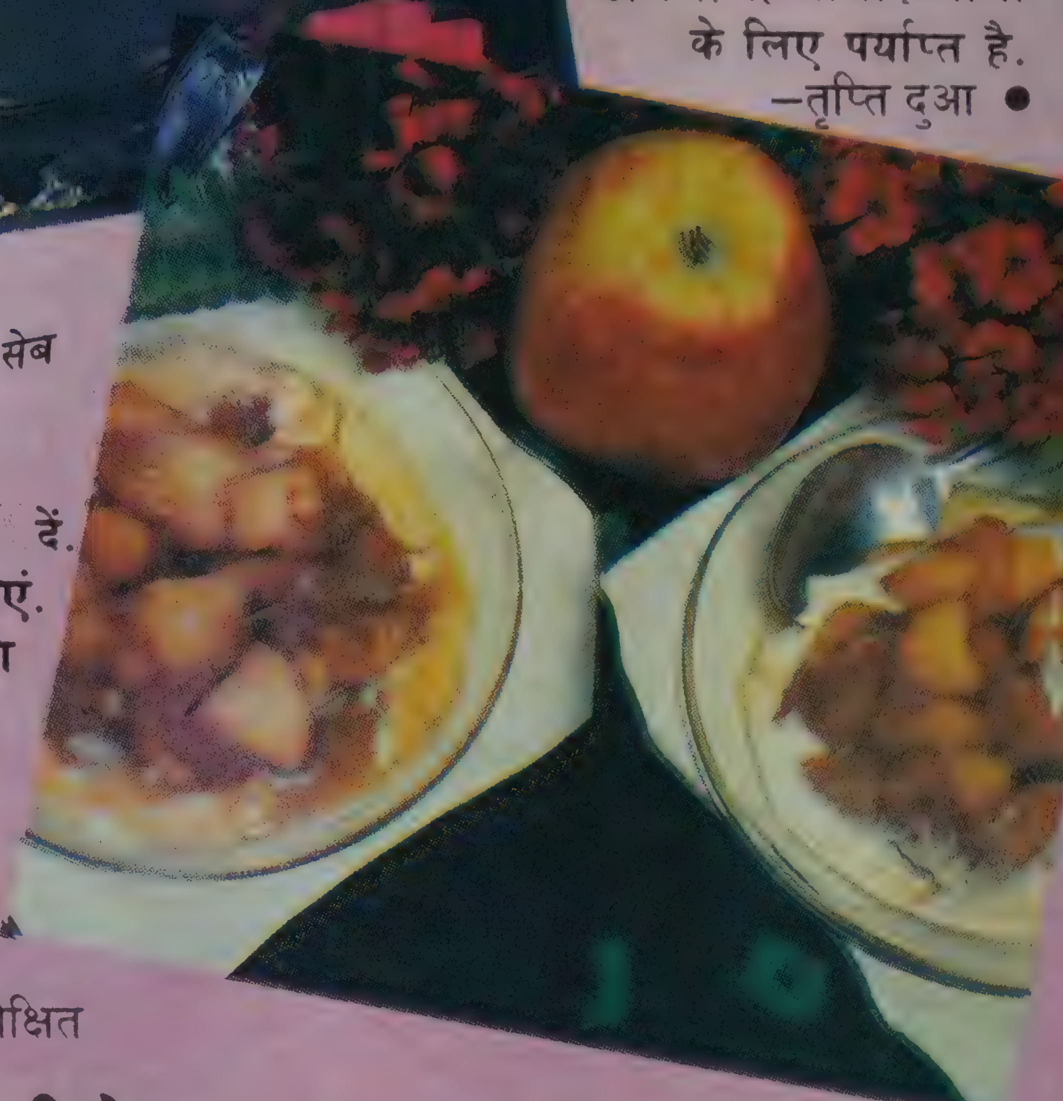


राइस बाल पुडिंग

बर्फीला सत्तू



अनन्नास क्रीम



कैरामल के साथ क्रीमी सेब

कटा हुआ अनन्नास डाल दें. रूहअफजा डाल कर सजाएं. गिलास को फ्रीजर में खूब ठंडा करें.

एक स्ट्रा डाल दें और साथ में एक चम्मच भी रखें. बर्फीला ठंडा अनन्नास क्रीम पीएं व पिलाएं.

— अमिता दीक्षित

कैरामल के साथ क्रीमी सेब

सामग्री : 3 बड़े सेब, 1 प्याला चीनी, ½ प्याला पानी, ½ प्याला क्रीम, 1 बड़ा नीबू, 2-3 चेरी.

विधि : सेब का छिलका उतार लें. उन्हें बारीक टुकड़ों में काट लें. आंच पर एक बरतन में 2-3 चम्मच पानी के साथ चीनी डाल दें. उसे बादामी (ब्राउन) होने तक आंच पर रखें. उस में सेब के टुकड़ों को डाल दें. 2 मिनट तक पकाएं. उस में नीबू का रस निचोड़ दें. आंच से उतार लें. ठंडा होने पर एक कटोरी लें, उस में कैरामल (बादामी चीनी वाला मिश्रण) को डाल कर थोड़ा हाथ से दबा दें. उस कटोरी को फ्रीजर में जमाव लेने के लिए रख दें. 15 मिनट बाद निकाल लें. उस कटोरी को उलटा कर दें. कैरामल खुदबखुद निकल आएगा. उस पर चेरी व क्रीम डाल दें. एक प्लेट में सजा दें. चारों तरफ क्रीम डाल दें. यह मात्रा 3 लोगों के लिए पर्याप्त है.

—तृप्ति दुआ ●

सरिता, जुलाई (प्रथम) अंक के पकवान

पपीते का अचार
आम का कुचला
मिरचौली
नवज्योति रक्तम कटहल अचार
नीमकी
केसरिया आम का मुरब्बा
आम का सूखा अचार
आम का नमकीन अचार
आम, परवल, भिंडी, चने का अचार
आम के पानी का अचार



धन्यवाद का आदानप्रदान

'शादीब्याह में एक आवश्यक रस्म

लेख • विनीता कुमार

हमारे भारतीय समाज में विवाह प्रत्येक परिवार का एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण आयोजन है. यह एक ऐसा अवसर है जब परिवार के सभी विशिष्ट मित्र व रिश्तेदार आमंत्रित किए जाते हैं. विवाह की अन्य तैयारियों के साथ ही इन आमंत्रित मेहमानों की सूची तैयार करना भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य होता है.

विवाह कन्या का हो या पुत्र का, आने वाले मेहमान दोनों ही अवसरों पर अपनी श्रद्धा व क्षमता के अनुरूप उपहार अवश्य लाते हैं. मेजबान का यह दायित्व है कि वह उस मेहमान को उपहार के बदले धन्यवाद के दो 'शब्द अवश्य कहे. इस से मेहमान का आदर दोगुना हो जाता है.

आजकल की महंगाई के आगे यदि

शादीब्याह में अकसर लोग जानेअनजाने धन्यवाद जैसे महत्त्वपूर्ण औपचारिक शब्द की उपेक्षा कर जाते हैं, जबकि यही एक शब्द मेहमान व मेजबान के संबंधों को घनिष्ठ या कसैला करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है. फिर क्यों न इस सामान्य शिष्टाचार को अपने जीवन में उतार लिया जाए?

कोई व्यक्ति किसी को उपहार देने में नहीं चूकता तो यह उस की भद्रता ही दर्शाता है और मेजबान के धन्यवाद का अधिकारी हो जाता है. यदि कोई मेहमान किसी कारणवश उपहार लाए बिना ही विवाह में सम्मिलित होने आया है तो भी मेजबान का यह कर्तव्य है कि 'आप के आने से तो हमारे घर की व विवाह की शोभा बढ़ गई ' जैसे शब्द धन्यवादस्वरूप मेहमान की झोली में अवश्य डाल दें, जिस से वह मेहमान कुछ न ला पाने की ग्लानि से उबर जाएगा और उसे अपना आना सार्थक भी महसूस होगा.

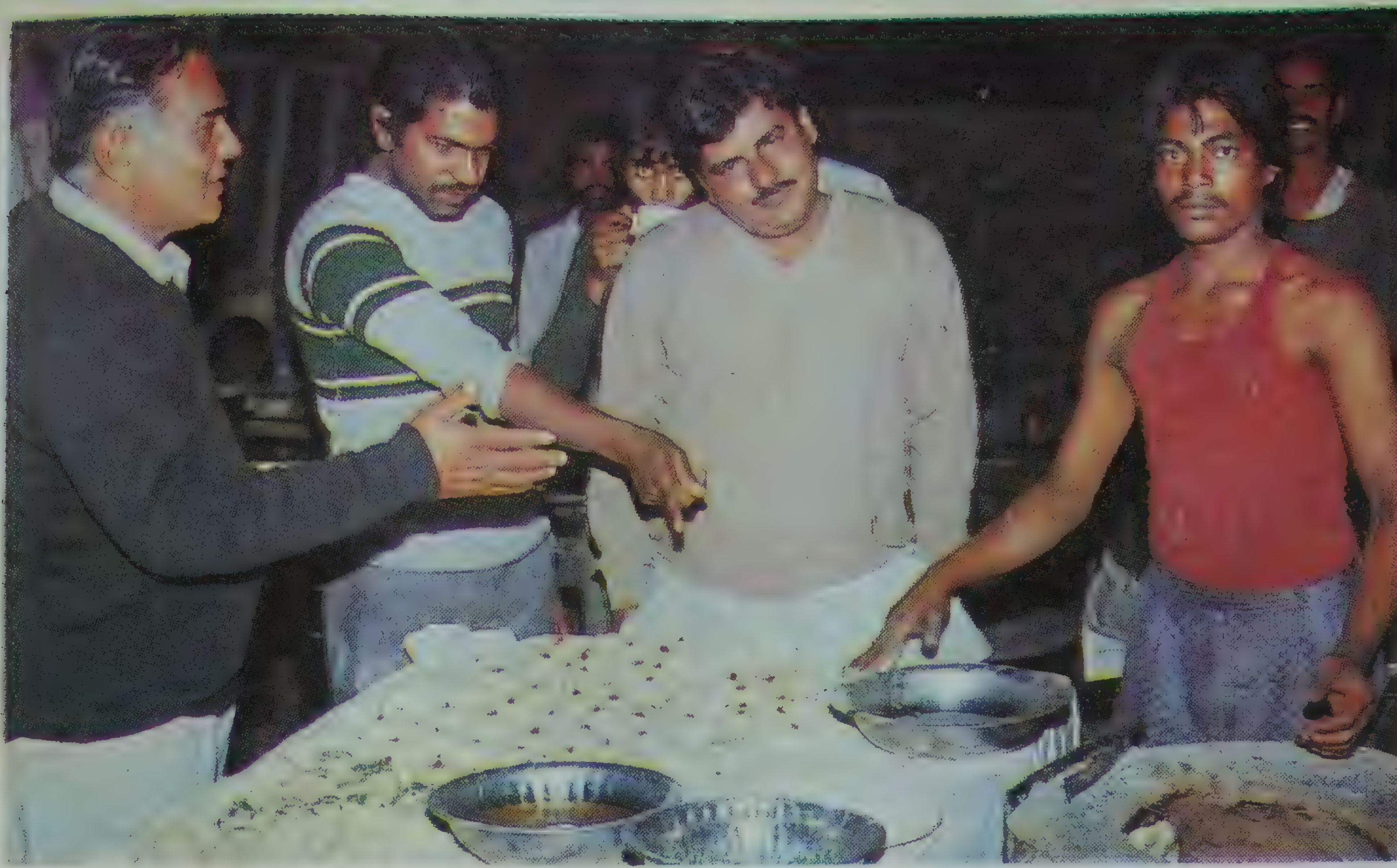
कहींकहीं देखा जाता है कि अनपढ़ या अशिष्ट गृहिणियां या परिवार इस के विपरीत व्यवहार कर ऐसे मेहमान का जानबूझ कर निरादर करते हैं, मानो कुछ उपहार न ला कर उस ने कोई बड़ा अपराध कर डाला हो. भले ही उस मेहमान ने अपना पसीना बहा कर, एक टांग पर खड़े रह कर विवाह में काम करवाया हो और रेल का भारी किराया खर्च कर तथा वेतनरहित अवकाश ले कर वह उस विवाह में शामिल होने पहुंचा हो, लेकिन मेजबान का रूखा व्यवहार उस के किएकराए पर पानी फेर देता है और वह खिन्न हो कर लौटता है.

पिछले दिनों मुझे एक विवाह में सम्मिलित होने का मौका मिला, जिस में मैं ने एक ऐसे ही व्यक्ति की दुर्दशा देखी. मुझे उस पर बेहद तरस आया. वह विवाह मेरी ननद की ससुराल में था और वह व्यक्ति उस लड़की का दूर का मामा लगता था जो कलकत्ता से लखनऊ विवाह में शामिल होने के लिए ही आया था. उस की आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं थी जो शायद टीके के चंद रुपयों के अलावा कुछ उपहार नहीं दे सकता था.

उस व्यक्ति को सारे दिन ताने सुनने को मिलते, कभी बहन के तो कभी बहनोई के, "चले आते हैं हाथ हिलाते, लड़की की शादी है इतना भी नहीं सोचा...!" वगैरह वगैरह. चायखाना भी वह बेचारा स्वयं ही बेशर्म बन कर मांग लेता था वरना वहां उस पर ध्यान देने वाला कोई नहीं था.

किंतु यह सत्य है कि जिस निपुणता से उस व्यक्ति ने भंडार की व्यवस्था संभाली थी, वह किसी अन्य व्यक्ति के बूते की बात नहीं थी. हलवाई की छाती पर खड़े हो कर एकएक चीज तुलवा और गिनवा कर धरवा लेता था. मजाल है कि कोई चीज इधरउधर हो जाए या उस का दुरुपयोग हो. मेरे विचार में वह व्यक्ति सब से ज्यादा धन्यवाद का अधिकारी था.

तात्पर्य यह है कि विवाह ऐसा अवसर है, जब मेहमान के उपहार के लिए या इस उत्सव में उपस्थित हो कर शोभा बढ़ाने के लिए मेजबान के पास धन्यवाद का भरपूर खजाना होना चाहिए जो संबंधों को और मधुर व प्रगाढ़ बना दे. बहुत बार लोग चाह कर भी विवाह में शामिल होने में असमर्थ रहते हैं. कारण कुछ भी हो सकते हैं, जैसे नौकरी से छुट्टी न मिले या परिवार में कोई बीमार हो या बच्चों के इम्तिहान हों... आदिआदि. ऐसे में यदि वह संबंधी या मित्र वहीं से मनीआर्डर या शुभकामनाओं का पत्र भेजता है तो मेजबान को चाहिए कि ऐसे पत्रों का या मनीआर्डर स्वरूप भेजे गए पत्रपुष्प या शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद अवश्य भेज दे ताकि वह व्यक्ति समझ ले कि मेजबान ने उस की समस्या को



विवाह समारोह की व्यवस्था के कार्यों में जुटे मेहमानों को धन्यवाद अवश्य दें क्योंकि उन का सहयोग सब से अधिक प्रशंसनीय होता है.

समझा है तथा उस की शुभकामनाओं को उतने ही उत्साह से स्वीकारा है.

इस के विपरीत दूसरा पक्ष हमारे सामने है मेहमान का. जिस तरह से मेजबान के लिए धन्यवाद या आभार प्रकट करना शिष्टाचार के अंतर्गत आता है, उसी प्रकार मेहमान के लिए भी यह अवसर मेजबान को धन्यवाद देने का है.

विवाह का मौसम शुरू होते ही हमारे घरों में विवाह के निमंत्रणपत्रों का तांता सा लगने लगता है. कभीकभी तो एक दिन में दोदो, तीनतीन शादियां भी पड़ जाती हैं. अब यह घनिष्ठता से ज्यादा परिस्थिति ही निर्णय करवाती है कि कौन से विवाह में सम्मिलित होना अधिक आवश्यक है. जैसे, पिछली फरवरी में मैं और मेरी एक सहेली अलका को, उस दिन एक ही विवाह में जाना था, किंतु दोपहर को अलका एक दूसरा निमंत्रणपत्र लिए मेरे पास आई जो उस के पति के दफ्तर में कार्यरत एक कर्मचारी की बहन की शादी का था.

उस ने मुझ से पहले वाले विवाह में न जाने की असमर्थता व्यक्त करते हुए कहा, "उन लोगों को मेरी ओर से धन्यवाद व शुभकामनाएं दे देना व माफी मांग लेना. अब हमारा इस विवाह में जाना अत्यावश्यक है. पहली बात तो यह कि इस बेचारे की आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं है तो कहीं उसे यह महसूस न हो कि उस का स्तर ज्यादा ऊंचा नहीं है इसलिए साहब उस के यहां नहीं आए. दूसरा यह कि मेरे पति उस के अफसर हैं. इन के पहुंचने से लड़के वालों के सामने उस का मान बढ़ जाएगा."

मैं अलका की बातें सुन पुलकित हो उठी. देखिए न, यहां मेजबान की भूमिका कितनी महत्त्वपूर्ण है.

सभी विवाहोत्सवों में शामिल हो पाना आज के व्यस्त जीवन में बहुत ही कठिन है किंतु जो आदर निमंत्रण दे कर मेजबान ने मेहमान को दिया है उस का उत्तर धन्यवाद व शुभकामनाओं के शब्दों के साथ अवश्य भेजना चाहिए.

विवाहोपरांत धन्यवाद पत्र का आदानप्रदान मेजबान व मेहमान दोनों ही को एक सुखद अनुभूति प्रदान करता है तथा संबंधों को और भी अधिक मजबूत बनाता है. यह सामान्य शिष्टाचार है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति को अपनाना चाहिए. ●





आंतरिक गृहसज्जा व उचित रखरखाव

लेख • सुनीता तिवारी

गृहसज्जा की कला में कोई भी निपुण हो सकता है, पर आवश्यकता है सिर्फ थोड़ी सी सूझबूझ व रचनात्मक क्षमता को नई व सही दिशा देने की. ऐसा करने पर तो मेहमान आप के घर में आते ही आप की रुचि,संपन्नता के कायल हो जाएंगे.

'घर' शब्द जितना छोटा है, इस का महत्त्व उतना ही अधिक है. इनसान भले ही पूरे संसार की सैर कर ले, होटलों या विश्रामगृहों में ठहरे, आखिर लौट कर तो घर में ही आता है.

हां, दरवाजे, दीवारों, खिड़कियों व कुछ कीमती सामानों से ही घर को पूर्णता प्राप्त नहीं होती. 'घर' को सही मायनों में 'घर' बनाने के लिए छोटी से छोटी चीज के

घर की साजसज्जा आप के व्यक्तित्व का आईना है. इसे सुंदर, आकर्षक व मोहक बनाने के लिए आवश्यकता है बस थोड़ी सूझबूझ व समझदारी की. फिर देखिए कैसे आप भी प्रशंसा के पात्र बनते हैं.

लिए भी उचित स्थान बनाना होता है और समयसमय पर आवश्यकतानुसार इस में बदलाव भी लाना होता है. इन सब के लिए गृहिणी की सूझबूझ ही काम आती है. वैसे भी कहा जाता है कि घर की उचित साजसंवार ही गृहिणी के व्यक्तित्व की परिचायक है.

गृहव्यवस्था निर्भर करती है घर के आकारप्रकार पर, क्योंकि एक घर की बनावट किसी दूसरे घर की बनावट से भिन्न होती है. आजकल सरकारी या निजी दोदो या तीनतीन कमरों के फ्लैट में ही बूढ़े से ले कर बच्चों तक की जरूरतों को ध्यान में रख कर ही व्यवस्था करनी पड़ती है.

घर के आकारप्रकार, सजावट की वस्तुएं, घर के सदस्य, आय आदि कुछ ऐसे कारक हैं जो व्यवस्था को काफी प्रभावित करते हैं. इसलिए गृहसज्जा के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में जान लेने के बाद इस पर अमल कर के प्रत्येक गृहिणी 'सुघड़ गृहिणी' बन सकती है.

गृहसज्जा संबंधी कुछ ध्यान रखने योग्य बातें

- *घर की साजसज्जा उस के आकार के अनुपात में करें.*
- *बैठक घर का आईना होती है, अतः इस की सजावट पर विशेष ध्यान दें.*
- *फर्नीचर कमरे के रंग, आकार के अनुरूप हो.*
- *परदों का रंग व डिजाइन आकर्षक हो.*
- *कालीन फर्नीचर व परदों के रंग से मेल खाता होना चाहिए.*
- *दीवारों पर अनावश्यक पेंटिंग्स व तसवीरें न लगाएं.*
- *शयनकक्ष में मौसम के अनुसार गद्दों का प्रयोग करें.*

बैठक (ड्राइंगरूम)

बैठक घर का सब से प्रमुख अंग है, क्योंकि वहीं आगंतुकों का बैठना आदि होता है. बैठक का प्रमुख अंग है फर्नीचर. चूंकि फर्नीचर महंगे हो गए हैं, इसलिए इन्हें खरीदने से पहले कई बातों को ध्यान में रखना चाहिए. जैसे, आप के बजट अनुसार किस कीमत के फर्नीचर खरीदने हैं, कमरे की दीवारों आदि से रंगों का तालमेल बैठने के लिए किस रंग के फर्नीचर खरीदने हैं, कमरे के आकार व जगह के हिसाब से उस का आकार कितना बड़ा होगा, किस सामग्री (रेक्सीन, कपड़े, प्लाई, सनमाइका आदि) के बने फर्नीचर खरीदने हैं आदि.

फर्नीचर कभी भी बिना सोचेविचारे जल्दबाजी में न खरीदें. बैठक के सौंदर्य को द्विगुणित करने वाले रंग व आकार के फर्नीचर ले कर उस के रखरखाव पर ध्यान दें. कालीन भी बैठक में रखे जाने वाले फर्नीचर या खिड़कियों व दरवाजों पर लगने वाले परदों से मेलखाते रंग का होना चाहिए. यदि सोफे या परदे छाप वाले हैं तो कालीन सादा ही मेलखाते रंग का लें. यदि परदे व सोफे सादे हैं, तो छाप वाली कालीन



बिछाई जा सकती है. यदि कालीन दीवार से दीवार तक (वाल टू वाल) नहीं है तो उसे बैठक के उस हिस्से में बिछाएं, जहां फर्नीचर लगाने हैं.

अब बड़ा सोफा व उस के साथ के दो छोटे सोफे आमनेसामने की दीवारों से लगा कर रखें. यदि आवश्यकता हो तो सोफों पर सोफा कुशन व सोफा बैककवर लगाएं. आमनेसामने के सोफों के मध्य अंडाकार या चौकोर सेंटर टेबल लगाएं. टेबल के नीचे बने खाने में पत्रपत्रिकाएं रख दें, ताकि आगंतुकों को वहां बैठ कर बिताने पड़ रहे प्रतीक्षा के क्षण उबाऊ न लगें. बैठक में सुखद महक व रौनक लाने के लिए मध्य टेबल पर सुंदर गुलदस्ते में ताजा खिले फूल सजाएं.

ध्यान दें, कभी भी मिक्सी, ओवन, फ्रिज आदि को बैठक में नहीं रखें. कोशिश करें कि क्राकरी का शोकेस भी भोजनकक्ष में ही हो.

यदि चाहें तो टेलीविजन को बैठक के किसी कोने में रखें, ताकि कमरा छोटा होने पर भी टेलीविजन व आंखों के मध्य उचित दूरी रह पाए. यदि टेलीविजन का शोकेस या

बैठक का सौंदर्य दोगुना करने के लिए रंग व आकार पर पूरा ध्यान दें. सामान भी कम व सलीके से रखा होना चाहिए.

कैबिनेट न हो, तो टेलीविजन उचित ऊंचाई वाली मेज पर रखें. हाथ से कढ़ा या फैब्रिक पेंट किया या कोई अन्य अच्छा कवर टेलीविजन पर अवश्य डाल दें.

अब बाकी बचे दो तरफों में नेत्राभिराम कुरसियां या सैटी रखी जा सकती हैं. इन के मध्य में रखी छोटी मेज, सिगरेट की ऐशट्रे, खाली प्याले वगैरह रखने में सहायक होती है. इसलिए यदि चाहें तो एक छोटी मेज वहां लगाएं.

बैठक में सामान कम रखे होने चाहिए, वह भी सलीके से. दीवारों पर भी तसवीरें, पेंटिंग्स आदि इस कदर न भरें कि कमरा किसी प्रदर्शनी जैसा लगे. इसलिए एक दीवार पर कोई एक आकर्षक पेंटिंग, वाल कारपेट, पोस्टर या वाल हैंगिंग लगाएं.

यदि बैठक में हरियाली लाना चाहें तो खाली पड़े दो कोनों में कोई कृत्रिम या वास्तविक अच्छा पौधा गमले में या फूलदान

में बनावटी फूल ही लगाएं. एक कोने में कोई आकर्षक व कलात्मक मूर्ति रख दें.

गृहसज्जा में परदों के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता. यदि खिड़कियों, दरवाजों पर लगने वाले लंबेचौड़े परदे आकर्षक व सौम्य हों तो कमरे का शृंगार मानो खुदबखुद हो जाता है. यदि परदे चटख रंग लिए बेमेल हैं तो महंगे फर्नीचर भी सुरुचिपूर्ण नहीं लगते.

बेहतर होगा कि परदे के लिए किसी अच्छी कंपनी का बढ़िया कपड़ा ही लें, ताकि वह धुलने के बाद बदरंग न हो या सिकुड़े नहीं. परदे भले ही महंगे हों, पर उन की सिलाई ठीक न होने पर वे कील पर टंगे साधारण वस्त्र का आभास देंगे, साथसाथ कमरे की रौनक भी जाती रहेगी. सिलाई सोचसमझ कर पूरा नाप ले कर करें.

बेहतर होगा कि दीवारों आदि से मेल-खाते रंग के ही परदे सिलें. यदि बैठक के दरवाजे, ग्रिल व शीशे आजकल के नमूने के अनुसार हैं (जो बाहर की हरियाली समेट कर कमरे को बड़ा दिखाते हैं) तो सादे हलके रंग के जालीदार परदे लगाने के बाद मोटे कपड़े के परदे लगाएं.

आजकल जगह की कमी होने के कारण एक ही कमरे का प्रयोग अलगअलग रूपों में किया जाता है, जैसे बैठक व भोजनकक्ष, सोने व पढ़ने का कमरा आदि. ऐसी स्थिति में घर के मुख्य प्रवेशद्वार की ओर बैठक व घर के अंदर की ओर खुलने वाले दरवाजे के पास भोजन की मेज व कुरसियां रखी जानी चाहिए. यदि आप चाहें कि आगंतुकों की बातचीत में विघ्न डाले बिना ही घर के सदस्य भोजन करते रहें तो बैठक व भोजन की मेज के बीच आकर्षक आधुनिक कक्षविभाजक (रूम डिवाइडर) या परदा लगाएं. कक्षविभाजक शोकेस का भी काम करेगा.

शयनकक्ष

यदि शयनकक्ष सुरुचिपूर्ण ढंग से व्यवस्थित हो तो बिस्तर पर बैठते ही थकान आधी हो जाती है. सारे दिन की थकान, चिंता आदि का निवारण इसी कमरे में होता है. यदि कमरा सही सामान से सही तरीके से संवारा गया है, तो आकर्षक सौम्यता खुदबखुद उमड़ेगी.

शयनकक्ष का मुख्य अंग पलंग होता है. पलंग दीवार से सटा कर ऐसे रखें कि अंदर से देखने पर अधिक स्थान दिखाई दे. पलंग बाक्स वाले हों तो अच्छा है, क्योंकि आधुनिक घरों में परछत्तियां वगैरह नहीं होतीं, जबकि जरूरी सामान रखने के लिए

शयनकक्ष की सज्जा पूर्णतः सुव्यवस्थित व मौसम के अनुसार होनी चाहिए. ▼





रसोईघर में जरूरत का सामान करीने से सजा होना चाहिए.

उचित स्थान ये बाक्स ही हैं. यदि ऐसा नहीं है तो दोनों तरफ छोटी मेज रखें, जो पत्रिका, प्याला, गिलास, टेलीफोन आदि रखने के काम आ सकें. पलंग के पास ही बत्ती का स्विच होना चाहिए, ताकि देर रात तक पत्रिका पढ़ने या किसी जरूरी कार्य से निवृत्त होने के बाद बत्ती आसानी से बुझाई जा सके.

मौसमानुसार ही गद्दे पलंग पर बिछाएं. उस पर सफेद धुली या हलके रंग की साफ मुलायम चादर व तकिए लगाएं, क्योंकि गंदी व सिलवटों से भरी चादर सुकून नहीं देती.

बिस्तर के एकदम सामने बड़ी दीवार घड़ी लगाएं. खिड़की के पास शृंगारमेज लगाएं ताकि साजशृंगार के समय पर्याप्त प्रकाश उपलब्ध हो. दीवार में सटा कर एक अलमारी लगाई जा सकती है. यदि घर में परछत्ती है भी, तो फालतू सामान उस में रख दें और उसे परदे से भली प्रकार ढक दें.

यदि शयनकक्ष को अध्ययनकक्ष का भी रूप देना हो, तो खाली पड़ी दीवार से लगी फोल्डिंग टेबल बनवाएं. यदि कमरा कुछ बड़ा है, तो पढ़ने की मेज रख दें, जहां बच्चे सुविधानुसार पढ़ पाएं. साथ ही, अलमारी भी बनवाएं, जहां बच्चे अपनी किताबें व खिलौने रख सकें. इस के पास हाथ से बना आकर्षक नमूने वाला कूड़ेदान रख दें ताकि पेंसिल के छिलके, फालतू कागज आदि इस में डाले जा सकें.

उस कमरे में किसी को देर रात तक पढ़ना हो और सोने वालों को असुविधा न हो, इस के लिए पलंग के पास कमरे को दो भागों में बांटता हुआ परदा लगा दें.

शयनकक्ष में मौसम के अनुसार हीटर या कूलर का प्रबंध होना चाहिए. पलंग के पास ही पायदान भी रखें ताकि बिस्तर पर बारबार गंदे पांव न पड़ें. एक कमरे के दरवाजे के पास भी रखें. सोने के कमरे में हलके संगीत का भी प्रबंध होना चाहिए. आकर्षक फूलसज्जा या कोई पौधा भी इस कमरे में लगाया जा सकता है.

इस कमरे में प्रकाश का विशेष इंतजाम होना चाहिए, जैसे बच्चों के पढ़ने की मेज के ऊपर ट्यूबलाइट होनी चाहिए. बिस्तर के सामने एक बल्ब हो. बिस्तर के पास रखी छोटी मेज पर लैंपशेड या कैंडलस्टैंड लगा होना चाहिए. एक मद्धिम रोशनी वाला लाल या हरा 'नाइट बल्ब' भी लगा होना चाहिए.

रसोईघर

रसोईघर घर का वह हिस्सा है जहां गृहिणी को दिन में न जाने कितनी देर तक रहना पड़ता है. अतः गृहिणी को अपना रसोईघर इस तरह से सजाना चाहिए कि हर पल उसे खीझ न आए, जैसे स्लैब के पास ही गैस का चूल्हा हो, स्लैब से कुछ ऊपर कैबिनेट हो, बरतन धोने के सिंक के पास तारों वाला रैक हो, जहां ताजा धुले बरतन सुखाए जा सकें. सिंक के नीचे छोटा सा कूड़ेदान हो ताकि माचिस की खाली डिब्बी, तीलियां, सब्जियों के छिलके आदि फेंकने के लिए बारबार बाहर न जाना पड़े. रसोईघर में रोशनी व ताजी हवा का विशेष प्रबंध होना चाहिए. खिड़की जालीदार हो, ताकि ताजी हवा आए, पर मक्खियां आदि न आ पाएं. दरवाजा भी जालीदार होना चाहिए. रसोई के धुएं आदि को बाहर निकालने के लिए एग्जास्ट फैन लगवाएं. रसोईघर में स्लैब के पास एक तथा छत के मध्य में भी एक ट्यूबलाइट लगवाएं.

स्नानघर

स्नानघर घर का वह हिस्सा है जहां प्रत्येक सदस्य को कुछ समय अकेले में बिताना पड़ता है. स्नानघर साफ व खालीखाली होना चाहिए. जगहजगह बिखरे डिटरजेंट पाउडर, साबुन, मग, टब, बालटियां, मैले कपड़े आदि स्नानघर को चिपचिपा व गंदा बनाते हैं.

अतः इसे अधिक साफसुथरा रखना चाहिए. बालटियां एक में एक डाल कर रखें. वाशबेसिन पर सामान फैला कर न रखें, बल्कि छोटा सा कैबिनेट स्नानघर में बनवाएं. उस के ऊपर मग, साबुन, कपड़े धोने का ब्रुश आदि रखें. एक खाने में टिशू, टायलेट पेपर व सेनेटरी नैपकिन रख सकती हैं.

स्नानघर में जालीनुमा ढक्कन वाली कुछ बड़ी टोकरी रखी जाए, जिस में धोने वाले मैले कपड़े रखें. स्नानघर के बाहर पायदान अवश्य रखें. दांत साफ करने के ब्रश व टूथपेस्ट दरवाजे के पीछे टंगे विशेष वाल हैंगिंग में रखें. नहाने वाले स्थान पर एक साबुनदानी लगाएं. स्नान के बाद पहनने वाले वस्त्रों के लिए एल्यूमीनियम की एक छड़ दीवार से कुछ दूरी पर लगाएं.

बरामदा

बरामदा छोटे घरों का विशेष हिस्सा होता है. गृहिणियां तो अधिकतर सब्जी काटने, दालचावल बीनने, सिलाई, बुनाई आदि बरामदे में ही करना अच्छा समझती हैं. कुछ लोग तो बरामदे को ग्रिल या शीशे से ढक कर कमरे के समान बनवा लेते हैं.

जिन्होंने बरामदा ढका नहीं है, वे धूप, वर्षा आदि से बचाव के लिए 'चिक' लगवा सकते हैं. बरामदे में कुछ फर्नीचर, जैसे पुराना सोफा, फोल्डिंग बेड, केन की कुरसियां आदि रखें. छत के बीचोबीच एक पंखा और चालीस वाट का बल्ब लगवाएं. दीवार पर आकर्षक वाल हैंगिंग लगवाएं. कुछ गमले पौधों से सजा कर यहां रखे जा सकते हैं.

इन नुसखों को अपनाते वक्त आधुनिकता, संस्कृति व अपनी सुविधा का ध्यान रखना भी बहुत जरूरी रहता है. प्रत्येक घर की व्यवस्था अलगअलग प्रकार से ही भाती है, इसलिए व्यवस्था को दोतीन बार बदलने से अच्छा है कि कमरे का नक्शा कागज पर बना कर पहले ही देख लें कि यथार्थ में ऐसा करने के बाद कैसा लगेगा. सही सूझबूझ से की गई व्यवस्था से सभी लोग अवश्य ही मोहित हो जाएंगे. ●



बेकार पति से कैसे निबटें?

लेख ● विभावरी सिन्हा

मधु के ससुराल में उस के जेठ एवं ससुर दोनों व्यापार करते थे. उन का बहुत बड़ा कारोबार था जिसे और भी बढ़ाने के लिए वे दिनरात मेहनत करते थे. मधु का देवर नौकरी करता था और पति अनिमेष भी अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद एक फर्म में नौकरी करने लगा था, पर शादी के कुछ

ही दिनों बाद अनिमेष ने अपनी नौकरी छोड़ दी. उसे लगा कि इतने बड़े व्यापारी का बेटा आखिर किसी की चाकरी क्यों करे?

मधु ने उसे बहुत समझाया कि अपना काम अपना ही होता है. अपने पैरों पर खड़ा रहना कोई गुनाह नहीं. आखिर उस का देवर भी तो नौकरी ही कर रहा है. पर उस ने मधु की एक न सुनी. वह एक निठल्ले की तरह पूरे दिन घर पर पड़ा रहता, सिगरेट फूंकता या शराब पीता अथवा बाहर दोस्तों के साथ पैसे उड़ाता और आवारागर्दी करता.

शुरू में तो घर में सब का व्यवहार मधु के प्रति ठीक था पर अनिमेष के बेकार होते ही सब का रवैया दोनों के प्रति बदलने लगा. मधु पर धीरेधीरे घर के सारे कामों का भार आ पड़ा. वह सारे दिन घर के कामों में खटती रहती. घर में बहुत सारे सदस्य थे. हमेशा बड़े एवं महत्त्वपूर्ण लोगों का आनाजाना लगा रहता था. दावतें, बैठकें आए दिन होती रहतीं. मधु भागभाग कर सारा इंतजाम करती तथा सब के आदेशों का पालन करती रहती.

इधर अनिमेष दिमाग से खाली एवं शरीर से बेकार रहने के कारण चिड़चिड़ा भी रहने लगा. घर के लोग भी उसे जलीकटी सुना देते. वह भी घर में किचकिच करता और घर के अन्य सदस्यों या मधु से भी झगड़ पड़ता. घर में अकारण ही कलह रहने लगी. मधु चाहती थी कि अनिमेष किसी कार्य में व्यस्त रहे तभी वह मानसिक रूप से स्वस्थ महसूस करेगा, पर अनिमेष को तो घर पर आराम की जिंदगी भाने लगी थी.

यह सब देख कर पिता ने उसे फार्म हाउस खरीद कर दिया पर अनिमेष उसे भी भलीभांति न चला पाया. घर में ऐसे भी पैसे की कोई कमी न थी, इसलिए वह अपने काम के सिलसिले में गंभीर नहीं हो पाता था. वह सोचता कि बिना काम किए ही गुजारा चल जाता है तो काम करने की क्या जरूरत? मधु उस से बारबार कहती भी थी कि घर में पैसे की कमी नहीं है पर अपना पैसा और अपनी कमाई की बात ही कुछ और होती है.

इस पर वह बिगड़ उठता और कहता, "तुम अपनेपराए का भाव ही क्यों लाती हो? पिताजी तथा भैया का पैसा कोई पराया थोड़े ही है. तुम मुझ पर ज्यादा टोकाटाकी या रोब डालने की कोशिश मत करो. मुझे अपनी जिंदगी अपनी तरह से जीने का पूरा हक है. तुम अपना काम करो, समझी."

मधु उसे समझाने की कोशिश करती कि पिता एवं भाई के पैसे पर उस का हक जरूर है पर शादी के बाद अब उस की व पत्नी की एक खुद की भी जिंदगी है एवं उस की जिम्मेदारी उठाना उस का काम है. अब उसे अपनी छोटी सी गृहस्थी चलाने के लिए खुद भी कुछ करना चाहिए. पर अनिमेष को मधु की बातें बकवास लगतीं.

ऐसी स्थिति मधु के अलावा कई अन्य बहनों की भी है जो अपने बेकार पतियों से बुरी तरह परेशान हैं. इस तरह के पति किसी भी काम के नहीं होते. उन की पत्नी एवं खुद उन के परिवार तथा समाज की नजर में उन की कोई उपयोगिता नहीं रह जाती और वे बेकार माने जाने लगते हैं. उन के कारण पत्नियों का जीवन भी काफी कठिन, असुरक्षित एवं परेशानीभरा हो जाता है. ऐसी पत्नियों को अपने परिवार व

दांपत्य की गाड़ी पतिपत्नी दोनों के सहयोग से चलती है, लेकिन किसी कारणवश पति घर में बेकार बैठ जाए तो गंभीर स्थिति पैदा हो जाती है. समाज में उन की एवं उन के परिवार की कोई इज्जत नहीं रह जाती. परंतु क्या परिस्थितियों का रुख मोड़ा नहीं जा सकता?



यदि पति में कोई बुरा व्यसन है तो जरा भी विचलित न हों, प्यार एवं धैर्य से पति की इन आदतों को छुड़ाने का प्रयत्न करें.

बच्चों को पालना कठिन हो जाता है. समाज में भी उन की एवं उन के परिवार की कोई इज्जत नहीं रह जाती.

पर इस में पत्नियों को निराश होने की जरूरत नहीं. उन्हें हार मानने, जुल्म सहने या खुद को असहाय या परेशान समझने के बजाय स्थिति से निबटने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि आखिर परिवार तो पत्नी को ही चलाना है.

गृहस्थी की गाड़ी या दांपत्य जीवन की नैया पतिपत्नी दोनों के सहयोग से चलती है. लेकिन यदि एक पहिया खराब हो जाए, बेकार हो जाए तो दांपत्य या परिवार नहीं चल सकता. अतः उस पहिए को उसी स्थिति में छोड़ कर हालात के आगे झुक जाने से गाड़ी नहीं चल सकती. उस पहिए को ठोकपीट कर या मरम्मत कर गाड़ी को ठीक करने की जरूरत है.

सर्वप्रथम स्थिति भांपने व पति के स्वभाव का विश्लेषण करने की आवश्यकता है. यदि वह बेकार व बेरोजगार हो तो उसे कोई रोजगार या नौकरी करने के लिए जोर दें, प्रेरित करें या उसे किसी मित्र, रिश्तेदार या परिवार के अन्य सदस्यों की मदद से नौकरी दिलाने का प्रयत्न करें. रोजगार के लिए स्वजनों से या बैंक से ऋण लेने का भी प्रयत्न कर सकती हैं. नौकरी के लिए किसी खास तरह के प्रशिक्षण या कोर्स की जरूरत हो तो उस में भी पति की मदद करें. ऐसे में पति को हीन समझना या उस से बुरा व्यवहार करना उचित नहीं बल्कि उस का मनोबल बढ़ाएं, उस की प्रेरणा बनें. उस की परेशानियों में बराबर की भागीदार बनें. यदि अशिक्षा या अल्पशिक्षा के कारण बेरोजगारी हो तो उसे पूर्ण रूप से शिक्षित करने या कराने का प्रयत्न करें. घर के बुजुर्गों से मदद लें एवं पति को शिक्षा का महत्त्व भी बताएं. जैसा कि रेणुका ने किया.

रेणुका उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुकी थी जबकि उस का पति सुरेंद्र सिर्फ 10वीं पास ही था. सुरेंद्र के ऊंचे खानदान एवं दोनों के पिता के वचनों में बंधे होने के कारण शादी हो गई थी. किंतु रेणुका को अच्छा नहीं लगता था कि सुरेंद्र, जो अपने पिता का इकलौता बेटा था और ज्यादा लाड़प्यार में नहीं पढ़ पाया था, सिर्फ जमीनजायदाद और खेतों के भरोसे ही जीवन बिताए.

सुरेंद्र के पिता किसी जमाने में बड़े नेता रह चुके थे और घर में अब भी राजनीतिक माहौल था. सुरेंद्र भी हमेशा अपने जैसे ही कम पढ़ेलिखे गुंडे सरीखे युवकों के साथ इधरउधर घूमता रहता था या किसी बड़े राजनीतिबाज की चमचागीरी में एक शहर से दूसरे शहर जाता रहता था. रैली, भाषण आदि की तैयारी में तो सुरेंद्र रातभर गायब रहता. कम शिक्षा के कारण कोई नौकरी देने से तो रहा, सुरेंद्र सोचता कि इन्हीं सब कामों में थोड़ेबहुत पैसे बना लेगा और मौका लगा

तो एक दिन वह भी मंत्री नहीं तो विधायक तो बन ही जाएगा.

लेकिन ये सब बातें अनिश्चित एवं पलायनवादी थीं. रेणुका ने उसे शिक्षा का महत्त्व समझाना शुरू किया. पढ़ाई फिर से शुरू करने के लिए उस पर दबाव डालने लगी. इस काम में उस के ससुर ने भी साथ दिया. वह भी अपने पुत्र को शुरू से न पढ़ा पाने के कारण अब पछता रहे थे.

शुरू में तो सुरेंद्र को कोई खास दिलचस्पी नहीं हुई पर चारों ओर से दबाव पड़ने पर तथा रेणुका के प्यारभरे आग्रह के कारण वह भी झुक गया. उसे शिक्षा की महत्ता भी समझ में आने लगी थी. धीरेधीरे उस ने एम.ए. पास कर लिया. पहले तो उसे एक स्कूल में अध्यापक की नौकरी मिली पर बाद में एक बड़े कालेज में प्रोफेसर बन गया. इसी बीच वह एक बच्ची का पिता भी बन चुका था और अपनी जिम्मेदारी के प्रति सचेत भी हो गया. राजनीतिक गतिविधियां तथा गंवार दोस्त खुदबखुद अलग होते चले गए.

व्यसन छुड़ाने का प्रयास करें

लेकिन यदि पति में कोई बुरा व्यसन हो, जैसे शराब पीने की आदत या अन्य स्त्रियों से संपर्क या मारपीट की आदत हो तो जरा भी विचलित न हों. पहले तो प्यार एवं धैर्य से पति की इन आदतों को छुड़ाने का प्रयत्न करें. इन के नुकसान के बारे में बताएं. फिर भी यदि पति न माने तो थोड़ी सख्ती से भी काम लें. पुलिस एवं महिला संगठनों, विभिन्न सुधार संस्थाओं की मदद लें. जरूरत पड़े तो हलकीफुलकी धमकी भी दे डालें. घरपरिवार के बड़ेबुजुर्ग, रिश्तेदारों या मित्रों से भी दबाव डलवाएं.

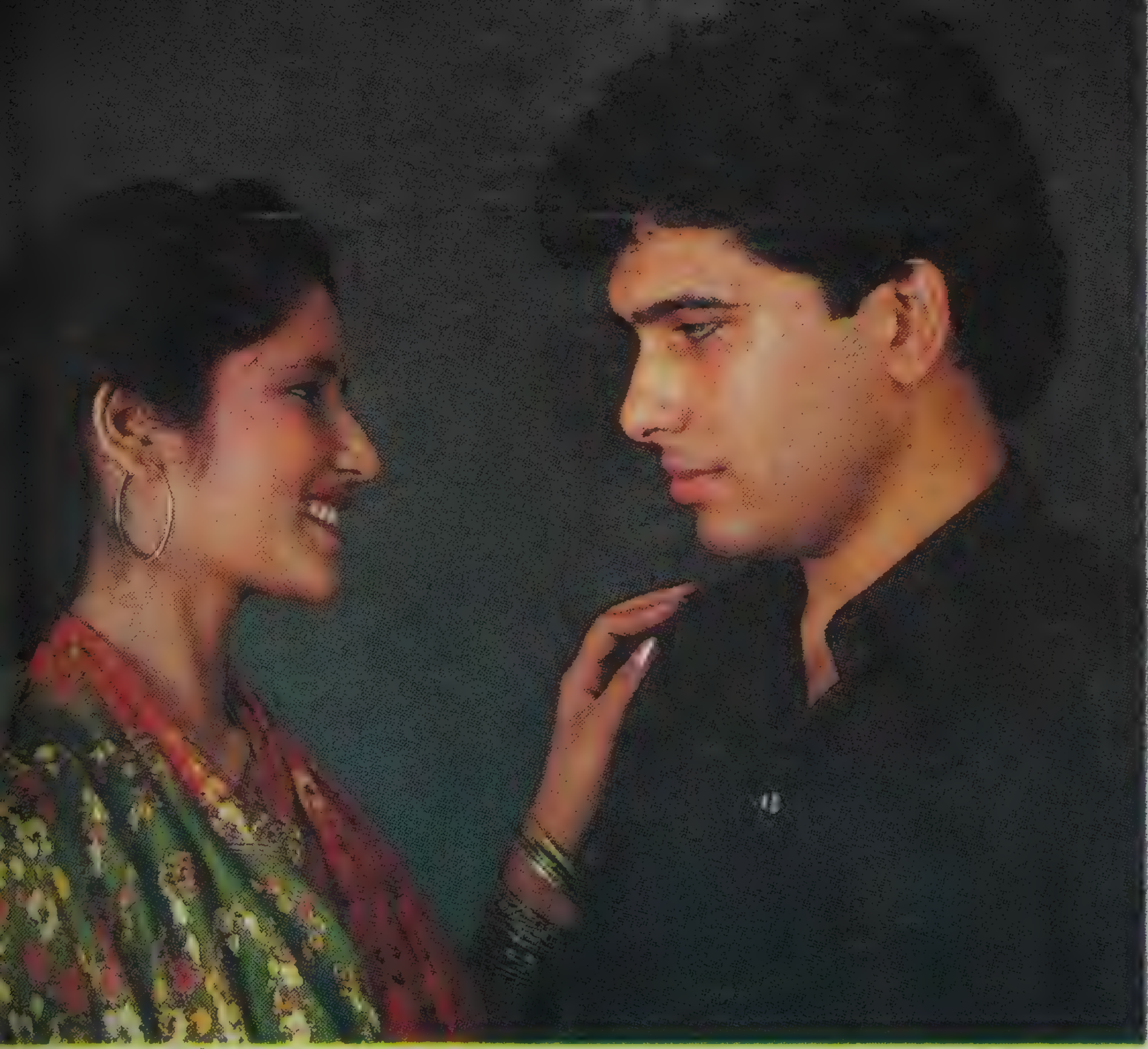
यदि पति के स्वभाव में लापरवाही या मानसिक अस्थिरता हो और उसी के कारण वह बेकार व बेरोजगार हो तो उसे निरंतर समझाएं तथा कभीकभी सख्ती भी दिखाएं. उसे घरगृहस्थी की जिम्मेदारी बताएं तथा कभीकभी उस से दूर रह कर (मायके आदि जा कर) उस की जिम्मेदारी का एहसास दिलाएं और उस पर जबरन जिम्मेदारी लादें भी.

ज्यादा जरूरत हो तो खुद आत्मनिर्भर हो जाएं. नौकरी या कोई रोजगार शुरू करें. लेकिन साथ ही पति को जता दें कि अपनी नौकरी से आप पति की कोई मदद नहीं करेंगी और न ही खर्च आदि के लिए पैसे देंगी. वह खुद अपने खानेपीने का बंदोबस्त करे. ऐसा करने पर उसे स्थिति की गंभीरता का पता चल जाएगा. पेट के लिए आखिर उसे अपनेआप को बदलना ही पड़ेगा और उस की लापरवाही तथा मन की अस्थिरता छूमंतर हो जाएगी.

लापरवाह, बेकार, आवारा व सुस्त पति से निबटने के लिए जरूरी है कि उस पर जिम्मेदारी का बोझ डाला जाए और उस का खर्चापानी बंद कर दिया जाए, तभी उस के होश ठिकाने आ सकते हैं. अव्यावहारिक तथा कल्पना में डूबे रहने वाले और घर की परेशानियों व समस्याओं से तटस्थ रहने वाले बेकार पतियों की पत्नियां भी बहुत परेशान व दुखी रहती हैं.

ऐसे पतियों को संसार या जीविका संबंधित बातों से कोई मतलब नहीं हुआ करता है. वे तो बस अपनी कल्पना को ही श्रेष्ठ मानते हैं. इन्हें जीवन की कठोर सचाइयों के बारे में बताना जरूरी है. जरूरत पड़े तो नाटक कर के ही सही उसे ऐसी सचाइयों से रूबरू जरूर करवा दें.

सुनीला अपने कवि पति प्रणव से बहुत परेशान थी. वह दिनरात कल्पना में डूबा रहता. हर वक्त खोयाखोया सा रहता. दाढ़ी बढ़ा कर बाल बिखराए यहांवहां भटकता. उस के कवि व लेखक मित्र भी उस के साथ देर रात तक निठल्ले बैठे पान खाते या चाय पीते. उसे घर या उस की समस्याओं से कोई मतलब न था. विभिन्न पत्रिकाओं में कविता या लेख आदि लिखने पर थोड़ेबहुत पैसे आते थे पर वे काफी नहीं थे. उन्हें भी वह दोस्तों में खर्च कर देता था. घर में दो बच्चे भी थे. खर्चा बहुत ही मुश्किल से चलता था.



पति का मनोबल बढ़ाएं एवं उस की परेशानियों में बराबर की भागीदार बनें.

और बेकार हो जाता है. ऐसे में पति के साथ ससुराल से कुछ दिन के लिए ही सही अलग हो जाएं और ससुर, जेठ, चाचा, मित्र आदि को पति को पैसे देने के लिए मना कर दें. अलग होने से सिर पर जिम्मेदारी का बोझ पड़ेगा तो पति को खुद ही अपने पैरों पर खड़े होने की जरूरत महसूस होगी.

सुनीला ने ट्यूशन पढ़ाना शुरू किया. इस से कुछ हालत तो सुधरी पर वह आमदनी भी पर्याप्त नहीं थी. इधर प्रणव की आदतों में कोई परिवर्तन न आया. सुनीला ने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन जब कोई असर न हुआ तो वह एक दिन अचानक सभी जमा पैसे ले कर बच्चों के साथ मायके आ गई. दोतीन दिन तो कवि महोदय कल्पना की दुनिया में ही डूबे रहे, पर पेट की आग कब तक शांत रहती. जब पैसे की जरूरत हुई तो दिमाग घूम गया. इधरउधर से उधार भी मांगा पर रोजरोज कौन देता.

इधर कई दिनों से कोई रचना छपी भी नहीं थी कि पैसे आते. सुनीला वापस आ भी नहीं रही थी. अंत में हार कर उस ने नौकरी के लिए हाथपांव मारने शुरू किए. कल्पना की दुनिया धराशायी हो गई और जिंदगी की सचाई मुंह फाड़े खड़ी हो गई. आखिर एक नौकरी मिली तो जान में जान आई. सुनीला को जैसे ही पता चला वह तुरंत वापस आ गई.

यदि संयुक्त परिवार है, ससुर, जेठ आदि से पति को खर्च के लिए पैसे मिल जाते हैं और घर में सब मिलाजुला कर खर्च चल जाता हो तो ऐसी स्थिति में भी पति सुस्त और बेकार हो जाता है. ऐसे में पति के साथ ससुराल से कुछ दिन के लिए ही सही अलग हो जाएं और ससुर, जेठ, चाचा, मित्र आदि को पति को पैसे देने के लिए मना कर दें. अलग होने से सिर पर जिम्मेदारी का बोझ पड़ेगा तो पति को खुद ही अपने पैरों पर खड़े होने की जरूरत महसूस होगी.

सुचिता ने यही किया. वह संयुक्त परिवार में थी. मिलाजुला कर गुजारा हो जाता था.

उस के पति की छोटी सी कपड़े की दुकान थी. कभी चलती तो कभी पति की लापरवाही के कारण बंद भी रहती. आखिर जब सुचिता ने ससुराल से अलग अपनी गृहस्थी बसाई तो पति महोदय की आंख खुली. यहां पिता और बड़े भाई का सहारा भी नहीं था. उन्होंने बाद में (सुचिता के इशारे पर) मदद करने से भी इनकार कर दिया था. अब अपनी दुकान भलीभांति चलाने के सिवा कोई चारा न था और उसे अपनी जिम्मेदारी का एहसास हो चुका था.

इसी प्रकार उषा भी अपने बेकार पति से निबट सकी. फर्नीचर की छोटी सी दुकान चलाने वाला उस का पति नरेंद्र बहुत ही लापरवाह किस्म का आदमी था. वह दुकान पर ज्यादा मेहनत नहीं करता. ग्राहकों से अकसर लड़ पड़ता. ज्यादातर तो दुकान बंद ही रहती थी. जो भी थोड़ेबहुत पैसे आते वह शराब में उड़ा देता.

तीन बच्चों के साथ उषा किसी तरह महल्ले वालों एवं रिश्तेदारों से मांगमांग कर घर की कमी पूरी कर लेती. पर आखिर यह सब भी कब तक चलता. शुरू में तो सब

ने दया कर मदद की पर धीरेधीरे लोगों ने यह भी बंद कर दिया. अब तो वे उस के पति का मजाक उड़ाते और उसे निठल्ला और शराबी तक कहते.

अंत में उषा ने उस से निबटने की एक तरकीब सोची. वह जानती थी कि नरेंद्र किसी दूसरे पुरुष की प्रशंसा से जलता है और थोड़ा शक्की स्वभाव का भी है. बस फिर क्या था, वह रोज सुबह उठ कर तैयार हो सजधज कर बैग लटका कर निकल जाती तो शाम ढले ही घर लौटती. बच्चों को अपनी सहेली के घर छोड़ जाती. दोतीन दिन तक जब उस ने ऐसा किया तो नरेंद्र से नहीं रहा गया. उस ने साहस कर के पूछा, "यह तुम रोजरोज सजधज कर कहां चली जाती हो बिना कुछ बताए? जरा हम भी तो जानें बात क्या है."

पति की कमजोरियां

इस पर उषा झूठमूठ इठलाई और शरमा कर बोली, "मेरी सहेली विमला के भाई सतीश का बहुत बड़ा कारोबार है यहां. पहले वह बंबई में थे, अब यहां भी काम फैला लिया है. विमला ने मुझे उन से मिलवाने को बुलाया था. वह मुझे अपने एअरकंडीशंड दफतर में काम देंगे. उसी सिलसिले में उन से मिलने रोज जा रही हूं. अब तो अकेली ही मिलती हूं मैं उन से. अभी एकाध महीने काम सीखूंगी तभी नौकरी पर रखेंगे. सचमुच बहुत अच्छे हैं वह. बहुत ही स्मार्ट और सुंदर. काम के बाद रोज मुझे अपनी कार में घुमाने ले जाते हैं. उन्होंने एक कीमती साड़ी भी देने का वादा किया है. मेरी बहुत प्रशंसा करते हैं. कहते हैं कि मैं इस उम्र में भी जवान और खूबसूरत दिखती हूं. और तीन बच्चों की मां तो लगती ही नहीं. वह मेरी हर तरह से मदद करने को तैयार हैं. मैं ने बात की थी, वह हमारी दुकान खरीदने को भी तैयार हैं. तुम तो वैसे भी नहीं चलाते. तुम्हें दिलचस्पी तो सिर्फ शराब में है, वह तो बिलकुल नहीं पीते. सचमुच बड़े अच्छे हैं वह. कल उन के साथ फिल्म देखने का भी कार्यक्रम है. शादी भी नहीं की उन्होंने. काश! मैं भी अविवाहित होती."

उषा के मुंह से अनायास ही आह निकल गई. नरेंद्र के तो तनबदन में आग लग गई. शराब का नशा हिरण हो गया. उस ने तुरंत गुस्से में कहा, "शर्म नहीं आती, इस उम्र में भी गैरमर्द के बारे में दिलचस्पी से बातें करती हो और उस के साथ घूमती फिरती हो."

उषा ने कुछ लाचारी दिखाते हुए कहा, "अब मैं भी क्या करूं? तुम तो ठीक से दुकान चलाते नहीं. जो भी कमाते हो शराब में उड़ा देते हो. तुम तो शराब से पेट भर लेते हो, लेकिन मैं तो खुद को या बच्चों को भूखा नहीं मार सकती. मैं गलत भी क्या कर रही हूं. काम के सिलसिले में ही तो जाती हूं. जरा सी उस की सुंदरता या जवानी की प्रशंसा कर भी दी तो क्या हुआ. घुमाने भी तो वह अपने काम के सिलसिले में ही ले जाता है, मना कैसे करूं? उसी दौरान वह कुछ अपने मन की बातें कह देता है. तुम तो मुझे या बच्चों को कभी घुमाने ले नहीं जाते, दोस्तों के साथ शराब पीने जरूर जाते हो. अपनी कमाई से कभी साड़ी तक नहीं ला सके. और कमाई ही कितनी है तुम्हारी? आदत से जो मजबूर हो. मैं भी क्या करूं, मुझे तो उस का साथ बहुत ही अच्छा लगता है."

सुनते ही नरेंद्र का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया, "हांहां, आज उस का साथ अच्छा लगता है तो कल अगर उस ने विवाह का प्रस्ताव कर दिया तब तो उस के साथ शादी भी रचाने से नहीं चूकोगी."

यह सुनते ही उषा उछल पड़ी और उस ने प्रसन्न हो कर कहा, "सच? लगता तो ऐसा ही है. आज नहीं तो कल वह प्रस्ताव जरूर करेगा. उस ने कहा भी था कि मुझ जैसी ही औरत वह पसंद करता है और अब तक उसे ऐसी कोई मिली ही न थी. तब तुम बच्चों को रख कर मुझे तलाक दे देना. तुम्हीं संभालना बच्चों के साथ अपनी गृहस्थी. मैं तो उस के साथ ही खुश रहूंगी. उधर अच्छी कमाई है, ठाटबाट हैं."



यदि पति के स्वभाव में लापरवाही या मानसिक अस्थिरता हो तो उसे जिम्मेदारी का एहसास दिलाएं.

बातें मानता, उसे घुमाता-फिराता, तब जा कर उषा निश्चित हुई.

बाद में उषा ने नरेंद्र को बताया कि उस की विमला नाम की सहेली का कोई भाई न था. उस ने तो नरेंद्र को रास्ते पर लाने के लिए नाटक किया था. दरअसल वह अपनी सहेली के घर ही सुबह से शाम तक रह जाती थी. यह सुन कर नरेंद्र के मन का रहासहा शक भी समाप्त हो गया और उषा के लिए प्यार उमड़ आया.

अब नरेंद्र को अपनी गलती का एहसास हुआ. वह यह समझता भी था कि उषा अभी भी सुंदर और जवान दिखती है और कुछ हद तक अन्य गृहिणियों से कहीं ज्यादा आकर्षक भी है. अपनी लापरवाही की वजह से यदि उस की घरगृहस्थी बरबाद हो गई या अच्छीखासी पत्नी हाथ से चली जाएगी तो वह कहीं का नहीं रहेगा. घरगृहस्थी चलाना व बच्चों की देखभाल करना तो उस के बस का ही नहीं. इस उम्र में तो कोई उसे अपनी लड़की ब्याहने से रहा. यदि दोबारा शादी हो भी गई तो पता नहीं उस से निभेगी या नहीं, अथवा वह बच्चों को प्यार दे पाएगी या नहीं. कहीं विधवा या तलाकशुदा से शादी हुई तो न जाने वह कौन सा अच्छा या बुरा इतिहास समेटे आएगी और शायद वफादार भी न निकले. तब तो मुसीबत ही मुसीबत है.

उस का मन वैसे भी शक्की था. उस ने तुरंत उषा को उस की सहेली के भाई के पास जाने से मना कर दिया. पहले तो उषा नहीं मानी पर जब नरेंद्र ने बहुत बिनती की और शराब छोड़ने तथा दुकान अच्छी तरह चलाने का वादा किया तब उषा मान गई.

अब नरेंद्र सुबह ही नहाधो कर दुकान पर जाता और शाम ढले ही आता. वह अब खूब मेहनत करने लगा. दुकान अच्छी तरह चल निकली. पैसे आए तो उस ने पत्नी और बच्चों के लिए कपड़े खरीदे. वह पत्नी की

इसी प्रकार अमिता ने भी अपने पति को रास्ते पर लाने में कोई कसर न छोड़ी. उस का पति किसी भी नौकरी पर दो महीने से ज्यादा टिक ही नहीं पाता था. घर में यों ही बेकार व निठल्ला पड़ा रहता. चाय पर चाय पीता, सिगरेट फूंकता या यारदोस्तों के साथ देर रात तक ताश की बाजी लगाता. अमिता जबरन कहीं नौकरी लगवाती भी तो महीने दो महीने बाद फिर वही हाल होता.

अंत में अमिता ने एक सेल्स गर्ल की नौकरी पकड़ ली. उस ने पति से साफसाफ कह दिया कि यदि उसे नौकरी करना अच्छा नहीं लगता तो ठीक है वह घर पर ही रहे, घरगृहस्थी एवं बच्चों को संभाले, खाना बनाए, बरतनकपड़े साफ करे. वह खुद दिन भर बाहर रह कर नौकरी करेगी.

पहले तो उस के पति को यह प्रस्ताव बुरा नहीं लगा. उस ने सोचा कि घर के काम में क्या है वह तो चुटकियों में हो जाता है. पर दोतीन दिन में ही उस की हालत खराब हो गई. बच्चों को संभालने, खाना, नाश्ता आदि बनाने में ही उस का जोड़जोड़ दर्द करने लगता. अपने लिए बारबार चाय बनाना भी

अब उसे पहाड़ लगता था. अब ज्यादा चाय पीने की आदत छूट गई. सिगरेट और ताश के लिए फुरसत ही नहीं मिलती थी. पत्नी घर में पैसा तो लाती थी पर उस पैसे से वह ऐश नहीं कर सकता था. आखिर वह तंग आ गया और एक दिन उस ने हथियार डाल दिए. उस ने कोशिश कर के एक अच्छी सी नौकरी पकड़ ली.

प्रमिला ने अपने बेकार पति से निबटने के लिए नौकरी करनी शुरू की पर अपने पति को यह बात शुरू में ही बता दी कि वह अपनी कमाई में से एक पैसा भी नहीं देगी. वह अपने खानेपीने, ऐश करने का इंतजाम कहीं और से करे. पत्नी की कमाई से ऐश करने का सपना देखने वाले निठल्ले तथा आलसी पति के तो होश ही उड़ गए. दोतीन दिन में ही उस की हालत खराब हो गई. पत्नी तो ठाट से रहती थी पर वह एकएक चीज के लिए तरसता था.

उस ने तुरंत अपने ठप पड़े रोजगार पर ध्यान देना शुरू किया. यह सब देख कर प्रमिला ने भी पैसे आदि से उस की मदद की, उस का मनोबल भी बढ़ाया और आज वह एक सफल उद्योगपति बन चुका है.

माला की हालत तो और भी खराब थी. पति प्रशांत आवारा, ऐयाश, आलसी और शराबी था. पत्नी व बच्चों को तो वह बस खानापूर्ति ही समझता था. परिवार की परेशानी या दुखसुख से उसे कोई मतलब न रहता. देर रात नशे में धुत्त घर पहुंचता और सारा दिन बिस्तर पर बेहोश पड़ा रहता. बातबात पर पत्नी व बच्चों पर हाथ उठाना उस की दिनचर्या थी. ठेकेदारी के काम से जैसे ही पैसे मिलते वह उन्हें अपने खानेपीने, कपड़े, शराब तथा ऐयाशी पर उड़ा देता. माला के बहुत मांगने पर थोड़ा-बहुत देता पर कभीकभी तो वह भी नहीं देता.

धमकी का असर

तब माला ने उसे शराब, सिगरेट, पान आदि से होने वाली बीमारियों तथा परस्त्री गमन से होने वाले घातक रोग के बारे में भी बताना शुरू किया. पति के द्वारा सख्ती एवं अत्याचार करने पर पुलिस, महिला संगठनों आदि की धमकी भी दी. अंत में उस ने एक तरकीब भी सोची. साससुर को, जो दूसरे शहर में रहते थे, अपने पास बुला लिया और उन से भी पति पर दबाव डलवाया. यहां तक कि माला के ससुर ने प्रशांत को संपत्ति से बेदखल करने की धमकी दे दी.

अब तो प्रशांत के होश ही उड़ गए. उस ने सोचा कि यदि जायदाद ही नहीं रहेगी, पैतृक संपत्ति ही हाथ से चली जाएगी तो वह कहीं का नहीं रहेगा. पुलिस के चक्कर में पड़ गया तो जेल में अलग चक्की पीसनी पड़ेगी. शराब एवं यौन संबंधों के कारण कहीं किसी भयंकर बीमारी से ग्रसित हो गया तो वह खुद तो बरबाद होगा ही अपनी सीधीसादी समर्पिता पत्नी और भोलेभाले बच्चों की जिंदगी को भी बरबाद कर देगा.

बुद्धि व साहस का प्रतिफल

बात उस की समझ में आ चुकी थी. उस ने अपनेआप को सुधारने का वचन दिया. सभी बुरे व्यसनों को छोड़ पत्नी एवं बच्चों पर ध्यान देना शुरू किया और अपने ठेकेदारी के काम में और भी मन लगाने लगा.

इस तरह माला ने अपनी बुद्धि, धैर्य, साहस के साथ तथा साससुर की मदद से अपने बेकार पति को काबू में किया.

बेकार पतियों से निबटने के ऐसे ही कितने तरीके हैं जिन से पत्नियां लाभ उठा सकती हैं. यह ध्यान देने की जरूरत है कि प्यार के साथसाथ थोड़ी सख्ती भी बहुत जरूरी है. हथियार डालने या सहते रहने से ऐसे पतियों को और भी छूट मिलेगी. स्थिति का डट कर मुकाबला तथा पति के स्वभाव का सही विश्लेषण कर उसे रास्ते पर लाने के कारगर तरीके सोचे जा सकते हैं. और उन्हें काबू में ला कर अपनी एवं अपने परिवार की समस्या सुलझाई जा सकती है.

संबंध

कहानी • पुष्पा भाटिया

कितनी देर से करवट बदल रही थी पर नींद आंखों से ओझल हो गई थी. अंधेरे में भी घड़ी की सूई सुबह के 4 बजाते हुए प्रत्यक्ष दिखाई पड़ रही थी. हर ओर स्तब्धता छाई हुई थी. एक नजर अश्विनी की ओर देखा. वह गहरी नींद में थे. पूरे दिन दौड़धूप वही करते रहते हैं. मुझ से तो किसी प्रकार की सहानुभूति या अपनत्व की अपेक्षा नहीं करते वे लोग. किंतु आज मेरे मन को एक पल के लिए भी चैन नहीं है. मृत्यु शैया पर लेटी मां व भाभी का रुग्ण चेहरा बारबार आंखों के आगे घूम जाता है.

क्या मनःस्थिति होगी बाबूजी व भैया की आज की रात?

डाक्टरों ने आपरेशन के बाद दोनों की ही स्थिति को चिंताजनक बताया था. मां परिवार की मेरुदंड हैं और अंजु भाभी गृहलक्ष्मी. यदि दोनों में से किसी को भी कुछ हो गया तो परिवार बिखर जाएगा. किस प्रकार जोड़ लिया था उन्होंने भाभी को अपने साथ. घर का कोई काम, कोई सलाह उन के बिना अधूरी थी. मैं ही उन्हें अपना न पाई. एक पल के लिए भी अंजु की उपस्थिति को बरदाश्त नहीं कर पाती थी मैं.

उसे प्यार करना तो दूर, उस की शक्ल से भी मुझे नफरत थी. उसी के कारण मां को भी तिरस्कृत करती रही थी. जाने क्यों मुझे लगता उस के कारण मेरे परिवार की खुशियां छिन गईं. भैया का जीवन नीरस हो गया. क्या मां का जी नहीं चाहता



अंजु भाभी के प्रति वितृष्णा भरे भाव से रीना स्वयं को मुक्त न कर पाती. यहां तक उस के प्रति मां को असीम स्नेह लुटाता देख ईर्ष्या की अग्नि में जलने लगती. परंतु आज वही रीना पश्चात्ताप की अग्नि में क्यों जल रही थी?

होगा कि उस का घरआंगन भी पोतेपोतियों की किलकारियों से गूंजे. आज के भौतिकवादी युग में रूप, गुण और शिक्षा से संपन्न स्त्री को भी कई बार यातनाएं सहनी पड़ती हैं.

किंतु मेरे परिवार के सदस्यों ने तो उस अपाहिज को स्वीकारा था. उस की कई बार सेवाशुश्रूषा की थी. शारीरिक व मानसिक संबल प्रदान किया था. भाभी के प्रति मां को असीम स्नेह लुटाता देख मैं ईर्ष्या की अग्नि में जलने लगती थी.

ससुराल में अपना स्थान बनाने के लिए कितना परिश्रम करना पड़ा था मुझे? इस अपाहिज नारी के कारण भी कुछ कम आक्षेप तो नहीं सहे थे. मेरे मातापिता दहेज के लोभी बन गए थे. कैसे समझाती इस समाज को कि उन्होंने यह सब मानवता के वशीभूत हो कर किया था. और मैं क्या एक पल को भी भाभी के किसी गुण से प्रसन्न हो पाई थी? मेरी दृष्टि में भाभी का जो काल्पनिक रूप था उस से तो वह अंशमात्र भी मेल न खाती थी.

कुढ़ कर मैं ने मां से कहा भी था, "यह तो ग्रहण है तुम्हारे बेटे के जीवन पर और तुम्हारे परिवार पर एक अभिशाप."

मां स्तब्ध रह जाती थीं मेरे शब्दों पर. उन्हें कभी कोई शिकायत थी ही नहीं उन से.

सुबह के 5 बजे थे. फोन की घंटी बज रही थी. कहीं कोई अप्रिय समाचार न हो, धड़कते दिल से फोन का चोगा उठाया, बाबूजी थे.

"रीना बेटी, तुम्हारी मां की तबीयत कुछ ठीक है, पर अंजु अभी खतरे से बाहर नहीं है." उन के स्वर का कंपन स्पष्ट था. मैं स्वयं को कोस रही थी. क्यों बाबूजी व अश्विनी के कहने पर घर आ गई थी. बाबूजी व भैया के पास बैठना चाहिए था मुझे. नितांत अकेले थे वे दोनों. पर मुझ से सहानुभूति की अपेक्षा वे रखते भी न होंगे. उन्हें क्या मालूम हर समय अंजु को तिरस्कृत करने वाली रीना आज पश्चात्ताप की अग्नि में इस तरह जल रही है?

पहले भी तो वह कई बार अस्पताल आई थीं, किंतु तब मेरे मन के किसी कोने से अस्फुट सी यही आवाज उठती थी, 'हे ईश्वर! भाभी को अपने पास बुला कर मेरे भैया का जीवन मुक्त कर दो.' एक पल को न समझ पाई थी कि भैया का जीवन भाभी के बिना अधूरा है. मां ने एक बार समझाया था कि एक बार वह इस घर की बहू बनी है तो अब वह मेरी बेटी भी बन गई है. उस की देखभाल करना हमारा नैतिक ही नहीं, मौलिक दायित्व भी है.

"और उन के मायके वालों का क्या कर्तव्य है? धोखे से अपनी बीमार बेटी दूसरे के पल्ले बांध कर खुद चैन की नींद सोएं? कहने को तो करोड़ों का व्यापार है, टिकटें भेजते रहते हैं अपनी बेटी व दामाद को. अमरीका घूम आने के निमंत्रण भेजते रहते हैं, पर बीमार बेटी की सेवा नहीं की जाती उन से." मैं गुस्से से कांपकांप जाती थी.

"रीना, वह स्वयं मायके नहीं जाना चाहती. जानती है, कल मेरे गले में हाथ डाल कर बोली थी, 'मां, मेरी मां व पिताजी से बढ़ कर प्यार आप लोगों ने मुझे दिया है. मेरा जी आप लोगों को छोड़ने को नहीं चाहता.'"

"बस तुम से तो कोई मीठा बोले तो पिघल जाती हो."

बड़ी मुश्किल से अश्विनी मुझे चुप



रीना भाग कर अंजु के बिस्तर तक पहुंच गई. उस के माथे पर चुंबनों की बौछार कर उसे गले से लगा लिया.

आदर्श पति के समान अश्विनी रोज मुझे मां से मिलवा लाते थे. पूरा दिन मां से बतियाती. मेरी पसंद के पकवान बनते. मां बताती रहती थीं भैया के रिश्तों के बारे में. बाबूजी भी पास बैठे रहते. भैया का स्वभाव कितना मृदु था. उन की आवाज की पारदर्शी सरलता से उन का आकर्षक व्यक्तित्व परिलक्षित होता था.

मुझे नाज था अपने भाई पर. मेरी कितनी सहेलियां उन पर फिदा थीं. पर वह तो आदर्श पुत्र थे अपने मातापिता के.

करवाते. दिखावे के संबंध मुझे हमेशा विचलित करते रहे हैं. मां के पास जा कर भी अंजु को अपना न पाती थी मैं. कितना प्रतिरोध किया था भैया के ब्याह पर मैं ने? उन के जैसे सौम्य, सुदर्शन व्यक्तित्व के स्वामी के लिए रिश्तों की क्या कमी थी? एम.बी.ए. किए थे वह. बाबूजी का लाखों का व्यापार था. भैया दाहिने हाथ के समान ही तो उन की मदद करते थे. मैं मचल कर बाबूजी से कहती, "भैया के लिए सुंदर सी भाभी ला दीजिए न."

"पहले तुझे इस घर से निकालेंगे तब बहू आएगी यहां."

पर मैं एक सखी के समान भाभी के साथ रहना चाहती थी. हमउम्र ननद भाभी सखियों के समान ही तो होती हैं. पर मेरी किसी ने भी न सुनी थी. उन का तर्क था, "हम तुझे इसी शहर में ब्याहेंगे, जब जी चाहे आ जाना."

और धूमधाम से ब्याह दी गई थी मैं.

एक दिन मां ने बताया था, "तेरी देविका मौसी का पत्र आया है अमरीका से. वह अपनी देवरानी की बेटी का रिश्ता करना चाहती है विपिन के साथ."

यह वही देविका मौसी थीं जिन्होंने अपने मातापिता को बचपन में ही खो दिया था. घरघर की ठोकरें खाने के बाद भी उन्हें किसी ने सहारा न दिया था. अभागिन कह कर लोग दुत्कार देते थे. मेरे नाना ने उन्हें पालापोसा, पढ़ायालिखाया और उच्च कुल में ब्याहा था.

मां तो यहां तक कहती हैं कि दहेज भी उन्होंने मौसी को मां से बढ़ कर ही दिया था. पुराने जमाने में रिश्ते निबाहना लोग भली प्रकार जानते थे शायद. वह हमेशा नानाजी के एहसानों से दबी रहती थीं. यदाकदा अमरीका से आ कर ढेर सारे उपहारों से हमारा घर भर देतीं. हम भाईबहन को बहुत प्यार करतीं. वह दोनों

सगी बहनों से भी बढ़ कर थीं.

"लड़की स्वभाव से सुशील है, सुंदर है और सब से बड़ी बात एम.बी.ए. है." खुशी के अतिरेक में मां बही चली जा रही थीं.

"तुम्हें कैसे मालूम कि वह रूपवती है?"

मां फोटो निकाल लाई थीं. ऐसा लगा जैसे चांद धरती पर उतर आया हो, पर न जाने क्यों मेरा शंकालु हृदय इस रिश्ते की अनुमति नहीं दे रहा था.

"मां, विदेश में पलीबढ़ी लड़की क्या यहां पर तारतम्य बिठा पाएगी? वहां के रहनसहन और यहां के तौरतरीकों में बहुत अंतर है."

"तू नहीं जानती देविका का स्वभाव. मेरे ही साथ पलीबढ़ी है. उस के और मेरे संस्कारों में कोई अंतर थोड़े ही है. क्या उसे नहीं मालूम कि मैं विपिन के लिए कैसी लड़की पसंद करूंगी?"

मैं देख रही थी भैया की भी मूक अनुमति थी इस संबंध में. बाबूजी का हस्तक्षेप सदा ही नकारात्मक रहा है ऐसे मामलों में. संबंध को स्वीकृति दे दी गई. ब्याह की तारीख दो माह बाद दी गई थी. मांबाबूजी का विश्वास देखते ही बनता था. बारबार कहते, "इस घर में लक्ष्मी का पदार्पण हो रहा है." मेरे जाने से जो सूनापन वहां आ गया था उसे अंजु भाभी पाट देंगी, ऐसा उन का अटूट विश्वास था. बारबार कहते जाओ, बाजार से खरीदारी कर के आओ. रोज मैं मां के साथ खरीदारी करती. उस के काल्पनिक गोरे रंग पर क्या फबेगा, यह सोच कर कपड़ा लिया जाता. इस घर में धनदौलत, मोटरबंगला, नौकरचाकर किसी की भी कमी नहीं थी. हीरेमोती के सैट लिए गए थे. समधियों के रहने का इंतजाम एक होटल में किया गया था. हर तरह की सुखसुविधाएं उन के लिए मुहैया थीं. मुझे भी कीमती साड़ी व जड़ाऊ सैट बाबूजी ने दिलवाया था. अश्विनी मना करते रह गए थे. मां का तर्क था कि इकलौते भाई की शादी में यह सब लेने का हक था मुझे.

एकएक दिन युग के समान प्रतीत हो रहा था. कब वह शुभ दिन आए और भाभी से मिलूं? आकांक्षाएं आसमान छू रही थीं. मां का उत्साह इकलौती बहू के प्रति देखते ही बनता था. बारबार कहतीं, जोड़ी सुंदर तो लगेगी न? हम मुसकरा कर अपनी सहमति देते थे. विवाह का समय ज्योंज्यों नजदीक आता मांबाबूजी की बेचैनी बढ़ती जाती थी. सब काम अलगअलग लोगों में बंटा था. किसी प्रकार की कमी वह सह नहीं पा रहे थे.

भैया सदैव से अल्पभाषी रहे हैं, पर उन की उत्सुकता मां से छिपी न थी. आज भाभी और उन के पिताजी जो आ रहे थे. बारबार आंखों के सामने एक खूबसूरत चेहरा, छरहरा बदन व लंबे कद की रूपसी खड़ी हो जाती.

हम सब हवाई अड्डे पहुंच चुके थे. वहां पहुंच कर अश्विनी ने छेड़ा, "मां, अपनी बहू को कैसे पहचानेंगी?"

"देविका के साथ जो सब से सुंदर लड़की होगी वही मेरी बहू है." मां का अटूट विश्वास देखते ही बनता था.

उद्घोषिका ने सूचित किया, अमरीका से आने वाला वायुयान आ गया है. उत्सुक निगाहें हर आगंतुक में भाभी को ढूंढ़ रही थीं.

सहसा मां को किसी ने अंक में भर लिया था, देविका मौसी थीं.

"हमारी बहू कहां है?"

"और मेरी भाभी?" मैं अपनी उत्सुकता रोक नहीं पा रही थी.

उन्होंने एक 5 फुट की लड़की को आगे कर के कहा, "यही तो है तुम्हारी बहू."

मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था. कहां वह फोटो वाली रूपसी और कहां यह कुम्हलाया सा चेहरा? कहीं यह मजाक तो नहीं कर रही हैं, या मैं ही कोई दुःस्वप्न देख रही हूं? उस के दोनों हाथ

जुड़े हुए थे, शायद कभी पक्षाघात का शिकार हुई थी. कदकाठी का पूर्ण विकास हुआ लगता ही न था.

बाबूजी संज्ञाशून्य से परिस्थिति का विवेचन कर रहे थे और भैया अपना गांभीर्य ओढ़े कभी अंजु को निहार रहे थे, कभी हम सब को. अपनी जीवनसंगिनी को इस रूप में देख कर उन की आकांक्षाओं पर बुरी तरह तुषारपात हुआ था. मां गश खा कर गिर पड़ी थीं. किसी प्रकार उन्हें उठाया. रुग्ण सी काया व संतप्त मन लिए कांपती रही थीं वह. कितने अनदेखे दंश खाए होंगे उन्होंने यह मैं भली प्रकार से महसूस कर पा रही थी. शक्ति की अजस्त्र स्रोत मां बुरी प्रकार से टूट चुकी थीं.

पर ऊपरी तौर पर सभी सामान्य थे. किसी ने एक शब्द भी न कहा था. मेरा हृदय चीत्कार कर के देविका मौसी को बुराभला कहने को चाह रहा था. खूब बदला लिया था उन्होंने हम सब से अपने पर किए गए एहसानों का. जाने कब का बदला लिया था उन्होंने भैया से? किंतु मातापिता की शिक्षा के कारण कुछ भी तो अनर्गल न कहा गया था.

फोटो वाली सुंदरसलोनी अंजु की तुलना इस अपाहिज से कर के मन दुखी सा हो गया था. भविष्य की सुंदर सुनहरी हरीतिमा की कल्पना यथार्थ की धरती पर मरुभूमि की सफेदी में परिवर्तित हो गई थी. सारे बिंबप्रतिबिंब टूट पड़े थे. ऐसा प्रतीत होता था कि सामने पड़े वैभव को किसी ने कालिमा से पोत दिया हो.

समधियों को उन के रहने के स्थान पर छोड़ा गया. उन की आवभगत के लिए कुछ लोग तैनात थे. एक बात कुछ विचित्र सी लगी थी, देविका मौसी सामान्य ही थीं. उन के व्यवहार से ऐसा नहीं लगा कि उन्होंने हमारे साथ विश्वासघात किया हो.

घर आ कर हर परिचित, रिश्तेदार की जबान पर एक ही प्रश्न था, "बहू कैसी है?" क्या बताते? मृत्यु के बाद का सा



कारवां

वक्त की गर्द पड़ती रही
निशां दबते चले गए,
कारवां बढ़ता रहा आगे
मगर मिटे नहीं निशां.
—कांता अरोड़ा

सन्नाटा छा गया था. ऐसा लगता हम सब के शरीर का रक्त किसी ने चूस लिया हो. रात्रिभोज तक हम सब सामान्य थे या सामान्य होने का प्रयत्न कर रहे थे. अभी विवाह में तीन दिन का समय बाकी था. रहरह कर मां व बाबूजी पर क्रोध आ रहा था. इस नवीन विचारधारा के युग में महज फोटो देख कर ब्याह निश्चित करना कितनी बड़ी भूल थी. कुंठा कहीं दिल में कैद थी और जबान को मानो ताला लग गया था.

किसे कहें, क्या कहें? भोलीभाली मां छलप्रवंचनाओं के छद्मों को कदापि नहीं पहचान पाई थीं, तभी तो 'हां' कर बैठी थीं.

मेहमानों की खुसुरफुसर सुन कर लग रहा था उन्हें अंजु के बारे में पता लग चुका था. अभी रात्रि के 10 बजे थे. सहसा देविका मौसी घर आई थीं. बोलीं, "दीदी, तुम सब से अंजु मिलना चाहती है. उस की जिद है कि जब तक विपिन से बात नहीं करेगी, यह विवाह संपन्न न होगा." इस पल तक हर दिल में व्याप्त समुद्री शोर थम सा गया. एक लमहे के लिए मानो सुन्न व सन्नाटा छाया सा लगने लगा था वहां. मुझे

कुछ आशा की किरण दमकती लगी. गाड़ी निकाल कर मैं, मां व भैया अंजु के पास गए थे. बाबूजी अपने उच्च रक्तचाप के कारण जा नहीं पाए थे. कमरे में अंजु व देविका मौसी ही थीं. उस ने आगे बढ़ कर मां के चरण स्पर्श किए. मां ने भी आशीर्वाद दिया था. अंजु ने ही मौन तोड़ा था.

''मां, क्या आप मुझे बहू के रूप में स्वीकार कर पाएंगी?'' मां इस प्रश्न के लिए तैयार न थीं. वह भैया की ओर उन्मुख हो कर बोलीं, ''कोई भी फैसला किसी भी प्रकार के दबाव में आ कर मत कीजिएगा. इस में देविका चाची का भी कोई दोष नहीं है. लगभग तीन वर्ष पूर्व मेरी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी. बुरी तरह जख्मी हो गई थी मैं. डाक्टरों ने प्रयत्न कर के मुझे तो बचा लिया पर आज भी मुझे कई दिनों के अंतराल पर बेहोशी के दौरे पड़ते हैं. उस के एकदो दिन बाद तक मेरे हाथ यों टेढ़े हो जाते हैं. सामान्य होने में कुछ वक्त लगता है. मांजी, मैं आप के घर की खुशियां बरबाद करना नहीं चाहती. देविका चाची भी इस दुर्घटना के बारे में अनभिज्ञ थीं. मैं पूर्णरूप से एक आदर्श बहू बनने का प्रयत्न करूंगी. विपिन जी ! आप का निर्णय ही मेरा अंतिम निर्णय होगा.''

स्पष्ट रूप से उस ने बात समझाई थी. मैं ने सोचा, भैया का उत्तर अवश्य ही नकारात्मक होगा. उन्होंने तो एक पल भी हामी भरने में देर न की थी.

मां को भी यह संबंध शायद स्वीकार था. कहीं कोरी वचनबद्धता के तहत तो भैया व मां ने हामी नहीं भरी थी? या दहेज के लालच में आ कर मां अपने बेटे का जीवन बलिदान कर रही थीं? मैं ने भैया से पूछा भी था, ''एक अपाहिज के साथ जीवन बिता सकेंगे आप?''

मां से भी कहा था, ''धनदौलत तो हाथों का मैल है, मां. अपने बेटे को यों बेचो मत. भैया का जीवन अंधकारमय हो जाएगा. अब क्या तुम्हारे दिन हैं सेवाटहल करने के? थक जाओगी तुम?''

अपने भाई की खुशियों को आग में जलती देख भला किस बहन का दिल रुदन करने को न चाहेगा? भैया ने अपना स्नेहिल हाथ मेरे सिर पर रख कर कहा था, ''रीना, यदि अंजु विवाह के बाद यों दुर्घटनाग्रस्त हुई होती तो क्या हम उसे स्वीकार न करते?''

''तब की बात और थी भैया.''

''अच्छा एक बात बता, यदि हमारी कोई बहन अपाहिज होती तो क्या हम उस का घर बसाने का प्रयत्न न करते?''

''अवश्य करते, पर छल से नहीं.''

''तो इस पूरे घटनाक्रम में अंजु तो दोषी नहीं. मैं वादा करता हूं मैं अपनी तरफ से किसी को शिकायत का मौका नहीं दूंगा.''

हम सब चुप कर गए थे. सीधासरल व्यक्तित्व लिए भैया भविष्य की दुश्चिंताओं से अनभिज्ञ से थे. मेरे प्रतिकार, विरोध, प्रतिवाद सब व्यर्थ हो गए थे. मैं मूकदर्शिका सी बनी अपने परिवार की खुशियां अग्नि के हवाले होते देख रही थी. जी चाहा, इस विवाह में सम्मिलित ही न होऊं, कहीं भाग जाऊं. पर सामाजिक बंधनों में जकड़े मनुष्य को मर्यादा के अंश सहेजने ही पड़ते हैं. भैया का विवाह संपन्न हो गया.

विवाहोपरांत दिए जाने वाले प्रीति-भोज के अवसर पर मेहमानों की अगवानी व स्वागतसत्कार के लिए भैया के साथ खड़ी भाभी मेहमानों की भीड़ में गश खा कर गिर पड़ी थीं. मेहमानों के समक्ष बहाना बनाना पड़ा था, थकावट के कारण ऐसा हुआ है. एक टीस सी उभरी दिल में. यदि तब भाभी मृत्यु की गोद में समा गई होती तो मेरे भैया का जीवन यों बरबाद तो न होता. मां, व बाबूजी ने पूर्ण स्नेह व सम्मान दिया था बहू को. फूल की कोपल के समान उस की रक्षा की जाती थी. मां किसी भी अभद्र व्यवहार को बरदाश्त नहीं करती

थीं. कपोत की तरह अपने डैनों से ढक कर वह भाभी की रक्षा कर रही थीं. सभी के होंठ सी गए थे. मानवता की मूर्ति बनी थीं वह. यदि भाभी सामान्य होती तो मां पर अवश्य मैं गर्व करती. पर एक बीमार स्त्री को अपने बेटे के साथ प्रणयसूत्र में बांध कर उन्होंने उस के प्रति जो अन्याय किया था, उसे मैं भूल नहीं पा रही थी.

दहेज में रंगीन टीवी, वीसीआर और एअर कंडीशनर से ले कर हीरे, माणिक, मोती सभी कुछ तो थे, पर इन चीजों की यहां कोई कमी न थी. घर आ कर फूटफूट कर इतना रोई कि शायद दीवारें भी पसीज गई होंगी. अश्विनी ने बहुत प्यार से समझाया था, "वैवाहिक संबंध संयोगवश बनते हैं. तुम्हारे भैया की शादी जिस से होनी थी हो गई. इस संबंध में व्यर्थ चिंता करने से क्या लाभ है. और यह भी तो हो सकता है कि तुम्हारी भाभी का स्वभाव इतना मृदु हो कि तुम सब को वह स्नेहपाश में बांध ले."

मैं चुप हो गई थी.

तभी सास, ननद आ धमकी थीं. सास बोलीं, "हां भई, अब तो ए.सी. दहेज में मिलने लगे. हमारे बेटे को तो कूलर भी नहीं मिला था. अब बहू टेढ़ीमेढ़ी हो तो क्या हुआ?"

जी चाहा प्रत्युत्तर में उन का मुंह नोच लूं. तुम्हारे हृदय में मानवता हो तो जानो मोल मानवता का. पर अश्विनी ने इशारे से चुप करवा दिया था. तीनचार दिन बाद मां को फोन किया. सोचा, अकेली होंगी. कुछ तो मन हलका कर लेंगी मेरे साथ. भैयाभाभी तो हनीमून पर गए थे. फोन अंजु ने उठाया, "हैलो, रीना तुम? इतनी

हमारी बेड़ियां

पिछले वर्ष मैं अपने दीदी-जीजा के पास उन के गांव कुछ दिनों के लिए गया. उन के पड़ोस में रहने वाले एक युवक को कई दिनों से तेज बुखार था. पर अंधविश्वासों के कारण उसे अस्पताल ले जाने के बजाय उस का इलाज तांत्रिक से करवा रहे थे. तांत्रिक उसे मिरगी की दवाई देता रहा. मैं कुछ दिनों बाद घर वापस आ गया. इस वर्ष दोबारा वहां गया तो पता चला कि वह लड़का पागल हो गया है.

– गुरप्रीत ग्रेवाल

*

हमारे यहां जब बच्चा पैदा होता है तो सर्वप्रथम मां को नारियल का चूरा खाने को दिया जाता है. एक बार रात को 10 बजे हमारे पड़ोस के घर लड़का हुआ. घर पर नारियल उपलब्ध नहीं था तथा बाजार बंद हो चुके थे. परंतु परंपरा को ध्यान में रख कर महिला को दवाई नहीं दी गई. सुबह तक उन की तबीयत काफी बिगड़ चुकी थी तथा शीघ्र ही उन की मृत्यु हो गई.

– मनीषा शर्मा

हमारे घर में अंधविश्वासों का काफी बोलबाला है. घर के सदस्यों ने एक बार कहीं सुना कि 7 बिच्छुओं पर कपड़ा डालने से सोना बनता है. मेरी चाची ने एक बार गद्दे के नीचे बिच्छू निकलते देखे. उन्होंने झट उन पर अपनी साड़ी का आंचल डाल दिया. एक बिच्छू ने उन्हें डंक मार दिया. काफी इलाज के बाद उन्हें दो दिन बाद होश आया.

– नीतू शर्मा

मेरी सहेली के गांव में बच्चा पैदा होने से अन्नप्राशन संस्कार तक प्रतिदिन शाम को पान के पत्ते के ऊपर जलता हुआ कपूर रख कर बच्चे की नजर उतारी जाती है. एक दिन बच्चे की नानी उस की नजर उतार रही थी, तभी हवा के तेज झोंके से पान का पत्ता उलट गया तथा जलता हुआ कपूर बच्चे की आंख पर जा गिरा. अथक प्रयासों के बावजूद बच्चे की आंख बचाई न जा सकी.

– दाक्षी बाजपेई

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

जल्दी आ क्यों गईं अपने घर?"

"पर तुम लोग तो 15 दिन बाद आने वाले थे न?"

"हां, वहां जा कर मां से फोन पर बात की तो मालूम पड़ा बाबूजी बीमार हैं, इसी लिए वापस आ गए."

उस के स्वर में मिसरी घुली थी. मैं ने सोचा, 'तुम्हारे जैसी बीमार स्त्री कश्मीर की वादियों में भैया का क्या मन मोह पाई होगी?' तभी बाबूजी से मिलने चल पड़ी थी.

अंजु उन के सिरहाने बैठी थी. मां को जबरदस्ती सुला दिया था उस ने. बोली, "परेशान हो जाती हैं मां बाबूजी को देख कर. मैं तो हूं ही यहां." और वह एक ट्रे में बाबूजी के लिए जूस व मेरे लिए चाय ले कर आ गई थी. दीनू को भेज कर समोसे भी मंगवाए थे उस ने. बोली, "खाओ न, तुम्हें बहुत पसंद हैं न ये. उस के बाद वह एकएक घंटे में बाबूजी का बुखार देखती रही. अच्छा तो बहुत लगा यह सब, पर फिर सोचा, कहीं यह आडंबर तो नहीं. अपना दोष छिपाने के लिए नाटक कर रही हो? पर आत्ममंथन करने पर मैं ही ग्लानि से भर गई थी. बेटी होने का मैं ने कौन सा कर्तव्य निभाया. शाम को उस ने अश्विनी को भी फोन कर बुला लिया. जबरदस्ती हमें रोक लिया था उस ने. पूरी मेज मेरी पसंद के भोजन से सजी थी, पर मेरे मुंह से प्रशंसा का शब्द नहीं निकल रहा था. भैया भी हाथोहाथ ले रहे थे. सभी सामान्य थे.

वापस अपने घर आई तो यहां भी जी नहीं लग रहा था. तभी भैया मां को ले कर आए थे. मां बोली थीं, "कल अंजु फिर बेहोश हो गई थी. उस की तबीयत देख कर घबरा जाती हूं. कौन से अस्पताल में दाखिल करूं, समझ नहीं आता?"

"तो इस में घबराने की क्या बात है मां? भेज दो उस के मायके में. बड़े चालाक बनते हैं वे. अपनी बीमारी बेटी तुम्हारे मत्थे मढ़ गए."

"उन्होंने तो हवाई जहाज की टिकटें भी भेजी हैं पर अंजु खुद नहीं जा रही और सच पूछो तो मेरा भी मोह पड़ गया है उस में, इतनी प्यारी है वह."

"तो ठीक है, करती रहो सेवा उस की."

और फिर एक बार भी पलट कर उस का हाल नहीं पूछा था मैं ने. वैसे भी इधर व्यवसाय के सिलसिले में अश्विनी काफी परेशान थे. कई जगह माल भेज कर पैसों की वसूली नहीं हो पा रही थी. एक दिन शाम को बहुत झल्लाए थे मेरे ऊपर.

"रीना, क्या तुम्हें नहीं मालूम तुम्हारी भाभी अस्पताल में है."

"तो इस में नया क्या है?"

"क्या औपचारिकतावश उस का हाल नहीं पूछना चाहिए तुम्हें? अब वह घर आ गई है. चलो मिल कर आते हैं. बीमार मनुष्य से यदि दो शब्द भी सहानुभूति के बोलो तो दुख बंट जाता है."

बेमन से मैं तैयार हो कर चल पड़ी थी. एक पल के लिए उस का पीला चेहरा देख कर तरस भी आया, पर न जाने दूसरे ही पल वह घृणा में क्यों बदल गया था? मैं मां से बतियाती रही. मां लगातार अंजु का ध्यान रख रही थीं और मैं कुढ़ रही थी. वातावरण को सामान्य बनाने के लिए मां बोली थीं, "रीना, अंजु का गाना सुनोगी."

मैं ने बेमन से हां कही. अंजु के प्रति छिपा तिरस्कार मां बखूबी पहचानती थीं. और तभी अंजु का गाना सुना. इतना मीठा स्वर मैं ने पहली बार सुना था. उन्होंने उस के कपड़े बदलवाए. उस की उंगलियां फिर मुड़ गई थीं. वह हमारे जाने से बहुत खुश होती थी. जितना मेरे पास आने का प्रयत्न करती मैं उसे मूक प्रताड़ना देती. अचानक अश्विनी अपने व्यवसाय की परेशानियां ले बैठे. अंजु सब कुछ चुपचाप सुनती रही. फिर भैया के साथ मिल कर उस ने बहुत मशविरे दिए. बाबूजी भी हतप्रभ से उस के सुझावों को सुन रहे थे. उस के सुझावों से

अश्विनी को वाकई बहुत लाभ हुआ था. वह जब भी ठीक होती, भैया के साथ मिल कर मेरे घर आती. मेरी हारीबीमारी, दुख, परेशानी सब कुछ उस का था. गाड़ी में बैठ कर भैया के साथ कई बार दफ्तर जाती. बाबूजी तो अब वृद्ध हो गए थे. भैया दौरे पर चले जाते. वह फैक्ट्री व दफ्तर अच्छी प्रकार संभाल लेती थी. चार वर्ष के वैवाहिक जीवन में एक बार भी तो पलट कर मायके को न निहारा था उस ने. मेरी बिटिया को भी इतना प्यार करती कि कहना मुश्किल है. बाबूजी भी बेटी से ज्यादा नेह देते उसे. पर मैं उस वातावरण में घुटती थी.

बाबूजी तो अपने साथ घुमा भी लाते थे उसे. मां को कई बार हाथों से दवाई और जूस पिलाते देखा था मैं ने. पर न जाने क्यों मेरे हृदय की वितृष्णा स्नेह में नहीं बदल पा रही थी. अश्विनी कई बार समझाते, पर मेरा दिल न पसीजता. बारबार अंजु का जिक्र होता और मैं उसे और तिरस्कृत करती. अब तो मैं ने वहां जाना भी छोड़ दिया था. उड़तीउड़ती खबर सुनती आज अंजु मां की सेवा कर रही थी. अब उस ने घर भली प्रकार संभाल लिया है. कभी उस की बीमारी की खबर भी सुनती, पर एक कान से सुनती दूसरे कान से निकाल भी देती. एक दिन बाबूजी का फोन आया था. घबराहट में पूछ रहे थे, "अश्विनी कहां हैं?"

"वह तो अभी आए नहीं. क्यों क्या बात है? क्या आज आप की बहू फिर बीमार हो गई?"

मेरे स्वर की कड़वाहट छिपी न थी. उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया, फोन का चोगा रख दिया था. तभी अश्विनी का क्रुद्ध स्वर सुनाई पड़ा था, "हद होती है शुष्क व्यवहार की. एक व्यक्ति जीवनमरण के बीच झूल रहा है और तुम्हारे विचार इतने ओछे हैं कि तुम उन का मुख भी नहीं देखना चाहती. मनुष्य को मानवता के प्रति तो प्रतिबद्ध होना ही चाहिए. रीना, कम से कम इनसानियत के नाते ही मां का हाल पूछ लेती."

"क्या हुआ मां को?"

"पिछले कई दिनों से वह डायलिसिस पर हैं. डाक्टर ने गुर्दे का आपरेशन बताया है." वह कपड़े बदल कर कहीं जाने की तैयारी कर रहे थे.

"कहां जा रहे हो?"

"अस्पताल."

"तुम ने मुझे आज तक बताया क्यों नहीं कि मां बीमार हैं?"

"इसलिए क्योंकि तुम्हारे जैसी पाषाण हृदया नारी कभी पसीज नहीं सकती. जीवनमरण के बीच झूलती तुम्हारी मां को गुर्दे की आवश्यकता है? तुम्हारे जैसी मंदबुद्धि स्त्री को इन बातों से क्या सरोकार?"

मैं भी साथ जाने को तैयार हो गई थी. कितना गिरा हुआ महसूस कर रही थी मैं स्वयं को. यदि मां को कुछ हो गया तो? बूढ़ा जर्जर शरीर एक अनजान की सेवा करता रहा, अपनाता रहा, और मैं? उस की कोखजायी उस की अवहेलना ही तो करती रही. आज अपने शरीर का एक अंग दे कर मां की जान बचा लूं तो धन्य समझूं स्वयं को. गाड़ी की गति से तेज मेरे विचारों की गति थी. अस्पताल के बरामदे में भाभी, भैया व बाबूजी बदहवास से खड़े थे. अंजु फूटफूट कर रो रही थी.

"दीदी, मां को बचना ही चाहिए.

समाचारपत्र

किसी भी अखबार का पहला काम है लोगों के भावों को समझ कर प्रकट करना. दूसरा काम है, लोगों में जिन भावनाओं की जरूरत हो, उन्हें जाग्रत करना. तीसरा काम है, लोगों में अगर कोई ऐब हो तो उन्हें किसी भी मुसीबत की परवाह न कर बेधड़क सब के सामने रख देना. — महात्मा गांधी

मेरा परीक्षण करवाइए. मैं गुर्दा दूंगी मां को."

'ढोंगी स्त्री, यह मां की जान बचाएगी? वह सुखी संसार इसी के कारण तो नरक बना था.' डा. से विचारविमर्श करने के बाद मेरा व अंजु का परीक्षण किया गया. हम दोनों ही गुर्दा दे सकते थे, पर अंजु जिद पर अड़ी रही. बोली, "मेरे जीवन का मूल्य ही क्या है? मैं ने इस परिवार को दिया ही क्या है? यदि रीना को कुछ हो गया तो उस की बिटिया को कौन पालेगा?" उस के तर्क के सन्मुख हम चुप हो गए थे. भाभी व मां को आपरेशन थियेटर में ले जाया गया था.

आपरेशन का समय लंबा ही होता जा रहा था. डा. ने बताया कि आपरेशन तो कामयाब हो गया है पर अंजु खतरे से बाहर नहीं है.

हम सब सन्नाटे में आ गए थे. पहली बार मैं ने भाभी के गुणों को जाना था. किस प्रकार उस ने स्वयं को इस परिवार से बांधा, मैं यह सब अब समझ सकी थी. मेरी आंखों से अश्रुओं की अविरल धारा बह रही थी. आज तक अंजु की मौत मांगने वाली रीना उस की दीर्घायु की कामना कर रही थी. डर सा लग रहा था कहीं उस का यह अंतिम पड़ाव न हो. भाभी के साथ भैया व मांबाबूजी का बंधन अटूट है. मेरा मन उस के प्रति सहानुभूति से भर गया था. तभी डाक्टर ने बताया, "अब अंजु खतरे से बाहर है."

भाग कर उस के बिस्तर तक पहुंच गई थी मैं. उस के माथे पर चुंबनों की बौछार लगा दी थी. सभी विस्फारित नेत्रों से मुझे देख रहे थे. शायद विश्वास नहीं कर कर पा रहे थे. पर मेरी आंखों की कोरों से निकले आंसू भाभी के आंसुओं से मिल कर यह दर्शा रहे थे मानो यथार्थ और स्वर्ग का समागम हो. मां का हाथ आशीर्वाद के लिए उठ गया था. इंतजार था कब दोनों स्वास्थ्यलाभ उठा कर अपने घर लौटेंगी.●



पलायन

कहानी • बलराम दत्त शर्मा

कुत्ता जोरजोर से भूंक रहा था. भय और आशंका से कांपती उस की आवाज हरीश के कानों में पड़ी तो वह चौंक पड़ा. अंदर ही अंदर वह एक बार सिहर उठा.

परंतु सिहर कर डरने का तो समय ही नहीं था. वह जानता था कि एक क्षण भी गंवाया तो आशंका साकार रूप ले लेगी. दिमाग पर सिहरन को हावी होने दिया गया तो जीवन के क्षण कम हो जाएंगे. इसलिए उस ने पलक झपकते ही अपनी पत्नी को झंझोड़ा. बड़े लड़के और लड़की को सोते में ही उठा लिया और बाकी सब कुछ छोड़छाड़ कर कमरे में जा घुसा. अंदर से उस ने कुंडी चढ़ा ली. भय पर उस ने काबू पा लिया था और सतर्क हो चुका था.

उस का घर किसी छोटीमोटी गढ़ी जैसा था. ऊंचीऊंची दीवारें, पक्का, मजबूत बाहर का दरवाजा, दरवाजे के सामने बरामदा और बैठक. फिर आंगन था. आंगन में से छत पर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थीं. आंगन के बाद दालान और उस के पीछे फिर मजबूत दरवाजों वाले कमरे.

जब कुत्ते ने उसे किसी खतरे का संकेत देना शुरू किया था तो वह आंगन में सोया हुआ था. फिर संभल कर दालान में चला गया. साथ ही उस ने परिवार को भीतरी कमरे में भेज दिया.

तभी उस की पत्नी ने उसे याद

दिलाया कि छोटा बेटा तो बरामदे में ही सोया रह गया है. बात करतेकरते उस के मुंह से चीख निकलने ही वाली थी कि हरीश ने उस का मुंह दबा दिया और बोला, "जो होगा देखा जाएगा, अब इस तरह से कमजोरी मत दिखाओ."

वह अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि उसे छत पर कुछ लोगों के चलने की आहट सुनाई दी. वह और भी सतर्क हो गया. कुत्ता जो पहले छत पर भूंक रहा था, अब नीचे बरामदे में आ गया था. भूंकने की जगह उस के कंठ से डर के मारे घुटीघुटी सी 'कूंकूं' निकल रही थी.

फिर हरीश को लगा कि कुछ लोग सीढ़ियों से उतर कर दालान के सामने पहुंच गए हैं. वह सतर्क तो था ही और भी चौकन्ना हो गया.

हरीश का मनोबल पूरी तरह लौट चुका था. पहली बार उस ने जवाब दिया, "शिनाख्त करवानी है तो गांव के सरपंच या चौकीदार के पास जाओ. मैं किसी की शिनाख्त नहीं कर सकता."

बाहर खड़े लोगों का स्वर बदला. उन में से एक ने मिन्नत करते हुए कहा, "बाहर आ जाओ. हम सरपंच और चौकीदार के घर भी जा चुके हैं, लेकिन कोई बाहर नहीं आता. देखो, हम ने तुम्हारे पड़ोस से ही लोग पकड़े हैं. ये संदिग्ध आतंकवादी हैं. कभी तुम्हें भी नुकसान पहुंचा सकते हैं. पुलिस की मदद करो ताकि हम इन बुरे लोगों से निबट सकें."

हरीश ने पत्नी को संकेत किया. वह दोनों बच्चों को ले कर पिछली कोठरी में चली गई. फिर वह दरवाजे के पास सरक

आतंकवादियों के हमले ने हरीश को बुरी तरह भयभीत कर दिया. यहां तक कि उस ने अपने भाई सतीश के कहने पर गांव छोड़ने का निर्णय भी ले लिया. परंतु कौन सी भावना ने उसे पलायन करने से रोक लिया?

तभी आगंतुकों में से एक ने दरवाजे पर दस्तक दी. हरीश ने कोई जवाब नहीं दिया. फिर जोर से दस्तक हुई. हरीश फिर भी खामोश रहा. तीसरी बार दस्तक देने वाले ने कर्कश स्वर में कहा, "हम पुलिस वाले हैं, दरवाजा खोलो. हम ने इस महल्ले में कुछ आदमी पकड़े हैं, हमारे साथ चल कर उन की शिनाख्त करो."

उस हालत में भी हरीश के चेहरे पर एक व्यंग्यभरी मुसकराहट बिखर गई. इसी मुसकराहट ने उस का मनोबल भी स्थिर कर दिया. वह खामोश ही रहा.

उन लोगों ने फिर दरवाजा पीटा, "बाहर निकलो, हमारे साथ चलो, हम पुलिस वाले हैं. इस महल्ले में कुछ लोग पकड़े गए हैं, जिन पर हमें आतंकवादी होने का संदेह है. हमारे साथ चल कर उन की शिनाख्त करो."

गया और बोला, "पुलिस का भेस धारण कर लेने से भक्षक रक्षक नहीं बन जाते. तुम क्या हो, यह मैं जान चुका हूं. सचाई तो यह है कि मैं तुम लोगों को पहचान भी चुका हूं."

हरीश की बात समाप्त होते ही आगंतुकों ने गालियां बकनी शुरू कर दीं. एक ने ललकारा, "अगर तुम आधे मिनट के भीतरभीतर बाहर नहीं आए तो हम अपनी कारवाई करने पर मजबूर हो जाएंगे."

अंदर खड़े हरीश ने जोर से ठहाका लगाया. अपने मनोबल की दृढ़ता से उस ने अपनी बेबसी को ठहाके में बदल कर आगंतुकों को यह समझा दिया था कि जितना लाचार वह है, उतने ही लाचार वे भी हैं. वह उन के डर से चूहे की तरह दुबक कर बैठ तो गया है, परंतु जिस मजबूत किले में उस ने अपनेआप को सुरक्षित कर लिया



है, उसे भेद पाना आगंतुकों के बस की बात नहीं है.

ठहाके का स्वर आगंतुकों के कानों में पड़ा तो वह जलभुन गए. उन्होंने हरीश को और जोरजोर से गालियां देनी शुरू कर दीं. बाहर की दीवार पर सीमेंट की जाली वाला एक रोशनदान था. उन में से एक उसी की सीध में खड़ा हो गया. दूसरा पलक झपकते ही उस की पीठ पर सवार हो गया. जाली में से उस ने अपनी ए.के. 47 सीधी की और गोलियों की बौछार शुरू कर दी.

हरीश ने जैसे पहले ही इस की कल्पना कर ली थी. परिवार के अन्य सदस्य पिछली कोठरी में पहले ही जा चुके थे. ए.के. 47 के निशाने की सीध से बचता हुआ वह भी उसी कोठरी में पहुंच गया और फिर उस ने दरवाजा बंद कर लिया. बाहर गोलियों की बौछार चलती रही.

बरामदे में खड़ा कुत्ता अभी भी कूंकूं कर रहा था. आगंतुकों के छत पर खड़े एक साथी ने उस को लक्ष्य कर के गोली चलाई. गोली बरामदे में पड़ी चारपाई में लगी. चारपाई टूट गई. कुत्ता उस पर गिर गया. पास में खड़ी गाय हिली और चारपाई के ऊपर आ खड़ी हुई.

"आप क्या समझते हैं, हरीश इस गांव में अकेला है, यह तो हमारे गांव की समस्या है. फिर हरीश को यहां से कैसे जाने दें?" नत्था सिंह पुलिस अधीक्षक और सतीश के सामने बोला. ▲

हरीश अब अंदर मौन खड़ा था. पत्नी और बच्चों को उस ने किसी तरह की बात करने या चीखनेचिल्लाने से मना कर दिया था. बाहर रह गए बच्चे के बारे में चिंतित पत्नी से उस ने कहा, "अब चुप रह कर जो हो रहा है, उसे देखते रहने के सिवा और कोई चारा नहीं है."

आगंतुक दो घंटे तक रुकरुक कर रोशनदान से गोलियां बरसाते रहे. रात के 3 बज चुके थे. एकाएक गोलियां चलनी बंद हो गईं. हरीश और उस के परिवार के लोगों ने सुना, बाहर खड़े लोग बातें कर रहे थे, "अब निकल चलो. यह जो अंदर खामोशी धारण किए बैठा है, अपने को लैस कर चुका है. लगता है इस के पास भी हथियार हैं. यह हमारी गोलियां खत्म होने की इंतजार में है. जैसे ही यह देखेगा कि जरा दिन चढ़ने वाला है और हम कमजोर पड़ने लगे हैं, यह अंदर से हमला कर के हमें

भून डालेगा. चलो, अब भाग चलो."

अंदर बैठे हरीश और उस के परिवार के लोगों ने जाते कदमों की आहट सुनी. थोड़ी देर में लगा कि सब सीढ़ियों पर से चढ़ते हुए छत पर चले गए हैं. उस के बाद छत से कुछ लोगों के कूदने का स्वर भी उन्हें सुनाई दिया.

हरीश की पत्नी उठ कर खड़ी हो गई और बोली, "अब तो वे गए, मैं अपने बेटे को..."

हरीश ने पत्नी के मुंह पर हाथ रख दिया और फुसफुसाया, "पागल मत बनो. यह उन की चाल है. सभी नहीं गए होंगे. अभी कुछ आंगन में और कुछ छत पर होंगे. यह सारी नाटकबाजी हमें भ्रम में डालने के लिए की गई है."

पत्नी खामोश हो गई. परंतु हरीश को लगा कि वह अपनी बात ठीक से समझा नहीं सका. इसलिए फिर बोला, "देखो, जब ये सभी लोग चले जाएंगे तो अपना कुत्ता सही ढंग से भूंक कर सूचना दे देगा."

पत्नी ने आशंका व्यक्त की, "अगर उन्होंने कुत्ते को मार डाला होगा तो...?"

हरीश ने समझाया, "तो हमें दिन चढ़ने तक इंतजार करना होगा. जब तक सूरज की किरणें हमारी इस कोठरी को छू नहीं जातीं और जब तक हम पड़ोसियों को आपस में बातें करते नहीं सुन लेते, हम इस कमरे से बाहर नहीं जा सकते."

पत्नी चुप हो गई, परंतु कुछ ही देर में उसे इस बात का प्रमाण मिल गया कि उस का पति जो कुछ कह रहा था, वह ठीक ही था. बाहर खड़े एक व्यक्ति ने दूसरे से कहा, "चल, अब राइफल हटा ले. साढ़े 4 बज गए हैं. निकल चलें... नहीं तो लोग जाग जाएंगे."

दो आदमी तेजी से सीढ़ियां चढ़ते हुए छत पर गए और फिर अंदर छिपे पतिपत्नी ने चार व्यक्तियों के कूदने का स्वर सुना.

हरीश फिर भी बाहर नहीं निकला. लगभग डेढ़ घंटे तक उसी हालत में रहने के बाद उन्हें बाहर का उजाला दिखाई देने लगा. महल्ले के कुछ व्यक्तियों को उन्होंने यह कहते भी सुना कि आज दिन चढ़े तक भी हरीश बाहर क्यों नहीं निकला?

उस ने धीरे से कमरे का दरवाजा खोला. फिर बाहर के बड़े कमरे में आया. वह ठगा सा रह गया. गोलियों के इतने निशान थे कि वह कल्पना भी नहीं कर सकता था. खूंटी पर टंगा उस का कोट भी बुरी तरह से छलनी हो गया था.

उस ने स्टूल खिसका कर दरवाजे के पास किया. उस पर चढ़ कर उस ने उसी रोशनदान में से बाहर झांका. मैदान साफ था. नीचे उतर कर उस ने दरवाजा खोला. उस के पीछे पत्नी थी. आंगन में कारतूसों के खोल पड़े थे.

वह सामने चारपाई के पास पहुंचा, जहां अब भी कुत्ता खामोश पड़ा था और गाय चारपाई के ऊपर खड़ी जुगाली कर रही थी. उसी चारपाई पर वह अपना छोटा बेटा छोड़ गया था. उस ने आगे बढ़ कर कुत्ते के सिर पर हाथ फेरा.

कुत्ते ने अचानक आंखें खोलीं. हरीश को गौर से देखा. फिर उस से किसी बच्चे की तरह लिपट गया. गाय एक तरफ हट गई. हरीश ने कपड़ा सरकाया. नीचे लेटा उस का बेटा मुसकरा रहा था. वह बोला, "बापू, कुत्ते और गाय ने बचा लिया. गोली लगते ही चारपाई टूट कर गिर गई थी. मैं तभी से चुपचाप पड़ा हुआ हूं. मैं ने सब कुछ अपनी आंखों से देखा है. कुत्ते और गाय ने आज मेरी जान बचा ली है."

हरीश ने बाहर का दरवाजा खोला. आतेजाते लोगों को घटना का पता लगा. गांव के एकमात्र फोन से थाने में सूचना दी गई.

दो घंटे में गांव में पुलिस पहुंच गई थी. कारतूस के खोल सिर्फ हरीश के घर पर ही नहीं मिले थे, गांव में एक धर्मस्थान के पास भी पाए गए थे. रास्ते में कुछ जीवित कारतूस भी मिले थे. पुलिस ने चारों तरफ बेतार से संदेश भेजे, परंतु सब बेकार था

क्योंकि जाने वाले तो कभी का इलाका पार कर गए थे.

हरीश के साथ जो घटना घटी थी, वह इस सिलसिले की दूसरी कड़ी थी. चार साल पहले भी उस पर हमले की कोशिश की गई थी. लोगों के साथ बातचीत करतेकरते पुलिस अधीक्षक की मौजूदगी में ही हरीश उस चार साल पुरानी घटना को याद कर के खो सा गया.

वह एक शाम की बात थी. पास के गांव में वह अपनी दुकान बंद कर के गांव लौटने वाला था कि उस के एक मित्र ने उसे सूचना दी, "गांव के बाहर पेड़ों के झुरमुट में चार लोग बैठे शराब पी रहे हैं. मैं ने उन्हें बातें करते खुद सुना है. तुम आज उधर से हो कर निकले नहीं कि उन्होंने तुम पर हमला किया नहीं. जान बचानी है तो किसी तरह से गांव से ही भाग जाओ."

हरीश तमाम रास्तों और खेतों के चप्पेचप्पे से वाकिफ था. उस ने अपने मित्र को साथ लिया. लहलहाते खेतों में से होता हुआ वह उस झुरमुट के पिछवाड़े जा पहुंचा. उस के मित्र की सूचना सही थी. इस से पहले कि वह लौटता, उस ने उन में से एक को कहते सुना, "आराम से पियो यारो, अभी तो उस के लौटने में एक घंटा बाकी है."

हरीश तत्काल मित्र के साथ उसी मार्ग से लौट आया, जिस से वह गया था. फिर दुकान को उस ने खुला छोड़ दिया और मित्र को कहा, "जाते समय दुकान बंद कर के चाबी मेरे गांव मेरे घर देते जाना."

पिछवाड़े से निकल कर वह खेतों में से होता हुआ पास के गांव जा पहुंचा. वहां से उस ने एक अन्य मित्र को शहर छोड़ आने के लिए कहा. दोनों स्कूटर पर चल कर 20 मिनट में पुलिस अधीक्षक के पास पहुंच गए थे.

सूचना मिलते ही कारवाई हुई. सुरक्षा बलों ने चारों हमलावरों को पेड़ों के झुरमुट में ही शराब पीतेपीते दबोच लिया. उन के कब्जे से पिस्तौल और कुछ हथगोले भी बरामद कर लिए गए. पुलिस के कहने से हरीश भूमिगत हो गया था.

तब छः मास तक उसे अज्ञातवास में ही रहना पड़ा था.

लेकिन यह स्थिति तो उस से भी विषम थी. पुलिस अधिकारी भी हैरान, परेशान थे. इसी बीच हरीश का बड़ा भाई सतीश वहां पहुंच गया.

सारी घटना की जानकारी मिलने के बाद उस ने कहा, "चलो, सामान बांधो और मेरे साथ चलो. यहां क्या रखा है, मैं हरियाणा में तुम्हारे रहने और काम करने का प्रबंध किए देता हूं."

पुलिस अधीक्षक खामोश था. शायद वह भी यही चाहता था. फिर भी उस ने कहा, "आप लोग चाहें तो मैं सुरक्षाकर्मी बैठा देता हूं."

सतीश ने कहा, "उस से क्या होगा. कौन परवाह करता है आप के सुरक्षाकर्मियों की. यहां से चले जाना ही श्रेयस्कर है. जान है तो जहान है."

फिर उस ने हरीश से कहा, "तुम सामान बांधो, मैं ट्रक की व्यवस्था करवाता हूं."



इंतजार

मुद्दतों से जाने क्यूं
मुझ को रहा इक इंतजार,
झुकीझुकी ये पलकें
हो गईं तुझ पर निसार.

—फारूक आफरीदी

तभी वहां उपस्थित हरीश का बूढ़ा पड़ोसी नत्था सिंह बोल पड़ा, "ठहरिए, पहले मेरी बात सुनिए."

वह पुलिस अधीक्षक और सतीश दोनों के सामने आ कर खड़ा हो गया. फिर बोला, "आप क्या समझते हैं कि हरीश इस गांव में अकेला है. दरअसल बात यह है कि हमलावरों के पास हथियार होते हैं और हम होते हैं निहत्थे. एस.पी. साहब, यह समस्या सिर्फ किसी हरीश की नहीं है... किसी अकेले नत्था सिंह की भी नहीं है, यह तो हमारे सारे गांव की समस्या है. सदियों से चल रहे हमारे रिश्तों में कभी दरार नहीं आई. फिर आज हम हरीश को यहां से कैसे जाने दें?

"हरीश, पलायन तो तुम कर ही चुके हो, मगर इस गांव से नहीं... वास्तव में तो तुम्हारा पलायन भय की भावना से हो चुका है. अब तुम यहां रह कर गांव की सुरक्षा समिति के मुखिया बनोगे. हथियार सरकार देगी. क्यों एस.पी. साहब?"

अधीक्षक ने देखा, गांव के बहुत से नौजवान दृढ़ निश्चय के साथ नत्था सिंह के पीछे खड़े हैं. हरीश ने मुड़ कर देखा, उस का भाई वहां से लौटने के लिए चुपचाप कार की ओर बढ़ रहा है. ●

यह भी खूब रही

हमारे एक मित्र की यह आदत थी कि जब भी उस की पत्नी मायके जाती और वह अकेला रहता तो बाहर जाते समय घर की चाबी पड़ोसिन को दे जाता.

एक बार उसे दूसरे शहर में दौरे पर जाना था. आदत के अनुसार उस ने चाबी पड़ोसिन को दे दी लेकिन स्टेशन पहुंचने पर मालूम हुआ कि गाड़ी चली गई है. निराश हो कर वह घर लौट आया. घर पहुंचते ही देखा उस का घर खुला हुआ था और पड़ोसिन वीडियो पर फिल्म देख रही थी. वह वीडियो देखने में इतनी मग्न थी कि उसे मित्र के लौट आने का जरा भी आभास नहीं हुआ. फिल्म समाप्त हो जाने पर मित्र ने कहा, "कहिए बहनजी, यह फिल्म आप को कैसी लगी?" —दीपककुमार जैन

*

हमारे मामाजी बहुत भुलक्कड़ हैं. एक बार दुकान पर जाते समय वह अपने 2 वर्षीय बेटे को भी साथ ले गए. शाम को उन्हें अकेले वापस आया देख कर सब ने बच्चे के बारे में पूछा. मामाजी को याद ही नहीं आया कि बेटे को कहां छोड़ आए.

लगभग 2 घंटे बाद एक व्यक्ति ने आ कर बताया, "आप की दुकान से किसी बच्चे के रोने की आवाज आ रही है."

मामाजी सरपट दुकान की ओर दौड़ पड़े. दरअसल दुकान बंद करते समय वह बेटे को वहीं सोता छोड़ आए थे.

—शिखा तेवतिया

एक बार मेरी मां ने घर पर चाकलेट बनाया. सभी लोग खाना खाने के बाद बड़े चाव से चाकलेट खा रहे थे. तभी पिताजी ने शिकायत की, "चाकलेट में डाले हुए बादाम बहुत सख्त हैं."

मां ने चाकलेट में बादाम डाले ही नहीं थे, इसलिए बोलीं, "जरा देखूं तो कहां हैं बादाम?" हाथ में पिताजी का दांत देख कर मां की हालत देखने लायक थी.

—निरंजनकुमार 'वर्णवाल'

*

मेरे भाई साहब की नईनई शादी हुई थी. उन की ससुराल से बड़े नरमनरम बिस्तर तथा रजाई आए थे. उन पर सोने की लालसा से मैं एक दिन दोपहर में उन के बिस्तर पर रजाई ओढ़ कर सो गया. कुछ देर बाद भाई साहब बाहर से आए और मुझे भाभी समझ कर मुझ से लिपट गए. अचानक हुए हमले से नींद की झोंक में मैं जोर से चिल्लाया. घर के सारे लोग जमा हो गए. माजरा समझ में आने पर भैयाभाभी की शक्ल देखने लायक थी. —पंकज कोठारी

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

मौसम की कशिश

एक बंधन में तुझे
बांध देना चाहता हूं,
आस में बैठे इक मन को
कुछ तनख्वाह देना चाहता हूं.

कांटों को निर्मूल कर
राह देना चाहता हूं,
समाज की नंगी तलवार को
म्यान देना चाहता हूं.

मौसम की कशिश को
कोशिश में बदलना चाहता हूं,
हर तरफ से सिमट कर
तेरे पास भटकना चाहता हूं.

दूरी कब तक बनी रहेगी
अलगाव हटाना चाहता हूं,
बहुत सह चुके इस उम्र में
निश्चित पड़ाव देना चाहता हूं.

— डा. अखिलेश्वर तिवारी

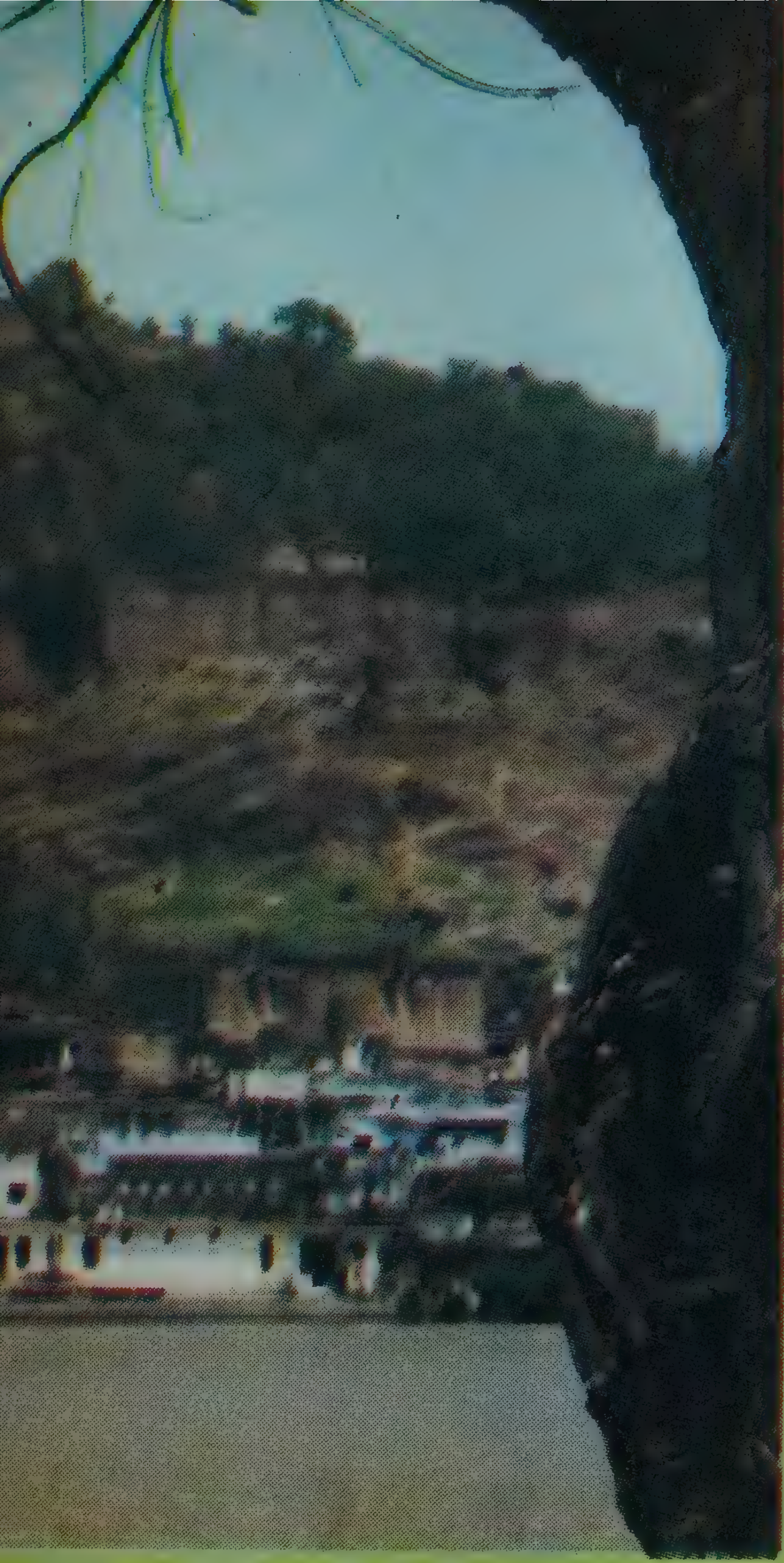




बूंदी: राजस्थान का एक

लेख • प्रभातकुमार सिंघल

बहुरंगे राजस्थान में सैरसपाटे के लिए आकर्षण ही आकर्षण हैं. एक छोर पर झीलों की नगरी उदयपुर 'राजस्थान के कश्मीर' की संज्ञा से विभूषित है तो दूसरे छोर पर साइबेरिया से लंबी उड़ान भर कर आने वाले अतिथि पक्षियों की क्रीडास्थली विश्वविख्यात घाना अभयारण्य है. इधर वैदिक कालीन पुष्कर तीर्थ है, उधर रेतीले टीलों का सम्मोहन समेटे कलात्मक हवेलियों का नगर जैसलमेर है. खुशबू एवं कलात्मकता से भरी इमारतों का गुलाबी शहर जयपुर है तो छोटी काशी के रूप में विख्यात बूंदी का मनोरम नगर अपनी चित्रकला के लिए





मनोरम नगर

अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाता है.

दक्षिणीपूर्वी राजस्थान में चंबल नदी के किनारे स्थित औद्योगिक नगर कोटा से

बूंदी का ऐतिहासिक दस्तावेज नवल सागर व तारागढ़ दुर्ग (ऊपर) बूंदी के चित्रों में रंगों का संतुलन व भावों की अभिव्यक्ति दर्शकों को अभिभूत कर देती है (बाएं).

कला और सौंदर्य का मौन साक्षी बूंदी पर्यटकों के लिए अनेक मनोरम आकर्षण समेटे हुए है. अरावली पर्वतमाला का प्राकृतिक सौंदर्य व उस की गोद में स्थित जलाशय तथा महल और दुर्ग बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं. भला इस अविस्मरणीय सौंदर्य को कौन न देखना चाहेगा?





35 किलोमीटर दूर जयपुर जबलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर बसा है बूंदी नगर. अरावली पर्वतमाला की सुरम्य प्राकृतिक छटा से आच्छादित, जलाशयों से सुशोभित, स्थापत्य कला में बेजोड़ राजप्रासाद, सार बाग की छतरियों और बावड़ियों का नगर बूंदी पर्यटकों के लिए अनेक मनोरम आकर्षण समेटे हुए है.

कैसे जाएं ?

रेल मार्ग : निकटतम रेलवे स्टेशन कोटा में स्थित है. यह बूंदी से 37 कि.मी. की दूरी पर है. देश के मुख्य नगरों से यहां नियमित रूप से रेलगाड़ियां आती हैं. कोटा से बूंदी तक की दूरी टैक्सी या बस द्वारा तय की जा सकती है.

सड़क मार्ग : राज्य के लगभग सब जिलों से बूंदी के लिए समुचित बस

शिकार बुर्ज : बूंदी का प्राकृतिक दर्शनीय स्थल.



मरुधर, पमन, नवरंग, पायल आदि कई अच्छे होटल हैं.

क्या देखें?

राजप्रासाद : बूंदी का भव्य राजप्रासाद नवल सागर की ओर से अत्यंत मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है. राजप्रासाद को बूंदी का गढ़ कहा जाता है. गढ़ के कंगूरों पर शौर्य थिरकता सा लगता है. खिड़कियों और झरोखों की कारीगरी अनुपम है. महल तक पहुंचने के लिए करीब 1 किलोमीटर का चढ़ाई वाला मार्ग तय करना होता है.

महल का प्रमुख प्रवेशद्वार हाथी पोल है. दुर्ग की रक्षा करने वाली सुदृढ़ प्राचीर पर नजरें ठहर जाती हैं. सुरक्षा व्यवस्था की दृष्टि से दुर्ग का विशेष महत्त्व है. हाथी पोल पर दो हाथी (मूर्तियां) दरवाजे के शीर्ष पर सूंड मिला कर तोरणद्वार बनाते हैं. राव रतन सिह द्वारा निर्मित इस दरवाजे में सुरक्षा प्रहरियों के लिए स्थान बनाया हुआ है.



शौर्य का प्रतीक बूंदी का राजप्रासाद (ऊपर) तथा अपनी छतरियों व बावड़ियों के लिए प्रसिद्ध सार बाग (दाएं).

व्यवस्था है. जयपुर, अजमेर, कोटा, जोधपुर व उदयपुर से राजस्थान सड़क परिवहन निगम की बसें बूंदी के लिए उपलब्ध हैं.

कहां ठहरें ?

ठहरने के लिए सुख महल विश्रामगृह व डाक बंगला उपयुक्त स्थान हैं. सुख महल के आरक्षण के लिए अधिशासी अभियंता, सिंचाई विभाग, बूंदी व डाक बंगले के आरक्षण के लिए व्यवस्थापक, डाक बंगला से संपर्क करें. इन के अतिरिक्त सर्किट हाउस, जैन लाज व धानमंडी धर्मशाला में भी ठहरा जा सकता है. यदि बूंदी में ठहरने के लिए स्थान सुलभ न हो सके तो कोटा में ही ठहर कर बूंदी की सैर कीजिए. कोटा में

अंदर खुला आंगन है. सामने नजरें दीवाने आम पर ठहर जाती हैं. बाईं ओर छोटा मंदिर है. मंदिर के नीचे सरस्वती भंडार और छोटा महल है. चौक की दाईं तरफ सीढ़ियां दीवाने आम तक ले जाती हैं. सीढ़ियों का यह क्रम आगे बढ़ कर छत्र महल एवं चित्रशाला तक ले जाता है. दीवाने आम का निर्माण राव रतन सिंह के समय हुआ था.



चित्रशाला : चित्रशाला मानो राजमहलों की जान है. यहां बने चित्र विश्व में अपनी पहचान रखते हैं. वर्गाकार चित्रशाला के मध्य कभी फव्वारे चलते थे. यहां बना बीच का कमरा शीश महल कहलाता है. जीवंत नरनारी, प्राकृतिक सौंदर्य, पर्वउत्सव के समन्वित भावों की सजीव अभिव्यक्ति वाले चित्र अनूठे हैं तथा स्वर्ण रंगों में बने होने से सोने के चित्र होने का भ्रम उत्पन्न करते हैं.

नायिका प्रधान चित्रों में कोमलता और सुंदरता का अनोखा संगम है. प्रायः लंबी आकृतियां, कमनीय काया, भावपूर्ण नयन, अधरों पर मुसकराहट, छोटी नासिका, गोल मुख, झीने पारदर्शी वस्त्र, काले लहंगे पर लाल रंग की चुनरी तथा पीछे की ओर झूलती वेणी महिला चित्रों की शोभा हैं.

नारी चित्रांकन में जहां कमनीयता और लावण्य है वहीं पुरुषों की छवि ओजपूर्ण है.

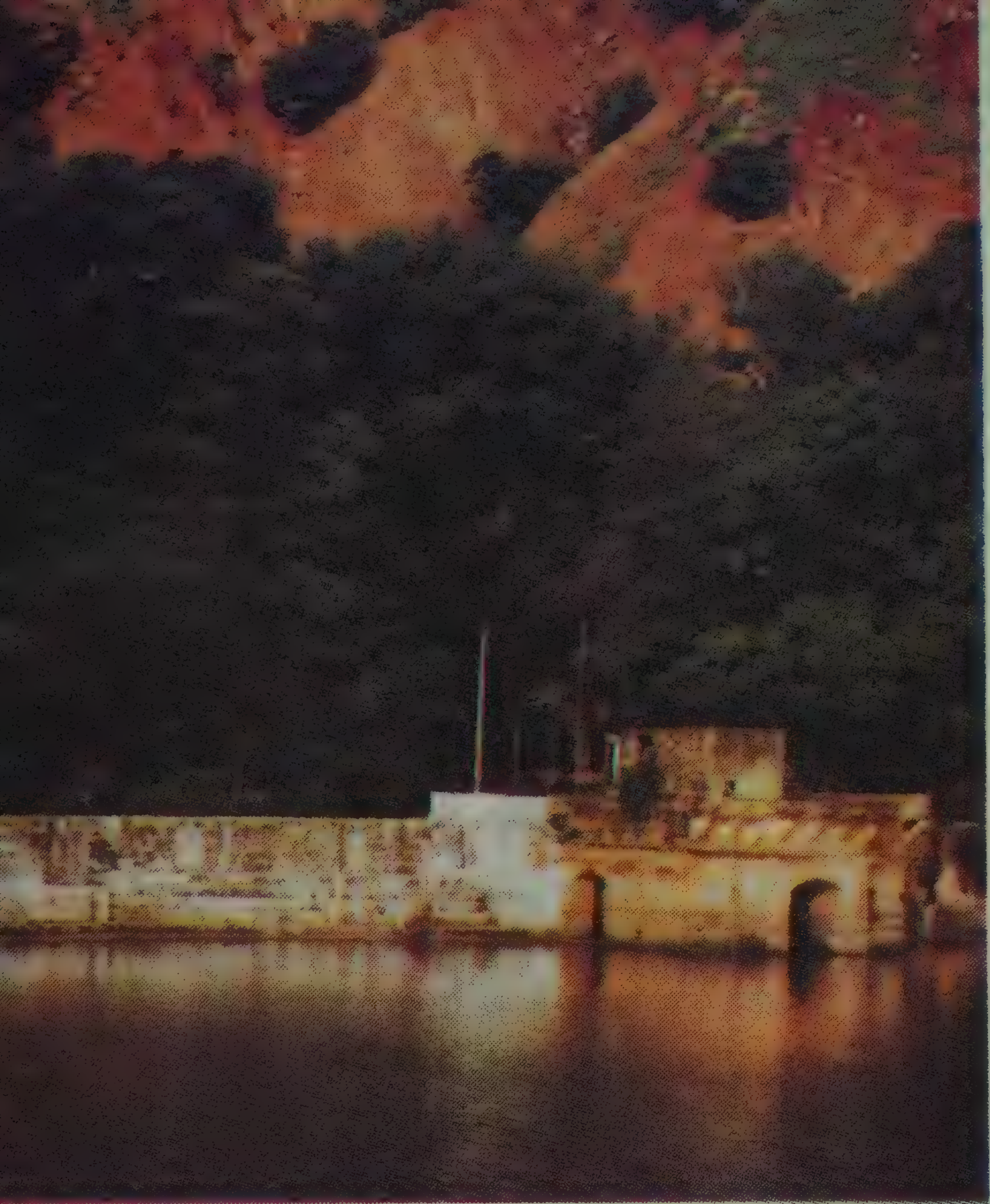
नीचे की ओर झुकी पगड़ी घुटने तक लंबे जामे, कमर में दुपट्टा, चूड़ीदार पाजामा, बड़ी मूंछें, राजसी आनबान, चमकता चेहरा पुरुष चित्रों की विशेषताएं हैं.

पिछवाई शैली में रंगनाथजी, रास-लीला, गोपियों से छेड़छाड़, गोवर्धन प्रसंग, हाथियों का दंगल, सोमरस पान करती रानियां, मद में चूर रानियों को दासियों द्वारा संभाला जाना, गणगौर की सवारी, तीज के झूले, होली के दृश्य, चौपड़ खेलती रानियां, शिकार दृश्य, घोड़ों पर पोलो का खेल जैसे अनेक धार्मिक एवं सामाजिक विषयों पर विविधतापूर्ण एवं मनमोहक चित्रांकन किया गया है. रंगों का संतुलित संयोजन एवं चित्रों की शानदार बनावट दर्शक को मंत्रमुग्ध करती है.

चिंता की बात यह है कि विश्व के कोनेकोने से इन्हें देखने सैलानी आते हैं, परंतु ये चित्र दिन पर दिन अपनी आभा खोते जा रहे हैं. कला वैभव की इस ऐतिहासिक विरासत को जिम्मेदारी से संभालने की जरूरत है. उल्लेखनीय है कि यह चित्रशाला पुरातत्त्व विभाग के संरक्षण में है.

चित्रशाला से नजर आता है हाथी पोल के भीतर का शिल्प सौंदर्य. यहां कभी शहनाई के स्वर गूंजते थे. महल का एक भाग 'अनिरुद्ध महल' एवं दूसरा भाग 'बादल महल' कहलाता है.

तारागढ़ दुर्ग : राजमहलों पर नजरें



जैत सागर के किनारे स्थित पर्वतमाला से घिरा सुख महल रमणीक दृश्य उपस्थित करता है.

गड़ाए है तारागढ़ दुर्ग. यह दुर्ग हाड़ा शासकों के उत्थान, पतन और शौर्य का मूक साक्षी रहा है. यह ऐतिहासिक दस्तावेज अपनी विलक्षण संरचना एवं सुंदरता से आज भी दर्शकों को लुभाता है. इस दुर्ग का निर्माण सन 1352 ईसवी में राव बरासिंह ने करवाया था. 3 तरफ परकोटे से घिरा दुर्ग 5 किलोमीटर के क्षेत्र में बना है. ऊपरी भाग तारागढ़, बीच का महल तथा नीचे नवल सागर का दृश्य अत्यंत मनोरम है.

कला और शौर्य के मौन साक्षी दुर्ग और महलों के साथसाथ बूंदी में प्रकृति ने अपनी सुंदरता दिल खोल कर लुटाई है. जैत सागर और उस के किनारे बना सुख महल चारों तरफ पर्वतमाला और खजूर के वृक्ष नैनीताल और माउंट आबू के समान रमणीक प्राकृतिक दृश्य उपस्थित करते हैं. सुख महल को विश्रामगृह का रूप दे दिया गया है.

यहां सभागार में चित्रकला के नायाब नमूने दर्शनीय हैं. सुख महल का स्थापत्य अत्यंत दर्शनीय है.

जैत सागर का निर्माण जैता मीणा ने कराया था. राजा विष्णु ने सुख महल बनवाया था. जैत सागर के किनारे पहाड़ी पर नगरपालिका ने टैरेस गार्डन बना कर सागर में नौकाविहार की सुविधा का विकास किया है.

रानीजी की बावड़ी : शहर के मध्य रानीजी की बावड़ी का स्थापत्य शिल्प अनूठा है. चौरासी खंभों की छतरी एवं सार बाग की छतरियों में बूंदी शिल्पकला के दर्शन होते हैं. रानीजी की बावड़ी का निर्माण राव अनिरुद्ध सिंह की रानी नाथावती ने एवं चौरासी खंभों की छतरी का निर्माण भाई देवा ने कराया था. शिकार बुर्ज एवं बाणगंगा बूंदी के प्राकृतिक दर्शनीय स्थल हैं.

आसपास के दर्शनीय स्थल

आसपास के दर्शनीय स्थलों में दुगारी के महल, केशवराय पाटन का मंदिर एवं इंदरगढ़ की माताजी का मंदिर दर्शनीय स्थान है.

इस कला नगरी को स्थानीय लोग बूंदू का नाला भी कहते थे. बूंदा मीणा जाति के सरदार जैता का दादा था. इस सुरम्य घाटी का नाम इसी बूंदा के नाम पर बूंदी पड़ गया. राज्य के रूप में बूंदी की स्थापना संवत 1398 में हुई.

तारागढ़ एवं महलों पर जाने से पूर्व नाश्ता कर लेना चाहिए. अच्छा हो फल व हलका भोजन साथ ले जाएं. पानी अवश्य साथ ले जाएं क्योंकि इन स्थानों पर पीने के पानी की व्यवस्था नहीं है.

यातायात के लिए बूंदी में तांगे एवं आटोरिकशा उपलब्ध हैं. बस स्टैंड के बाहर जीप, टैक्सियां भी मिल जाती हैं. •

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ परंपरा

निर्माता : **फिरोज ए. नाडियाडवाला**
निर्देशक : **यश चोपड़ा**
संगीत : **शिव हरि**
मुख्य कलाकार : **सुनील दत्त, विनोद खन्ना, रमैया, आमिर खान, सैफ खान, रवीना टंडन, नीलम, अश्विनी भावे, अनुपम खेर आदि.**

यश चोपड़ा की यह खूबी है कि वह अपनी फिल्मों में तकनीकी दृष्टि से कोई कमी नहीं आने देते. 'चांदनी' और 'लमहे' इस बात की गवाह हैं. हालांकि 'लमहे' फ्लाप हो गई लेकिन तकनीकी दृष्टि से उस में कोई कमी नहीं थी. उसी परंपरा को कायम रखते हुए उन्होंने 'परंपरा' में भी अपने तकनीकी कौशल का प्रभाव दिखाया है. स्टुडियो से बाहर फिल्माए गए कई दृश्य बेहद खूबसूरत बन पड़े हैं. इस के अलावा चुस्त पटकथा, प्यारभरे गीत, अच्छी धुनें फिल्म को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई हैं. प्रेम दृश्यों को फिलमाने में तो वह माहिर हैं ही, इसी लिए 'परंपरा' में भी उन्होंने इस परंपरा को टूटने नहीं दिया है.

वैसे बनजारों और राजाओं के टकराव की कहानी कोई नई नहीं है. 'धर्मवीर' में भी यही कहानी थी. इस प्रकार की कहानी में खूनखराबे की गुंजाइश काफी होती है. हालांकि यश चोपड़ा खूनखराबे वाली फिल्मों से दूर ही रहते हैं, लेकिन 'परंपरा' में उन्होंने इस फार्मूले का दामन थाम लिया है. बहुत खूनखराबा है, मारामारी है. यानी कि कहानी तो है जीरो मगर अच्छे निर्देशन की वजह से फिल्म भारी नहीं लगती.

पढ़ेलिखे, समझदार निर्देशक की यही पहचान होती है कि वह अपनी फिल्म में अच्छी भाषा का प्रयोग करता है. यश चोपड़ा ने शुरू की आधी फिल्म में अच्छे व सभ्य संवादों का सहारा लिया है. वरना बंबइया निर्देशक तो 'अबेतबे' की भाषा ही जानते हैं.

'परंपरा' देख कर कहीं नहीं लगता कि यह आज की कहानी है. ठाकुर भवानी सिंह (सुनील दत्त) पुश्तैनी रिवाजों में जकड़ा हुआ है. जमीनजायदाद के झगड़े में वह कबीले के सरदार राजा बहादुर (अनुपम खेर) को मौत के घाट उतार देता है. पृथ्वी सिंह (विनोद खन्ना) भवानी सिंह का बेटा है. वह विदेश से पढ़ कर लौटता है तो उस की दोस्ती कबीले के सरदार राजा बहादुर के बेटे गोरा शंकर (अनुपम खेर की दूसरी भूमिका) से होती है. वह गोरा शंकर की बहन तारा (रमैया) से प्रेम करने लगता है. भवानी सिंह अपने बेटे की शादी राजेश्वरी (अश्विनी भावे) से करा देता है. उधर तारा भी उस के बच्चे की मां बनने वाली होती है. भवानी सिंह तारा को मरवा डालता है. उस

के बच्चे को राजेश्वरी बचा लेती है. राजेश्वरी को भी एक बेटा पैदा होता है. दोनों बच्चे बड़े होते हैं. तारा का बेटा रणवीर (आमिर खान) और राजेश्वरी का बेटा प्रताप (सैफ खान) है. एक मोड़ पर आ कर दोनों टकराते हैं परंतु अचानक भवानी सिंह का हृदय परिवर्तन हो जाता है और वह अपनी जान दे कर इस खानदानी दुश्मनी को समाप्त कर देता है.

फिल्म की इस कहानी में घटनाएं बड़ी तेजी से घटती हैं. निर्देशक ने रोचकता बनाए रखने के लिए पहले आधे भाग में रमैया के जिस्म की गरमी से दर्शकों को काफी हद तक गरम किए रखा है. मध्यांतर के बाद दो युवा जोड़ियों का नाचनामटकना ही है.

फिल्म में भवानी सिंह खून करता है परंतु पुलिस उस पर कोई कारवाई करती नजर नहीं आती. लगता है निर्देशक का कहना यही है कि राजेरजवाड़ों में पुलिस होती ही नहीं.

'परंपरा' को हम 'मल्टीस्टार' फिल्म कह सकते हैं. कलाकारों की भीड़ है इस में. इसी लिए कोई भी कलाकार खुल कर सामने नहीं आ पाया है. सुनील दत्त का अभिनय अच्छा है. उस की आंखों में आज भी वही गुस्सा नजर आता है जो उस की शुरू की फिल्मों में हुआ करता था. विनोद खन्ना ने भी काफी मेहनत की है. रमैया थोड़ी प्रौढ़ लगती है. वरना उस ने जिस तरह गरम दृश्य दिए हैं उस से लगता है वह सस्ती फिल्मों के लिए ही सीमित हो जाएगी. आमिर खान के अभिनय में भी निखार है परंतु सैफ अली खान ने निराश ही किया है. दोनों नायिकाएं चुलबुली बनी रहीं. उन के लायक फिल्म में कुछ था ही नहीं. अनुपम खेर भी अपनी जगह ठीक है. अन्य कलाकार साधारण हैं.

यश चोपड़ा अपनी फिल्मों का गीतसंगीत काफी अच्छा देते हैं. इस फिल्म का गीतसंगीत पक्ष अच्छा है. दोतीन गीत लंबे जरूर हैं, परंतु सुनने में अच्छे लगते हैं.



फिल्म 'परंपरा' के एक दृश्य में रवीना टंडन और सैफ खान : प्रभावहीन जोड़ी.

O मुकाबला

निर्माता : ए.वी. सुब्बाराव
निर्देशक : टी. रामाराव
संगीत : दिलीप सेन समीर सेन
मुख्य कलाकार : गोविंदा, आदित्य पंचोली, करिश्मा कपूर, फरहा, अरुण गोविल, परेश रावल, शक्ति कपूर, असरानी और अरुणा ईरानी.

जिस फिल्म का आधार ही मारधाड़ हो उस में अभिनय की गुंजाइश कहां बचती है. 'मुकाबला' के दो नायक हैं– गोविंदा और आदित्य पंचोली. दोनों ने ही खूब लातघूंसे चलाए हैं. इसी लिए फिल्म में शोर भी ज्यादा है. वैसे गोविंदा आजकल अपनी छवि बदलने की कोशिश कर रहा है. वह नाचगानों के बजाय एक्शन पर ज्यादा ध्यान दे रहा है. 'मुकाबला' में उस ने एकाध नाच तो दिखाया है परंतु मारधाड़ उस से कहीं ज्यादा दिखाई है.

अब तक हिंदी फिल्मों में भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था को तो दिखाया जाता था परंतु उस व्यवस्था से अकेले लड़ने वाला कोई ईमानदार इंस्पेक्टर दिखाया जाता था. लेकिन 'मुकाबला' में एक हवलदार दिखाया गया है, जो भ्रष्ट पुलिस वालों के खिलाफ अपनी मुहिम तो छेड़ता ही है, दुश्मनों के दांत भी खट्टे करता है.

सूरज (गोविंदा) और दीपक (आदित्य पंचोली) दोनों सौतेले भाई हैं. दोनों ही ईमानदार हैं. दोनों गांव से पुलिस की नौकरी करने शहर आते हैं. सूरज थाने में हवलदार भरती होता है तो दीपक ट्रैफिक हवलदार. शहर में खन्ना साहब (शक्ति कपूर) का आतंक है. भ्रष्ट पुलिस अफसर (तेज सप्रू) खन्ना साहब का साथ देता है. खन्ना का भाई दिनदहाड़े कस्टम आफिसर की पत्नी का खून कर देता है. खन्ना दीपक की भी हत्या कर देता है. सूरज बाकी हवलदारों के साथ मिल कर खन्ना और उस की फौज को खत्म कर डालता है.

कहानी के हिसाब से फिल्म में नया कुछ नहीं है. अच्छाईबुराई की यह लड़ाई तो बरसों से देखते आ रहे हैं. फिल्म की हर घटना जानीपहचानी लगती है. और तो और नायिका करिश्मा कपूर की हर हरकत पुरानी व बासी लगती है. इस फिल्म में वह जेबकतरी बनी है और अपनी चुलबुली हरकतों से उस ने दर्शकों को हंसाने की कोशिश की है, परंतु नाकामयाब रही है.

इस के विपरीत एक विधवा की भूमिका में फरहा ने अच्छी भावाभिव्यक्ति दी है. आदित्य पंचोली खूब चीखचीख कर बोला है. अन्य कलाकारों में दम नहीं है.

फिल्म के संवाद मुकाबले में कमजोर साबित हुए हैं. गीतसंगीत भी साधारण है.

O दिल की बाजी

निर्मातानिर्देशक : **अनिल गांगुली**
संगीत : **राम लक्ष्मण**
मुख्य कलाकार : **अक्षयकुमार, अविनाश वधावन, आयशा जुल्का, फरहीन, नवीन निश्चल, राखी, अंजू महेंद्रू, परेश रावल, अनुपम खेर.**

दो सौतेले भाइयों के टकराव पर कुछ फिल्में पहले भी बन चुकी हैं. यही टकराव 'दिल की बाजी' में भी है. फार्मूला फिल्मों में इस बात को नजरअंदाज कर दिया जाता है कि पहले दर्शकों को क्या दिखाया जा चुका है और अब क्या दिखा रहे हैं. निर्देशक अनिल गांगुली वैसे तो 'तपस्या' और 'कोरा कागज' जैसी अच्छी फिल्में पहले बना चुके हैं, लेकिन इस बार 'दिल की बाजी' में घटिया विषय चुना.

'दिल की बाजी' के ये दो सौतेले भाई हैं- विजय (अक्षयकुमार) और अजय (अविनाश वधावन). दोनों का पिता एक ही है, विश्वनाथ कश्यप (नवीन निश्चल). दोनों भाई एकदूसरे से अपरिचित हैं. एक मोड़ पर दोनों आपस में टकराते हैं. दोनों को इस बात का पता चल जाता है कि वे आपस में भाई हैं, भले ही उन की मांएं अलगअलग हैं पिता तो एक ही है. विजय पिता से इस बात का बदला लेना चाहता है. उस के इस काम में मदद करता है संतोष (परेश रावल) और दौलतराय (अनुपम खेर). आरती (आयशा जुल्का) दौलतराय की बेटी है और विजय से प्रेम करती है और आशा (फरहीन) होटलों में नाचतीगाती है और अजय से प्रेम करती है. अंत में गलतफहमी दूर होने पर दोनों भाई आपस में मिल जाते हैं.

फिल्म की कहानी असरहीन है. दोनों भाइयों के टकराव में जो तनाव होना चाहिए था, वह नदारद है. निर्देशक अनिल गांगुली कुछेक दृश्यों को छोड़ कर पूरी फिल्म में अपना असर कायम रखने में असफल रहे हैं. बीचबीच में उन्होंने अनुपम खेर से थोड़ी सी ओवरएक्टिंग करा कर दर्शकों को हंसाने का असफल प्रयास किया है.

फिल्म का गीतसंगीत पक्ष जरूर अच्छा है. संगीतकार राम लक्ष्मण ने कुछ गीतों में अच्छी धुनें दी हैं. दोतीन गीत चल सकते हैं. अभिनय की दृष्टि से न तो अक्षयकुमार ने ही प्रभावित किया है और न ही अविनाश वधावन ने. दोनों नायिकाओं में से फरहीन ने कुछ भावुक दृश्य दिए हैं, आयशा जुल्का फ्लाप रही है. अन्य कलाकारों में भी दम नहीं है. संक्षेप में, दिल की यह बाजी उलट गई है. ●

छवि प्रतिछवि

* पल्लवी जोशी का सफेद झूठ *

टीवी स्टार के रूप में मशहूर पल्लवी जोशी का भी जवाब नहीं है. आजकल वह झूठ बोलने में काफी माहिर हो गई है. पिछले एक साल से वह चिल्लाचिल्ला कर सभी को बता रही थी कि अब वह एक धारावाहिक बनाएगी. इस धारावाहिक की पटकथा उस ने खुद ही लिखी थी और निर्देशन भी वह स्वयं करने वाली थी. पर अफसोस, उस की यह योजना खटाई में पड़ गई.

पता चला है कि पल्लवी जोशी ने एक धारावाहिक की पटकथा मंडी हाउस में जमा करवाई थी, पर वह अस्वीकृत हो चुकी है. इसलिए अब जब भी कोई शख्स पल्लवी से उस के धारावाहिक के बारे में पूछता है तो वह सफेद झूठ बोल जाती है, "कैसा धारावाहिक? मैं तो अभिनय कर रही हूं. धारावाहिक के लेखन या निर्देशन से मेरा क्या लेनादेना?"

अब क्या किया जाए? पल्लवी जोशी ने एक साल पहले जो कुछ कहा था, वह सच था? या अब जो कह रही है, वह सच है?



* लेखा गोविल की वापसी *

डिंपल कापड़िया, रीना राय जैसी फिल्म अभिनेत्रियां यदि फिल्मी दुनिया से संन्यास लेने के बाद वापस फिल्मों में लौट सकती हैं तो फिर लेखा गोविल क्यों नहीं लौट सकती? पर उस का मामला अन्य अभिनेत्रियों के मुकाबले एकदम भिन्न है.

डिंपल या रीना राय ने फिल्मी दुनिया में नाम कमाने के बाद शादी की थी और फिल्मी दुनिया से न चाहते हुए संन्यास लिया था. वे अपने पतियों से झगड़ कर वापस आईं, लेकिन लेखा गोविल तो अरुण गोविल की रजामंदी से वापस आ रही है.

अरुण गोविल से ब्याह रचाने से पहले





लेखा भी अभिनय कर रही थी. पर शादी के बाद वह घर बैठ गई और अपने पति की सहायता करने लगी. वह अपनी गृहस्थी से खुश थी. लेकिन 'रामायण' में राम बनने के बाद से तो अरुण गोविल की अभिनय की दुकानदारी बंद हो गई. ऐसी परिस्थिति में जब निर्देशक परवेज ए. शानू ने फिल्म 'कौन दबंग है' में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने का प्रस्ताव लेखा के समक्ष रखा तो अरुण गोविल ने उस से तुरंत हां करवा दी. आखिर इस महंगाई के जमाने में घर भी तो चलाना है.

* प्रकाश का खाता खुला *

धारावाहिक 'चाणक्य' के निर्माता प्रकाश द्विवेदी एक उत्कृष्ट अभिनेता हैं, यह उन्होंने 'चाणक्य' में लघु पौरव की भूमिका निभा कर साबित कर दिखाया था. लघु पौरव की भूमिका में लोगों ने उन्हें बहुत पसंद किया. बतौर कलाकार उन्हें काफी शोहरत भी मिली.

'चाणक्य' से मिल रही शोहरत से प्रकाश द्विवेदी को लगा था कि उन्हें बतौर विलेन कई फिल्मों में काम करने का मौका मिलेगा. प्रकाश मेहरा की तरफ से उन्हें एक मौका भी मिला था, पर फिर सब टांयटांय फिस हो गई.

लेकिन प्रकाश को एक मौका और मिला. जी हां, निर्मातानिर्देशक प्रकाश झा ने अपनी नवीनतम फिल्म 'बंदिश' में प्रकाश द्विवेदी को एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए अनुबंधित किया है. प्रकाश द्विवेदी इस फिल्म में एक भ्रष्ट पुलिस इंस्पेक्टर की भूमिका निभा रहे हैं. प्रकाश झा की यह पहली व्यावसायिक फिल्म होगी.

* नायक से खलनायक तक *

सफलता का नशा बड़ा खतरनाक होता है. इस को पचा पाना हर शख्स के बस की बात नहीं होती. धारावाहिक 'महाभारत' की सफलता ने कई कलाकारों को मदमस्त कर दिया. इसी धारावाहिक में 'अर्जुन' की भूमिका निभा कर रातोरात स्टार बन जाने वाला अभिनेता अर्जुन तो आसमान पर उड़ने लगा था. पत्रकारों से बात करने के लिए भी उस के पास समय न था. फिल्म का प्रस्ताव ले कर आने वाले निर्माता के सामने वह ऊलजलूल शर्तें रखने लगा था.

परिणामतः अच्छे निर्माताओं ने उसे भूल जाना ही बेहतर समझा. दूसरी तरफ सफलता के नशे में चूर अर्जुन ने बेसिरपैर की कुछ फिल्में अनुबंधित कर लीं. अंततः

उस का कैरियर पतन की ओर अग्रसर हो गया. जब उस की नींद खुली, तब तक काफी देर हो चुकी थी.

बतौर नायक फिल्में मिलनी बंद हो गईं तो उस ने खलनायक बन जाना ही बेहतर समझा. बतौर खलनायक उस की पहली फिल्म थी, 'जिगर.' बस, तब से वह लगातार हर फिल्म में खलनायक ही बन रहा है.

वह कहता है, "आज मैं अपने कृत्य पर शर्मिंदा हूं. 'महाभारत' के वक्त मैं ने सफलता के नशे में कई गलत निर्णय किए. जब मैं घर पर खाली बैठा तो मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ. काम तो करना ही था. भावनाओं से दालरोटी का जुगाड़ हो नहीं सकता था. तब मेरे कुछ हितैषियों ने मुझे 'खलनायक' के किरदार निभाने की सलाह दी. मुझे भी सलाह सही लगी. अब मैं खुश हूं कि मेरी गाड़ी चल निकली है."





* एक फिल्म अग्रवाल समाज के युग पुरुष पर *

रामानंद सागर ने महाराष्ट्र और गुजरात सीमा पर समुद्रतट पर बसे उमरगांव में 'रामायण' धारावाहिक की शूटिंग करने के बाद सेटों को बाकायदा स्टुडियो का रूप दे दिया है. आजकल इसी वृंदावन स्टुडियो में अग्रवाल समाज के आदि पुरुष 'महाराजा अग्रसेन' पर बन रही फिल्म की शूटिंग चल रही है. महेंद्र शर्मा ने यह फिल्म शरद अग्रवाल की कथा पर शुरू की है. जाहिर है कि फिल्म ऐतिहासिक किस्म की है, इसलिए भव्य सेट, महंगी पोशाकें, जूनियर कलाकारों की खासी भरमार है.

अब निर्माता अग्रवाल वैश्यों के अंधविश्वासों को भुनाने की कोशिश में हैं क्योंकि अग्रवाल वैश्यों के पास पैसा तो काफी है पर अपने निजी देवीदेवता नहीं हैं. अग्रसेन के रूप में वे अपने देवता की तलाश कर रहे हैं. चाहे कल को यह शैव, वैष्णवों, सिखों, निरंकारियों, जैनों की तरह समाज को बांटने में सहायक हो.

अग्रसेन की भूमिका अरुण गोविल ने निभाई है. राम की भूमिका करने से लोगों को विश्वास हो गया है कि वे किसी भी राजा की भूमिका में फिट हो जाते हैं.

इस में भी चमत्कारी लटकेझटके होंगे ताकि इस काल्पनिक राजा को देवता सिद्ध किया जा सके.

* फिल्म बनाना सीखें शाह से *

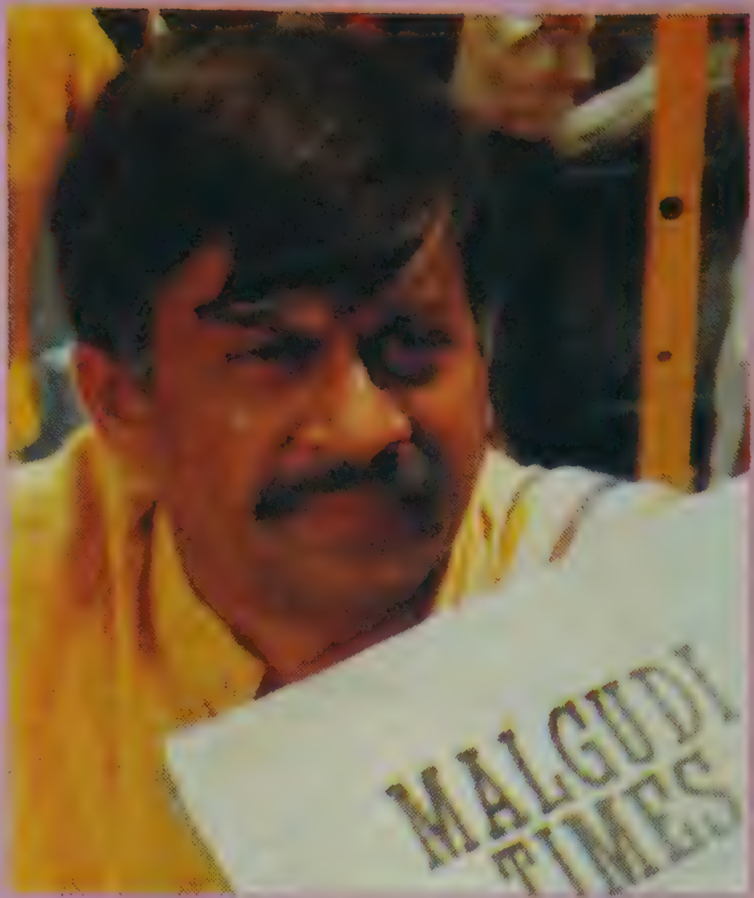
आजकल फिल्म उद्योग में पैसे का जबरदस्त अकाल है. उधर बड़े सितारों के साथ फिल्म बनाने के लिए बजट करोड़ों में पहुंच जाता है. ऐसे में 'मेरा सिंदूर' और 'माझं सौभाग्य' फिल्म के निर्माता हीरालाल शाह की कार्यशैली दूसरों के लिए अनुकरणीय हो सकती है.

शाह अपनी हिंदी और मराठी में एक साथ बन रही फिल्म के सेट पर पुणे में मिले. उन्होंने अपनी फिल्म के अर्थशास्त्र का खुलासा किया, "एक हिंदी फिल्म बनाने में कम से कम 30 लाख रुपए और एक मराठी फिल्म बनाने में 20 लाख रुपए लगते हैं. मैं एक ही कथा और एक ही 'स्टारकास्ट' के साथ दोनों फिल्मों की एकसाथ शूटिंग कर रहा हूं. इस पर खर्च आया है 35 लाख रुपए. पिछली मराठी फिल्म 'माफीचा साझीदार' के लिए महाराष्ट्र सरकार ने 12 लाख रुपए की 'सबसिडी' दी है. यह सबसिडी अगली फिल्म मराठी में बनाने पर ही मिलती है. फिल्म में राम लक्ष्मण का संगीत है. संगीत 8 से 10 लाख में बिक जाएगा. फिल्म के ओवरसीज और वीडियो अधिकार से 8 से 10 लाख रुपए मिल जाएंगे."

इस का सीधासीधा अर्थ यह हुआ कि शाह की फिल्म जब परदे पर आएगी तो उस से जितनी भी रकम आएगी, वह खरा लाभ होगा.

* अपना ही संसार है, 'मालगुडी डेज' का *

कई अच्छी साहित्यिक कृतियों की अनाड़ी निर्देशक के हाथ में पहुंच कर खासी दुर्गति हुई है. लेकिन दिवंगत शंकर नाग ने प्रख्यात कथाकार आर.के. नारायण की कथाओं को 'मालगुडी डेज' में ऐसी ऊंचाई पर पहुंचा दिया था कि उस का अभी



तक कोई जोड़ नहीं मिल सका है. शायद यही कारण है कि दूरदर्शन ने पहले से भी ऊंची कीमत दे कर इस धारावाहिक के पुनः प्रसारण के अधिकार खरीद लिए हैं. इस धारावाहिक की पुरानी 36 किस्तें दिखाने के बाद 26 नई किस्तें भी दिखाई जाएंगी, जिन की शूटिंग अगले महीने से बंगलौर में शुरू होने जा रही है.

'मालगुडी डेज' के निर्माता टी.एस. नरसिंहम हाल ही में मिले तो उन से इस धारावाहिक की अपार लोकप्रियता का रहस्य पूछा. नरसिंहम का उत्तर था, "सब से ज्यादा श्रेय तो आर.के. नारायण की कहानियों को जाता है, जिन में सहजता, मानवीय भावनाएं और ग्रामीण पृष्ठभूमि की सरलता है. शंकर नाग ने इन्हें कैनवस पर पेंटर की तरह से जीताजागता बना दिया. लोकेशन की खूबसूरती का भी हाथ है."

"शंकर नाग की मृत्यु के बाद अब निर्देशन की बागडोर किस के हाथ में सौंपने जा रहे हैं?"

"अनंत नाग शंकर के छोटे भाई हैं. वह 'मालगुडी डेज' के निर्माण से काफी करीब से जुड़े रहे हैं. मुझे उम्मीद है कि वह कहानियों के साथ पूरा न्याय कर पाएंगे," नरसिंहम का उत्तर था. ●

ये फिल्मी पत्रिकाएं और पाठक

लेख • विजय अग्रवाल

फिल्में, फिल्मी पत्रिकाएं तथा अन्य पत्रपत्रिकाओं के फिल्मी पन्ने आज भारतीय समाज के मनोरंजन के अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण हिस्से बन गए हैं. सिनेमाहाल की जगह वीडियो लेता जा रहा है. और शायद ही कोई ऐसा बाजार होगा जहां वीडियो की दुकान न हो.

मजेदार बात यह है कि इन दुकानों ने भी अपना नाम वीडियो शाप या वीडियो सेंटर न रख कर वीडियो लाइब्रेरी रखा है. 'लाइब्रेरी' शब्द के पीछे जो गंभीर चेतना है, वह ग्राहकों को सीधेसीधे पुस्तकालय से जुड़ने का भ्रम पैदा करती है. 'वीडियो लाइब्रेरी' शब्द का फैलाव इस बात का प्रमाण है कि वीडियो धीरेधीरे पुस्तकों का स्थान लेने की ओर अग्रसर हो रहा है. अपने इस प्रयास में वह कितना सफल होगा यह भविष्य ही बताएगा.

हिंदी, अंगरेजी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनेक फिल्मी पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं. उन की प्रसार संख्या भी काफी है. इतना ही नहीं, बल्कि जो सामाजिक, राजनीतिक तथा बच्चों और महिलाओं से जुड़ी हुई पत्रिकाएं हैं, उन में भी फिलमजगत की चर्चा के लिए कुछ पृष्ठ सुरक्षित रहते हैं. देखा तो यहां तक गया है कि ऐसी पत्रिकाएं समयसमय पर फिल्म विशेषांक निकालने के मोह को भी नहीं छोड़ पातीं, और ऐसे विशेषांकों की प्रसार संख्या भी उन की नियमित प्रसार संख्या से काफी अधिक होती है.





युवावर्ग अपने पसंदीदा नायकनायिकाओं के निजी जीवन में झांकने के लिए इन पत्रिकाओं को बड़े चाव से पढ़ता है.

चिंता इस बात की नहीं है कि इतनी फिल्मी पत्रिकाएं क्यों निकल रही हैं अथवा हर पत्रिका में फिल्मों की चर्चा अनिवार्य होती जा रही है, बल्कि चिंता इस बात की है कि ये फिल्मी पत्रिकाएं तथा फिल्मी स्तंभ पाठकों को क्या उपलब्ध करा रहे हैं. यदि इस दृष्टि से इन सब का विस्तृत जायजा लिया जाए तो जो तसवीर बनती है, वह फिल्मी साहित्य के प्रति समाज के मन में कोई बहुत अच्छी आशा पैदा नहीं कर पाती.

चाहे फिल्मी पत्रिकाएं हों या अन्य पत्रिकाओं में फिल्मी स्तंभ, दो बातें मुख्य रूप से देखने को मिलती हैं—पहली तो यह कि फिल्मी पत्रिकाएं पूरी तरह से फिल्म जगत के अंदरूनी दृश्यों की जानकारी चटपटे रूप में तैयार कर के पाठकों को परोसती हैं. दूसरी यह कि इन पत्रिकाओं में जो चित्र छपते हैं, उन का संबंध नायिकाओं के देह सौंदर्य के दर्शन कराना तथा नायक और नायिका के गरमागरम दृश्यों को प्रस्तुत करना होता है. पूरी पत्रिका को पढ़े जाने के बाद ऐसा बिलकुल नहीं लगता कि पाठक की चेतना पर फिल्म संस्कृति का थोड़ा सा भी असर हुआ है. मजेदार बात तो यह है कि दूसरी पत्रिकाओं के पाठक पत्रिका में से केवल अपनी रुचि के ही विषयों को पढ़ते हैं, जबकि फिल्मी पत्रिकाओं के पाठक उसे शुरू से आखिर तक चाट जाते हैं. रेलवे स्टेशनों, बस अड्डों तथा रेल और बसों में सफर करते हुए मुसाफिरों के हाथों में ऐसी पत्रिकाएं सुशोभित होती रहती हैं. वस्तुतः यही वह प्रवृत्ति है जिस के कारण एक स्वस्थ और गंभीर फिल्म साहित्य विकसित नहीं हो पा रहा है.

फिल्मों के बारे में हमारे समाज की धारणा आरंभ से ही अच्छी नहीं रही. समाज या तो इसे तिरस्कृत मानता रहा या फिर इसे पूरी तरह से मनोरंजन का एक हलकाफुलका साधन. फिल्मों के 75 वर्ष के लंबे इतिहास के कारण इसे इस कलंक से तो मुक्ति मिल गई है कि फिल्म देखना कोई अपराध (व्यभिचार) है, लेकिन उसे इस धारणा से अभी तक छुटकारा नहीं मिल सका है कि फिल्म केवल मनोरंजन का साधन है.

फिल्मी पत्रिकाओं के साथ हमारा रिश्ता उतना ही पुराना है जितना फिल्मों के साथ. पहले जहां एकदो पत्रिकाएं ही लोगों को फिल्मी साहित्य सुलभ कराती थीं वहीं आजकल ऐसी पत्रिकाओं की बाढ़ आई हुई है. और पाठक भी इन्हें बड़ी रुचि से पढ़ते हैं. लेकिन क्या कभी आप ने सोचा है कि हलकेफुलके मनो-रंजन के नाम पर ये पत्रिकाएं पाठकों को परोस रही हैं मात्र अश्लीलता, झूठ और अनाचार?

सन 1970 के बाद से कलात्मक फिल्मों का एक नया दौर शुरू हुआ. लेकिन वे लोकप्रिय नहीं हो सकीं, क्योंकि समाज का उन से मनोरंजन नहीं हो सका. आज हर व्यक्ति समाज पर पड़ रहे फिल्मों के जबरदस्त प्रभाव को स्वीकार करता है, लेकिन विडंबना यह है कि इस के बावजूद वह फिल्मों के प्रति गंभीर रुख अख्तियार नहीं करता और उसे अब तक मनोरंजन का ही साधन माने हुए है. समाज की इसी सामूहिक चेतना का प्रतिनिधित्व हमारा आज का फिल्म साहित्य (यदि हम इसे साहित्य मानें तो) कर रहा है.

फिल्मों के व्यापक प्रचारप्रसार तथा प्रभाव डालने की उस की क्षमता के कारण निस्संदेह लोगों के दिमाग में फिल्म जगत के लोगों की एक विशिष्ट छवि बन गई है. यह मानवीय प्रवृत्ति है कि वह विशेष रूप से चर्चित लोगों के निजी जीवन प्रसंगों के बारे में जानना चाहता है. लेकिन प्रश्न यह है कि फिल्म जगत के लोगों के निजी जीवन प्रसंग क्या हैं? फिल्मी पत्रिकाओं में जो उन के निजी जीवन प्रसंग देखनेपढ़ने को मिलते हैं, यदि हम उसे व्यापक अर्थों में एक शब्द में कहना चाहें तो वे सब के सब 'बेडरूम' से जुड़े हुए प्रसंग होते हैं. इन प्रसंगों के केंद्र में होता है– (1) किस नायक का किस नायिका के साथ तथा किस नायिका का किस नायक के साथ रोमांस चल रहा है, (2) नायक और नायिका की रातें कैसे बीतती हैं, (3) सेक्स के बारे में उन की धारणाएं क्या हैं, (4) देह प्रदर्शन के बारे में नायिकाएं क्या सोचती हैं, (5) फिल्मांकन के दौरान किस तरह के लफड़े होते हैं, (6) विवाहित नायक-नायिकाओं के आपसी संबंध कैसे हैं तथा वे आजकल और कहां मुंह मार रहे हैं, (7) किस कलाकार की कितनी कीमत है, (8) कलाकारों के किस तरह के आपसी झगड़े चल रहे हैं? आदिआदि.

मजेदार बात तो यह है कि यदि ऐसे प्रसंग सच होते तो कोई बात भी थी, लेकिन ये सारे प्रसंग एक छोटी सी घटना को ले कर उसे 'सत्यकथा' की तरह काफी विस्तार दिए जाने की कलाकारी के नमूने बन गए हैं, जिन में आंखें हमेशा फिल्मी पात्रों के शयनकक्षों की ओर लगी रहती हैं.

यहां पर स्वाभाविक रूप से कुछ प्रश्न उठते हैं. पहला तो यही कि क्या फिल्म जगत के लोगों के निजी जीवन में इन सब के अतिरिक्त और कुछ होता ही नहीं? दूसरे, क्या फिल्मों को छोड़ कर फिल्म जगत के लोगों की चर्चा करना ही फिल्म लेखन के लिए पर्याप्त है? तीसरे, क्या पाठक रोमांस की चटपटी कथाओं के अतिरिक्त कुछ पढ़ना ही नहीं चाहते?

हमारे समाज में केवल फिल्म जगत के लोग ही नायकनायिकाएं नहीं हैं, बल्कि खेल, कला, साहित्य, विज्ञान, शिक्षा, राजनीति और समाजसेवा से जुड़ी अनेक

ये फिल्मी पत्रिकाएं

वीडियो और केबल टीवी ने वैसे ही व्यक्ति को अपने मोहपाश में बांध लिया है. रहीसही कमी पूरी कर देती हैं ये फिल्मी पत्रिकाएं. ऐसे माहौल में व्यक्ति को अपनी सही रुचि को विकसित करना मुश्किल लगता है. साथ ही इस माहौल ने उसे अच्छी ज्ञानवर्द्धक साहित्यिक, राजनीतिक तथा अन्य पत्रपत्रिकाएं पढ़ने से वंचित कर रखा है.

- *इन फिल्मी पत्रिकाओं में अश्लीलता और सेक्स से भरपूर सस्ती खबरें होती हैं जो उन्हें उत्तेजना और क्षणिक खुशी के सिवा कुछ नहीं देतीं. यही कारण है कि आज का युवावर्ग भटकाव, कुंठा और दिशाहीनता की तरफ बढ़ रहा है.*
- *खाली समय में छात्र 'लाइब्रेरी' की जगह 'वीडियो लाइब्रेरी' के चक्कर लगाते देखे जाते हैं. पढ़ाई के अलावा अध्ययन शब्द का महत्त्व घटता जा रहा है.*

ऐसी प्रतिभाएं हैं जिन की छवि किसी नायक से कम नहीं है. निश्चित रूप से पाठक इन के बारे में भी जानना चाहता है लेकिन हमारे यहां इस का अभाव है, जबकि दूसरी ओर फिल्मी पत्रिकाएं फिल्मी कलाकारों के जीवन प्रसंगों से पटी रहती हैं. यह बात इस का प्रमाण है कि समाज आज भी फिल्म जगत के लोगों को उन की देह के भूगोल से अलग कुछ विशेष नहीं मानता.

इस में दोष समाज का नहीं, फिल्म जगत का ही है. कारण, आज जिस प्रकार की फिल्में बन रही हैं उन सभी में देह की गंध ही मुख्य होती है. फिर भला समाज उन्हें उस से हट कर कैसे देख सकता है? इस के लिए एक छोटा सा उदाहरण पर्याप्त होगा. पूजा बेदी की छवि शुरू से ही देहदिखाऊ नायिका की रही है, जिसे लोगों ने लोगों को उद्दीप्त करने वाली 'विषकन्या' (यह उस की एक फिल्म का भी शीर्षक है) का नाम दिया. हाल ही में जब 'डेबोनायर' ने 'कामसूत्र' के विज्ञापन के लिए उस के नग्न दृश्यों को प्रकाशित किया तो उस की प्रतियां 'ब्लैक' में बिकीं. 'डेबोनायर' में दूसरों के ऐसे नग्न चित्र पहले भी छपते रहे हैं. लेकिन फिल्म जगत की एक हस्ती पूजा बेदी के नाम ने उन नग्न चित्रों को एक दूसरी ही भावना से आविष्ट कर दिया, जिस के कारण लोगों में उस की मांग बढ़ गई.

अखबारों में अकसर यह भी पढ़ने में आता है कि 'अमुक' अभिनेत्री कालगर्ल के रूप में पकड़ी गई. इस शीर्षक का 'अभिनेत्री' शब्द फिल्म जगत के प्रति हमारे समाज की सामूहिक चेतना को व्यक्त करता है. इसी फिल्म जगत में बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो अच्छा सामाजिक जीवन जी रहे हैं, सामाजिक कार्यों से जुड़े हुए तथा कला के प्रति निष्ठावान हैं, लेकिन उन के ऐसे कार्यों की चर्चा नहीं होती. शायद इस का कारण यह हो कि आम लोग फिल्मी लोगों से इस तरह की अपेक्षा ही नहीं करते.

ऐसा लगता है कि इस में पाठकों का दायित्व उतना नहीं है जितना कि पत्रिकाओं के प्रकाशन (उत्पादन) करने वालों का. यह ठीक है कि गप्पों से भरी ऐसी पत्रिकाएं पाठकों का हलकाफुलका मनोरंजन करती हैं, भुनी हुई मूंगफलियों की तरह उन का समय भी 'पास' करती हैं. वर्तमान जीवन की आपाधापी, व्यस्तता और जीवनपद्धति को देखते हुए हलकेफुलके साहित्य की आवश्यकता भी है. लेकिन ध्यान रखने की बात यह है कि वह साहित्य हलकाफुलका ही हो, अश्लील नहीं. हमें 'हलकाफुलका' और 'अश्लील' के बीच के अंतर को अच्छी तरह समझना होगा. प्रेम-प्रसंगों में चटपटेपन का छिड़काव कर के समाज के मस्तिष्क को जो खुराक दी जा रही है, उस से उस की चेतना पूरी तरह से शरीर की गंध के आसपास सिमटती चली जा रही है. स्थिति ऐसी बनती जा रही है कि वह फिल्म से और फिल्म जगत के लोगों से इस से अधिक की अपेक्षा ही नहीं कर पा रहा है.

यह एक खतरनाक स्थिति है. यह बात

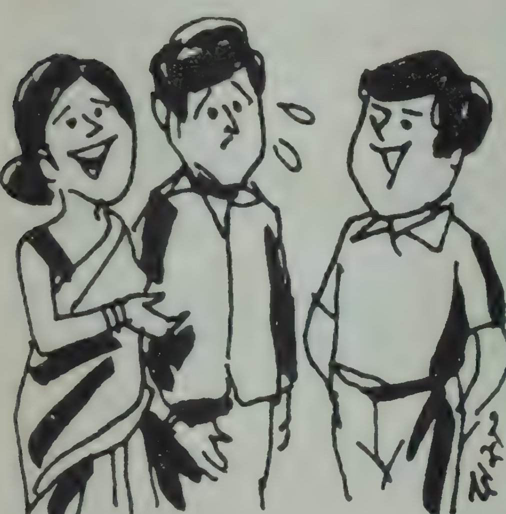
सोची जा सकती है कि जिस परिवार में ऐसी पत्रिकाएं उन की बैठक में बीच वाली मेज पर रखी रहती हैं और जिसे परिवार का हर सदस्य पढ़ता है, उस परिवार के बालकों की चेतना पर इस का कितना विपरीत प्रभाव पड़ेगा. एक समय ऐसा था जबकि फिल्म में चुंबन जैसे दृश्यों का होना अनहोनी घटना थी, जबकि आज यह प्रश्न उठाया जाने लगा है कि फिल्म सेंसर बोर्ड की आवश्यकता ही क्या है. इस प्रश्न का उठना ही खतरनाक भविष्य की ओर संकेत करता है. मात्र सामान्य फिल्म तथा ब्लू फिल्म के बीच की दूरी क्रमशः सिमटती जा रही है.

किंतु अभी भी कुछ ऐसी पत्रिकाएं हैं जो अपनेआप को फिल्म जगत की रंगीनी भरी कहानियों से मुक्त रखे हुए हैं, हालांकि उन के पास फिल्मों के लिए निर्धारित पन्ने होते हैं, पाठक भी उसे बड़े चाव से पढ़ते हैं. ऐसी पत्रिकाओं की प्रसार संख्या भी अच्छी है. इसलिए फिल्मी पत्रिकाओं का यह बहाना कि 'पाठक चटोरा होता है, और वह चटपटी चीज ही पसंद करता है' गलत मालूम पड़ती है.

पाठक को आप सही चीज दीजिए. वह धीरेधीरे उसी चीज का आदी हो जाएगा. सवाल पाठकों की रुचि के अनुकूल चीज देने का ही नहीं, उन की रुचि का निर्माण करने का भी है. जो लोग फिल्म के चटपटे प्रसंगों पर हो रही बातों में शरीक नहीं हो सकते, उन्हें किसी बात का अफसोस नहीं होना चाहिए. उलटे उन्हें खुश ही होना चाहिए कि उन की चेतना अनावश्यक बातों के प्रदूषण से मुक्त है. जो लोग ऐसे चटपटे किस्सों को नहीं पढ़ते, ऐसा नहीं है कि वे किसी महत्त्वपूर्ण बात को जानने से वंचित रह गए हैं, बल्कि सचाई यह है कि उन के दिमाग में बेकार की बातें नहीं भरी हुई हैं और उस में सही बातों के लिए जगह खाली है.

हमारा पाठक 'रिसीविंग एंड' पर है, अर्थात उसे जो कुछ भी मिलता है उसे उस को ग्रहण करना पड़ता है. अभी उस की ऐसी हैसियत नहीं हो पाई है कि वह अपनी इच्छानुसार चीजों को प्राप्त कर सके. फिर 'प्रेम' और 'काम' की बातें मनुष्य की स्वाभाविक कमजोरी भी होती हैं. इसी कमजोरी का लाभ हमारी आज की फिल्मी पत्रिकाएं उठा रही हैं. निजी जीवन के प्रसंगों की चर्चा तथा कामुक दृश्यों की छपाई विदेशी फिल्मी पत्रिकाओं में कम नहीं होती, लेकिन इस के बावजूद वहां फिल्मों को एक गंभीर विधा के रूप में लिया जाता है, और उस पर बाकायदा गंभीर लेख होते हैं, गंभीर चर्चा होती है. इसलिए वहां एक स्वस्थ फिल्म संस्कृति भी विकसित हो सकी है, जो हमारे यहां नहीं हो पाई है. ●

बात ऐसे बनी



शादी के बाद मैं अपने पति के साथ उन के क्वार्टर में चली गई. दहेज का कोई भी सामान हम अपने साथ नहीं ले गए थे. मेरे पति वहां अपने दोस्तों के बीच अपने दहेज विरोधी होने का खूब बखान करते. वह हमेशा उन से कहते कि मैं ने तो दहेज में केवल पत्नी को पाया है.

जब मुझ से उन का यह ढोंग सहन नहीं हुआ तो मैं ने उन के दोस्तों से कहा, "आप हमारी शादी की वीडियो फिल्म देखेंगे?"

पति अपनी पोल खुलती देख वीडियो फिल्म दिखाने की बात किसी तरह टाल गए. पर उस दिन के बाद उन के दहेज विरोधी भाषण बंद हो गए.

– विमला वरुण

*

मेरी दीदी की पड़ोसिन अकसर कुछ न कुछ मांग कर ले जाती और लौटाने का नाम ही न लेती.

हम सब उस की इस आदत से बहुत परेशान थे. ऊपर से जले पर नमक छिड़कने के लिए वह पूछ बैठती, "आप का मेरे पास कुछ रह तो नहीं गया?"

एक बार वह कुछ मांगने आई तो जीजाजी घर पर ही थे. उस ने आदतन अपना वाक्य दोहराया, "आप का मेरे पास कुछ रह तो नहीं गया?"

इस पर जीजाजी बोले, "भाभीजी, आप कुछ गलत पूछ रही हैं. आप को पूछना चाहिए कि आप के पास और कुछ रह तो नहीं गया?"

इस के बाद न केवल उस की मांगने की आदत छूट गई बल्कि हमारी पिछली चीजें भी वापस आ गईं.

– प्रकाशचंद्र झा

मेरी एक परिचित महिला जब भी किसी दुकान से खाने की कोई भी चीज खरीदने लगती, दुकान पर पड़े सामान में से उठा कर कुछ न कुछ खाने लगती.

एक बार उन्होंने दुकान से अंगूर खरीदे. दुकानदार के अंगूर तोलतेतोलते वह 15-20 अंगूर के दाने खा गईं. दुकानदार ने अंगूर लिफाफे में डालते समय 8-10 अंगूर तराजू में ही रहने दिए. इस पर उन्होंने पूछा, "ये दाने तराजू में क्यों छोड़ दिए?"

दुकानदार सहज भाव से बोला, "मेम साहब, इस से ज्यादा अंगूर तो आप यहां खड़ीखड़ी ही खा गई होंगी."

उस दिन से उन की चखने की आदत छूट गई.– सुधा सिंह



हमारे कार्यालय में एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी की आदत है कि वह किसी बहाने लोगों से रुपए उधार मांग लेता है और फिर वापस करने से कतराता है. मेरी नियुक्ति जब इस कार्यालय में हुई तो उस ने मुझे भी अपना शिकार बना लिया. जब मैं अपने रुपए वापस करने को कहता, वह हमेशा कोई नई तारीख बता कर खिसक जाता. अंत में मैं ने एक युक्ति सोची.

मैं ने वेतन भुगतान के दिन अपनी नियुक्ति कैश विभाग में करा ली. जब वह मेरे पास वेतन लेने आया तो मैं ने उस से वाउचर पर प्राप्ति के हस्ताक्षर करा लिए. इस के बाद अपने 400 रुपए काट कर मैं ने शेष भुगतान उस के हाथ पर रख दिया. उस ने रुपए गिने, एक बार मेरी ओर देखा और फिर चल दिया.– आकाश सिन्हा

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

कहानी ● नीलम कुलश्रेष्ठ

आप ही का साला

आदमी जिस जगह की मिट्टी से बना होता है वहीं के रिश्तेनाते उस में कहीं गहरे रचबस जाते हैं. न वह उस का पीछा छोड़ते हैं न उन की यादें पीछा छोड़ती हैं. जब मयंक ने दरवाजा खोला तो आने वाले का प्रश्न था, "होलीपुरा के मयंक चतुर्वेदी का मकान यही है?"

आने वाले व्यक्ति के गंदे कपड़ों, बिखरे बालों व उदास चेहरे से यह साफ जाहिर हो रहा था कि वह बड़ा परेशान है तथा किसी बड़ी विपत्ति का मारा है. बड़ी हताश मुखमुद्रा में झिझक व संकोच सहित वह दरवाजे पर खड़ा था.

होलीपुरा, अपने गांव का नाम सुनते ही वह एकदम अभिभूत हो गया. लोगों के इस महासमुद्र में सैकड़ों लोगों से लदीफदी बंबई की इस बहुमंजिली इमारत में भला कौन जानता है कि कौन सा 'होलीपुरा' और कौन सा 'मयंक चतुर्वेदी' है. आसपास के पड़ोसी जरूर एक उचटती सी नजर दरवाजे पर टंगे नामपट पर डाल कर जान गए हैं कि इस फ्लैट में रहने वाले की उपाधि 'चतुर्वेदी' है.

"हां, कहिए, मैं ही मयंक हूं."



होलीपुरा से आए रवि चतुर्वेदी की खातिरदारी में मयंक व उस की पत्नी यह सोच कर जुट गए थे कि इस बंबई शहर में कोई तो अपने गांव से मिलने आया. लेकिन कुछ ही दिनों में वह महाशय ऐसा क्या गुल खिला गए कि पतिपत्नी दोनों ने अपना सिर धुन लिया?

"जी नमस्ते," आने वाले ने बहुत आदर सहित हाथ जोड़ कर नमस्ते किया.

"मैं होलीपुरा के सुधांशु चतुर्वेदी की पत्नी का भाई हूं. मैनपुरी से साक्षात्कार के लिए बंबई आया था. आते ही मुसीबत में फंस गया हूं."

सुधांशु के नाम ने उसे आश्वस्त कर दिया था. वह स्कूल के दिनों में उस के साथ पढ़ा था. हां, अब बरसों से उस से मिलना नहीं हुआ था. उस से जुड़ा कोई उस के दरवाजे पर खड़ा था. वह जैसे बचपन में लौट कर रोमांचित हो उठा था. उसे याद आया, जब वह और सुधांशु दोनों साथसाथ स्कूल जाते थे, स्याही की शीशी में खड़िया घोलते थे. उसी सुधांशु से जुड़ा कोई उस के दरवाजे पर खड़ा था. उस ने गर्मजोशी से कहा, "पहले अंदर तो आइए."

वह कुछ सकुचाते हुए सोफे पर बैठ गया. उस के चेहरे पर लंबी यात्रा की थकान साफ झलक रही थी. बालों में धूल के कण उलझे हुए दिखाई दे रहे थे. मयंक मन ही मन आश्चर्य कर रहा था कि इतनी दूर की यात्रा, वह भी साक्षात्कार देने,बिना सूटकेस के यह जनाब कैसे चले आ रहे हैं? फिर भी उस ने उसे बाथरूम का रास्ता बताते हुए कहा, "आप वहां जा कर थोड़ा ताजा हो लीजिए. मैं तब तक चाय बनवाता हूं."

सहानुभूति से वह आगंतुक कुछ तनावरहित महसूस करता हुआ धन्यवाद कह वह स्नानगृह में चला गया. अब तक रीता बाहर के कमरे में झांकने चली आई थी कि मयंक किस से बातें कर रहा है?

उस ने उस के पास जा कर फुसफुसा कर कहा, "मेरे बचपन के होलीपुरा के मित्र का साला है. किसी मुसीबत में फंस कर यहां आया है, जरा जल्दी चाय बना दो."

बंबई इतनी दूर है कि अपनी ओर के मेहमान जरा कम ही आते हैं. वैसे भी नवदंपतियों के पास मेहमाननवाजी का समय खूब रहता है, बल्कि कहना चाहिए अपना फालतू समय काटने का इस से बढ़िया शगल कोई नहीं रहता. रीता उत्साह से चाय बनाने में जुट गई. कहीं मन में छिपा हुआ उत्साह था कि होलीपुरा के मेहमान की खातिरदारी अच्छी होनी चाहिए, जिस से ससुराल वालों में उस का नाम आदर से लिया जाए.

चाय का प्याला उठाते हुए ही उस अजनबी ने कहा, "मेरा नाम रवि चतुर्वेदी है. यहां भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र में कल मेरा साक्षात्कार है. जीजाजी ने मुझे आप का पता दे दिया था. साक्षात्कार की खबर एकदम अचानक मिली इसलिए मैं आप को पत्र नहीं डाल सका. आज सुबह जब नींद खुली तो देखा कि मेरा सूटकेस ही रेलगाड़ी से गायब था."

"अच्छा? आप का सूटकेस गाड़ी से चोरी चला गया? मैं इतनी देर से आप के सूटकेस के बारे में ही सोच रहा था. आप ने पहली बार इतनी लंबी यात्रा की है शायद?"

"बंबई पहली बार आया हूं. वैसे यात्राएं तो करता ही रहता हूं."

"ओह."

"संयोगवश मैं ने रात में अपनी जेब से निकाल कर सारे रुपए भी सूटकेस में रख दिए थे, जिस से वे जेब से नीचे न गिर जाएं. मेरा साक्षात्कार पत्र भी उसी में था. जीजाजी ने आप के नाम एक पत्र भी दिया था, वह भी उसी में था."

"लेकिन सुधांशु को मेरा पता कैसे



"मेरा कोई भाई ही नहीं तो इन का साला कहां से पैदा हो गया?" रीता बोली.

मुश्किल हो रहा था. मयंक चाय खत्म करते हुए बोला, "आप नहाना चाहेंगे?"

रीता ने हलका पानी गरम कर के स्नानगृह में रख दिया. मयंक का भूरे रंग का लखनवी कुरता पजामा भी वहां रख दिया.

जैसे ही रवि ने नहा कर स्नानगृह खोला रीता तत्परता से पूछने चली गई, "आप को तेल, कंघा चाहिए होगा. वह दाईं तरफ ही शीशे के पास रखा है."

मिला? मैं तो उस से बरसों से नहीं मिला हूं."

"मैनपुरी में रहने वाले आप के किसी रिश्तेदार से उन्होंने आप का पता ले लिया था."

"आप उस की चिंता मत करिए. भाभा अनुसंधान केंद्र में मेरी बहुत जानपहचान है. किसी को भी फोन कर के आप की समस्या का हल कर दूंगा."

"आप इतनी तकलीफ मत करिए. वहां पर भी एक नरेश चतुर्वेदी को जानता हूं. कल साक्षात्कार दे कर मैं वापस चला जाऊंगा."

"आप आए हैं तो रुक कर जाइए. इसे अपना ही घर समझिए. आप के पिताजी किस विभाग में काम करते हैं?"

"वह हरिद्वार में चिकित्सा महाविद्यालय में अधीक्षक हैं. मेरे दो भाई भी डाक्टर हैं. मैं ने भौतिक शास्त्र में एम.एससी. व पीएच.डी. किया है."

उस मामूली से व्यक्तित्व में इतनी विद्वता छिपी होगी, मयंक को विश्वास करना

रवि आड़ेतिरछे हाथ चला कर अपने कपड़े धो रहा था. रीता की बात सुन धीरे से बोला, "जी अच्छा, आज जिंदगी में पहली बार अपने हाथ से कपड़े धो रहा हूं. कभी मौका ही नहीं पड़ा."

रीता को उस की तहजीब, उस के बोलने का लहजा बहुत भला लग रहा था. तरस भी आ रहा था कि बेचारा साक्षात्कार देने इतनी दूर पहली बार आया और आते ही मुसीबत में फंस गया. अपने घर तो उसे नौकरों के कारण कपड़े नहीं धोने पड़ते होंगे. वह बोली, "आप हट जाइए, मैं आप के कपड़े धो देती हूं."

"अरे नहीं, वैसे ही आप को मैं क्या कम कष्ट दे रहा हूं?"

रीता को लगा, पता नहीं वह कितना भूखा होगा. रुपए निकल जाने के कारण दोपहर में उस ने कुछ खाया होगा या नहीं. यही सोच कर रीता ने ढेर सी चीजें खाने में बना डालीं.

खाने की भरी मेज देख कर रवि और

सकुचा गया, "आप ने तो बहुत सारी चीजें बना डालीं."

मयंक ने बेतकल्लुफ होते हुए कहा, "यार, बारबार तकल्लुफ कर के क्यों लज्जित कर रहे हो. दोस्त का साला मतलब अपना साला." रवि की भी झिझक समाप्त होने लगी. उस ने डोंगे में से रायता लेते हुए कहा, "आप दिल्ली के पूसा इंस्टीट्यूट के डाक्टर राजन चतुर्वेदी को जानते हैं?"

"हां, वह तो बहुत प्रसिद्ध डाक्टर हैं."

"वह भी हमारे खानदान से हैं."

"मतलब आप के खानदान में बहुत से लोग डाक्टर हैं."

"जी, मेरे पिताजी मुझे डाक्टर ही बनाना चाहते थे, किंतु मेरा मन भौतिक शास्त्र में शोध करने का था. आप ने बंबई की नृत्यांगना रूपसी चतुर्वेदी का नाम भी सुना होगा."

"हां."

"वह मेरी बड़ी चचेरी बहन हैं. होली पर याद आया, बंबई की होली कैसी होती है?"

"किसीकिसी इलाके में जोर से मनाई जाती है, लेकिन हमारे यहां इस जगह की होली बहुत फीकी होती है. गुलाल का टीका भर लगाने जैसी खानापूरी होती है."

"आप भी उधर की होली की याद तो करते होंगे?"

"क्या बात याद दिला दी यार, होली से अधिक तो होली की आग के चारों तरफ बैठ कर रसभरे गीतों की याद आती है."

"कुछ रसभरे या अश्लील?" रवि ने झेंपते हुए कहा.

मयंक ठहाका मार कर हंस पड़ा, "तुम ने तो दिल की बात कह दी यार."

खाने के बाद मयंक व रवि टहलने चले गए. रीता ने रवि के कपड़े प्रेस कर दिए. कल उसे साक्षात्कार में जाना था. कपड़े तो सही होने ही चाहिए थे.

दूसरे दिन रवि साक्षात्कार के लिए तैयार होता हुआ बोला, "मैं सोच रहा हूं साक्षात्कार दे कर सीधे ही स्टेशन निकल जाऊं."

"बंबई आए हो तो यहां रुक कर, सैर कर के जाओ."

"वैसे तो रुक जाता किंतु मेरा परसों दिल्ली में साक्षात्कार है. पहले सीधे दिल्ली जाऊंगा. जैसे भी हो मुझे आज जाना ही पड़ेगा."

"साक्षात्कार है तब तो मजबूरी है." कहते हुए मयंक ने कुछ रुपए चुपचाप उस के हाथों में थमा दिए. रवि ने आंखों ही आंखों में कृतज्ञता व्यक्त की.

उस दिन मयंक आधे दिन की छुट्टी ले कर ही घर आ गया. बहुत दिनों बाद उसे लग रहा था, कोई अपनी तरफ का मिला है जिस से वह दिल खोल कर बात कर सकता है, ठेठ गालीगलौज मिला कर. 3 बजे तक रवि भी लौट आया. साक्षात्कार से बेहद खुश था, "मुझे लग रहा है मेरा चुनाव हो ही जाएगा."

"तो फिर गोली मारो दिल्ली के साक्षात्कार को. कुछ दिन बाद चले जाना."

रीता ने भी अनुरोध किया, "रवि भैया, रुक ही जाइए. हम लोगों को आप का आना बहुत अच्छा लग रहा है."

"बहनजी, अगर साक्षात्कार नहीं होता तो रुक ही जाता. मुझे तो लग ही नहीं रहा कि मैं पहली बार आप लोगों से मिल रहा हूं, इतना स्नेह आप लोगों ने दिया है. यहां और भी चतुर्वेदी परिवार के लोग होंगे?"

"हां, एक मैनपुरी के खास रहने वाले हैं. दो आगरे के हैं," मयंक बड़ी दिलचस्पी से एकएक का परिचय रवि को बताने लगा. उसे आश्चर्य हो रहा था कि युवा पीढ़ी का होते हुए भी रवि को अपनी जाति वालों के बारे में इतनी उत्सुकता है, वरना आजकल के पढ़ेलिखे लड़के तो रिश्तेदारी व जाति के नाम पर ही नाक चढ़ाने लगते हैं.

रवि ने बड़ी आत्मीयता से कहा, "लाइए, उन सब के पते नोट कर लेता हूं.

कभी बंबई में नौकरी मिल गई तो उन से संपर्क करने में आसानी होगी." मयंक ने भी उन सब के टेलीफोन नंबर व पते नोट करा दिए.

रीता उस के लिए खाना बनाने में लगी रही. रात का खाना, सुबह नाश्ते के लिए मठरी व बिस्कुट भी रखना नहीं भूली. मयंक ने कहा, "मैं तुम्हें स्टेशन छोड़ देता हूं."

"भाईसाहब, क्यों शर्मिंदा कर रहे हैं." रवि झेंपते हुए बोला, "स्टेशन तो मैं स्वयं ही चला जाऊंगा. बंबई में स्टेशन इतना दूर है कि स्टेशन छोड़ने के लिए किसी को कहना सजा देने से कम नहीं है."

"अच्छा, यह कुछ रुपए रख लीजिए, आप के किराए के काम आएंगे. पहले यहां से आप को दिल्ली जाना होगा, फिर वहां से हरिद्वार." मयंक ने एक लिफाफे में 400 रुपए रख कर दे दिए.

रवि उस का हाथ दबाते हुए बोला, "आप का यह उपकार मैं जिंदगीभर नहीं भूलूंगा. मैं इस समय ऐसे भीषण संकट में फंस गया था जबकि मेरी तकदीर मेरे कैरियर का फैसला करने वाली थी. ऐसे में यदि आप सहारा नहीं देते तो मैं कहीं का न रहता. आगे शोधकार्य करने का मेरा सपना जाने कब पूरा होता. मैं चार दिन बाद हरिद्वार पहुंच जाऊंगा. वहां जाते ही आप को 500 रुपए का मनीआर्डर कर दूंगा."

"मेरे यार, तुम तो हमें ऊपर चढ़ाए दे रहे हो. हम भी अपनेआप को महात्मा जैसा महसूस कर रहे हैं. तसल्ली से रुपए भेज देना, जल्दी क्या है?"

"आप को नहीं है तो मुझे तो होगी ही."

रवि आंखों से कृतज्ञता छलकाते जैसे ही चलने लगा. रीता ने एक थैले में एक बिछाने का और एक ओढ़ने की चादर रख दी. और दूसरे थैले में नाश्ता रख दिया. यह सोच कर कि बंबई इतनी दूर कोई मेहमान कहां आ पाता है. वह बोली, "ये चादरें जब आप को सुविधा हो मैनपुरी मेरी बहन



मित्र

समय के साथ जो बदल जाए
मित्र उन्हें ही कहते हैं,
कोई गहरी चोट दे कर ही
ये दिल से निकलते हैं.

—कृष्णा कुमारी

के यहां भिजवा दीजिएगा जिन का पता आप ने नोट किया है."

"जरूर, जरूर, यदि संभव हुआ तो मैनपुरी होता हुआ ही हरिद्वार जाऊंगा."

रवि को गए 15 दिन हो गए थे, फिर महीना बीता, फिर डेढ़ महीना. न कोई उस का पत्र, न मनीआर्डर. अब मयंक का माथा ठनकने लगा, "क्या बात है? उस ने कोई सूचना क्यों नहीं दी? बड़ा अहसानफरामोश निकला."

"ऐसा करो, सिविल अस्पताल हरिद्वार के पते पर उस के पिताजी को पत्र डाल दो. वह तो जवाब देंगे ही."

मयंक ने हरिद्वार पत्र लिखा तो थोड़े दिन बाद वह पत्र ही वापस लौट आया. रीता भुनभुनाई, "पता नहीं, कैसे तुम अजनबियों पर विश्वास कर लेते हो? उसे घर में ठहरा कर बैठ गए."

"तुम भी तो 'रवि भैया' 'रवि भैया' कहतेकहते उस के आगेपीछे घूम रही थीं."

"तुम्हारे दोस्त का साला था. जब तुम उसे इतना मान दे रहे थे तो मेरा तो कर्तव्य हो जाता है कि मैं भी उस की देखभाल करूं.

नहीं तो वह मेरी बदनामी करता फिरता. वैसे भी हमारी नईनई शादी हुई है. उधर मैनपुरी व होलीपुरा में लोग मेरे बारे में क्याक्या सोचते?"

"तो उस के लिए इतना सब करने की क्या जरूरत थी कि दो चादरें भी पकड़ा दीं."

"तुम ने भी तो उस के लिए क्या कम किया है? पूरे 500 रुपए दे डाले. दिल्ली तक का किराया दे कर भी चलता कर सकते थे. वहां पर किसी और रिश्तेदार से पैसे ले लेता. महीने के आखिर में मुझे बैंक भागना पड़ गया."

"हांहां, वह लौटा देगा. शोध करतेकरते बेचारा आधा रह गया है. कहीं हरिद्वार जाते ही बीमार न पड़ गया हो."

"मैं लिख कर दे सकती हूं, वह हरिद्वार का होगा ही नहीं. नहीं तो यह पत्र क्यों वापस आ जाता."

बात सिर्फ 500 रुपए की नहीं थी. बात थी बेहद बुरी तरह छले जाने की. बात थी उन के मेहमाननवाजी व स्नेह के अपमान की. रीता को तो कई रात नींद नहीं आई. विवाह के बाद वैसे ही दुनिया सतरंगी दिखाई देती है. उस लुभावनी दुनिया से यथार्थ की दुनिया के धरातल पर पटकने वाला पहला इनसान रवि ही था.

बस रोज दोनों के बीच इसी तरह की तकरार चलती रहती. अचानक एक रविवार को विवेक चतुर्वेदी व उस की पत्नी रचना आ धमके. विवेक आते ही बोला, "यार, पिछले महीने बंबई से तुम कहां गायब हो गए थे?"

"हम लोग?" मयंक बोला, "हम तो बंबई में ही थे."

"क्या बात कर रहे हो? अपने साले को बंबई में घुमाने का निमंत्रण दे कर स्वयं गायब हो गए."

"मेरा कोई भाई है ही नहीं तो इन का साला कहां से पैदा हो गया?" रीता बोली.

"भाभीजी, आप के कोई भाई नहीं है तो रवि आप का कौन लगता है?"

"कौन रवि?" वे दोनों चौंक कर एक साथ बोले.

"वही रवि चतुर्वेदी, होलीपुरा वाला."

"तुम उसे कैसे जानते हो?" मयंक जल्दी से बोला.

"वह अपना सूटकेस ले कर हमारे पास आया था व कहने लगा जीजाजी व जीजी ने उसे बंबई घुमाने के लिए बुलाया था. लेकिन जब तुम्हारे फ्लैट पर पहुंचा तो पता लगा कि ताला बंद है. वह कह रहा था तुम्हारे पड़ोसी ने बताया कि कोई तार आया था, तुम लोगों को अचानक जाना पड़ा. उसी पड़ोसी ने मेरा पता दिया था."

"ओह, वह क्या तुम्हारे घर भी ठहरा था?"

"हम ने तुम्हारा साला समझ कर दो दिन उसे खूब घुमा कर अच्छी तरह खिलायापिलाया. तीसरे दिन उसे अकेले घूमने भेजा तो उस बेचारे की जेब कट गई. दिल्ली जाने का किराया भी हम ने दिया."

"तो आप भी लुट गए?" रीता के मुंह से बेसाख्ता निकला.

"क्या मतलब?"

संक्षेप में मयंक ने पूरी बात उन्हें बताई. फिर सोचते हुए बोला, "लेकिन वह सूटकेस कहां से लाया होगा? यहां से तो खाली हाथ गया था."

"आप ने जो रुपए दिए थे उसी से सूटकेस खरीद लिया होगा. लिंकरोड से सस्तेसस्ते कपड़े खरीद लिए होंगे." रीता सोचते हुए बोली.

विवेक के मुंह से एकदम निकला, "खूब उल्लू बनाया साले ने."

अचानक टेलीफोन की घंटी बजी. मयंक ने फोन उठा कर बात की व विवेक से कहा, "पवन का टेलीफोन है, तुम से कुछ जरूरी बात करनी है."

विवेक ने फोन उठाते हुए कहा, "पवन, मैं विवेक बोल रहा हूं."

उधर पवन ने कहा, "यार कहने में संकोच हो रहा है लेकिन कहना पड़ रहा है."

"बोल न, क्या बात है?"

"मुझे 500 रुपए की जरूरत है. कल बीना का आपरेशन करवाना है. तुम्हारे घर फोन किया. तुम नहीं थे, इसलिए मैं समझ गया कि तुम लोग मयंक के यहां गप्पें मार रहे होगे."

"500 रुपए कल आफिस में आ कर ले लेना. मैं ने तुझ से पहले भी कहा है कि बीना भाभी की बीमारी के लिए रुपए मांगने में कभी भी संकोच मत करना."

"लेकिन मैं तो अपने ही रुपए मांग रहा हूं, उधार नहीं."

"कौन से रुपए? मैं ने तुझ से रुपए कब लिए हैं?"

"नहीं, तुम ने नहीं तुम्हारे साले रवि ने लिए हैं. एक महीने पहले आया था. तुम दोनों किसी की शादी में अचानक चले गए थे. वह हमारे पास ठहर गया था. अच्छा हुआ तुम उसे हमारा पता दे गए थे, नहीं तो बेचारा साक्षात्कार कैसे दे पाता. जिस दिन साक्षात्कार दे कर लौट रहा था, तब उस की जेब कट गई. हम ने 500 रुपए उसे दे दिए थे. वह तो भेज नहीं पाया, इसलिए तुम से मजबूरी में मांग रहे हैं."

"तो वह तुम्हें भी चूना लगा गया."

"क्या मतलब?"

"तुम कल आफिस आना. रुपए तो मैं तुम्हें दे दूंगा लेकिन अपने साले की बात कल बताऊंगा." विवेक फोन रखते हुए बोला, "वह मेरा भी साला बन कर पवन के घर पहुंच गया."

"जय हो साले की."

"अभी तो धीरेधीरे पता लगेगा कि उस ने कितने जीजा व जीजी को फंसाया है," रीता हंसते हुए बोली.

धीरेधीरे अन्य परिवारों से पता लगने लगा कि 'जगत साले' साहब बंबई से काफी पैसा कमा कर वापस लौटे हैं. रीता व मयंक के दिमाग में अब ठंडक थी. वे तनावमुक्त थे कि बंबई में रहने वाले, छोटेछोटे शहरों से निकले व अपने को चुस्तदुरुस्त समझने वाले उन के क्षेत्र के लोग बेवकूफ बन चुके हैं.

ठीक एक वर्ष बाद मयंक अचानक सुधांशु से टकरा गया. वह चौपाटी पर पैंट की जेब में हाथ डाले घूम रहा था. उन्हें कुछ क्षण तो एकदूसरे को पहचानने में लगे. एकदूसरे को पहचानते ही दोनों ने एकदूसरे को बांहों में जकड़ लिया. थोड़े हालचाल पूछने के बाद मयंक ने कहा, "तेरा साला पिछले वर्ष बंबई आया था."

"मेरा साला?" सुधांशु की आंखें आश्चर्य से फैल गईं, "मेरी तो अभी तक बीवी ही पैदा नहीं हुई तो साला कहां से पैदा हो गया?"

"क्या तू ने शादी नहीं की?"

"नहीं..."

"तो रवि कौन है? रवि चतुर्वेदी?"

> **उत्तरदायित्व**
>
> *अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक होता है. जब हम राह भूल कर भटकने लगते हैं, तब यही ज्ञान हमारा विश्वसनीय पथप्रदर्शक बन जाता है.* — प्रेमचंद

"किस रवि की बात कर रहा है? कहीं होलीपुरा वाले रवि की बात तो नहीं कर रहा है. दुबलापतला मध्यम कद का लड़का है. उस के ऊपर का एक दांत टेढ़ा है."

"हांहां, वही."

"तू किस के चक्कर में पड़ गया. वह तो महा चार सौ बीस है."

"उस के पिता हरिद्वार के मेडिकल कालेज में अधीक्षक हैं."

"मेडिकल कालेज में? वह तो एक मामूली से स्कूल में किरानी हैं. उन के छः बच्चे हैं. रवि उन में सब से बिगड़ा लड़का है. दूसरे शहरों के चतुर्वेदी परिवारों के लोगों के पते ले कर ऐसे ही लोगों को ठगता रहता है. मांबाप बहुत शरीफ हैं. उस पर काबू पाने में असमर्थ हैं."

मयंक के घर लौटते ही रीता ने बुझे स्वर में बताया, "रवि ने दीदी के यहां हमारी चादरें लौटा दीं.

"चलो, कुछ तो लौटाया लेकिन तुम यह बात इतना मुंह लटका कर क्यों बता रही हो?"

"इसलिए कि वह दीदी की अलमारी से 5,000 रुपए निकाल कर ले गया?"

"कैसे?"

"दीदी को तो मैनपुरी गए हुए दो महीने ही हुए हैं. वह तुम्हारे चाचा का लड़का बन कर पहुंचा था. वह चादरें दीदी ने ही मेरी शादी में दी थीं, इसलिए उन्होंने उन्हें पहचान लिया. तुम्हारा भाई जान कर खूब खातिर भी की. जब वह एक दिन बाजार गईं तो अलमारी की चाबी घर पर ही भूल गईं. पीछे वह रुपए ले कर चंपत हो गया. जेवरों को तो उस ने हाथ ही नहीं लगाया."

"न हम उसे घर ठहराते, न हमारे जानपहचान वालों पर इतनी मुसीबत आती."

"आगे से अब किसी को इस तरह नहीं ठहराया करेंगे. ठहराएंगे तो पहले रिश्तेदार या दोस्त का पत्र पढ़ कर ही ठहराएंगे."

"मान लो बिना पत्र के सच ही कोई मुसीबत का मारा आ गया तो?"

इस बात का उत्तर दोनों ही नहीं ढूंढ़ पाए. ●

मेरे पति बहुत ही हंसमुख और हाजिरजवाब हैं. एक बार हम लोग अपने एक रिश्तेदार की शादी में गए हुए थे. वहीं जीजासालियों में हंसीमजाक चल रहा था. मेरी बहनें मेरे पति से छेड़खानी करते हुए बोलीं, "जीजाजी, आप हमारे घर चलिए तो सही, हम आप को सिरआंखों पर बिठा कर रखेंगे."

मेरे पति ने तपाक से उत्तर दिया, "आप हमारे साथ चलिए, हम तो आप को अपने दिल में ही बिठा लेंगे."

मेरी एक बहन बोली, "हम ने तो सोचा था कि दिल में आप ने दीदी को बसा रखा है."

मेरे पति ने झट नहले पर दहला जड़ते हुए कहा, "साली-जी, एक दिल में चार खाने होते हैं. तुम्हारी दीदी समेत तुम तीनों को अलगअलग खानों में रखूंगा." उन के यह कहते ही आसपास ठहाके गूंज पड़े.

— राजी तोमर

*

एक दिन मैं ने अपने पति से कहा, "नाश्ता कर लीजिए."

उन्होंने पूछा, "नाश्ते में क्या बनाया है?"

मैं ने चारपांच चीजों के नाम बताए पर उन्होंने इनकार कर दिया.

झल्ला कर मैं ने कहा, "तो फिर मुझे खा लीजिए."

मेरे पति का जवाब था, "लेकिन मैं तो शाकाहारी हूं."

— कांता सोमानी

*



ये पति



मेरी सहेली बड़ी तुनक-मिजाज है और उस के पति बेहद खुशमिजाज.

मेरी सहेली अकसर पुरानी चीजें बेच कर नई खरीदती रहती है.

एक दिन उन के पति महोदय ने बड़ी मासूमियत से पूछा, "प्रिये, तुम मुझे कब कबाड़ी को बेच कर नया पति लाओगी, क्योंकि तुम्हें पुरानी चीजें पसंद नहीं हैं."

— प्रतीक्षा मित्तल

*

एक पति महोदय अपनी पत्नी से बोले, "जिस दिन तुम ने कहा कि 'आज तुम्हारी दफ्तर में पदोन्नति होगी, तो मेरी नौकरी छूट गई,' दूसरी बार तुम ने कहा कि 'तुम्हारी व श्याम की दोस्ती कितनी अच्छी है' तो हमारी दोस्ती में दरार पड़ गई."

अपना गुस्सा दिखाने के बाद पति महोदय ने ठंडी सांस ली और सहज भाव से बोले, "अब तो मुझे उस दिन का इंतजार है, जिस दिन तुम बोलो कि हमारी जोड़ी कितनी अच्छी है."

— संजय खुराना

*

मेरी शादी हुए अभी कुछ महीने ही हुए थे, तभी ससुराल में मेरी जेठानी के बेटा हुआ. सासूजी ने काफी मेवा आदि डाल कर जेठानीजी के लिए पंजीरी बनाई. जब थोड़ी सी मुझे भी खाने को दी गई तो उसे खाते ही मेरे मुंह से निकला, "पता नहीं, मेरे लिए माताजी कब ऐसी स्वादिष्ट पंजीरी बनाएंगी?"

यह सुनते ही पास खड़े मेरे पति बोले, "ऐसी पंजीरी तो जब तुम चाहो तभी तुम्हें मिल सकती है, बस तुम हां तो करो." उन की बात का अर्थ समझते ही मैं बुरी तरह झेंप गई.

— दुर्गेश मेहरोत्रा

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

मृगतृष्णा

कहानी ● सुलक्षणकुमार

"महेशजी, आप खुद को समझते क्या हैं? आप हैं कौन, मेरे और जावेद के बीच में दरारें पैदा करने वाले? अब कभी मुझ से बात करने की कोशिश मत कीजिएगा," सभी कुछ तो वह एक ही सांस में कह गई थी.

वे शब्द देर तक मेरे कानों में टूटे कांच की तरह चुभते रहे. आखिर मैं ने ऐसा क्या कर दिया या कह दिया, जो शबाना को इतना खल गया. मेरा कभी भी ऐसा प्रयास नहीं रहा था कि शबाना व जावेद के बीच में मतभेद पैदा हों.

आज न जाने क्यों यादों के दायरे मेरे चारों तरफ घिरने लगे हैं...

आज से लगभग पांच वर्ष पहले मेरे कार्यालय में एक बहुत ही सुंदर, दुबलीपतली लड़की ने प्रवेश किया. उसी दिन उस की नियुक्ति हुई थी. पहले ही दिन मैं ने उसे अपने साथ भोजन करने का निमंत्रण दिया, जो कि मान लिया गया. बाद में यह क्रम रोज ही शुरू हो गया. उस का नाम शबाना था.



एक दिन बाहर आंधी आ रही थी. दफ्तर से छुट्टी होने पर मैं ने कहा, "अरे शबाना, देखना आज आप हवा में उड़ जाएंगी."

"अरे नहीं, मैं पेपरवेट अपने सिर पर रख लूंगी," उस ने कहकहा छोड़ा. इसी तरह दिन बीतने लगे.

मुझे लगा कि मैं शबाना की तरफ आकर्षित हो रहा हूं. एक बार सोचा कि क्या यह उचित है? फिर दिमाग में बात आई कि चलो, कल शबाना से खुल कर बात कर लूंगा कि मैं उसे चाहने लगा हूं.

दूसरे दिन शबाना ने दफ्तर में आते ही सब के सामने मिठाई का डब्बा खोल कर रख दिया तथा बोली, "परसों मेरा निकाह है, जावेद मियां से. सब कुछ कल रात ही तय हुआ है. आप सब को मेरी मदद करनी पड़ेगी क्योंकि ढ़ेर सारी खरीदारी करनी है."

सब ने उसे मुबारकबाद दी. मैं ने भी बुझे मन से उसे बधाई दी. मैं क्या सोच कर आया था और क्या हो गया.

दूसरे दिन सुबह ही मुझे बुखार हो गया तथा शबाना की शादी में भी इसी वजह से मैं शरीक न हो सका.

दस दिन बाद जब मैं दफ्तर गया तो पता चला कि शबाना भी एकदो दिन बाद दफ्तर आना शुरू कर देगी.

दूसरे दिन जब मैं बस स्टाप पर पहुंचा तो मुझे एक झटका सा लगा, शबाना वहां खड़ी थी.

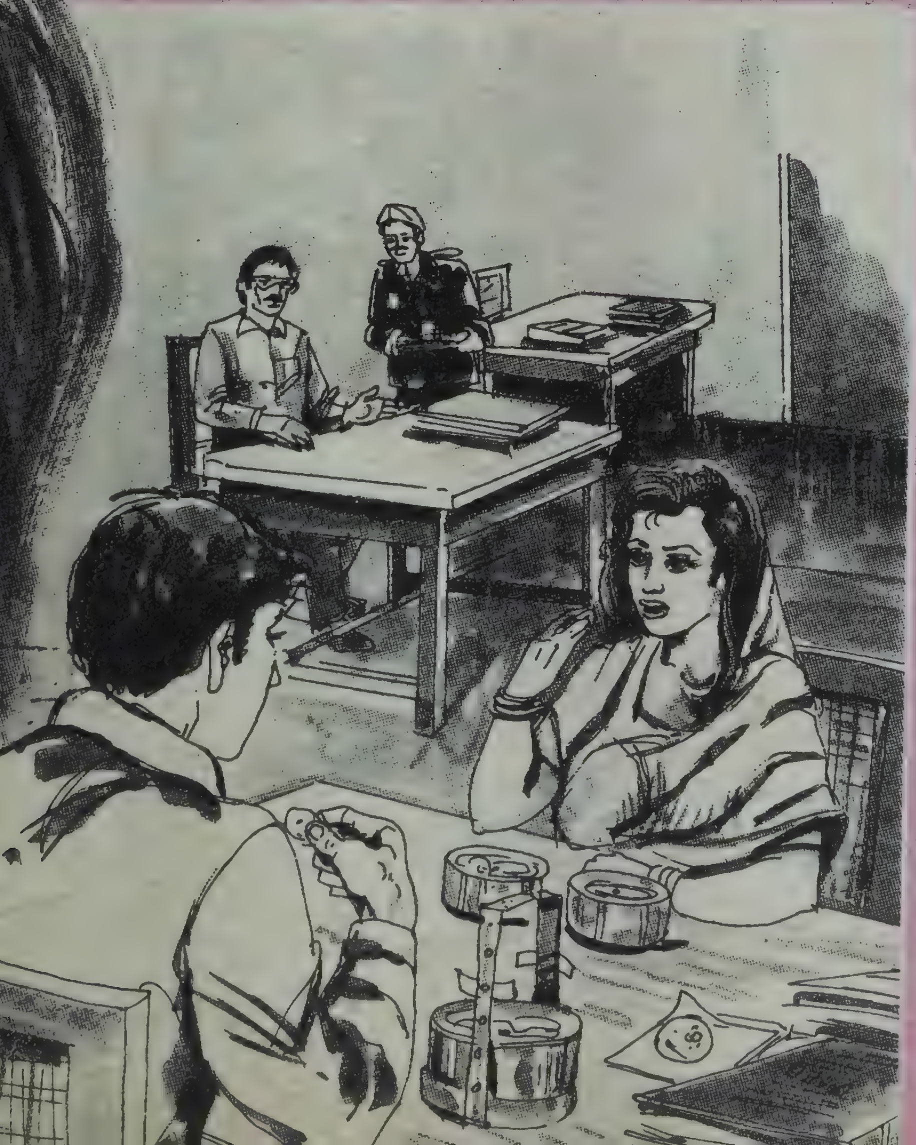
"अरे, तुम यहां?" मैं ने प्रश्न किया.

वह बोली, "जावेद का एक मकान यहां भी है और हम यहां पर ही रहेंगे."

मैं ने उसे अपनी चार्टर्ड बस की सदस्यता दिलवा दी थी. एक दिन उस से पूछा, "तुम्हारे पति कहां नौकरी करते हैं?"

"वह भी हमारे दफ्तर के पास 'डी' ब्लाक में कार्य करते हैं. आजकल उन की

शबाना के प्रति महेश का आकर्षण इतना बढ़ गया कि जावेद से उस का निकाह हो जाने के बावजूद उस में कोई कमी नहीं आई, परंतु एक दिन उसे एहसास हो गया कि यह आकर्षण मात्र एक मृगतृष्णा है. लेकिन उस के बाद उस ने जो कदम उठाया उस की तो किसी ने कल्पना न की थी.



शाम की ड्यूटी चल रही है, इसलिए मेरे साथ नहीं आते," शबाना ने उत्तर दिया.

एक दिन शाम को जब शबाना और मैं दफ्तर से वापस आ रहे थे तो मेरे मुंह से अचानक पता नहीं कैसे निकल गया, "शबाना, तुम इतनी सुंदर क्यों हो?"

"क्या मतलब है आप का?" उस ने उलटा मुझ से प्रश्न कर दिया.

मैं ने उत्तर नहीं दिया. हां, इस बात का यह असर हुआ कि शबाना मुझ से कई दिनों तक नहीं बोली.

मैं अकसर सोचता, 'आखिर यह आकर्षण अब खत्म क्यों नहीं हो जाता? अब शबाना किसी और की बीवी है.' परंतु मैं क्या करता, शबाना को देखते ही न जाने क्या हो जाता था मुझे.



आंसू

तुझ को मेरी कसम है
आंसू न बहाना,
इक यही तो तेरे साथी हैं
इन्हें खो न देना.

—आग्नी महाजन

एक शाम शबाना को मैं ने कहा, "अभी तक गुस्सा नहीं उतरा, शायद मुझे कहानी लिखनी पड़े, 'शबाना के बिना दस दिन'... अब तो मान जाओ."

"आप मुझ से वादा कीजिए कि आप फिर कभी ऐसी बात नहीं करेंगे," शबाना ने कहा.

"मैं ने अपने दिल की बात कही थी. तुम बहुत सुंदर हो, तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो. मुझे पता है कि यह सब उचित नहीं है, परंतु मेरे बस की बात नहीं है. तुम्हें देख कर न जाने क्यों मैं पागल सा हो जाता हूं. शायद..."

"आप मुझ से कोई उम्मीद न रखें तथा मृगतृष्णा के पीछे मत भागें. आगे आप खुद समझदार हैं," शबाना ने बेरुखी से कहा.

अब मैं उसे कैसे समझाता कि वह अनजाने में ही मेरे सपनों की मलिका बन बैठी है.

मैं ने कहा, "मेरी वजह से तुम्हें कभी भी कोई कष्ट नहीं उठना पड़ेगा, शबाना... तुम्हें भूलना मेरे बस में नहीं है..."

उस ने गुस्से से उत्तर दिया, "यह तुम्हारा जुनून तुम्हें तकलीफ पहुंचाएगा."

अगले दिन सुबह जब मैं बस स्टाप पर पहुंचा तो देखा कि शबाना के साथ एक व्यक्ति खड़ा है. पास जाने पर शबाना ने मिलवाया, "यह मेरे पति हैं, जावेद."

मैं ने जावेद से हाथ मिलाया और कहा, "बड़ी खुशी हुई आप से मिल कर."

जावेद ने बताया कि उस की अब 15 दिन तक सुबह की ड्यूटी है तथा वह भी शबाना के साथ ही चार्टर्ड बस में जाया करेगा.

तीनचार दिन में ही जावेद मेरा अच्छा दोस्त बन गया. परंतु मुझे लगा कि शायद शबाना को हमारी दोस्ती पसंद नहीं है.

एक दिन हम चार्टर्ड बस में इकट्ठे दफ्तर की तरफ जा रहे थे. शबाना ने जावेद से कहा, "ड्राइवर कितना आहिस्ता बस चला रहा है... मेरा तो दिल घबरा रहा है, गरमी की वजह से."

"अपने अब्बा से कह कर एक कार मंगवा लीजिए," जावेद ने हंसते हुए कहा.

शबाना को शायद उस का उत्तर बुरा लगा. वह सारे रास्ते चुपचाप बैठी रही.

दफ्तर पहुंच कर मैं ने शबाना से कहा, "देखा, सभी पति एक जैसे होते हैं..."

"आप चुप रहिए, जावेद ऐसा नहीं है. उस ने कार की बात मजाक में कही है... वह लालची नहीं है. मेरे अब्बा उसे पसंद नहीं करते, परंतु वह फिर भी मेरे अब्बा की इज्जत करता है," शबाना मेरी बात काटते हुए चिल्ला उठी.

मुझे याद आया कि शबाना ने मुझे बताया था कि उस का लालनपालन उस के नानानानी ने किया था, क्योंकि उस की अम्मी व अब्बा की कभी आपस में नहीं बनी थी. शबाना को उन की रोजरोज की लड़ाई पसंद नहीं थी. इसी वजह से उस का चुनाव, यानी कि जावेद भी उस के अब्बा को पसंद नहीं था.

शाम को जब मैं घर पहुंचा तो मेरे दिमाग में आंधियां चल रही थीं. मैं ने सोचा, 'शायद मेरी वजह से शबाना व जावेद के

संबंधों में कड़वाहट घुल रही है, पर मैं ने कभी भी ऐसा नहीं चाहा था.'

मैं कुछ सोच कर जावेद के दफ्तर की तरफ चल पड़ा. वहां पहुंच कर मैं ने उस से कहा, ''जावेद, आज मैं आखिरी बार तुम से मिलने आया हूं. शायद मेरी वजह से तुम्हारे तथा शबाना के बीच में कुछ मतभेद हो गए हैं...''

मुझे बीच में टोक कर जावेद ने कहा, ''ऐसा कुछ नहीं है दोस्त.''

मैं ने अपनी बात जारी रखी, ''परंतु न जाने क्यों, शबाना को ऐसा ही लगता है. मैं नौकरी छोड़ रहा हूं और यह शहर भी. शबाना एक अच्छी स्त्री, एक अच्छी दोस्त, एक अच्छी पत्नी है... उस का खयाल रखना. उसे सदा खुश रखने का प्रयास करना मेरे दोस्त.''

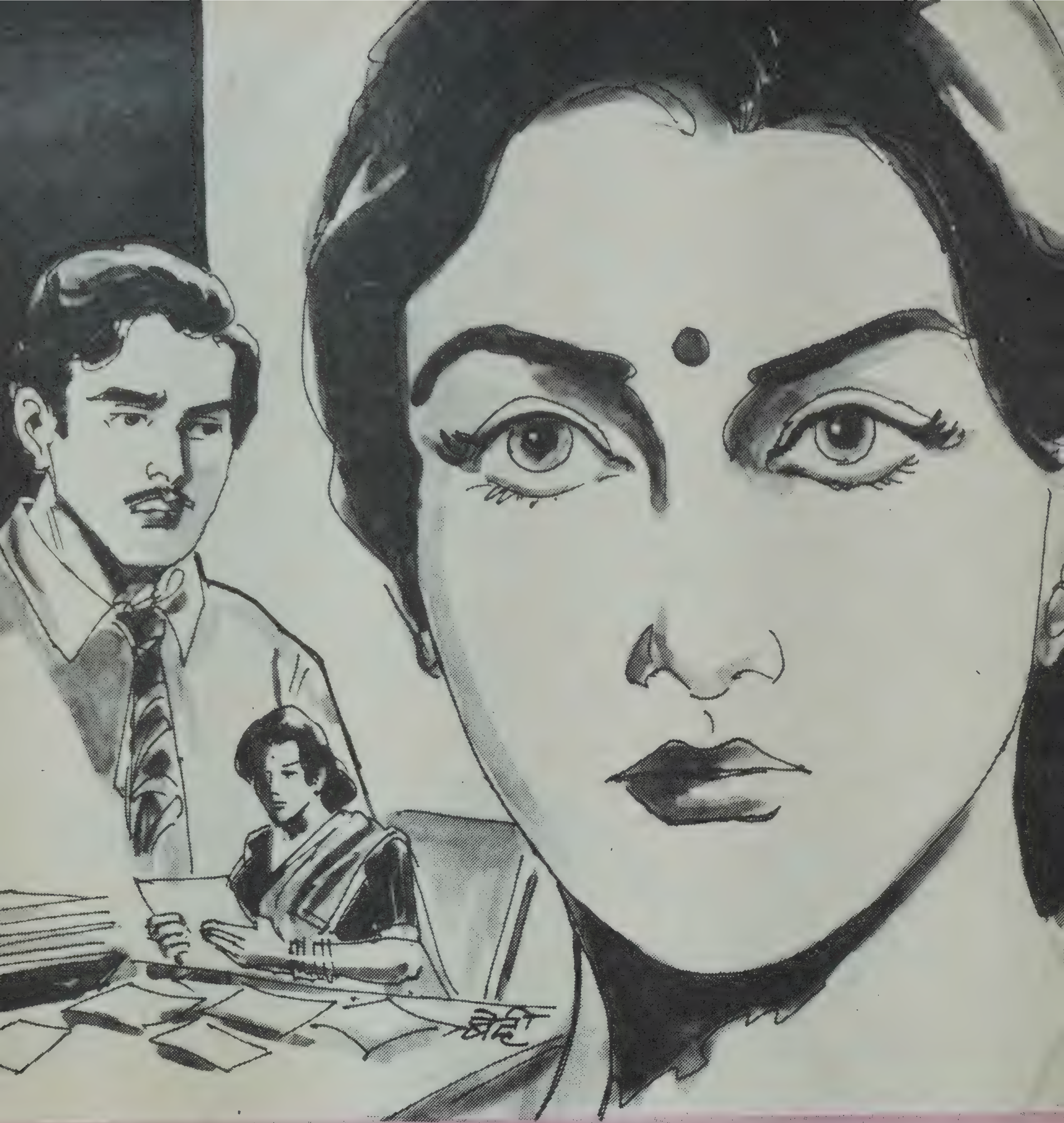
उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना मैं जावेद के दफ्तर से निकल कर बाहर आ गया. उस के बाद मैं ने नौकरी छोड़ दी व जयपुर जा कर बस गया...

पहली जनवरी को एक बजे के करीब डाकिया कुछ कार्ड व पत्र दे गया. मैं ने पत्र खोल कर पढ़े तथा कार्ड एक तरफ रख दिए. तभी अचानक मेरी नजर उन में से एक कार्ड पर पड़ी, लिखावट जानीपहचानी सी लगी.

'अरे, यह तो शबाना की लिखावट है.' मैं ने झट से लिफाफा खोला. अंदर एक बहुत ही सुंदर नववर्ष का कार्ड निकला, जिस पर लिखा था, नए साल की बहुतबहुत मुबारकबाद, कोई गलती हो तो क्षमा करें.

शबाना/जावेद

मुझे यह समझ नहीं आ रहा था कि शबाना मुझ से माफी मांग रही है या मुझे माफ कर रही है? ●



भविष्य

सरिता, बीस साल पहले, जून (द्वितीय) 1973

कहानी • प्रेम दीवान

नौ बज चुके थे. दफ्तर जाने में देर हो गई थी. महेंद्र ने झटपट गले के गिर्द टाई लपेटी, नाट बांधी, जूते पहने और फिर बाहर नल से हाथ धो कर रसोई के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ. रोज उस की

पत्नी लता उसे एक प्लेट में नाश्ता देती थी जिसे वह वहीं खड़ेखड़े खा कर दफ्तर चला जाता था.

लेकिन आज रसोई में कुछ अजीब सी अव्यवस्था दिखाई दी. न स्टोव जल रहा था, न कहीं आटा गुंधा दिखाई दिया और न कहीं सब्जी बनने के आसार दिखाई दे रहे थे. लता भी वहां नहीं थी.

''कहां गई?'' बड़बड़ाता हुआ वह अंदर चला गया, मगर वह वहां भी नहीं थी.

''लता...'' उस ने पुकारा लेकिन उत्तर नहीं मिला. खीझ से भरा हुआ वह स्टोर की ओर बढ़ गया. दरवाजे से ही उसे दिखाई दे गया कि वह वहीं थी और दीवार पर टंगे आईने के सामने खड़ी अपने दफ्तर जाने के लिए तैयार हो रही थी.

महेंद्र का क्रोध भड़क उठा. भिन्नाता हुआ वह बोला, ''यह क्या मजाक है, मुझे देर हो रही है और तुम यहां हो...''

''मुझे भी तो जाना है...'' लता ने छोटा सा उत्तर दिया लेकिन वाणी में जो व्यंग्य था, वह बहुत गहरा था.

''आज कोई नई बात है? क्या रोज नहीं जाती हो तुम?''

''रोज देर से पहुंचती हूं, आप को कुछ पता भी है?''

''तुम ने पहले तो कभी नहीं कहा.''

''जो कहती हूं, वही कौन सा आप की समझ में आता है,'' लता व्यंग्यभरी तीखी आवाज में कहती गई, ''कल आप से कहा नहीं था कि अगर आप राशन नहीं लाएंगे तो खाना नहीं बनेगा?''

महेंद्र को एक धक्का सा लगा. उसे याद आया, लता ने कल उस से राशन लाने के लिए कहा था, साथ ही गेहूं पिसा लाने के लिए भी. लेकिन ये दोनों काम उसे इतने भद्दे लगते हैं कि उस ने साफ इनकार कर दिया था. जो उत्तर उस ने कल दिया था, वही उस ने आज भी दिया, ''मैं ने तुम से कहा नहीं था कि मुझे ये थैले लटकाए जाना अच्छा नहीं लगता.''

''तो मुझ से भी नहीं होते ये काम. मैं कोई नौकरानी तो नहीं हूं तुम्हारी. राशन की व्यवस्था भी मैं करूं, कपड़े भी मैं धोऊं, खाना भी मैं पकाऊं, बच्चे की देखभाल भी करूं. वाह, अच्छी नौकरानी मिली तुम्हें तो...''

ऐसी कड़ी बातें सुन कर महेंद्र कुछ देर तो लता का मुंह देखता रहा, फिर कमजोर आवाज में बोला, ''तो इस का मतलब यह है कि आज कुछ नहीं बनेगा.''

लता ने कोई उत्तर नहीं दिया.

''ठीक है,'' हारी हुई आवाज में वह क्रोध से बोला और बाहर आंगन में निकल गया. वहां से उस ने साइकिल उठाई और उसे

''मैं तुम्हारी नौकरानी नहीं हूं. राशन की व्यवस्था भी करूं, खाना भी बनाऊं, बच्चे को भी संभालूं,'' लता गुस्से से बोली.



बिना साफ किए बाहर निकल गया. आज उस ने घिसटघिसट कर वहां पहुंचे अपने एक वर्षीय बेटे पम्मी को 'टाटा' भी नहीं किया.

लता अभी तक कंघी कर रही थी. उलझे हुए बालों में जैसे कंघी फंस रही थी वैसे ही उसे अपना हृदय भी कहीं फंसा हुआ सा लग रहा था. कुछ देर तक वह अपनेआप को समझाती रही कि उस ने ठीक किया, इसी तरह कुछ समझेंगे यह. वह नौकरानी बन कर नहीं आई थी इस घर में. लेकिन अपने मन की निचली तह में बड़े वेग से उफन रही बेचैनी भी नहीं दबा पा रही थी वह. जैसे रूठे बच्चे के भूखे स्कूल चले जाने पर मां की दशा होती है, कुछ ऐसी ही तड़प वह महसूस कर रही थी. यह ठीक नहीं हुआ था, ऐसा नहीं होना चाहिए था, उस का यह मतलब थोड़े ही था.

यह मुंहफट उत्तर सुन कर उस की सास सकते में आ गई. चांटा खाए हुए कमजोर व्यक्ति की तरह बड़बड़ाई, "तुम से तो बात करना ही मुहाल है, खाने को पड़ती हो. मैं ने पूछा ही क्या है तुम से, यही न..."

"तो मैं ने क्या काट लिया है आप को?" तेज उत्तर देती लता सास से कन्नी काट कर बाहर निकल गई.

कुछ देर बाद जब टकटक की आवाज के साथ स्टोव में हवा भर रही थी तो उसे सास की ऊंचीऊंची बड़बड़ाहट साफ सुनाई दी, "नौकरी क्या करती है, दिमाग जमीन पर नहीं रहता. यही घमंड है न, चार पैसे लाती है. एक मूर्ख तो हम हैं जो बिना तनख्वाह के नौकरी भी करते हैं और गालियां भी सुनते हैं. मैं तो कहती हूं, जिस घर में बहू नौकरी करती हो, वहां सास का क्या काम? खुद मरोजियो, जो मरजी में

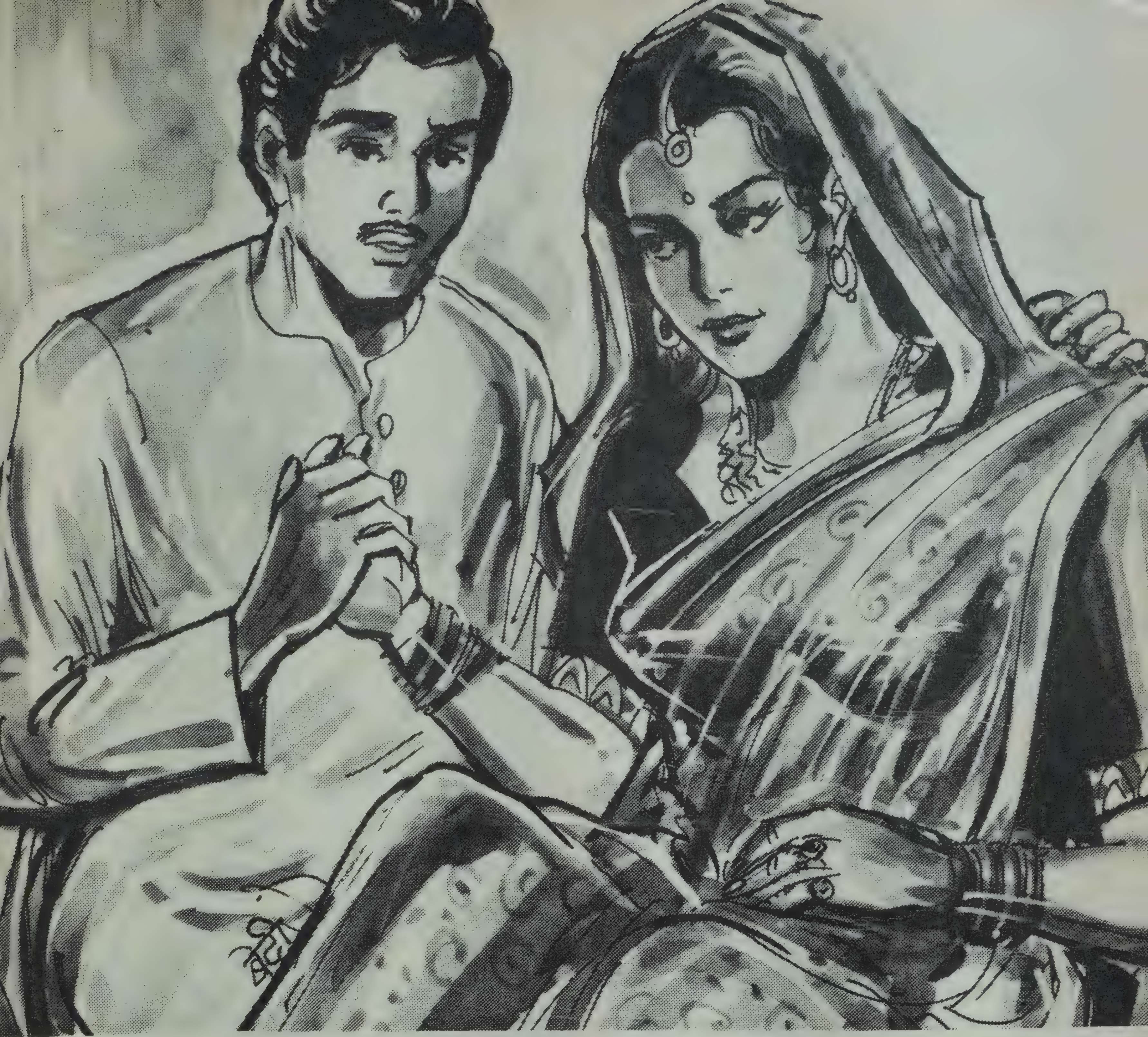
महेंद्र के खुशहाल व सुखी भविष्य के सपने को पूरा करने के चक्कर में लता दोहरी जिम्मेदारियों के बीच लगातार पिस रही थी और महेंद्र को इस का एहसास तक न था. जिंदगी की इस भागदौड़ से त्रस्त लता ने जब विद्रोह की घोषणा कर दी तो महेंद्र परेशान हो उठा. लेकिन क्या तब भी वह अपनी जिम्मेदारी समझ सका?

इतने में उस की सास ने उसे पुकारा. लता ने कोई उत्तर नहीं दिया. क्रोध ने उस का विवेक जड़ कर दिया था. उत्तर नहीं मिला तो उस की सास स्वयं चली आई, "क्या बात थी, लता? महेंद्र आज भूखा क्यों चला गया?"

लता का दिल तो पहले ही भरा हुआ था, उस पर यह जिरह हुई तो वह सहन न कर सकी. अपना क्रोध सास पर निकालते हुए बरस पड़ी, "मुझ से क्या पूछती हैं, उन्हीं से पूछ लेना."

आए, करो. मुझे क्या लेनादेना है तुम से?"

बोलतेबोलते वह रोने भी लगी थी. लता को यह सुनाई दिया था, लेकिन फिर स्टोव जल उठने से वह स्वर विलीन हो गया था और उस का स्थान ले लिया था उस के अपने हृदय की आग ने जो भांयभांय करती स्टोव की तरह जल रही थी. उसे मालूम ही न हुआ कि कब दूध गरम हुआ, कब उस ने पम्मी को पिलाया और वह हाथ में पर्स लटकाए बस स्टाप पर पहुंची...भूखी.



"हमें इसी फर्श से ऊपर उठना है लता, तुम मेरा साथ दोगी न?" महेंद्र भावुक आवाज में बोला.

घर से निकलने के बाद लता एक दूसरा ही जीवन आरंभ करती है...औरत के रूप में मर्द की जिंदगी. क्यू में खड़े हो कर उसे बस पकड़नी होती है. चूंकि वह वहां अकसर देर से पहुंचती है इसलिए लाइन में पीछे होने के कारण धक्कमधक्का कर के भी चढ़ जाती है. उस समय वह इस की चिंता नहीं करती कि किसी ने उस के अंगों को जानबूझ कर मसल दिया है या उस के शरीर को कोई ललचाई दृष्टि से देख रहा है. वह अनजान बन जाती है क्योंकि दफ्तर पहुंचना आवश्यक होता है. आज भी उसे कुछ ऐसी ही हालत में बस पर चढ़ना पड़ा था.

दफ्तर पहुंच कर हाजिरी के रजिस्टर पर दस्तखत करने के बाद वह अपनी सीट पर बैठी तो उसे कराहत सी महसूस होने लगी. ट्रे में बहुत सा काम बाकी पड़ा था जो लगभग सारा का सारा जरूरी था. छुट्टी की अरजियां थीं, जिन्हें व्यक्तिगत फाइलों में लगा कर नोट के साथ पेश करना था. उस के पास ये अरजियां कई दिन पहले आई थीं. लेकिन वह इन्हें टालती रहती थी. शायद घर में इतना काम रहता था कि यहां पहुंचतेपहुंचते कुछ करने के लिए मन ही न रहता.

पिछले कई महीनों से उसे दफ्तर के छोटेछोटे काम भी पहाड़ लग रहे थे और

वह उन्हें टालती रहती थी. सोचती, 'चाय के बाद शुरू करेगी.' चाय के बाद एकाध कागज ही इधरउधर होता कि सहेलियां आ जातीं और गपशप शुरू हो जाती. वेतन आयोग की रिपोर्ट और संभावित तनख्वाहें बढ़ने की चर्चा से ले कर सास, बच्चे, स्वेटरों के नमूनों और आजकल में देखी फिल्मों आदि के विषयों पर बातें होतीं. फिर दोपहर के खाने का समय हो जाता और उस के बाद तो काम करने का जरा भी मन नहीं रहता.

लेकिन कल अचानक साहब ने उस की ट्रे देख ली थी. उन्होंने जब इतना काम बाकी देखा तो उसे डांटा और आदेश दे दिया कि आज दोपहर से पहले सारे केस उन की मेज पर पहुंच जाने चाहिए.

ट्रे पास सरका कर लता ने एकएक कर के सारे कागज बाहर निकाले, लेकिन जब उन्हें पूरा करने के लिए फाइलें निकालने और मगज खपा कर नोट लिखने की मुसीबत उस की आंखों के सामने आई तो उस ने वे कागज उलटपलट कर फिर ट्रे में रख दिए. आज तो उस का जरा भी मन नहीं था. न जाने क्या बात थी जो उसे इस वातावरण से बगावत करने पर उकसा रही थी. उसे आज पिताजी की नसीहत याद आ रही थी. विवाह से दोतीन साल पहले उन्होंने उसे खूब अच्छी तरह समझाया था कि ससुराल पहुंचते ही अपने पति से पहली बात यह मनवाना कि तुम्हें नौकरी नहीं करनी. लेकिन वह मूर्ख थी जो महेंद्र की बातों में आ गई.

"क्या सोच रही हो, श्रीमती चावला?"

वह चौंक उठी, उस की सहेली मीरचंदानी उस के पास खड़ी थी. लता संभल गई. फिर चेहरे पर बनावटी मुसकराहट ला कर बोली, "नहीं...कुछ भी तो नहीं."

"चाय पीने नहीं चलना क्या?" श्रीमती मीरचंदानी ने पूछा.

"हांहां," कहती हुई लता यंत्रवत उठ खड़ी हुई. काम टालने के लिए इस से अच्छा बहाना और क्या हो सकता था?"

दोनों साथसाथ कैंटीन की ओर बढ़ीं तो रास्ते में श्रीमती मीरचंदानी अपनी तरक्की का किस्सा ले बैठी. वरीयता के अनुसार वह आगे थी लेकिन अधिकारी अड़ंगा लगा रहे थे. कहते थे, सर्विस रिकार्ड ठीक नहीं. वह विभाग के अध्यक्ष से कई बार मिल चुकी थी लेकिन वह मीठी बातों से ही टाल देता था. आज भी मिल कर आई थी. उस ने उसे ऐसी मोटी गाली दी जैसे मर्द दिया करते हैं.

कैंटीन में पहुंच कर वे महिलाओं की सीट पर जा बैठीं. श्रीमती मीरचंदानी अभी तक अपने केस के बारे में अपने पक्ष के नुक्ते बता रही थीं लेकिन लता का ध्यान कहीं और था. वह उस भीड़ में बैठी हुई भी अकेली थी...अपनी एक अलग दुनिया में.

उसे विवाह के बाद अपनी सुहागरात की याद आ रही थी. यों विवाह से पहले ही उसे बता दिया था कि महेंद्र की केवल मां है और उस की अच्छी नौकरी है. वह पहाड़गंज में एक किराए के मकान में रहता है. वह समझदार और हिम्मती है. इन्हीं दिनों वह असिस्टेंट का इम्तहान पास कर के सेक्रेटेरियट में लगा है.

उस ने कल्पना भी नहीं की थी कि जिस किराए के मकान में वह रहता है, वह केवल एक छोटा सा कमरा है, जिस के साथ एक छोटा स्टोर है और बरामदे में चिक डाल कर रसोईघर का काम लिया जाता है.

बाहर दरवाजे पर तेल चूने की रस्म पूरी कर उसे जब उस कमरे में लाकर बैठाया गया तो उसे बड़ा अजीब लगा. फिर रिश्तेदारों और पड़ोस की औरतों के साथ हंसीमजाक और उस की महेंद्र के साथ पानी में अंगूठी ढूंढ़ने की रस्म हो चुकी तो एकएक कर के सभी कमरे से चली गईं और उसे तब पता चला कि उसे अपनी सुहागरात उसी कमरे में मनानी है.

फर्श पर एक ओर बिछे बिस्तरों को देख कर उसे बड़ा अजीब लग रहा था. वह आश्चर्य और कुछ निराशा से देख रही थी कि महेंद्र उस के पास सरक आया. शायद उस बेढंगे बंदोबस्त पर वह स्वयं भी शर्मिंदा था. इसलिए क्षमा मांगती हुई सी आवाज में बोला, "क्षमा करना, हम तुम्हारा स्वागत अच्छी तरह से नहीं कर सके. मैं शर्मिंदा हूं..."

वह खामोश रही. महेंद्र भी कुछ देर खामोश रहा. फिर लता के हाथ अपने हाथों में ले कर वह बड़ी भावुक आवाज में बोला, "हमें इसी फर्श से ऊपर उठना है, लता. तुम मेरा साथ दोगी न?"

फिर उसी क्षण न उसे फर्श पर बिछे बिस्तरे बुरे लगे और न वह उधड़े पलस्तर वाला कमरा. उसे सब कुछ अच्छा लगा और उस ने अपना तनमन दोनों सच्चे हृदय से महेंद्र की बांहों में सौंप दिए.

इस के बाद उस के पिता और भाई ने उस से कई बार पूछा था कि वह नौकरी कब छोड़ रही है लेकिन वह उन्हें टाल गई. महेंद्र की आर्थिक अवस्था देखते हुए उसे स्वयं यह बात मूर्खतापूर्ण लगी. बात सच भी थी. यदि दो तनख्वाहों का सहारा न होता तो विवाह पर लिया गया महेंद्र का कर्ज कैसे उतरता. ढाईतीन वर्षों में उन्होंने न केवल कर्ज उतारा था, बल्कि एक बनाबनाया फ्लैट लेने के लिए पैसे भी जमा करा दिए थे. एकाध महीने में उन की बारी भी आने वाली थी. महेंद्र बता रहा था कि वजीरपुर में बनने वाले फ्लैटों में से एक के मिलने की पूरी आशा है.

चाय पी जा चुकी थी इसलिए श्रीमती मीरचंदानी खड़ी हो गई. लता को तो कुछ याद नहीं था कि चाय कब आई और कब पी गई. चूंकि खाली प्याला गवाह था इसलिए वह भी उठ खड़ी हुई. वह वापस तो चल पड़ी लेकिन काम करने का उस का जरा भी मन नहीं था. रहरह कर सुबह की घटना उसे बेचैन कर रही थी.



याद

तुम्हें भूलना चाहते हैं
फिर क्यों याद आते हो,
जब से बिछड़े हो
आवाज दिए जाते हो,
तलखियां जमानेभर की पिला दे मुझे
क्यों इस तरह नजर अंदाज किए जाते हो.

—चांदनी

वह अपनी सीट पर पहुंची तो सामने साहब खड़े थे और पूछ रहे थे, "श्रीमती चावला, 11 बजने को आए हैं और अभी तक आप की एक भी फाइल नहीं पहुंची मेरे पास."

"जी, बस, अभी शुरू करती हूं," हकलाते हुए उस ने बड़ी कठिनाई से उत्तर दिया.

"क्या?" वह चौंक कर बोले, "अभी शुरू करनी हैं. कल मैं ने आप से कहा नहीं था कि पहले ही बहुत देर हो चुकी है. मेरे कहने के बावजूद आप लापरवाही बरत रही हैं, यह ठीक नहीं है..."

बड़ी कड़वी आवाज में उन्होंने यह डांट दी थी. लता बुत बनी खड़ी रह गई. कोई उत्तर होता तो देती. वह डांट कर चले गए तो उस की आंखें भर आईं. यह भी क्या जिंदगी है...न औरत, न मर्द. न ठीक तरह से घर चलता है और न दफ्तर का काम. क्यों करती है वह नौकरी? यह मर्दों का काम है, जिस ने उस की कोमल भावनाएं भी छीन ली हैं और चेहरे की कोमलता भी. फिर घर जा कर मरती है...कोल्हू के बैल की तरह घर का काम करती है. क्या उसी ने ठेका ले

रखा है घर का? अब वह यह नौकरी नहीं करेगी.

उस ने मेज की दराज खोल कर एक कागज निकाला और पेन खोल कर लिखने बैठ गई. ऊपर सब कुछ लिख कर 'सर' के बाद नीचे लिखने लगी तो डांवांडोल हो उठी.

फिर उसे एकदम विचार आया कि उस की चार आकस्मिक और 20 अर्जित छुट्टियां बाकी पड़ी हैं. क्यों न पहले उन्हें ले ले. यह सोच कर उस ने त्यागपत्र के बजाय छुट्टी की अरजी लिख दी.

अपनी अरजी उस ने साहब के सामने रखी तो उसे पढ़ते ही उन का मुख तमतमा गया. लेकिन उन्होंने काफी समझदारी से काम लिया और उसे जाने की इजाजत दे दी और साथ ही बड़े तलख लहजे में बोले, "अपने सब कागज मुझे देती जाइए."

लता को मालूम था कि उस का सारा काम अब उस के साथी शर्मा को सौंपा जाएगा. वह अपने कागज समेट कर उन्हें देने के लिए साहब की मेज की ओर जाने लगी, तब तक शायद शर्मा को भी सब मालूम हो चुका था. वह उस के पास से गुजरी तो उस ने उसे सुनाते हुए अपने साथी से कहा, "इन लड़कियों की यही मुसीबत है. महीने में जिस दिन काम अधिक होता है, उसी दिन इन की तबीयत खराब हो जाती है और भुगतना हमें पड़ता है."

शर्मा के शब्दों में, 'इन की तबीयत खराब हो जाती है' में जो व्यंग्य था, वह लता के दिल में सूई की भांति चुभ गया. वह खामोश रही और सह गई. ऐसी बातें सुननेसहने की अब तो कुछ आदत सी बन गई थी.

अपने कागज साहब को देने के बाद जब वह दफ्तर से बाहर आई तो उस की समझ में नहीं आया कि अब वह कहां जाए, खोई हुई गाय की भांति वह असमंजस में पड़ी बेमतलब बढ़ी जा रही थी. दिल बेचैन था. पति के साथ वह लड़ आई थी, सास नाराज थी और मायके जा कर मांबाप से कुछ कहेगी तो वे उलटी बातें सुनाएंगे.

कुछ समझ में नहीं आया तो अपनेआप घर की ओर बढ़ गई. दिल में सोचा कि जीना है तो इन धंधों से कहां तक बचेगी. घर पहुंची तो दरवाजा बंद था. उस ने दरवाजा खटखटाया तो थोड़ी देर तक ऐसा लगा कि अंदर कोई था ही नहीं. उस ने दरवाजा फिर खटखटाया तो वह धड़ाक से खुला. वह सामने देख कर चकित रह गई, महेंद्र खड़ा था और उस के हाथ आटे से सने हुए थे.

"तुम!"

"तुम!"

"तुम तो चले गए थे," लता ने महेंद्र की ओर देख कर पूछा.

वह जैसे किसी बात पर शरमा रहा था. हकलाता हुआ सा बोला, "आधे रास्ते से लौट कर आया था. टेलीफोन कर के छुट्टी ले ली. जनाब का हुक्म जो हुआ था कि राशन ले आऊं और गेहूं पिसा लाऊं वरना..."

महेंद्र को सामने देख कर लता को कुछ अजीब तो लगा लेकिन अच्छा भी बहुत लगा. आटे से सने उस के हाथ देख कर उसे ऐसे लगा जैसे उस के हाथों में आटा नहीं, भविष्य चमक रहा है, जिस के वह सपने देख रहा था.

अचानक महेंद्र ने पूछा, "मगर तुम कैसे आ गई?"

लता ने पर्स समेत बांहें उठाईं और उस की गरदन में हार की तरह डालते हुए बोली, "मैं ने भी छुट्टी ली है, खाना बनाने के लिए." •

अंत:करण और न्यायोचित

कायरता पूछती है, "क्या यह भय रहित है?" औचित्य पूछता है, "क्या यह व्यवहारिक है?" अहंकार पूछता है, "क्या यह लोकप्रिय है?" किंतु अंत:करण पूछता है, "क्या यह न्यायोचित है?" — पुंशन

उदार बनें अपव्ययी नहीं

लेख • दिनेश श्रीवास्तव

जीवन को सुखी, समृद्ध और सफल बनाने के लिए अपव्यय पर अंकुश लगाना अत्यंत आवश्यक है. बचत की आदत सब आदतों में उत्तम है. बचत के अनुसार ही मनुष्य के चरित्र का आकलन होता है और समृद्धि की जड़ें भी मजबूत होती हैं.

सभ्य और जंगली मनुष्य में अंतर बताने वाली यदि कोई सीमारेखा है तो वह है बचत. जब मनुष्य धनहीन हो जाता है तो उसे आत्मरक्षा के लिए और लोगों की दृष्टि में अपने सम्मान को बचाने के लिए भयंकर कठिनाई का सामना करना पड़ता है. इसलिए छोटीछोटी बचत के अवसर हाथ से मत जाने दीजिए.

रोम साम्राज्य के दिनों में अपव्यय के जो उदाहरण मिलते हैं वे निश्चय ही चौंकाने वाले हैं. एक ओर तो वहां की जनता भूख से त्राहित्राहि कर रही थी और दूसरी ओर वहां के उच्चवर्ग के लोग एकएक दावत पर लाखों लुटा रहे थे. हीरेमणियों से मढ़े सुरापात्रों में शराब पीते थे, जिन का मूल्य सैकड़ों पौंड होता था. इन दावतों में मोर की खोपड़ी और कोयल व तोते की जबानों के मांस परोसे जाते थे. रोमन स्त्रियां शानदार कीमती परिधान पहनती थीं. ऐसे प्रीतिभोज महज बड़प्पन का दिखावा करने के लिए आयोजित किए जाते थे. परिणामतः बीमारियां फैलीं और लोग अल्पायु में ही मरने लगे.

आज के युग में भी लोग अपनी आय से कहीं अधिक धनराशि दिखावे में स्वाहा



दिखावे के फेर में किया गया खर्च भविष्य के लिए अनेक मुसीबतों को न्योता देता है. इसलिए खर्च करने से पहले उस की अनिवार्यता, उपयोगिता व सार्थकता पर जरूर विचार कर लेना चाहिए. क्या आप भी इन बातों का ध्यान रखते हैं?

कर देते हैं. वाहवाही लूटने के चक्कर में कर्ज ले कर बड़ीबड़ी दावतें किया करते हैं. कर्ज मनुष्य की मर्यादा को बौना बना देता है, चाहे वह कितने ही प्यार से दिया व लिया गया हो.

कर्ज लेना बुराई नहीं है, परंतु अनावश्यक व्यय के लिए कर्ज लेना अभिशाप है. ऋण ग्रस्त व्यक्ति बनावटी जिंदगी जीने पर मजबूर हो जाता है, दिमागी उलझन बढ़ जाती है, दमकता चेहरा झुर्रियों में बदल जाता है, इसलिए एक पैसा खर्च करने से पहले उसे दो बार देखना चाहिए. वस्तु खरीदने से पहले उस की अनिवार्यता, उपयोगिता और सार्थकता पर गंभीर रूप से विचार कर लेना चाहिए.

कीमती कपड़ों और बहुमूल्य जेवरों पर भी लोग बेतहाशा खर्च कर देते हैं. 'शेक्सपियर ने कहा है कि फैशन के कारण जितनी पोशाकें नष्ट होती हैं, उतनी मनुष्य के पहनने से नहीं फटतीं.

अहंकार और ईर्ष्या के वशीभूत हो कर फैशन में पूर्णता लाने के प्रयत्न में हम अपने को निरंतर निर्धन बनाए रखते हैं. घर के धन को खोदखोद कर बाहर फेंका करते हैं. ठाटदार जिंदगी के भूखे ऐशपसंद व्यक्ति को हर पल पैसे की जरूरत होती है. ऐसे लोग कभी भी आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त नहीं कर सकते. खर्च करतेकरते तो कुएं भी खाली हो जाते हैं.

एक अर्थशास्त्री ने लिखा है, 'एक देश अर्थसंकट के समय अपनी जनता की छोटीछोटी बचतों के बल पर अपनी रक्षा कर सकता है.' हम अधिक कमाई के दिनों की अपेक्षा आर्थिक तंगी के दिनों में अधिक धनी बनते हैं. देश का प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन एक पैसे की बचत करे तो सालभर में 85 करोड़ लोगों द्वारा एकत्रित धनराशि की सहज ही कल्पना की जा सकती है. आज के युग में वही संपन्न है जिस के पास बचत रूपी पारस है.

आसमान छूती इस महंगाई के दिनों में बचत करने की कला सभी को आनी चाहिए, खासतौर से उन्हें जो ईद के चांद की तरह महीने में एक बार वेतन के रूप में एकमुश्त पैसे का दीदार करते हैं. वेतन मिलने के बाद प्रारंभिक दिनों में अनावश्यक आकांक्षाएं प्रबल हो जाती हैं. उन को दृढ़तापूर्वक दबाए रखने से बचत की संभावनाएं बढ़ जाती हैं.

राहुल और विनय दोनों पड़ोसी हैं. समान परिवार के साथसाथ समान आय वाले भी हैं. विनय के यहां प्रतिवर्ष कोई न कोई नई वस्तु आ जाती है. उस के रहनसहन के स्तर में कुछ न कुछ उन्नति होती रहती है, जबकि राहुल जहां का तहां ही है.

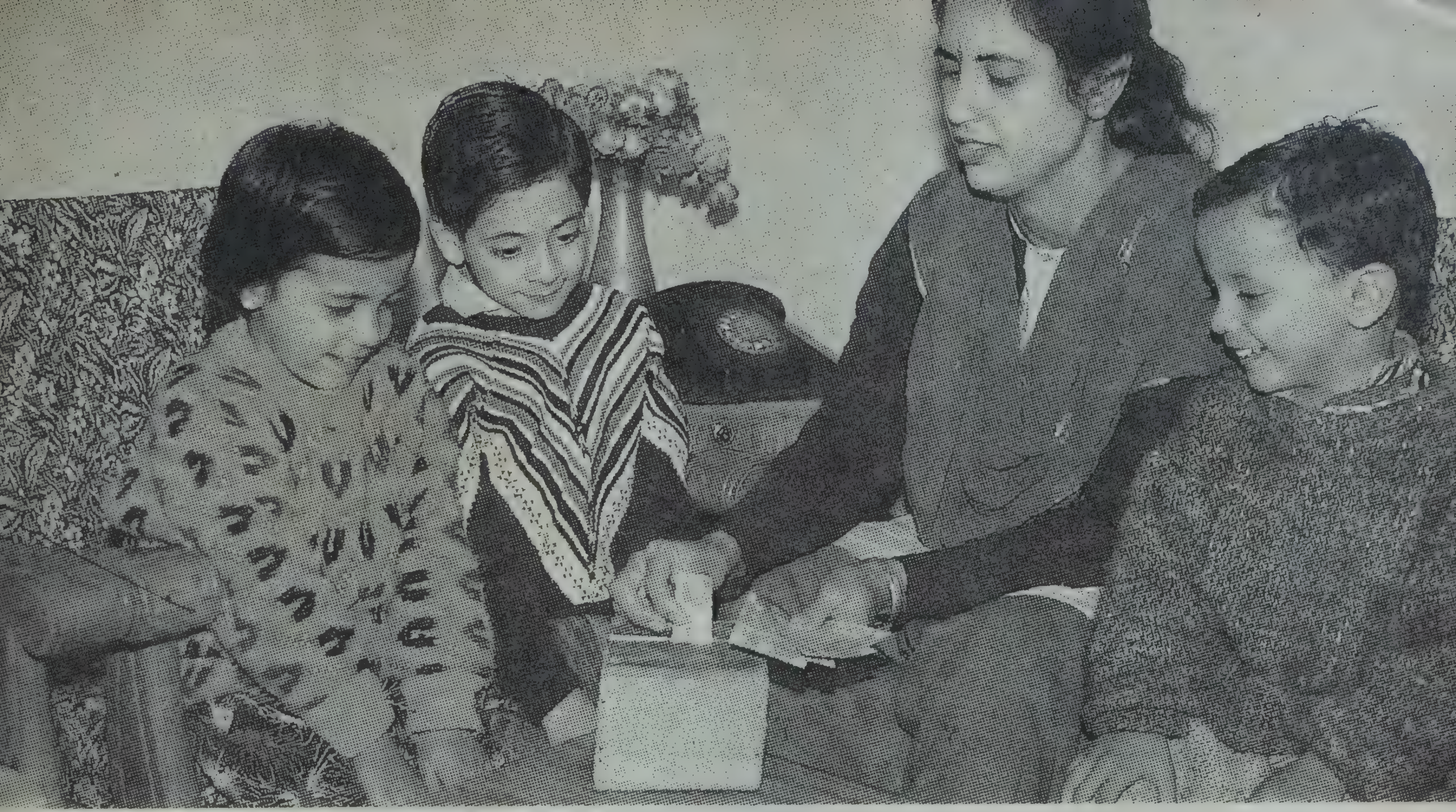
कारण स्पष्ट है. राहुल और उस की पत्नी उड़ाऊखाऊ प्रवृत्ति वाले हैं. पतिपत्नी मितव्ययिता का गलत अर्थ लगाते हैं. दूसरा परिवार सुलझे विचारों का है. विनय की पत्नी रेखा अपने तथा बच्चों के कपड़े

मुफ्त के रूमाल

"देखो, आज मैं तुम्हारे लिए मुफ्त में रूमाल ले आई," पत्नी ने खुशीखुशी पति को बताया.

"अच्छा, पर कैसे?" पति ने आश्चर्य से पूछा.

"सेल की 2 साड़ियों में एक रूमाल मुफ्त मिला है," पत्नी का जवाब था.



स्वयं सीती है. केक, चाट, मिठाइयां आदि व्यंजन अपने हाथों से बनाती है. ऐसा कर के वह इन पर होने वाले व्यय को आसानी से बचा लेती है.

बच्चों को अल्पायु में ही अगर बचत का गुरुमंत्र दे दिया जाए तो निश्चय ही उन के सारे सपने धीरेधीरे हकीकत में बदल सकते हैं. आज की शिक्षा में यदि कोई दोष है तो यही कि स्कूलों में बचत की सीख नहीं दी जाती और बच्चे बहुत पैसा बरबाद करते हैं. आरंभ से ही बचत का मूलभूत सूत्र, उस का मूल्य और महत्त्व समझा दिया जाना चाहिए, तभी आज का बालक कल का श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है. शिक्षा वह है जो छात्रों को जीवन में सफलता प्राप्त करने का ढंग सिखलाए और बचत सफलता की कुंजी है.

अब तक जो भी धनवान बना, उस की पृष्ठभूमि बचत ही थी. उसे धन आंधी के आमों की तरह नहीं मिला. उस की कोई लाटरी नहीं निकली, न ही छत फाड़ कर उसे धन प्राप्त हुआ. वे निरंतर कणकण की बचत कर के पहाड़ खड़ा कर देते हैं.

देरसवेर हर परिवार में एक बार धन की बाढ़ अवश्य आती है. पर जो इस के योग्य होते हैं उन्हीं के पास संपदा रुकती है.

''मां को चाहिए कि वह शुरू से ही बच्चों में बचत करने की आदत का संस्कार डाले क्योंकि छोटा बच्चा बड़ों का बहुत जल्द अनुसरण करता है.

बहुत ही कम लोग ऐसे हैं जो धन का बुद्धिमत्तापूर्ण सदुपयोग करते हैं.

जिस के अंदर 'न' कहने का साहस नहीं है, वह अवश्य ही सब का मित्र हो सकता है, पर अपना भयंकर शत्रु है. उदारतावश वह सब कुछ खर्च कर डालता है. बिना मांगे उधार दे कर या दोस्तों में बैठ कर जेब खाली कर के वह अपने भोलेपन और मूर्खता के हाथों मारा जाता है. उस का जीवन इस सिद्धांत पर चलता है कि जो कोई भी कुछ कहे, उस के लिए वही करना चाहिए. उसे दूसरों का दिल तोड़ना नहीं आता. जब तक उस के पास धन रहा तब तक मित्रों की कोई कमी न थी. धन गायब मित्र गायब.

प्रकृति को देखिए. उस की गोद में जो वस्तु चली ज़ाती है उस की रचना उत्पादन के काम में आती है. कूड़ाकबाड़, पुष्पपत्ते नीचे गिरते ही खाद बनने लगते हैं. प्रकृति से हमें यह बात सीखनी चाहिए. वह भी उदार है, अपव्ययी नहीं. ●

जीवन की मुसकान

घटना उस समय की है जब मैं नागपुर रेलवे पुलिस स्टेशन का प्रभारी था. मेरे मातहत काम करने वाला एक हेड कांस्टेबल मुझ से छुट्टी ले कर अपने साले की शादी के लिए कल्याण गया. वापसी में जब ट्रेन कल्याण स्टेशन से चलने लगी तो एक महिला अपनी बच्ची के साथ चलती गाड़ी में चढ़ने के प्रयास में रेलवे प्लेटफार्म और ट्रेन के बीच में गिर पड़ी. हेड कांस्टेबल ने जब यह देखा तो अपने प्राणों की परवाह न करते हुए वह उन्हें बचाने के लिए चलती ट्रेन से



नीचे कूद पड़ा. उस ने मांबेटी दोनों को बचा तो लिया पर स्वयं बुरी तरह जख्मी हो गया और बंबई के एक अस्पताल में करीब एक साल तक भरती रहा. मैं जब उस महिला से मिला तो उस ने बताया, ''उस अनजान भाई ने अपनी जान पर खेल कर हम मांबेटी को बचाया है, वह इनसान के वेश में फरिश्ता है.''

— फारूक कादरी

*

मेरे पति बाहर से घर आ रहे थे. रास्ते में तेज बारिश शुरू हो गई और उन के स्कूटर का टायर भी पंचर हो गया. पति परेशान हो गए. उन्हें पहिया बदलना नहीं आता था. आसपास कोई राहगीर भी नहीं दिख रहा था. उसी समय उन की दृष्टि पास में बने सेना अधिकारियों के बंगलों पर पड़ी. उन्होंने एक मेजर के बंगले का दरवाजा खटखटाया. बंगले से एक युवक आया. उस से पति ने कहा, ''मेरा स्कूटर खराब हो



गया है, उसे आप के यहां खड़ा कर दूं, कल ले लूंगा.''

नवयुवक ने पूछा, ''क्या प्रमाण है कि आप सच बोल रहे हैं?''

पति ने उसे स्कूटर का लाइसेंस, परिचयपत्र और अपना फोन नंबर दे कर कहा, ''इस नंबर पर पुष्टि कर लीजिए.''

पहले तो वह नवयुवक बोला, ''ठीक है, परिचयपत्र आप को कल मिलेगा.''

इस के बाद वह अंदर गया. साथ में रिंच ले कर आया और बोला, ''कहिए तो मैं आप का पहिया बदल दूं.''

यह कह कर वह तेज बारिश में पहिया बदलने लगा. यह घटना मेरे पति के दिमाग में अब तक तरोताजा है.

— तारा शुक्ला

*

मेरी आकाशवाणी में ट्रायल बुकिंग थी, पर उस दिन शहर में अचानक कर्फ्यू लग गया था. शहर से दूर रहने के कारण मुझे यह बात मालूम नहीं थी. मैं जाने के लिए घर से निकल पड़ा. तभी पुलिस की गाड़ी मेरे सामने आ कर रुकी. एक जवान ने कड़े शब्दों में कहा, ''जानते नहीं, शहर में कर्फ्यू लगा है.''

मैं ने कहा, ''सचमुच मुझे पता नहीं है. मेरी आकाशवाणी



में ट्रायल है. मेरा वहां पहुंचना बहुत जरूरी है.''

यह सुन कर पुलिस वालों ने मुझे अपनी गाड़ी में बिठाया और आकाशवाणी तक पहुंचा गए. मुझे देख कर केंद्र निदेशक बहुत प्रभावित हुए, और मैं पुलिस जवानों के प्रति कृतज्ञ था.

— अमीरूल हसन

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.



गंदगी

कहानी • चंद्रशेखर दुबे

अम्मां जीवनभर कभी गंभीर रूप से बीमार नहीं हुई थीं, किंतु इस वृद्धावस्था में वह बीमार पड़ीं तो ऐसी पड़ीं कि घरभर की मुसीबत कर दी. पक्षाघात की शिकार हो जाने से उन का सारा बायां अंग निष्क्रिय हो गया था. इसी लिए वह हिलडुल नहीं पाती थीं, बस पड़ी रहती थीं. जीभ पर भी असर हो जाने से उन की आवाज बंद हो गई थी. हां, आंखें अलबत्ता अच्छीभली थीं. उन का तेज जैसे बढ़ सा

गया था. वह टुकुरटुकुर देखा करती थीं. आंखों से ही वह संकेत कर देती थीं.

घर भर की मुसीबत अम्मां की इसी स्थिति के कारण आरंभ हुई थी. इस स्थिति में उन की सेवा में हर समय किसी न किसी को तत्पर रहना पड़ता था. बोल न पाने के कारण वह अपने मन की बात तो कह नहीं पाती थीं, इसी लिए चलतेफिरते उन पर नजर रखनी होती थी. संकेत मिलते ही मलमूत्र झेलना पड़ता था, नहीं तो बिस्तर और कपड़े खराब हो जाने का डर बना रहता था.

घर में कुल चार प्राणी थे. अम्मां का बेटा सुधीर और बहू बेला तथा दो बच्चे. बच्चे अभी छोटे थे, एक पांच साल का और दूसरा दो साल का. बेला घर के काम में एवं बच्चों में उलझी रहती थी. अम्मां जब बीमार नहीं हुई थीं, तब वह उस का बहुत सा काम निबटा देती थीं. अब घर का सारा बोझ उसी पर आ गया था. ऊपर से अम्मां की बीमारी का काम बढ़ गया था.

सुधीर को अपने दफ्तर के काम से ही फुरसत नहीं थी. सुबह साढ़े नौ बजे से जो जाता था, तो शाम को 7 बजे तक घर लौट पाता था. उस ने अपनी अम्मां के कमरे में ही अपना पलंग लगा लिया था. घर में होने पर वह वहीं अपने पलंग पर ही रहता था. मां का संकेत मिलते ही वह उन की सेवा में जुट जाता था. जब वह घर में नहीं रहता था, तब बेला को यह जवाबदेही निभानी पड़ती थी. वह अपने हाथ का काम अधिकतर इस कमरे में आ कर करती रहती थी.

अम्मां की इस बीमारी की शुरुआत में बेटाबहू दोनों बड़ी तत्परता से उन की सेवा में जुटे रहे थे, किंतु माह दर माह बीत जाने पर भी उन की हालत में जब कोई बदलाव नहीं आया तो बेटेबहू का उत्साह पूर्ववत नहीं रह पाया था.

फिर डाक्टर ने उन से जब यह कहा कि अम्मां कई वर्ष इसी तरह निकाल सकती हैं, तब तो वे चिंतित हो उठे. किसी वैकल्पिक व्यवस्था पर विचार करने लगे. नातेरिश्तेदारों में कोई ऐसा नहीं था, जो स्थायी रूप से यहां रह कर अम्मां की सेवा करता. सुधीर की विधवा मौसी ही कुछ दिनों के लिए आई थीं. किंतु अपने परिवार को छोड़ कर वह भी स्थायी रूप से यहां नहीं रह पाई थीं. 15 दिनों बाद ही वह अपने घर लौट गई थीं.

इसलिए लेदे कर नौकरानी ही विकल्प के रूप में उन्हें सूझ रही थी. किंतु बहुत प्रयत्न करने के बाद भी कोई नौकरानी इस काम हेतु मिल नहीं रही थी. चौबीसों घंटे यहां रह कर अम्मां का मलमूत्र उठाने को कोई राजी नहीं हो रही थी. मलमूत्र के नाम से ही सभी चौंक जाती थीं.

बेला के भाई ने अपनी बहन के दुख से द्रवित हो कर आदिवासी अंचल से एक प्रौढ़ा भीलनी इस काम हेतु भिजवाई. वह उस क्षेत्र में कंपाउंडर के रूप में कार्य कर रहा था. उस ने 'मंगली' नाम की इस भीलनी को जैसेतैसे राजी किया था.

मंगली के आ जाने से सुधीर और बेला बड़े खुश हुए. उन्होंने सोचा कि चलो, अब परेशानी नहीं रहेगी. अम्मां की सेवा में अब दिनरात एक व्यक्ति तैनात रहेगा.

सुधीर ने मंगली की सुविधा का

अम्मां की बीमारी ही ऐसी थी कि कोई भी नौकरानी काम करने को तैयार नहीं होती. स्वयं बेला के मन में भी घिन का भाव जाग उठता था, परंतु वहीं शांतिबाई बड़े सेवाभाव से इस काम के लिए राजी हो गईं. इस के पीछे उन का तर्क सुन बेला आश्चर्यचकित रह गई.



"आप ने बड़ी विषम स्थिति में हमें सहयोग दिया. आप के इस उपकार को हम जीवनभर नहीं भूलेंगे," सुधीर ने शांतिबाई से कहा.

खयाल कर अपना पलंग अम्मां के कमरे से हटा लिया. दोनों पतिपत्नी यही प्रयास करने लगे कि मंगली किसी भी तरह यहीं बनी रहे. अम्मां के काम के अलावा और कोई काम उन्होंने उसे नहीं बताया. मंगली को उदास देखते ही दोनों मीठीमीठी बातें करने लगते थे. उस का मन यहीं लगा रहे, ऐसी ही कोशिशें वे दोनों करते रहते. अवकाश मिलते ही वे अम्मां के कमरे में आ जाते थे और मंगली के काम में हाथ बंटाने लगते. यदि कोई काम नहीं होता था तो वे इधरउधर की बातें करकर के ही उस का दिल बहलाया करते थे.

इतना सबकुछ करने के बाद भी मंगली ने इन लोगों के यहां एक माह भी पूरा नहीं किया. लगभग 22 दिनों बाद ही वह एक रोज सुधीर से बोली, "साहबजी, मेरा हिसाब कर दो."

सुधीर चौंका. उस ने पूछा, "क्यों? पैसों की जरूरत है क्या?"

मंगली ने सकुचाते हुए कहा, "हां, मैं अब अपने घर जाऊंगी."

"घर जाओगी?"

"जी हां."

"तो कब लौटोगी?"

मंगली ने कोई उत्तर नहीं दिया. वह अम्मां का पैर हौलेहौले दबाती रही. सुधीर ने फिर पूछा, "बताओ न, कब वापस आओगी?"

मंगली ने पैर दबाना बंद कर हौले से कहा, "अब लौटना नहीं होगा, साहबजी."

सुधीर आश्चर्यचकित रह गया. उस ने मंगली को हैरानी से देखते हुए पूछा, "क्यों, क्या हो गया?"

"हुआ तो कुछ नहीं."

"तो फिर ऐसा विचार कैसे हो गया?"



तुम्हारा आना

मौसम के आनेजाने से
मेरा कुछ न लेनादेना,
एक तुम्हारा आना ही
है मेरे बसंत का आना.
—रमा सिंह

"हमारा मन यहां नहीं लगता, साहबजी. बच्चों की याद आती है."

"तो कुछ दिनों के लिए घर हो आओ. बच्चों से मिल आओ... सातआठ दिन से ज्यादा मत रुकना...यहां परेशानी होगी."

मंगली ने हाथ जोड़ कर कहा, "साहबजी, आप से झूठ नहीं बोलूंगी. सच्ची बात तो यही है कि अब लौटना नहीं होगा."

"क्यों? तुम्हें कोई तकलीफ है यहां?"

"नहीं जी...यहां मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई. मैं बड़े आराम से रही. जो भोजन मैं ने जिंदगी में कभी नहीं खाया, वह यहां मिला. अच्छे कपड़े पहनने को मिले. आप कोई ऊंचा बोल नहीं बोले."

"तो फिर क्या कठिनाई है?"

"आप को कैसे समझाऊं, साहबजी?"

"समझने की कौन सी बात है?"

"है, साहबजी."

"तो समझाओ, मंगलीबाई."

"देखो साहबजी, साफ बात कहूं...तो बुरा मत मानना."

"नहींनहीं, तुम बेझिझक कहो."

सुधीर की कुरसी के पास जमीन पर बैठ कर मंगली बोली, "बात यह है कि चौबीसों घंटे मलमूत्र देखतेदेखते यह मेरे दिमाग में घुस गया है. रोटी खाने बैठती हूं तो वहां भी यही दिखता है. इसी लिए यहां से भाग जाने का मन हुआ है. आप से माफी चाहती हूं. मैं जानती हूं कि मेरे चले जाने से आप को तकलीफ होगी...पर करूं क्या, मुझ से अब यहां नहीं रहा जाता."

सुधीर कुछ नहीं कह पाया. वह उस आदिवासी नारी की स्पष्टवादिता का कायल हुआ. इसी लिए उस ने उस का हिसाब कर दिया एवं झाबुआ की बस में उसे बैठा दिया.

मंगली के चले जाने से फिर परेशानी होने लगी. सुधीर एवं उस की पत्नी बेला एकदूसरे पर झुंझलाने लगे. इस परेशानी से मुक्ति के लिए इन लोगों ने महरी की खुशामद की. उस से कहा, "तू दिन में अम्मां को संभाल ले...रात को हम संभाल लेंगे."

महरी के पास छः घरों का काम था, इसलिए वह स्वयं तो इस हेतु राजी नहीं हुई, किंतु अपनी सास को उस ने अम्मां की सेवा में भेजने का आश्वासन दे दिया. इन लोगों ने चैन की सांस ली.

महरी की सास बूढ़ी औरत थी. वह अम्मां की समवयस्क ही थी. इसलिए मंगली की तरह तत्परता से वह अम्मां की सेवा नहीं कर पाती थी. दृष्टि की कमजोरी के कारण वह अम्मां की आंखों के भावों को पढ़ नहीं पाती थी. उन के संकेत समझ नहीं पाती थी. इसी लिए अम्मां का मलमूत्र कई बार बिस्तर में ही छूट जाता था. बिस्तर को फिर से व्यवस्थित करने में भी महरी की सास को कठिनाई होती थी. इस स्थिति को भी सुधीर एवं बेला ने सहन किया. मुंहमांगे दाम देने के बाद भी वे खामोश रहे. सोचा कि इस बुढ़िया से कुछ तो सहारा हो गया.

किंतु 15 दिनों के बाद ही महरी की सास भी घर बैठ गई, काम पर नहीं आई. महरी ने आ कर जानकारी दी, "बुढ़िया मुझ से लड़झगड़ कर अपने बड़े बेटे के पास

चली गई है. जातेजाते कह गई कि मैं ने उसे जीतेजी 'नर्क' में धकेल दिया है."

सुधीर एवं बेला ने अपना सिर पीट लिया. उन की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें और क्या न करें? अम्मां की सेवा के प्रति दोनों बड़े सजग थे. दोनों की भावनाएं बड़ी निर्मल थीं. दोनों चाहते थे कि उन की सेवा में कोई कमी न रहे. किंतु अम्मां की विचित्र शारीरिक स्थिति एवं बीमारी की लंबी खिंचती जा रही अवधि ने बड़ी विषम स्थिति पैदा कर दी थी. दोचार माह की बात होती तो दोनों अम्मां के पलंग के पास बैठे रहते. किंतु उन की बीमारी का तो ठिकाना ही नहीं था. डाक्टर ने साफ कह दिया था कि होने को कुछ भी, कभी भी हो सकता है और यह भी संभव है कि वर्षों कुछ न हो, यह ऐसी ही पड़ी रहें. डाक्टर की इस बात ने इन लोगों को जैसे भंवर में उलझा दिया था.

उन के महल्ले में ही रहने वाली शांतिबाई नामक एक नर्स सेवामुक्त हुईं तो इन लोगों के मन में यह भाव आया कि यदि वह अम्मां का खयाल कर सहयोग को तत्पर हो जाएं तो राहत मिल सकती है. किंतु शांतिबाई के समक्ष यह प्रस्ताव रखने का साहस ये लोग जुटा नहीं पा रहे थे क्योंकि इन्हें यही डर लग रहा था कि कहीं वह बुरा न मान जाएं. बुरा न भी मानें तो भी पारिश्रमिक का प्रश्न रोड़ा बन सकता है. वह 'हेड नर्स' रही हैं, इस सेवा के लिए वह अपने स्तर के अनुरूप मुंह फाड़ेंगी ही. इतना भुगतान कैसे हो सकता है? संपन्न होते तो मुंहमांगे दाम दे देते.

ऐसे ही प्रश्नों के खौफ से वे शांतिबाई के पास नहीं जा पाए. परेशानी झेलते रहे. इस बीच अम्मां को दस्त लग गए. इस से उन की परेशानी और बढ़ गई. इसी परेशानी में बेला के मुंह से एक रोज विषादपूर्ण स्वर में निकल गया, "देखोजी, गंदगी तो आखिर गंदगी ही है. वह भले ही मां की हो या बाप की...उस से घिन तो आती ही है."

सुधीर ने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया, "घिन आए या कुछ भी हो...हमें अपना कर्तव्य तो निभाना ही होगा."

इन्हीं दिनों शांतिबाई, अम्मां की खबर लेने एक रोज आईं तो बेला ने अपनी सारी व्यथा उन्हें कह सुनाई.

वह बोलीं, "मैं अब खाली हूं. मैं तुम्हारी सहायता किया करूंगी."

बेला को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ. उस ने सकुचाते हुए कहा, "आप को कैसे कष्ट दे सकते हैं?"

"इस में कष्ट की क्या बात है? रोगियों की सेवा तो मैं जिंदगीभर करती रही हूं. अब सेवामुक्त हो जाने से समय कटता नहीं है. अम्मां की सेवा किया करूंगी तो समय कट जाएगा."

इतना कह कर शांतिबाई अम्मां की सेवा



"महोदय, यही हाल रहा तो जल्द ही वह दिन आ जाएगा जब हम दोनों को पूछने वाला कोई न होगा."

में जुट गईं तो बेला आश्चर्यचकित रह गई. उसे डर लगा कि कहीं वह पारिश्रमिक के रूप में बड़ी रकम की मांग न करें, इसी लिए उस ने उन्हें रोकने का प्रयास किया. मगर वह नहीं मानीं. अपने सधे हाथों से वह बड़ी तल्लीनता से अम्मां की सेवा करती रहीं. दिन डूबे घर गईं.

रात को सुधीर जब घर आया तो बेला ने सारी बात बताई. वह भी आश्चर्यचकित हुआ. पारिश्रमिक के बाबत दोनों ने यही राय बनाई कि जो होगा, देखा जाएगा. ज्यादा मुंह फाड़ा तो विनती कर कम कराएंगे.

दूसरे दिन शांतिबाई सुबह 9 बजे ही आ गईं. सारे दिन अम्मां के पलंग के पास वाले पलंग पर डटी रहीं. अम्मां के संकेतों के अनुसार उन की सेवा करती रहीं. मलमूत्र उठाती रहीं और शाम ढलने पर घर गईं.

इस के बाद वाले दिनों में भी उन का यही क्रम बना रहा. सुबह 9 बजे वह आतीं और शाम 6 बजे जाती थीं. सारा दिन अम्मां की सेवा में तत्पर रहतीं. अम्मां की जब आखें मुंद जाती थीं, तब वह भी पलंग पर पसर जाती थीं. किंतु अम्मां की जरा सी आहट पर ही वह उठ बैठती थीं.

सुधीर और बेला को शांतिबाई की इस लगन एवं कर्मठता पर आश्चर्य हो रहा था. उन्हें लग रहा था कि वह महीने के अंत में खासी रकम की मांग करेंगी.

किंतु माह के बजाय सवा माह बीत जाने पर भी शांतिबाई की ओर से जब कोई मांग नहीं की गई तो सुधीर और बेला का आश्चर्य और बढ़ा. अब वे उन से सहयोग लेने में शरमाने लगे. किंतु उन की समझ में नहीं आ रहा था कि शांतिबाई से पारिश्रमिक के बाबत कैसे पूछें.

कई बार उन्होंने घुमाफिरा कर बात चलाई, किंतु शांतिबाई ने इस बात में कोई रुचि ही नहीं ली. वह उदासीन बनी रहीं. सुधीर और बेला घबराए कि वह कहीं इकट्ठी रकम न मांगें. तब इतनी बड़ी रकम कैसे देंगे? अभी पता लग जाता, तो ठीक रहता.

यही सोच कर सुधीर ने एक रोज शांतिबाई से सीधा प्रश्न किया, "आप के इस उपकार के बोझ से हम दबे जा रहे हैं, हमें बताइए, हम आप के लिए क्या करें?"

शांतिबाई ने मुसकराते हुए कहा, "कुछ मत करो. बस मुझे ऐसे ही अम्मां की सेवा करने दो."

सुधीर ने गदगद कंठ से कहा, "हमारा तो रोमरोम आप के एहसानों तले दबा जा रहा है...आप ने बड़ी विषम स्थिति में हमें सहयोग दिया. आप के इस उपकार को हम जीवनभर नहीं भूलेंगे."

"फिर परेशानी क्या है?"

"आप कुछ तो बताइए. वैसे आप के इस सहयोग का बदला चुकाना तो कठिन है. फिर भी कुछ तो हमें उऋण होने दीजिए. बोलिए, क्या दें आप को?"

"कहा न, कुछ नहीं. देखो सुधीर भैया, अम्मांजी की सेवा से मेरा खाली समय भर गया... नहीं तो दिन काटना मुश्किल हो रहा था. यह समझो कि इसी में मुझे सब कुछ मिल गया. फालतू बैठती तो बीमार हो जाती. तुम किसी प्रकार का विचार मत करो. मुझे घर के प्राणी जैसा ही समझो."

"पर आप तो अपनी सेवाओं का मूल्य लेती रही हैं?"

"हां, मगर पड़ोसियों से अपनी सेवाओं का मूल्य मैं नहीं लेती हूं."

"घोड़ा घास से यारी करेगा तो भूखों मर जाएगा, शांतिबाई."

"इस घोड़े को घास की कोई कमी नहीं है. इसलिए इस बात को छोड़ो. मुझे अपने खाली समय का सदुपयोग करने दो. आप की अम्मांजी मेरी अम्मांजी जैसी ही हैं."

शांतिबाई की इन स्पष्ट एवं निश्छल बातों से सुधीर और बेला का आश्चर्य और बढ़ा. उन्हें पश्चात्ताप हुआ कि वे उन को अभी तक पूरी तरह से पहचान ही नहीं

पाए. उन के बाबत गलतफहमियां पाले रहे.

बेला को इस बात पर विशेष आश्चर्य हो रहा था कि शांतिबाई ने अम्मांजी का मलमूत्र उठाने में कभी कोई झिझक अनुभव नहीं की. वह बड़े सहज ढंग से यह गंदा कार्य करती रहीं. जिस कार्य को करने में वह स्वयं घिन का अनुभव करती रही, उसी काम के प्रति उन में कोई अरुचि कभी नजर नहीं आई. शौच के समय जल का प्रयोग न करने वाली भीलनी मंगली के दिमाग में यह गंदा कार्य घुस गया. महरी की सास को यह काम करते हुए 'नर्कवास' का अनुभव हुआ. किंतु दो माह से अधिक अवधि बीत जाने पर भी शांतिबाई ने ऐसी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की?

बेला के इस प्रश्न के उत्तर में सुधीर ने कैफियत दी, "वह नर्स होने के कारण सारी जिंदगी यही काम करती रही हैं. मलमूत्र, रक्त, पीप एवं दवाइयों के बीच में ही उन की जिंदगी बीती है, इसी लिए वह इस की अभ्यस्त हो गईं."

बेला को इस कैफियत से संतोष नहीं हुआ. उसे यही बात कचोटती रही कि मलमूत्र तो मलमूत्र ही है, इस का अभ्यस्त कोई कैसे हो सकता है?

अपने भीतर घुमड़ते इस प्रश्न के बाबत बेला ने एक रोज शांतिबाई से पूछ ही लिया, "क्यों दीदी, दूसरों की गंदगी उठाते समय आप को घिन नहीं आती? मेरी तो यह सास हैं, मगर जब भी इन की गंदगी उठाती हूं...भीतर से उबकाई सी आती है."

शांतिबाई ने मुसकराते हुए कहा, "बेला अपने बच्चों की गंदगी उठाते समय तुम्हें ऐसी घिन आई थी या नहीं?"

"ऐसी घिन तो नहीं आई, दीदी...हां, मामूली सी..."

"नर्स के लिए सारे मरीज बच्चों जैसे होते हैं, इसी लिए उसे गंदगी उठाते समय घिन नहीं आती.

बेला आश्चर्य से शांतिबाई को देखती रह गई. ●

पाठकों की समस्याएं



मैं एक 32 वर्षीया नवविवाहित अध्यापिका हूं. हम 3 बहनें हैं. बड़ी 37 वर्षीया जो विवाहिता है, फिर मैं जो 9 माह पूर्व ही विवाह के गठबंधन में बंधी हूं और तीसरी 31 वर्षीया जो अविवाहिता है. बड़ी बहन बेहद जिद्दी एवं उद्दंड स्वभाव की है. उस के 2 बेटियां व एक बेटा है. उस ने जीजाजी से खूब झगड़ा किया और बेटे को ले कर मायके आ गई.

पहले जीजाजी लोकनिंदा के डर से आ जाते थे पर दीदी फिर भी झगड़ बैठती थी. मुझ से जीजाजी का दुख देखा नहीं जाता, वह बेहतरीन इनसान हैं. अब वह बेचारे नौकरी भी करते हैं, घर की देखभाल भी करते हैं, बच्चियों को तैयार कर के स्कूल भेजते हैं. उन्होंने एक बार मुझ से शादी के लिए कहा था पर दीदी तलाक को तैयार नहीं हुईं और कभी होंगी भी नहीं. उन का कहना है कि उसे कौन मिलेगा इस उम्र में.

इधर जल्दबाजी में मेरी शादी मुझ से 8 साल छोटे व्यक्ति से कर दी गई और बताया गया कि वह एम.ए. पास व्यवसायी है. पर मुझे यह सब झूठ लगता है. शादी के बाद केवल 2-3 दिन को ही ससुराल गई. अब मैं अध्यापिका हूं और अपने मकान में रहती हूं. मेरे दो मकान हैं.मेरे पति मेरे पास 20-25 दिन रह जाते हैं और फिर व्यवसाय के चक्कर में चले जाते हैं. अब तो पति मुझ से झगड़ा भी करते हैं. मुझ पर शक भी करते हैं. कहते हैं, तुम मेरी मां के समान हो. मैं इस चखचख से तंग आ चुकी हूं. पति ने कभी एक पैसा भी मुझ पर खर्च नहीं किया, उलटा मुझ से झटक कर ले जाते हैं. उधर जीजाजी तंग हैं, इधर मैं. बुरा हो हिंदू विवाह कानून का कि न मुझे तलाक मिल सकता है, न जीजाजी को. मैं आत्महत्या कर लूं तो छोटी बहन के विवाह का क्या होगा? मेरे कोई बच्चा भी नहीं, गर्भाशय में सूजन के कारण बच्चे होने की संभावना भी नहीं है. जीजाजी से मिल नहीं सकती क्योंकि वह मीलों दूर रहते हैं. कोई राह दिखाइए?

आप के इस लंबे पत्र से कई कौतुक भरे प्रश्न उभरते हैं. जैसे, आप तीनों बहनों का देर तक विवाह क्यों नहीं हुआ? आप को जीजाजी से अत्यधिक लगाव क्यों है? हो सकता है आप की दीदी का जीजाजी से झगड़ा करने व न जुड़ पाने का एक कारण यह भी रहा हो. अपना भरापूरा घर कोई भी स्त्री छोड़ना नहीं चाहती, जब तक कि बहुत मजबूरी न हो. जीजाजी के प्रति आप के इस लगाव के कारण ही शायद आप के पति आप को ताने मारते हों. आप के पति यदि आप से आयु में छोटे हैं तो आप के लिए परेशानी क्या है. यों भी इस आयु में कोई हमउम्र लड़का मिलना मुश्किल ही होता है. ऐसे में जब समस्याएं विकराल रूप धारण कर चुकी हों तो अपने पति में पूर्ण प्रेमी खोजिए, उन्हें पत्नीत्व का सुख बराबर दीजिए और भूल कर भी उन के सामने जीजाजी की प्रशंसा न कीजिए. कोई भी पति पत्नी के मुंह से गैरपुरुष की प्रशंसा सहन नहीं कर पाता.

उधर दीदी को भी घर लौटने के लिए प्रेरित करें. उन से भी अपने जीजाजी की प्रशंसा न करें क्योंकि यह बात वह भी सह न पाएंगी. उन्हें छोटी बहन के विवाह की ऊंचनीच समझा दें. हो सकता है उन की चेतना जाग जाए. तलाक की बात तो आप मन से निकाल दीजिए. यह इतना आसान नहीं है. अब आप एक जिम्मेदार विवाहित महिला की तरह व्यवहार कीजिए. पति से निभाने में ही आप का भला है. आप यदि उन की परवाह करेंगी तो वह भी ठीक रहेंगे. अपनी सूझबूझ से जिंदगी ठीक कर लीजिए वरना परिणाम अच्छे नहीं होंगे.

मेरी आयु 14 वर्ष है. मैं 9वीं कक्षा की छात्रा हूं. न जाने मुझे क्या होता जा रहा है कि पढ़ाई में मन ही नहीं लगता, मन दोस्तों और सखियों में लगता है. घर में डांट लगती है. परीक्षा नजदीक है, क्या होगा अब? आप ही बताइए?

पढ़ाई से जी चुराने का कारण आप की आयु में शारीरिक संरचना में आने वाले परिवर्तन हो सकते हैं. इस में अजूबा कुछ नहीं है. आप यह सोचिए कि न पढ़ने से कितनी परेशानियां होंगी. आप के मित्रगण भी तो पढ़ाई में मन लगाते होंगे,

फिर आप क्यों नहीं लगा सकतीं? यह भी समझ लीजिए कि आप की मित्रमंडली परीक्षा में पास हो जाएगी और आप न पढ़ने के कारण कहीं फेल हो गईं तो क्या होगा. पढ़लिख कर कुछ बनने से ही समाज में पूछ होगी. इसलिए भविष्य के लिए जरा गंभीर हो कर पढ़ाई में मन लगाइए, सब ठीक हो जाएगा.

मैं 19 वर्षीय बी.एससी. का छात्र हूं. इधर अपनी बहन की 15-16 वर्षीया ननद से प्यार करने लगा हूं. वह भी मुझे चाहती है. भविष्य में हम शादी करना चाहते हैं. क्या ऐसा हो सकता है? हम दोनों का ही पढ़ाई में मन नहीं लगता है. आप कुछ राह सुझाएं?

हम अपने इस स्तंभ के अंतर्गत कई बार बता चुके हैं कि इस आयु का प्रेम महज विपरीत लिंग का आकर्षण या मोह होता है. उस लड़की की आयु अभी बहुत छोटी है और आप भी अपने कैरियर बनाने के मोड़ पर हैं. प्रेम की सार्थकता तब है जब आप दोनों अपने पैरों पर खड़े हो जाएं. आप का विवाह हो सकता है किंतु कुछ बन जाने तक इस व्यर्थ के प्रेम को भूलना होगा. आप यह भी समझ लीजिए कि प्रेम केवल भावुकता से नहीं चला करता. जीवन के ठोस धरातल की सचाई कुछ और होती है. अभी तो आप दोनों प्यार को एकतरफ छोड़ कर पढ़ाई में मन लगाएं. पढ़लिख कर जब कुछ बन जाएं तब विवाह करने की सोचें.

मैं अपनी पत्नी से पीड़ित एक युवक हूं. आज जब सब जगह नारी पर अत्याचार का ढोल पीटा जाता है तो मुझे बहुत परेशानी होती है. मेरी आयु 30 वर्ष है और मेरी पत्नी की 40 वर्ष, यानी झूठ बोल कर उम्र कम बताई गई. उस पर तुर्रा यह कि मुझे शारीरिक संबंध भी नहीं बनाने देती. विवाह को 5 वर्ष हो गए हैं पर वह अपनी दादागीरी नहीं छोड़ती. उलटे हर समय बड़बड़ाती रहती है. मेरी इतनी आय नहीं कि अपनी शारीरिक भूख कहीं और मिटा सकूं. इस औरत के साथ जीना मुश्किल है, न यह पतिव्रत धर्म निभाती है, न कोई काम करती है. क्या करूं?

आप की इस बात से हम सहमत हैं कि नारी भी अत्याचार करती है और बेचारे पुरुष को वह सब बुरी तरह भुगतना पड़ता है. आप अपना रौद्र रूप दिखा दें और तलाक की धमकी दे डालें. संभव है उस की दादागीरी खत्म हो जाएगी. आमतौर पर जब पुरुष का पौरुष जागता है तब स्त्री बोल नहीं पाती. आप इस का गलत इस्तेमाल न कर के उस से दो टूक बात करें. वह अवश्य मान जाएगी क्योंकि औरत हो या मर्द, कोई घर छोड़ना नहीं चाहता.

मैं 27 वर्षीया विवाहिता हूं. समस्या यह है कि ससुराल में मेरे किसी काम को पसंद नहीं किया जाता. सासससुर हर काम में गलती निकालते हैं. पति को भी भड़काया जाता है. वह भी मुझे डांटते हैं. बच्चों से भी मुझे दूर रखना चाहते हैं. दिल करता है कहीं जा कर डूब मरूं. आप ही बताइए क्या करूं?

आप ने पत्र में साफसाफ नहीं लिखा है कि ससुराल वाले आप से क्यों चिढ़ते हैं और हर काम में क्या गलती निकालते हैं. आप उस गलती को सुधार क्यों नहीं लेतीं. आमतौर पर कोई मांबाप नहीं चाहेंगे कि उन के बेटे का घर उजड़े. आप अपनी सेवा व लगन से सासससुर का हृदय जीत सकती हैं. उन को अपना बना कर देखिए, पति से प्रेम व मधुर व्यवहार रखेंगी तो सब ठीक हो जाएगा.

मैं 3 बच्चों का पिता हूं. मेरी आयु 34 वर्ष है. मैं अपने परिवार में बहुत खुश हूं. किंतु जब मैं अविवाहित था तो दूर की एक रिश्तेदार लड़की से प्रेम करता था, लेकिन इजहार न कर सका. उस की शादी शहर से दूर हो गई. जीवन ठीकठाक चल रहा था. अचानक शादी के 10 वर्ष बाद उस ने प्रेम जाहिर किया और हम चुंबन तक पहुंच गए. अब हालत यह है कि जब भी वह मायके आती है हम बस एकदूसरे में खो जाते हैं, क्या करूं?

शादी के पश्चात अपने सुखद जीवन को पुराने प्रेम की याद में खराब न करें. पत्नी के पक्ष से सोचिए कि उस का क्या कुसूर है जो आप के द्वारा दी गई इस पीड़ा को वह भोगे? उस लड़की से जीवन के इस मोड़ पर प्रेम की पेंगें बढ़ाने का कोई औचित्य नहीं है. उस लड़की की ओर ध्यान न दें. बीते कल के प्रेम का आज राग पीटने से हासिल क्या होगा? मृगतृष्णा के पीछे भागने से बेहतर है अपने पारिवारिक सुख को बरकरार रखें.

—कंचन ●

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जासकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

पेशेवर राजनीतिबाज

(पृष्ठ 53 का शेषांश)

उन्होंने कुछ पुस्तकें लिखी हैं तथा कुछ पुस्तकों का अनुवाद भी किया है पर लेखन कभी भी उन की आजीविका का साधन नहीं रहा.

केंद्रीय मानव संसाधन विकासमंत्री अर्जुन सिंह सन 1960 से कांग्रेस में हैं. वैसे उन का राजनीतिक जीवन उस के पूर्व समाजवादी पार्टी के उत्साही कार्यकर्ता के रूप में शुरू हुआ था, तब से वह राजनीति में सक्रिय हैं. वैसे तो रीवा नरेश अर्जुन सिंह को कुछ भी कमाने की आवश्यकता कभी नहीं रही परंतु राजनीति के माध्यम से जो उन की समृद्धि बढ़ी है, वह कोई छिपी हुई बात नहीं है.

इसी प्रकार केंद्रीय मंत्रिमंडल के अनेक सदस्य, जैसे शरद पवार, बलराम जाखड़, सीताराम केसरी, एस.बी. चह्वाण आदि कई दशकों से राजनीति की ही रोटी खा रहे हैं.

भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष डाक्टर मुरलीमनोहर जोशी वैसे तो सन 1952 से ही राजनीति में सक्रिय हैं, परंतु कुछ वर्ष पूर्व तक वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भौतिक शास्त्र पढ़ाते थे. इन के अलावा अटलबिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, विजया राजे सिंधिया, कृष्णलाल शर्मा, सिकंदर बख्त, आरिफ बेग जैसे नेता हैं जो कई दशकों से केवल राजनीति ही कर रहे हैं.

जनता दल के अध्यक्ष एस.आर. बोम्मई, वी.पी. सिंह, जार्ज फर्नांडीज, मधु दंडवते, लालूप्रसाद यादव आदि, सजपा के देवीलाल, चंद्रशेखर, माकपा के ज्योतिबसु, हरिकिशन सिंह सुरजीत, इ.एस. नंबूदरीपाद, भाकपा के इंद्रजीत गुप्त आदि कितने ही नाम गिनाए जा सकते हैं जो मुद्दत से केवल राजनीति ही कर रहे हैं.

इन में से अधिकांश राजनीतिबाजों की राजनीति में आने से पूर्व की तथा वर्तमान

मधु दंडवते : मुद्दत से केवल राजनीति ही कर रहे हैं.



करुणानिधि : उग्रवादी संगठन से सांठगांठ का आरोप.



पारिवारिक आर्थिक स्थिति की तुलना की जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि एक पेशे के रूप में राजनीति उन के लिए कितनी लाभदायक रही है.

यही नहीं, इन में से अधिकांश लोग या तो सीधे शुरू से ही राजनीति में आ गए, अर्थात उन्होंने कभी कोई अन्य कार्य किया ही नहीं, अथवा उन्हें राजनीति पैतृक परंपरा में प्राप्त हुई. बहुत कम ऐसे लोग हैं जो किसी अन्य क्षेत्र से राजनीति में आए हों अथवा जिन्होंने राजनीति में रहते हुए भी किसी अन्य व्यवसाय या पेशे को अपनाए रखा हो.

डाक्टर मुरलीमनोहर जोशी, अजित सिंह, मनमोहन सिंह, कैप्टन सतीश शर्मा, अरुण नेहरू, एन.टी. रामाराव, दिवंगत एम.जी. रामचंद्रन, जयललिता, करुणानिधि, सुनील दत्त, कमल मुरारका आदि ऐसे कुछ नाम हैं जो राजनीति में आने से पूर्व अन्य किसी व्यवसाय या पेशे से जुड़े हुए थे. कुछ लोग तो आज भी अपने पेशे से जुड़े हुए हैं, परंतु ऐसे लोग वही हैं जो फिल्मों से राजनीति में आए हैं तथा जिन के लिए फिल्मों में अभी भी अवसर हैं. अलबत्ता अन्य लोग आज पूर्णतः राजनीति के ही हो कर रह गए हैं.

एस.आर. बोम्मई : जनता दल की लुटिया को डूबने से बचाने का प्रयास.



जाहिर है कि एक बार राजनीति में प्रवेश करने के बाद इस से अधिक लाभदायक पेशा उन्हें कोई और नजर नहीं आता. एक ऐसा पेशा जिस में गांठ का एक पैसा नहीं लगता. यदि कुछ लगता है तो वह है जबानी जमाखर्च. यहां कुछ लोग कह सकते हैं कि नेताओं को चुनाव में लाखों रुपया खर्च करना पड़ता है, परंतु सोचने वाली बात यह है कि क्या यह पैसा वे अपनी गांठ से खर्च करते हैं? कतई नहीं? फिर इतना पैसा आता कहां से है? इस का जवाब बड़ा सीधा व सरल है. कुछ पैसा तो नेताओं को पार्टी फंड से मिलता है, परंतु अधिकांश रकम उन्हें वे व्यवसायी व उद्योगपति उपलब्ध कराते हैं जो बाद में राजनीतिबाजों के माध्यम से अपने व्यावसायिक हित साधते हैं.

आज के राजनीतिबाज पेशेवर हैं, यह इस बात से भी सिद्ध होता है कि आज उन के लिए सिद्धांतों तथा मूल्यों का कोई महत्त्व नहीं रह गया है. वैचारिक प्रतिबद्धता तथा जनता के प्रति जवाबदेही व निष्ठा की भावना लुप्त होती जा रही है. राजनीतिक दलों का विभाजन तथा दलबदल तो इस के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं ही, अब तो बाकायदा जनप्रतिनिधियों की खरीदफरोख्त भी होने लगी है.

सन 1990 में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के पतन तथा जनता दल के विभाजन के पीछे कुछ पूंजीपतियों का हाथ था, ऐसा आरोप लगाया गया था. कहा गया था कि जनता दल के विभाजन तथा चंद्रशेखर के समर्थन के लिए जनता दल के सांसदों को लाखों रुपए

दिए गए थे. वैसे पूरी सरकार का दलबदल कराने का कीर्तिमान हरियाणा के मुख्यमंत्री भजनलाल ने स्थापित किया. उन पर विधायकों की थोक खरीदी का भी आरोप लगाया गया था.

दलबदल विरोधी कानून लागू होने के बाद यह आशा की गई थी कि इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगेगा. अंकुश अवश्य लगा, परंतु अब 1-2 सदस्यों के दलबदल करने के बजाय पार्टियों के विभाजन की प्रक्रिया शुरू हो गई है.

यही नहीं, छोटे राज्यों में दलबदल आज भी आसान है क्योंकि 5-10 विधायकों में से 3-4 भी यदि दलबदल करते हैं तो उसे पार्टी का विभाजन माना जाता है. स्पष्ट है कि राजनीतिबाज व्यक्तिगत लाभ को देखते हुए कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेते हैं और यही उन का पेशवराना आचरण है.

पेशेवर राजनीति का एक अन्य रूप है वंशवाद, परिवारवाद. नेहरूगांधी परिवार तो खैर इस मामले में प्रसिद्ध है ही, परंतु उन के अलावा ऐसे अनेक परिवार हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी राजनीति करते आ रहे हैं.

प्रधानमंत्री नरसिंह राव का पुत्र आंध्र प्रदेश में मंत्री है, बलराम जाखड़ का पुत्र पंजाब में मंत्री है, अर्जुन सिंह के पिता राव शिवबहादुर सिंह भी कांग्रेस के नेता थे तथा राज्य में मंत्री भी रहे, अर्जुन सिंह का पुत्र अजय सिंह भी कांग्रेस नेता है, शरद पवार का कोई पुत्र नहीं, परंतु उन का दामाद महाराष्ट्र में मंत्री है.

दिवंगत प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के दोनों पुत्र राजनीति में हैं. महात्मा गांधी के पोते पत्रकार राजमोहन गांधी जनता दल के नेता हैं, वी.पी. सिंह के रिश्तेदार भी राजनीति में हैं, दिवंगत कमलापति त्रिपाठी, दिवंगत बाबू जगजीवन राम तथा देवीलाल के राजनीतिक घराने वैसे ही मशहूर हैं. ग्वालियर, जोधपुर और भरतपुर आदि के अनेक पूर्व राजघराने भी राजनीति में सक्रिय हैं.

अरुण नेहरू, शीला कौल जहां नेहरू परिवार की विरासत से हैं तो अजित सिंह दिवंगत चौधरी चरणसिंह की विरासत संभाले हुए हैं. मध्य प्रदेश के शुक्ल बंधु व बिहार के जगन्नाथ मिश्र भी पैतृक परंपरा के राजनीतिबाज हैं.

इस प्रकार राजनीतिबाजों की एक जमात वह है जिस ने राजनीति को पारिवारिक पेशे के रूप में अपना रखा है. बाप की गद्दी बेटी या बेटा संभाल लेता है और पति की गद्दी पत्नी. अनेक बार ऐसा हो चुका है कि किसी जनप्रतिनिधि की मृत्यु हो जाने पर पार्टी ने उस के स्थान पर उस की पत्नी अथवा संतान को अपना उम्मीदवार बनाया.

विडंबना यह है कि राजनीतिबाज पूर्णतः पेशेवर भी नहीं बन पाए हैं. एक पेशेवर व्यक्ति में अपने पेशे की कुछ प्रतिबद्धता एवं नैतिकता होती है. एक डाक्टर की पेशेवर प्रतिबद्धता व ईमानदारी अपने मरीज को स्वस्थ करने की होती है, जिस का निर्वाह करने का वह हर संभव प्रयास करता है. एक वकील की पेशेगत ईमानदारी अपने मुवक्किल की भलाई होती है.

इसी प्रकार राजनीतिबाजों की पेशेवर ईमानदारी व प्रतिबद्धता जनकल्याण के प्रति होनी चाहिए, परंतु यह बात राजनीतिबाजों के भाषणों और नारों के अतिरिक्त अमल के रूप में कहीं दिखाई नहीं देती. वैसे राजनीतिबाज जो कुछ भी करते हैं उस का घोषित उद्देश्य जनकल्याण ही होता है,परंतु अघोषित व सर्वप्रथम उद्देश्य स्वकल्याण होता है.

आज जब हम देश में विद्यमान आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक दुरावस्था की बात करते हैं तो उस के मूल में प्रमुख कारण राजनीतिबाजों का पेशेवर बेईमान हो जाना ही होता है. जब तक यह बुराई समाप्त नहीं होगी तब तक राष्ट्र का उत्थान और जनकल्याण की आशा करनी बालू से तेल प्राप्त करने के समान ही होगा. ●

व्यक्तिगत विज्ञापन
वैवाहिक विज्ञापन
वर चाहिए

29, 160, 3,200/-, स्नातकोत्तर, मेधावी, आकर्षक, तलाकशुदा युवती हेतु अधिकारी वर. जाति एवं दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 8075, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 22, 5′-2″, बी.एससी. (प्रथम वर्ष), कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 8076, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग, 26, 150, संतानोत्पत्ति में असमर्थ, एम.ए., एलएल.बी., कार्यरत कन्या हेतु सुस्थापित वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 8077, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 26, 164, 3,000/-, केंद्रीय कर्मचारी कन्यार्थ सेवारत, सजातीय वर. सभी वैश्य स्वीकार. वि.नं. 8078, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी जाति, 25½/151, बी.एससी., बी.एड., प्रतिष्ठित परिवार की गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. शीघ्र एवं उत्तम विवाह. वि.नं. 8079, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रावत क्षत्रिय, 30, 5′-5″, एम.ए. समाजशास्त्र, व 27, 5′-5″, हायर सेकेंडरी, सिलाई डिप्लोमा, हाथपैरों में सफेद दाग, दोनों का गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु शिक्षित, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 8080, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 25, 155 सें.मी., एम.एससी., गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ इंजीनियर, डाक्टर या समकक्ष अधिकारी, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 8081, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, 25/159, बी.एससी. कन्या हेतु सुयोग्य, चौरसिया वर चाहिए. वि.नं. 8082, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 160, क्षत्रिय राजपूत, बी.एससी., एम.ए., पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कंप्यूटर साइंस, केंद्रीय सरकारी विभाग में सेवारत, सुंदर, गौरवर्ण कन्या के लिए क्षत्रिय राजपूत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 8083, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 23½/159, स्लिम, मध्यम गौरवर्ण, कानवेंट शिक्षित, बी.एड., एम.एससी., एम.फिल. कैमिस्ट्री, सदैव उच्च श्रेणी, केंद्रीय सरकारी, पीएच.डी., स्नातक लड़की हेतु उच्च शिक्षित, इंजीनियर/सी.ए./लेक्चरार/समकक्ष या सुस्थापित उच्च व्यवसायी, माहेश्वरी/अग्रवाल वर चाहिए. पिता राजस्थान निवासी, इंजीनियर पश्चिमी उत्तर प्रदेश. लिखें : वि.नं. 8084, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तंतुवाय वैश्य, 23, 5′-4″, अंडर मैट्रिक, सांवली, आकर्षक, स्लिम, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय, सुयोग्य वर. अच्छी शादी. वि.नं. 8085, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 164, 45, सुंदर, गौरवर्ण, कानवेंट शिक्षित, एम.बी.ए. अध्ययनरत कन्या के मातापिता द्वारा उच्च शिक्षित, सेवारत या व्यवसायरत, योग्य वर हेतु बीसा ओसवाल परिवारों से पत्राचार आमंत्रित. वि.नं. 8086, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 25/153, डबल एम.ए., सुंदर, प्रतिष्ठित, अति संपन्न परिवारीय, आंशिक विकलांग (केवल बाएं हाथ की उंगलियां), समस्त गृहकार्य करने में पूर्णरूपेण सक्षम, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. आंशिक विकलांग इंजीनियर, डाक्टर, अच्छी सर्विस, बिजनेस, मेधावी छात्र को प्राथमिकता, जातिबंधन नहीं, उच्चस्तरीय विवाह. लिखें : वि.नं. 8097 सरिता, नई दिल्ली-110055.

कानवेंट शिक्षित, एम.ए., बी.एड., एलएल.बी., शिक्षिका, सुंदर, अविवाहित, 31, 48 किलोग्राम, 156, 2,200/-, कान्यकुब्ज वैश्य गुप्ता (यू.पी.), शाकाहारी, उच्च शिक्षित परिवार, हेतु योग्य वर, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 8170, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 19 वर्षीया, 5′-1½″ उच्च शिक्षित, उत्तर प्रदेश परिवारीय, गोरी, सुंदर, बी.ए., ब्यूटीशियन, पी.जी. कंप्यूटर डिप्लोमा, सिलाई, कढ़ाई, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ उच्चपरिवारीय, सजातीय वर चाहिए. पिता संपन्न, निजी उद्योग. अति उत्तम विवाह. वि.नं. 8180, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25/160, अति गोरी, चंदेल राजपूत, पिता एवं भाई स्वव्यवसायरत, एम.एड., कानवेंट शिक्षित, सुशील, गृहकार्यदक्ष, निस्संतान, कुंआरी, निर्दोष, तलाकशुदा (विवाहित जीवन मात्र चार दिन) कन्या हेतु सजातीय, स्वतंत्र विचारों वाले युवक सविवरण लिखें : वि.नं. 8181, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, मंगली, 22, 156, बी.एससी., (बोटनी आनर्स), स्लिम, सुंदर, गेहुआं रंग, चित्रकला, टेबल टेनिस, गृहकार्यदक्ष, मध्यवर्गीय, कन्यार्थ योग्य वर चाहिए. वि.नं. 8182, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर कायस्थ, 21/153, गोरी, रूपमती, एम.ए. फाइनल अध्ययनरत कन्यार्थ केवल सुस्थापित, माथुर कायस्थ वर चाहिए. वि.नं. 8183, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सोनकर (खटिक), 30, 158, लखनऊ निवासी, कार्यरत, गृहकार्यदक्ष हेतु सजातीय वर, निस्संतान विधुर या तलाकशुदा विचारणीय. वि.नं. 8184, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26, 150 सें.मी., बी.काम., (फर्स्ट

क्लास), सी.ए. (फाइनल) अध्ययनरत, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 8185, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 25 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.एससी., (रसायन विज्ञान), एम.एड., राजकीय विद्यालय में लेक्चरर (उ.प्र.), आकर्षक, स्मार्ट, सुंदर कन्यार्थ डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, सी.ए., अधिकारी (सेना, बैंक, प्रशासनिक) या अन्य समकक्ष स्मार्ट वर चाहिए. शीघ्र शादी. वि.नं. 8186, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 26, 155, 3,000/-, बी.ए., कंप्यूटर सेवारत, गोरी, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, काठमांडो (नेपाल) निवासी कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण जानकारी फोटो सहित दें. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. पोस्ट बाक्स नं. 1647, काठमांडो (नेपाल).

कुर्मि क्षत्रिय, 24/156, स्नातकोत्तर कंप्यूटर डिप्लोमा, गृहकार्य में दक्ष, गोरी, स्लिम, सुंदर हेतु सुयोग्य वर प्रस्ताव आमंत्रित. पिता अवकाशप्राप्त उच्च अधिकारी, भाई इंजीनियर. वि.नं. 8187, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलवार (ब्याहुत), 23, 5′-2″, ग्रेजुएट, सुशील, गृहकार्यदक्ष, मध्यमवर्गीय, बिहारवासी, गेहुआं रंग, आकर्षक कन्यार्थ व्यवसायी, सेवारत, सुयोग्य, सजातीय वर. प्राथमिकता बिहारी, उत्तरप्रदेशीय. वि.नं. 8188, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 31, 160, बी.एससी. (आनर्स), बी.एड. (स्पेशल), स्पीच थेरापिस्ट कन्यार्थ अविवाहित, सजातीय, माहेश्वरी, अग्रवाल, शिक्षित, कार्यकुशल वर चाहिए. कलकत्ता एस्टेबिलिस को प्राथमिकता. वि.नं. 8189, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 150 सें.मी., पब्लिक स्कूल शिक्षित, बी.एससी. फर्स्ट क्लास, एम.एससी. (बोटनी) एपीयर्ड, दिल्ली निवासी, सुंदर, सुशील, छरहरे शरीर वाली वार्ष्णेय वैश्य कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण के साथ लिखें : वि.नं. 8190, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 26, 160, दिल्ली प्रशासन अध्यापिका, सुंदर, सुडौल, विधवा हेतु योग्य वर, संपूर्ण पारिवारीक विवरण वांछित. वि.नं. 8191, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान राजपूत, 22/155, बी.एससी. (अंतिम), रंग गोरा, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 8192, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू नाई, 30 वर्ष, 155 सें.मी., एम.ए., गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, तलाकशुदा (साथ 6 वर्षीय बच्ची) हेतु तलाकशुदा, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 8193, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.एससी. (गृहविज्ञान), संगीत, चित्रकला, योग में निष्णात, कुर्मि क्षत्रिय कन्या, रंग गेहुआं, इकहरा बदन, कद 162 सें.मी., के लिए नौकरी या व्यवसाय में सुस्थापित वर की आवश्यकता है. वि.नं. 8194, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पांचाल (लोहार), 19 वर्षीया, 157 सें.मी., ग्रेजुएट, सुंदर हेतु दहेजविहीन, सजातीय, योग्य वर चाहिए. विवाह इच्छुक सविस्तार लिखें : वि.नं. 8195, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 32/159 सें.मी., कानवेंट एजुकेटेड, एम.काम., रंग गेहुआं, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुस्थापित वर चाहिए. शीघ्र विवाह. सविवरण लिखें: वि.नं. 8196, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, 155 सें.मी., बी.ए., कायस्थ, साफ रंग, सुंदर, सुशील, सिलाई, कढ़ाई एवं गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, इंजीनियर, डाक्टर, बैंक अधिकारी वर चाहिए. वि.नं. 8197, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, गरअग्रवाल, 5′-3″, बी.एससी., गौरवर्ण, स्मार्ट, स्लिम, (प्रारंभ से ही मासिक धर्म नहीं) कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. सविवरण लिखें : वि.नं. 8198, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, 28/157, बी.एससी., डबल एम.ए., गृहकार्यदक्ष, कुलीन परिवार, अर्द्धशासकीय (एकलव्य, केंद्रीय) संस्था कार्यरत, हेतु सरकारी सेवारत, व्यवसायरत, व्यवस्थापित वर चाहिए. वि.नं. 8199, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, शिक्षित, संपन्न, गौड़ ब्राह्मण, 34/158, स्नातकोत्तर, गोरी, स्मार्ट, गुणवान कन्यार्थ सिर्फ निर्लोभी, निर्व्यसनी, उच्चाधिकारी, उच्च व्यवसायी वर. वि.नं. 8200, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 22½/159, गेहुआं रंग, स्मार्ट, कानवेंट शिक्षित, बी.एससी., फैशन डिजाइनिंग में डिप्लोमा, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 8201, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

एम.बी.बी.एस., 25, 166, कानवेंट शिक्षित, 1994 में पी.जी. में प्रवेश हेतु अध्ययनरत, जैन कन्या के लिए सुयोग्य वर. पी.जी. मेडिको को प्राथमिकता. पिता पब्लिक सेक्टर में उच्च अधिकारी. वि.नं. 8202, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

धोबी, 27/160, एम.एससी., सुंदर, गोरी, सुशील, शिक्षित, संपन्न परिवार, कन्या हेतु वर चाहिए. उत्तम विवाह. वि.नं. 8203, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

राजस्थान निवासी, प्रतिष्ठित माहेश्वरी, 24/168, एम.बी.ए., कानवेंट शिक्षित, इकहरी, आकर्षक कन्या हेतु सुशिक्षित, सुस्थापित, प्रोफेशनल/एक्जिक्यूटिव वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 8204, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

कश्यप राजपूत (कहार), 24, 164, बी.ए., सुंदर, स्मार्ट कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 8205, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

बैस राजपूत, गोरी, 5',21 वर्षीया, एम.एससी. (वनस्पतिशास्त्र), कन्या हेतु सजातीय, अधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर, प्राध्यापक वर चाहिए. उत्तम शादी. वि.नं. 8206, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

अवधिया कुर्मी, बिहार, 23/155/3,000/-, एम.एल.टी. डिप्लोमा, कार्यरत, स्लिम, कुलीन, संस्कारीय, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. वरीयता दिल्लीवासी. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 8207, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

म.प्र. निवासी, गोंड (जनजाति), 24 साल, 155 सें.मी., इंटर, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 8208, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

सूर्यवंशी क्षत्रिय, 23 वर्षीया, 165 सें.मी., एम.ए., रंग गेहुआं, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, स्व. पिता, भोपाल निवासी, कन्या हेतु सजातीय, उच्च अथवा मध्यमवर्गीय, सरकारी नौकरी, व्यवसायी, दहेज-विरोधी वर चाहिए. वि.नं. 8209, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

वार्ष्णेय वैश्य, 29 वर्षीया, 170", मास्टर डिग्री (हिंदी), बी.एड. अध्ययनरत, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, मध्यमवर्गीय कन्यार्थ शासकीय सेवा, शिक्षित, व्यवसायी, सजातीय वर चाहिए. एक बार में ही पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 8210, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

31 वर्षीया, सरयूपारीण कन्या, 170 सें.मी., स्मार्ट, स्लिम, असि. प्रोफेसर, 3,800/-, पीएच.डी., हेतु डाक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउंटेंट, डी.एफ.ओ., ए.सी.एफ., रेंजर, बैंक आफीसर, केंद्रीय सेवारत वर चाहिए. शीघ्र विवाह. वि.नं. 8211, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

नाई, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, दो कन्याएं, उम्र 26 और 28 वर्ष, ऊंचाई 5'-3" इंच, इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. (हिंदी) में उत्तीर्ण, सजातीय, सरकारी नौकरीशुदा, हिंदू वर चाहिए. वि.नं. 8212, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

अत्यंत सुंदर, गोरी, 22 वर्षीया, 160 सें.मी., ऊंची, सुसंस्कृत, सुशील, एम.बी.बी.एस., शिवहरे (हैहय क्षत्रिय, कलवार), कन्या के लिए सजातीय, राय, चौकसे, जायसवाल आदि सुयोग्य, सुंदर, सुशील, सुसंस्कृत, एम.बी.बी.एस., डाक्टर वर चाहिए. डी.एम., एम.डी., एम.एस. को प्राथमिकता. वि.नं. 8213, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 27, 160, 3,500/-, राजकीय प्रवक्ता (अंगरेजी), सुंदर, गोरी कन्या हेतु उच्च सेवारत, व्यवसायी वर चाहिए. वि.नं. 8214, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

हिंदू जाट कन्या, 25/152 सें.मी., बी.ए., नर्सरी टीचर्स ट्रेनिंग दिल्ली से, सुंदर, सुशील, स्लिम, होमली, गृहकार्य में दक्ष, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुयोग्य, शिक्षित, सेवारत वर चाहिए. क्लास वन आफीसर को प्राथमिकता. शीघ्र उत्तम विवाह. वि.नं. 8215, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

माहेश्वरी, 26, 160, एम.काम., गौरवर्ण, सुशील, संभ्रांत, प्रतिष्ठित परिवारीय, मांगलिक कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर. उत्तम विवाह, राठी, अजमेरा छोड़ कर पूर्ण विवरण जन्मपत्रिका सहित लिखें : वि.नं. 8216, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

चमार, 23, 158, प्रथम श्रेणी इंजीनियरिंग ग्रेजुएट (इलेक्ट्रिकल), गोरी, स्लिम, अति सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, (पिता उच्चपदस्थ अभियंता), कन्यार्थ सेवारत, इंजीनियर, सी.ए., बैंक, राजपत्रित अधिकारी वर. शीघ्र, उत्तम विवाह. वि.नं. 8217, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, प्रतिष्ठित परिवार की, गोरी, इकहरी, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष कन्या, 22/168, एम.ए. (इकोनोमिक्स), डिप.निट. हेतु अधिकारीवर्ग का वर चाहिए. वि.नं. 8218, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भूमिहार, 23, 170, बी.ई. (कंप्यूटर), वैज्ञानिक, प्रथम श्रेणी, केंद्रीय सरकार, सुंदर, स्लिम कन्यार्थ इंजीनियर, आई.ए.एस., प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 8219, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 33/160, पीएच.डी., मध्यप्रदेशवासी, प्रोफेसर, शुद्ध शाकाहारी, गृहकार्य में दक्ष, इकहरी, आकर्षक कन्या हेतु सुशिक्षित, सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 8220, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 26, 5'-4", विधवा, सुंदर, एक वर्षीय पुत्र, अर्द्धशासकीय सेवारत, हेतु वर. विधुर, तलाकशुदा विचारणीय. वि.नं. 8221, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

माहेश्वरी, 22/152/48, एम.ए. अंगरेजी, दिल्लीवासी, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ वर चाहिए. पिता राजपत्रित अधिकारी. वि.नं. 8222, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, स्नातक, बैंक कार्यरत, कन्या 33/160/6,000/-, अविवाहित, हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 8223, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, स्नातक, केंद्रीय सरकार में कार्यरत, सुंदर, सुशील, 31/160/3,000/-, अविवाहित कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 8224, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 160, एम.काम. अध्ययनरत, खत्री, स्लिम, खूबसूरत कन्या हेतु वर. पिता उच्च संभ्रांत उद्यमी. वि.नं. 8225, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैंगर राजपूत, 22 वर्षीया, 160 सें.मी., गोरी, बी.एससी., बी.एड., एम.एड., एम.ए. (अर्थशास्त्र) अध्ययनरत, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. वि.नं. 8226, सरिता, नई दिल्ली-110055.

43 वर्षीया, पतली, ग्रेजुएट, अविवाहिता, हेतु सरकारी सेवारत जीवनसाथी लिखें : वि.नं. 8227, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35, अग्रवाल, गर्ग, एम.ए., बी.एड., गृहकार्यदक्ष, तलाकशुदा, निस्संतान कन्यार्थ शाकाहारी, सजातीय वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 8228, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्तावासी, गोयल, 25, 158, ग्रेजुएट, शहनाज द्वारा डिप्लोमा, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, उच्चवर्गीय कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड, व्यवसायी वर चाहिए. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 8229, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

जायसवाल, मंगली लड़का, 28, 165, 4,000/-, केंद्रीय सेवारत, हेतु पारिवारिक, सेवारत वधू. वि.नं. 8128, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण (कौशिक), 25, 167, ग्रेजुएट, प्रतिष्ठित परिवारीय, निजी सुस्थापित व्यवसाय (रांची), हेतु शिक्षित, अति सुंदर, 160 सें.मी. कन्या चाहिए. हरियाणा निवासी, कलकत्ता, दिल्ली, धनबाद, जमशेदपुर, पटना में व्यवसायरत को वरीयता. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 8129, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कार्मिक अधिकारी, एम.एस.डब्लू., 31 वर्षीय, अनुसूचित जाति हेतु वधू चाहिए. प्राथमिकता पुत्रहीन परिवार. वि.नं. 8130, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 25, 5'-11," स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व, मेधावी, असिस्टेंट इंजीनियर, निर्माण निगम, समृद्ध, शिक्षित परिवार, हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित, संभ्रांत परिवारीय, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू. वि.नं. 8131, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता तायल, 30, 165, 6,000/-, स्लिम, बी.काम., पार्ट टाइम एकाउंटेंट, निर्दोष, तलाकशुदा, दिल्ली, युवक हेतु शिक्षित कन्या, दहेज बंधन नहीं. संपूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 8132, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, ग्रेजुएट, व्यवसायरत, शहरी, विशाल घर, युवक के लिए कायस्थ कन्या चाहिए. वि.नं. 8133, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 152, 3,000/-, डिप्लोमा इंजीनियर हेतु भारतीय, शिक्षित, कार्यरत (प्राथमिकता डिप्लोमा इंजीनियर), लक्ष्यवान, नास्तिक, स्वनिर्णायक, अरूढिवादी, मांसाहारी, कठोर, स्मार्ट, स्लिम, उदार चित, आधुनिक, हिंदी जानकार, मुक्त प्रकृतिवान कन्या स्वयं लिखे. रजिस्टर्ड विवाह, हेतु बिना परंपरा बंधन, अनाथ, आत्मनिर्भर, गरीब, जरूरतमंद, अति स्वागतीय. लिखें : वि.नं. 8134, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 25, 172, 5,000/-, एम.बी.ए., गोरा रंग, उत्तम सेहत, पब्लिक लिमिटेड कंपनी में एक्जीक्यूटिव, हेतु क्वालीफाइड वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 8135, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भारतीय श्रीवास्तव परिवार, वेस्ट जर्मनी निवासी के पुत्र, आयु 28 वर्ष, लंबाई 173 सें.मी., एम.एससी. फिजिक्स, जर्मन यूनिवर्सिटी में कंप्यूटर कंसलटेंट के लिए वधू चाहिए. वधू की उम्र 21 से 26 वर्ष, खूबसूरत, सुशिक्षित, सुशील, गृहकार्यदक्ष तथा योरोप में निवास हेतु इच्छुक. जाति और दहेजबंधन नहीं. लिखें : SARAN SRIVASTAV, GLATZER WEG 17 4722, ENNIGERLOH—2 WEST GERMANY.

मध्य प्रदेश निवासी, 25 वर्षीय, श्वेतांबर जैन, 6'-1," सुंदर, आकर्षक, लंबे, निजी व्यवसाय एवं बंगला, एकदम छोटा परिवार, ग्रेजुएट युवक हेतु सुंदर, आकर्षक, अच्छे नाकनक्श वाली, स्मार्ट, वधू चाहिए. गरीब भी मान्य. विज्ञापन सिर्फ उत्तम चयन हेतु. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण. सिर्फ जैन ही लिखें : वि.नं. 8136, सरिता, नई दिल्ली-110055.

55 वर्षीय, विधुर, उद्योगपति, वार्षिक आय छः अंकीय, फैक्ट्री एवं निजी बंगला, दायित्वमुक्त हेतु शाकाहारी जीवनसाथी चाहिए. वि.नं. 8143, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वस्थ, तलाकशुदा, मासिक आय 5 हजार, बी.ए.,एलएल.बी., एम.ए. संगीत, सरकारी कर्मचारी, 38/165, दिखने में 32, को घुटने तक लंबे बाल वाली, शिक्षित लड़की चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 8149, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.एस. जनरल सर्जरी, विश्वकर्मा, आयु 30 वर्ष, लंबाई 162 सें.मी., मेडिको को प्राथमिकता दी जाएगी, हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं, आय 15,000/-प्रतिमाह. लिखें : वि.नं. 8155, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 25 वर्षीय, 170 सें.मी., बी.ए., गेहुआं रंग, उच्च व्यवसायी, आयातनिर्यात, मासिक आय छः अंकों में, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 8230, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुरुसिख, एम.काम., स्टेट बैंक कैशियर, 3,500/-, वर हेतु 22 वर्षीया तक सजातीय कन्या, 4' तक, खुखरैन खत्री को प्राथमिकता. वि.नं. 8231, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 26, 164, स्नातकोत्तर, बैंक क्लर्क, 3,500/-, हेतु शिक्षित, सुंदर, दिल्ली, यू.पी. की, सरकारी कार्यरत वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 8232, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/170/8,000/-, गौर वर्णीय, स्वस्थ, स्वव्यवसायरत, चंदेल राजपूत, पिता एवं भाई अन्य व्यवसाय में प्रतिष्ठित, हेतु शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सजातीय, मांगलिक/गैरमांगलिक कन्या, इच्छित व्यवसायीवर्ग को प्राथमिकता, संपूर्ण विवरण, कुंडली सहित लिखें : वि.नं. 8233, सरिता, नईदिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 34 वर्षीय, बी.काम., राजकीय वरिष्ठ लिपिक, मासिक आय 3,000/-, पैरों से विकलांग किंतु आत्मनिर्भर, साधारण छड़ी के सहारे चलनेफिरने में सक्षम, युवक हेतु वधू चाहिए. बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 8234, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, लखपती, 27 वर्षीय, 170 सें.मी., बी.एससी. कैमिस्ट्री (आनर्स), गोरा, सुंदर एवं स्मार्ट, अपना व्यवसाय, आय पांच अंकों में (आयकरदाता), बिहार निवासी, उड़ीसा में सुस्थापित, पिता सरकारी दफ्तर में प्रतिष्ठित अधिकारी, हेतु अत्यंत सुंदर एवं स्मार्ट, इंटर या ग्रेजुएट, घरेलू कन्या चाहिए. बिहार, उ.प्र., एवं म.प्र. को प्रथम वरीयता. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 8235, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33, 164 सें.मी., सुदर्शन, सुसंस्कृत, आर्किटेक्ट, राजपूत, मासिक आय करीब 7,000/- रु. युवक हेतु सजातीय, आकर्षक, सुशील, सुशिक्षित, कन्या के परिवारजन संपूर्ण विवरण जन्मपत्री के साथ ही संपर्क करें. विज्ञापन योग्य चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 8236, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 175 सें.मी., बीसा अग्रवाल, मंगल गोत्री, सुंदर, स्वस्थ, बी.काम., व्यवसायी हेतु सजातीय, सुशिक्षित कन्या चाहिए. पिता व्यवसायी. वि.नं. 8237, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 28, 5′-6,″ स्मार्ट, श्रेष्ठ निजी व्यवसाय, हेतु सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. वि.नं. 8238, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वावलंबी, बिहारवासी, स्नातकोत्तर द्वय पीएच.डी., 35, तलाकशुदा पीड़ित, स्मार्ट, लेक्चरर हेतु सुंदर, सहृदयी, विदुषी जीवनसंगिनी चाहिए. प्रांत, भाषा, जातिबंधन नहीं. वर्णित योग्यताधारी, परित्यकता, विधवा स्वीकार्य. वि.नं. 8239, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थानी, माहेश्वरी, 26, 163, 10,000/-, निजी व्यवसाय, स्मार्ट, गौरवर्ण, संपन्न परिवार, एक पैर छोटा लेकिन देखने, चलने में बराबर, संतानोत्पत्ति में असमर्थ युवक हेतु माहेश्वरी, अग्रवाल, सुंदर वधू चाहिए. मांग नहीं. वि.नं. 8240, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गर्ग, 5′-5″, हायर सेकेंडरी, 24, स्वस्थ, स्मार्ट, स्वव्यवसाय, अच्छी आमदनी, हेतु सुंदर, पढ़ी कन्या चाहिए. वि.नं. 8241, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36,170 सें.मी., 3,000/-, मैट्रिक, जायसवाल, विधुर, निजी मकान, तीन संतान सहित, सुशील वधू चाहिए. तलाकशुदा, एक कन्या सहित मान्य. वि.नं. 8242, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंबई निवासी, रस्तोगी (वैश्य), एकमात्र सुपुत्र डा., बी.ए.एम.एस. (बांबे युनिवर्सिटी), 28 वर्ष, गेहुआं, आकर्षक व्यक्तित्व, स्लिम, 5′-7,″ बंबई में अपना मकान, दवाखाना, हेतु गोरी, सुंदर, लंबी, सजातीय, डा. कन्या को प्राथमिकता, जातिबंधन नहीं. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें. शीघ्र विवाह. वि.नं. 8243, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37, 5′-7,″ 5,500/-, बी.ए., सुंदर, स्वस्थ, अविवाहित, अपना कारोबार, गरीब, बेसहारा, अकेली, स्वयं निर्णायिका, सुंदर वधू. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 8244, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31/5′-10 ″/4,500/-, गोयल, बी.ए., सर्विस (फरीदाबाद), विधुर (एक लड़की डेढ़ वर्षीया) हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. तलाकशुदा/विधवा भी स्वीकार्य. वि.नं. 8245, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, क्लास वन अधिकारी के पुत्र, 23, 170 सें.मी., बी.एससी., केंद्रीय सरकार सेवारत, आय 2,200/-, हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यकुशल वधू चाहिए. कार्यरत को प्राथमिकता. वि.नं. 8246, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गर्ग, मांगलिक, 28/163, बी.काम., स्वव्यवसाय दिल्ली, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या चाहिए. वि.नं. 8247, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग (अग्रवाल), 24, 5′-8″, मैट्रिक, 3,000/-, व्यवसायरत, दिल्लीवासी हेतु सुंदर, सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 8248, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अविवाहित, 33, जाटव, परमानेंट सर्विस, 4,500/-, युवक हेतु गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक, सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. प्रथम बार पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 8249, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बाल्मीकी (अनु.जा.), गजेटेड आफीसर, 173/32, गोरे, सुंदर, युवक हेतु वधू. वि.नं. 8250, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36, 175, 3,100/-, तलाकशुदा, अकेले, राजकीय सेवारत, इंजीनियर, हेतु स्वयंनिर्णायक जीवनसाथी लिखें: वि.नं. 8251, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, ठाकुर, 21 वर्षीय, मांगलिक, 6′-1″, मोटर वर्कशाप, हेतु सुंदर, मैट्रिक, गृहकार्यदक्ष, सुशील, मांगलिक, सजातीय, सुव्यवस्थित कन्या. वि.नं. 8252, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 29, 165, 5,500/-, बी.एससी.,

कंप्यूटर डिप्लोमा, सेवारत हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 8253, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, 26/173/5,000/-, पीएच.डी., वैज्ञानिक, युवक हेतु सुशील, सुंदर, सुसंस्कृत, सजातीय वधू चाहिए. राजकीय सेवारत/अध्यापिका को वरीयता. वि.नं. 8254, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्नोई, 28, 165, ज्वैलर्स, व्यवसायरत, आय पांच अंकीय, गढ़वाल स्थित हेतु सुंदर, आकर्षक, गोरी, शिक्षित, वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 8255, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, गुलाटी (पंजाबी), स्नातकोत्तर, कार्यरत, 3,000/-, विकलांग हेतु जीवनसंगिनी चाहिए. दहेज, जातिबंधन मुक्त. विधवा, विकलांग विचारणीय. वि.नं. 8256, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कहार, 25, 5½', एम.काम., सोनेचांदी का जमा व्यवसाय, हेतु सुंदर, सुशील वधू. वि.नं. 8257, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42 वर्षीय, डाक्टर, सक्सेना, (एम.एससी., पीएच.डी.), तलाकशुदा, मध्य प्रदेश निवासी, स्वीडन यूनिवर्सिटी में स्थायी कार्यरतार्थ, 30-35 वर्षीया, सुंदर, स्वस्थ, शिक्षित जीवनसंगिनी चाहिए. निस्संतान, परित्यक्ता, विधवा विचारणीय, जातिबंधन नहीं. कायस्थ परिवार प्राथमिकता. सविवरण लिखें : वि.नं. 8258, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बाल्मीकि, कस्टम एंड सेंट्रल एक्साइज इंस्पेक्टर, 25, 170, पिता क्लास वन राजपत्रित अधिकारी (सेवानिवृत्त), संभ्रांत परिवार, हेतु सुंदर, सजातीय कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 8259, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू, नाई, 26 वर्षीय युवक, राजकीय सेवा, हेतु गृहिणी की आवश्यकता है. दहेज नहीं, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 8260, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव कायस्थ, 26/180/3,000/-, एम.काम., पीएच.डी., पुलिस मुख्यालय इलाहाबाद में यू.पी.एस.सी. द्वारा चयनोपरांत आडीटर पद पर कार्यरत युवकार्थ सुंदर, सजातीय, लंबी कन्या चाहिए. एम.एससी. इलाहाबाद के आसपास सरकारी सेवारत को प्राथमिकता. पिता राजपत्रिताधिकारी. वि.नं. 8261, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 32 वर्षीय, 5'-10," बिहार निवासी, अमरीका से इलेक्ट्रानिक्स, इंजीनियरिंग, शिक्षित, उच्च श्रेणी आय, प्रतिष्ठित, धार्मिक एवं प्रेमी, संयुक्त परिवार के, हेतु आकर्षक, मिलनसार, मृदुभाषी एवं समझदार, शाकाहारी, धार्मिक, भारतीय परंपराओं का पालन करने वाली, पारिवारिक कन्या चाहिए. युवक को अमरीका में सिर में चोट लगी थी परंतु अब पूर्णतः स्वस्थ, बायां हाथ व बायां पैर में हलकी कमजोरी, अपना रोजमर्रा कार्य व खुद के कंप्यूटर पर अपने से कार्य करता है. जातिबंधन नहीं. दहेजरहित, शीघ्र विवाह. बेसहारा व गरीब भी स्वीकार्य. प्रथम बार पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 8262, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, राजपूत, पोस्ट ग्रेजुएट, बैंक सेवारत, विवाह के तुरंत बाद विवाहविच्छेद, युवक हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 8263, सरिता, नई दिल्ली-110055.

43/170/2,000/-, अविवाहित हेतु सुंदर, गोरी, गृहकार्यदक्ष, मृदुभाषी, मिलनसार वधू. विधवा, तलाकशुदा, परित्यक्ता, गरीब, बेसहारा स्वीकार्य. आंशिक, शारीरिक दोष विचारणीय. कोई बंधन नहीं. हिंदी में पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 8264, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 25/180, बी.ई. (सिविल), सेवारत, इंजीनियर युवक हेतु सुंदर, गोरी, लंबी, शिक्षित, प्रतिष्ठित परिवार की कन्या चाहिए. पिता सेवानिवृत्त वरिष्ठ राजपत्रित अधिकारी. वि.नं. 8265, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिख, अरोडवंशी, जनपद गोरखपुर निवासी, बी.ए., 25 वर्षीय, आर्थिक स्थिति सुदृढ़, कद 5'-7" लगभग, युवक हेतु सुंदर, सजातीय, सिख कन्या चाहिए, जो गृहकार्य में निपुण हो. कोई दहेज बंधन नहीं. विवाह शीघ्र. निकट को प्राथमिकता. वि.नं. 8266, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42/168/2,000/-, अविवाहित, एकांगी, हेतु वधू. विधवा, गरीब, बेसहारा स्वीकार. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 8267, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, सक्सेना, बी.ए.एम.एस., सुंदर, स्वस्थ युवक हेतु मेडिको वधू चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 8268, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाट, 27 वर्षीय, 180 सें.मी., 10,000/-, ग्रेजुएट, निजी व्यवसाय, स्मार्ट वर हेतु सुंदर, लंबी, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 8269, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंसल, 24 वर्षीय, 5'-5", बी.काम., बिजनेसमैन, गौरवर्ण, स्मार्ट युवक हेतु गौरवर्ण, अति सुंदर वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 8270, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, 27, एम.ए., तीन वर्षीय पुत्र, निजी मकान, तीन एकड़ भूमि, 4,000/-, हेतु कुंआरी, ग्रेजुएट लड़की. वि.नं. 8271, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दृष्टिहीन, 27, 5'-6," 3,200/-, संगीत अध्यापक, सरकारी सेवारत, निजी मकान (दिल्ली), सुंदर युवक हेतु नेत्रवान वधू चाहिए. विकलांग, विधवा, तलाकशुदा विचारणीय. दहेज नहीं. वि.नं. 8272, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45/5'-8"/10,000/- तक, निजी व्यापार, तलाकशुदा, अकेला, हैदराबाद नार्थ इंडियन गुप्ता,

हेतु इकहरी, सुंदर, पूर्ण घरेलू, विधवा, तलाकशुदा, कम पढ़ीलिखी स्वीकार,निस्संतान को वरीयता, जाति व दहेजबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. पूर्ण सादगी से. वि.नं. 8273, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुर्जर, 32, 5′-8″, 4,000/-, बी.ए., निजी फार्म (मथुरा), आलीशान मकान, हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष, शिक्षित वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 8274, सरिता, नई दिल्ली-110055.

53 वर्षीय, विधुर, आय 8,000/- मासिक, हेतु सत्यनिष्ठ, शाकाहारी, जीवनसाथी.विधवा, एकाकी को प्राथमिकता. वि.नं. 8275, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (लोहार), टिस्को में कार्यरत, 26/174, बी.टेक., युवक हेतु सजातीय, गौरवर्ण, इंजीनियर, पोस्ट ग्रेजुएट/ग्रेजुएट वधू चाहिए. कुंडली बायोडाटा भेजें. वि.नं. 8276, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दृष्टिहीन, 31, 170, 3,100/-, एम.ए. (राजनीति शास्त्र), बी.एड., सरकारी अध्यापक, सरकारी आवास (दिल्ली), युवक हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 8277, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 29, 178, एम.काम., बी.एड., म.प्र. राजकीय सेवारत अध्यापक, कानूनन संबंधविच्छेद (एक बालिका 6 वर्षीया), मध्यमवर्गीय परिवार के युवक हेतु सुशिक्षित, संवेदनशील, शाकाहारी जीवनसाथी चाहिए. सविवरण लिखें : वि.नं. 8278, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27/166, भारतीय विदेश सेवा में कार्यरत, कुमाऊंनी ब्राह्मण युवक के लिए सजातीय वधू चाहिए. जन्मकुंडली सहित. वि.नं. 8279, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीय, एम.ए., मुसलिम युवक, जे.सी.ओ. मिलिटरी सेवारत, युवक हेतु वधू. प्राथमिकता विधवा, तलाकशुदा. बंधन नहीं. वि.नं. 8280, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 34 वर्षीय, 174 सें.मी., तलाकशुदा, निजी व्यवसाय हार्डवेयर सेनेट्रीवेयर, बिल्डिंग मैटेरियल, ट्रांसपोर्ट, आय 7,000/- से 8,000/-, युवक हेतु अविवाहित, गोरी, सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 8281, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्ष, कुशवाहा, बी.काम. (आनर्स), कानवेंट, निजी व्यवसाय बिल्डिंग मैटेरियल, सुशिक्षित, स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, इंगलिश मीडियम शिक्षित, आकर्षक, परिवारीय वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. निवास स्थान बिहार, दहेज नहीं. वि.नं. 8282, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29/182/5,000/-, इंजीनियरिंग, स्नातक, केंद्रीय राजपत्रित अधिकारी, शिक्षित, दिल्ली परिवार, हेतु इंजीनियर, लेक्चरर, सरकारी अधिकारी, कंप्यूटर प्रोफेशनल, दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश पदस्थ, उपयुक्त वधू. वि.नं. 8283, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, प्रतिष्ठित परिवार के इकलौते पुत्र, एम.ए. (इकोनोमिक्स), 26/172 प्राइवेट फर्म में कार्यरत अधिकारी हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, पढ़ीलिखी कन्या चाहिए. कन्या को ही मान्यता. शीघ्र शादी. वि.नं. 8284, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मुसलिम, 32, 165, स्मार्ट, कंप्यूटर इंजीनियर, 1,50,000/-, निजी व्यवसाय (सऊदी अरब), सुंदर युवकार्थ स्लिम, शिक्षित, सुशील, इकहरी, कुलीन, सजातीय कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह, दहेज नहीं. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 8285, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, बैंक सेवारत, 29/179, एम.ए., एलएल.बी., हेतु वधू चाहिए. वि.नं. 8286, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, दृष्टिहीन, ब्राह्मण, 175, सरकारी अध्यापक, मासिक वेतन, 3,200/, दिल्ली में निजी आवास, एम.ए., बी.एड., हेतु सुयोग्य, शिक्षित, सनेत्रवान, सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 8287, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28/165/15,000/-, बंगाली कायस्थ, ग्रेजुएट, सऊदी अरब में कार्यरत, हेतु सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. पूर्ण विवरण, रंगीन फोटो सहित लिखें : SAJAL SEN C/o JOHN-HAYES, P.O. BOX 4142, RASTANURA-ARAMCO DHAHRAN, K.S.A.

जैन श्वेतांबर, 30, 5′-5″, 9,000/-, स्वयं निर्णायक, समाज की कुरीतियों के खिलाफ, विधवा, तलाकशुदा, विचारणीय. वि.नं. 8288, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 30, 165, दुबई में कार्यरत, हेतु सिंधी, सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 8289, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारी, कनौजिया, कानू (कान्यकुब्ज वैश्य), बंबई निवासी, निजी मकान, 25 वर्षीय, 5′-8,″ बी.काम., 8,000/-, लिमिटेड फर्म में कार्यरत, युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, मंगली कन्या चाहिए. संपूर्ण पारिवारिक विवरण, जन्मकुंडली भेजें. वि.नं. 8290, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, ओसवाल, स्थानकवासी, 34/5′-4,″ निजी व्यापार, तलाकशुदा, मद्रास निवासी, 10 + 2, सहसमाजीय वधू चाहिए. (मरोटी, चोरड़ीया, आंचलीया, नाहर), तेरापंती मंदिर मार्ग, नाहर आंचलीया भी लिख सकते हैं. बाकी समाज वाले नहीं लिखें : वि.नं. 8291, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 27, 5′-6,″ 1,500/-, मैट्रिक, युवक

हेतु सुशील कन्या चाहिए. वि.नं. 8292, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 28, 172, 3,500/-, सुंदर, सरकारी गणित अध्यापक, हेतु शिक्षित, लंबी, अति सुंदर कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. वि.नं. 8293, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 26 वर्षीय, 160 सें.मी., एम.एससी. (फिजिक्स) प्रथम श्रेणी, बी.एड., गवर्नमेंट इंटर कालेज में फिजिक्स लेक्चरर, युवक हेतु सुंदर, स्लिम, गृहकार्यदक्ष, ग्रेजुएट अथवा पोस्ट ग्रेजुएट वधू चाहिए. मध्य प्रदेश में शासकीय सेवारत कन्या को प्राथमिकता. वि.नं. 8294, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 168, सोनकर (खटिक), रेलवे कार्यरत, डिप्टी एस.एस., 4,000/- प्रतिमाह, हेतु सजातीय, सुशिक्षित, सुसंस्कृत वधू. वि.नं. 8295, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31, 180, 4,100/-, शिक्षित, 'बहरा' पंजाबी अरोड़ा, सरकारी सेवारत, कंप्यूटर सहायक, अपना फ्लैट, दहेज रहित हेतु साधारण, योग्य वधू. वि.नं. 8306, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

जायसवाल, 27, 175 सें.मी., डिप्लोमा इन सिविल, निजी व्यवसाय, आय 4,000/- मासिक, हेतु सुंदर, सुशील, स्नातक वधू चाहिए. एवं 23, 165 सें.मी., एम.ए., बी.एड. अध्ययनरत, आकर्षक, सुशील, गृहकार्यदक्ष, सांवला रंग हेतु वर चाहिए. वि.नं. 8296, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय युवक (ग्रेजुएट) एवं 25 वर्षीया कन्या, पोस्ट ग्रेजुएट, योग्य वधू तथा वर की आवश्यकता है. केवल शाकाहारी परिवार संपर्क करें. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 8297, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुरील (पूर्बिया मोची), शासकीय सेवारत, सीनियर इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, 29, 175, 6,000/-, स्मार्ट युवक हेतु अति सुंदर, स्नातक, योग्य कन्या की एवं यूनिवर्सिटी में सेवारत, सहायक प्रोफेसर, पीएच.डी., पत्रकारिता डिप्लोमा कर रही, 26, 165, 4,500/-, स्मार्ट, गृहकार्यकुशल, आकर्षक व्यक्तित्व वाली सुयोग्य कन्या के लिए सुंदर, सुयोग्य, शासकीय सेवारत, उत्तम वर की शीघ्र आवश्यकता है. प्रोफेसर, डाक्टर, इंजीनियर अथवा आफिसर को प्राथमिकता. वि.नं. 8298, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी (माली), राजपत्रित अधिकारी (बिहार), 25, 175, बहन एम.ए. परीक्षार्थी, 22/165, सुंदर, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, एक परिवार मान्य. प्रतिष्ठित शिक्षित, परिवार आमंत्रित, लिखें : वि.नं. 8299, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी, अग्रवाल, 27, 178, 5,000/-, स्नातक, स्मार्ट, निर्व्यसनी, जनरल स्टोर, युवक एवं 23, 165, स्नातक, सुदर्शनी, आकर्षक, घरेलू कन्यार्थ दहेजविरोधी, सुयोग्य जीवनसाथी. वि.नं. 8300, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साव, 20, 4'-10," गृहकार्यदक्ष, श्यामवर्ण, नान मैट्रिक कन्या हेतु सेवारत, व्यवसायी वर एवं 25, 5'-4", मैट्रिक, सरकारी सेवारत, 2,300/-, पुत्रार्थ सुंदर वधू. पिता राजपत्रित अधिकारी, निजी भवन, प्राथमिकता बंगालवासी बिहारी सूढ़ी, जायसवाल, कलवार सविवरण लिखें : वि.नं. 8301, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 22, 155, अति सुंदर, सुशील, एम.एससी. अध्ययनरत, पुत्री हेतु प्रोफेशनल अथवा उच्च सेवारत वर तथा 25, 168, स्मार्ट, कार्यरत, कैमिकल इंजीनियर पुत्र हेतु उचित वधू. दोनों कानवेंट शिक्षित. वि.नं. 8302, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

बच्चा गोद देने की इच्छुक गर्भवती महिलाएं संपर्क करें. अविवाहित भी मान्य. वि.नं. 8163, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

महिला 30-45 वर्षीया, साहसी, सेवाभावी, बंधनमुक्त, शिक्षित, आध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक कार्यों में एक प्रौढ़, पारिवारिक उद्योगपति की सहायतार्थ बंगलौर आश्रम स्थित शाकाहारी, गृहप्रबंध, रिहायश व पर्यटन सम्मिलित. आजीवन सम्मान, सुरक्षा. वि.नं. 8304, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यवसाय

अमरीकन ज्ञान पर अपना नाम, पता, 1,000 उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं जिन के बाईं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 60/- वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग), कुलदीप सिंह, 32, दी माल, अमृतसर-143017.


ज़िन्दादिली की नई लह
सुबह का वक्त हो, भरी दोपहर, या फिर ढलती शाम... 'यूल रेड' की कड़क और खुशबू आपमें नई जान फूंक दे, तरो-ताज़ा कर दे। चायप्रेमियों के लिए खास तौर से चुनी गई और ब्लेंड की हुई।
दोआर्स और असम में खुद हमारे चायबागानों में अनुभवी हाथों से उगाई गई। यूल रेड। आप भी अपनाएं तरो- ताज़गी का यही फॉर्मूला... और ज़िन्दगी में उठने दें ज़िन्दादिली की नई लहर!
YULE
यूल रेड
चाय बागानों से लाई ताज़ा सी टी सी चाय
YULE RED
GARDEN FRESH CTC LEAF TEA
यूल से बेहतर कौन जाने चाय को!
INTERACT VISION :2053 Hin